महावीरचरियं

-नेमिचंद्रसूरि



आ० श्री ॐकारसूरि ज्ञानमंदिर ग्रन्थावली नं. ९८

पाइअभासाणिबद्धं पज्जबद्धं

महावीरचरियं



ग्रन्थरचनाकार

प.पू.आ.श्री नेमिचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजा



प्रेरणा मनिषी

प.पू. भवोदधितारक गुरुदेव मुनिप्रवर श्री राजरत्नविजयजी म.सा.



सम्पादक

मुनि न्यायरत्नविजय



सम्पादन सहायक

प.पू.मुनि श्री मन्त्रसिद्धिविजयजी म.सा.



संशोधक

प.पू.मुनि श्री निर्मलयशविजयजी म.सा.

प.पू.मुनि श्री त्रिलोकवल्लभविजयजी म.सा.

प.पू.मुनि श्री शुक्लध्यानविजयजी म.सा.



प्रकाशक

आ० ॐकारसूरि ज्ञानमन्दिर

सुभाषचौक - गोपीपुरा - सुरत-१.

ग्रन्थ नाम	:	महावीरचरियं ।
रचनाकार	:	आ.श्री नेमिचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजा ।
सम्पादक	:	मुनि न्यायरत्न विजय
प्रकाशन वर्ष	:	वि.सं. २०७२
संस्करण	:	प्रथम
प्रतियाँ	:	५००
मूल्य	:	रु. ४५०-००
पत्र	:	४०+३५८=३९८
©	:	आ० ॐकारसूरि ज्ञानमन्दिर

प्राप्तिस्थान

सुरत	:	आ. ॐकारसूरि आराधना भवन श्री सेवंतीभाई महेता मो. :· ०९८२४१५२७२७
अहमदाबाद	:	श्री पंकज जैन संघ आ. भुवनभानुसूरि स्मृति मंदिर पंकज सोसायटी, पालडी, अहमदाबाद-३८०००७ विजयभाई-मो. : ०९८७९५८५४६३
अहमदाबाद	:	श्री सतीषभाई बाबुलाल शाह ५, मौलिक फ्लेटस्, ओपेरा उपाश्रय के पास, पालडी, अहमदाबाद-३८०००७. मो. : ०९८२५४१२४०२
अहमदाबाद	:	सरस्वती पुस्तक भंडार हाथीखाना, रतनपोल, अहमदाबाद-३८०००१ मो. : ०९८७९५३११९०
मुंबई	:	श्री नन्दीषेण रश्मिभाई शाह २०२, दिव्यदर्शन, ब्राह्मणसभा लेन, मलाड (वे.), मुंबई-४०००६४ मो. : ०९००४५९०००६
अक्षरांकन	:	विरति ग्राफ्रिक्स, अहमदाबाद, मो. ०८५३०५२०६२९, ०७४०५५०६२३०
मुद्रक	:	शिवकृपा ऑफ्सेट, रवि ऐस्टेट, अहमदाबाद, मो. ०९८९८०३४७९९



अनंत सामर्थ्य के धारक, परम विनयी
हे श्रमण भगवान महावीर!

आपका गर्भस्थ अवस्था का अभिग्रह,
परमार्थलक्षी औचित्य की मिशाल है।

आपका गृहस्थजीवन,
अनासक्तयोग की मिशाल है।

आपका साधनाकाल,
लक्षप्रतिबद्धता की मिशाल है।

आपकी सयोगी केवली अवस्था
स्वरुपनिष्ठा सहित उदय-निर्जरण की मिशाल है।

परमबोध की मिशाल स्वरुप
आपका समग्र जीवन
जगदुद्धारक है।

ऐसी प्रतीति के साथ आपके
श्रीचरणों में नतमस्तक हूँ।

MAHAVIR CHARIYAM

(Prakrit)

Author

Acharya Shree Nemichandra Suriji M.S.

Editor

Muni Nyayratna Vijay
A Disciple of Revered
Muni Shree Rajratna Vijay M.S.

Publisher

Omkarsuri Gyan Mandir
Subhash Chowk - Gopipura - Surat - 1

INTRODUCTION

Original Text : MAHAVIR CHARIYAM

Author : Acharya Shree Nemichandra Suriji M.S.

Language : Prakrit

Editor : Muni Nyayratna Vijay

Year : 2016

Edition : 1st

Copies : 500

Price : Rs. 450

Available At :

1) Acharya Omkarsuri Aaradhna Bhavan
Subhash Chowk - Gopipura - Surat - 1
0261-2596531/09824152727

2) Satishbhai Babulal Shah
5, Maulik Flat - Opera Society - Paldi
Ahemedabad - 380007
09825412402

3) Saraswati Pustak Bhandar
Hathi Khana, Ratanpole,
Ahemedabad - 380001 - 09879531190

4) Nandisen R. Shah
202, Divya Darshan
Bhrahmin Sabha lane,
Malad (W), Mumbai 400064
09004590006

परमकृपा

सिद्धाचल शणगार युगादिदेव श्री आदिनाथ परमात्मा ।

असीमकृपा

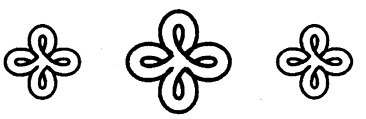
प.पू.संघस्थविर दादा गुरुदेव आ.भ.श्री सिद्धिसूरीश्वरजी महाराजा ।
प.पू. वर्धमान तपोनिधि गुरुदेव आ.भ.श्री भद्रंकरसूरीश्वरजी महाराजा ।

अनराधार कृपा

प.पू. सरलस्वभावी आ.भ.श्री अरविन्दसूरीश्वरजी महाराजा ।
प.पू. भक्तियोगाचार्य आ.भ.श्री यशोविजयसूरीश्वरजी महाराजा ।
प.पू. शास्त्रसंशोधक आ.भ.श्री मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजा ।
प.पू. युवाचार्य श्री नररत्नसूरीश्वरजी महाराजा ।

ऋणस्मरण

पूज्य श्री सतीषभाई (पिताश्री)
पूजनीया श्री अमिताबहेन (मातुश्री)
पू.सा.श्री विनितयशाश्रीजी म.सा. (बहन म.सा.)



प्रकाशन के लाभार्थी

वि.सं. २०७१ में

परमपूज्य मुनि प्रवर श्री राजरत्न विजयजी म.सा.

के चातुर्मास के आनन्द को चिरंजीवी बनाने हेतु

लब्धिनिधान श्री शान्तिनाथ जैन संघ

रत्नत्रय वाटिका - मलाड़ (इस्ट) ने अपने ज्ञाननिधि से

यह ग्रन्थ प्रकाशित करने का

अपूर्व लाभ लिया हैं।

श्रीसंघ के इस सुकृत की

शतशः अनुमोदना करते हैं।

नम्र निवेदन

इस ग्रन्थ के पूर्व सम्पादक

प.पू. प्रवर्तक मुनिप्रवर श्री कान्तिविजयजी म.सा

के शिष्यरत्न

प.पू. मुनि श्री चतुरविजयजी म.सा.

एवं पूर्व प्रकाशक

श्री जैन आत्मानन्द सभा-भावनगर

को हम कृतज्ञता से

याद करते हैं।

'हमरी आखी जात तुम्हारी गुरुवरजी,
तुम बिन सबहु बात हमारी नश्वरजी....'



प.पू.संघस्थविर आ.भ.श्री
सिद्धिसूरीश्वरजी महाराजा

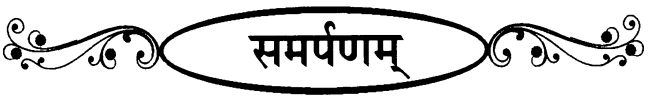


प.पू.वर्धमान तपोनिधि आ.भ.श्री
भद्रंकरसूरीश्वरजी महाराजा

जिनकी पावन छाँव में मुझे पल्लवित होने का सौभाग्य मिला
ऐसे परम उपकारी गुरुवर्यो के श्री चरणो में कोटी कोटी वन्दना ।

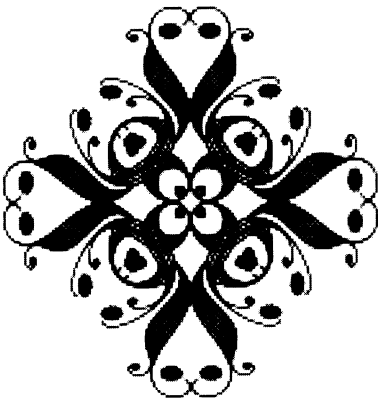
''भला ! खुद चालवाथी ज शुं चरणने थाक लागे छे ?
अरे ! चाल्युं गयुं कोई अने अहीं थाक लागे छे.''

• • •



उम्र से बुजुर्ग, लेकीन संयम योगो के आसेवन में
उत्साही युवा जैसे, अत्यन्त सरलमना तपस्वी
मुनिराज श्री भव्यरत्नविजयजी म.सा. की
वर्धमान तपधर्म की
१०० वीं ओलीजी के
पूर्णाहूति के अवसर
पर यह ग्रन्थ
आपके
करकमलो में
समर्पित करते हुए अत्यधिक
आनन्द की अनुभूति कर रहा हूँ ।

- न्यायरत्न वि.



पूर्व सम्पादक श्री की प्रस्तावना

इह हि निष्कारणपरोपकारकरणकरुणावरुणालयानां तीर्थङ्करगणधरमहर्षिप्रमुखमहापुरुषाणामसाधारणक्षान्त्यादिगुणगणसमलङ्कृतान्यत्यद्भुतानि पवित्राणि चरित्राणि रोगशोकजरामरणेष्टवियोगानिष्टसंयोगाद्यनवरतसङ्क्लेशातिभयङ्करासारसंसारपारावारनिमग्नानामैदंयुगीनसङ्क्षिप्तरुचीनां भव्यसत्त्वानां समुत्पादयन्ति संवेगरङ्गं प्रमार्जयन्ति च सङ्ख्यातीतभवोपार्जितदुष्कर्मरजः । अत एवासन्नोपकारिणः **सिद्धार्थ**पार्थिवविशालवंशविहायस्तलमृगाङ्कस्य चरमतीर्थकृतो भगवतो **महावीरजिन**स्य प्रसन्नपदवर्णविन्याससुललितं सप्तविंशतिभववर्णनात्मकं तत्तत्प्रासङ्गिकहितोपदेशोपबृंहितं संवेगरससागरं चरित्रं परोपकारव्रतपरिशीलनप्रवरैराचार्यैः सङ्क्षेपतः प्राकृतभाषायां पद्यबन्धेन निबद्धम् । तदेतद्ग्रन्थारम्भे तैरेव समुद्टङ्कि ।

''वोच्छामि समासेणं वीरजिणिंदस्स संतियं चरियं ।
संवेगट्ठा भवियाण अत्तणो सुमरणत्थं च ॥
जम्मि भवे संमत्तं पत्तं पढमं तमाइओ काउं ।
सत्तावीसजिणभवे संखेवेणं पवक्खामि ॥''

एतत्पवित्रचरित्रस्य के रचयितारः ? कदा कतमस्मिन् पवित्रपत्तने रचितम् ? इति जिज्ञासा तु चरित्रस्यास्य प्रशस्त्युट्टङ्कितैः —

''सिरिजंबुनामसिरिपहवसूरिसेज्जंभवादिसूरीणं ।
परिवाडीए जाओ चंदकुले वड्डगच्छम्मि ॥
सिरिउज्जोयणसूरी उत्तमगुणरयणभूसियसरीरो ।
----------॥
जम्मि य गच्छे आसी सिरिपज्जुन्नाभिहाणसूरि त्ति ।
सिरिमाणदेवसूरी सुपसिद्धो देवसूरी य ॥
उज्जोयणसूरिस्स य सीसो अह अंबदेवउज्झाओ ।
खममद्दवज्जवाईगुणकलिओ सोममुत्ती य ॥
तस्स विणेएण इमं वीरजिणिंदस्स साहियं चरियं ।
पावमलस्स खयट्ठाए सूरिणा णेमिचंदेण ॥

अणहिलवाडपुरम्मी सिरिकन्ननराहिवम्मि विजयंते ।
दोहट्टिकारियाए वसहीए संठिएणं च ॥

वाससयाणं एगारसण्ह विक्कमनिवस्स विगयाणं ।
अगुयालीए (११४१) संवच्छरम्मि एयं निबद्धं ति ॥''

इत्येताभ्य उत्तानार्थाभ्य गाथाभ्य एवोपशाम्यति जिज्ञासार्थः ।

एतच्चरित्रस्य संशोधनकर्मणि पुस्तकद्वितयं समासादितम् । तत्राद्यं 'अ'संज्ञकं **पत्तना**न्तर्गत**खेतरवसति**पाटकोपाश्रयसत्कं ताडपत्रोपरि लिखितं नातिशुद्धं । ग्रन्थसमाप्त्यनन्तरोपन्यस्तैः —

''प्राच्यां वाटो जलधिसुतया कारितः क्रीडनाय,
तन्नाम्नैव प्रथमपुरुषो निर्मितोऽध्यक्षहेतोः ।
तत्सन्तानप्रभवपुरुषैः श्रीभृतैः संयुतोऽयं;
प्राग्वाटाख्यो भुवनविदितस्तेन वंशः समस्ति ॥

तस्मिन्नभूत्सुचरितः शुभवृत्तशाली, श्रेष्ठी गुणैकवसतिर्द्युतिमान् प्रसिद्धः ।
मुक्तामणिप्रतिकृतेः श्रियमाततान, त्रासादिदोषरहितः सहडू प्रतीतः ॥

पत्नी सहडुकस्याभूच्छ्रेष्ठा गागीति संज्ञिता ।
सद्धर्मकर्मनिरता जज्ञिरे तनयास्तयोः ॥

आद्योऽभून्माणिभद्राख्यः शालिभद्रस्ततो गुणी ।
तृतीयः सहलको नाम प्रिये तस्य बभूवतुः ॥

आद्या बाबी गुणाधारा तत्सुतो वेल्लकाभिधः ।
सच्छीलाम्बरशालिनी पुत्री सेहडिसंज्ञिता ॥

थिरमत्या द्वितीयायास्तनयाः पञ्च जज्ञिरे ।
आद्यौ धवलवेलिगौ यशोधवलः कलाभृत् ॥

रामदेवोऽपि निःशेषकलासङ्केतमन्दिरम् ।
ब्रह्मदेवो यशोदेवः पुत्री वीरीति विश्रुता ॥

महौजा धवलसूनुरासदेवो विवेकवान् ।
वेलिगस्यापि सत्सूनुरासचन्द्रः कलालयः ॥ इतश्च —

आसीच्चन्द्रकुले शशाङ्कविमले सूरिर्गुणानां निधिः,
तैलोक्येऽभयदेवसूरिसुगुरुस्सिद्धान्तविश्रामभूः ।
स्थानाङ्गादिनवाङ्गवृत्तिकरणप्राप्तप्रसिद्धिर्भृशं;
येन स्तम्भनके जिनस्य विशदा सम्यक्प्रतिष्ठा कृता ॥

तत्पट्टे हरिभद्रसूरिरुदभून्निश्शेषशास्त्रार्थवित्त-
च्छिष्योऽजितसिंहसूरिरुदभून्निस्सङ्गनामग्रणीः ।
तच्छिष्योऽजनि हेमसूरिसुगुरुर्गीतार्थचूडामणि-
स्तत्पादाम्बुजषट्पदो विजयते श्रीमन्महेन्द्रप्रभुः ॥

करिकर्णास्थिरा लक्ष्मीः प्राणास्तु क्षणनश्वराः ।
इत्थं व्याख्यां ततः श्रुत्वा श्रद्धासंविग्नमानसः ॥

यानपात्रं भवाम्भोधौ मज्जतां प्राणिनामिह ।
पततां दुर्गतौ कूपे रज्जुकल्पं हि पुस्तकम् ॥

इत्येवं मनसि ज्ञात्वा रामदेवेन लेखितम् ।
श्रीमहावीरचरितमात्मनः श्रेयसे मुदा ॥

मनोज्ञपत्रसंयुक्तं सदक्षरविराजितम् ।
भुवनचन्द्रगणये दत्तं सद्भक्तियोगतः ॥''

इत्येतैः पुस्तकलेखयितृप्रशस्तिपद्यैर्भूषितम् । तद्गतश्री**महेन्द्रसूरि**नाम्नैतल्लेखनकालोऽपि वैक्रमीयद्वादशशताब्द्याः प्रान्तवर्त्ती त्रयोदशशताब्द्याः प्रारम्भवर्त्ती वा सम्भाव्यते । द्वितीयं पुनः 'ब' संज्ञकं **पत्तनीय**सङ्कुचित्कोषीयं ताडपत्रीयैकोनसप्तत्यधिकद्विशतपत्रात्मकमन्तिमपत्रेण परिहीनं नातिशुद्धं 'अ'पुस्तकात्प्राचीनम् । एतत्पुस्तकसमर्पणोदारयोर्महानुभावयोः परोपकृतिं स्मृतिगोचरतां नयामि ।

एतत्पुस्तकद्वितयाधारेण सावधानतया संशोधितेऽप्यत्र निबन्धेऽस्मद्दृष्टिदोषेण शिशकाक्षरयोजकदोषेण वा यत्र क्वचनाशुद्धयोऽवशिष्टा भवेयुस्तत्र शोधयन्तु धीधना इति प्रार्थयते —

प्रथमभाद्रपदशुक्लद्वितीया
विक्रमसंवत् १९१७
मुंबई ।

न्यायाम्भोनिधि**श्रीमद्विजयानन्दसूरीश्वर**शिष्य-
प्रवर्तक**श्रीमद्कान्तिविजय**चरणोपासकः
चतुरविजयो मुनिः ।

प्रास्ताविकम्

'हम तो दो को पूजे बस इस दुनिया में,
एक तो ऊपरवाला दूजा अक्षरजी....'

परमपावन श्री जिनशासन दो नींव पर खड़ा हैं। एक जिनबिम्ब और दूसरा जिनागम। जिनागम की बात करे तो जिनशासन के आगमसूत्र आदि हजारो ग्रन्थो की रचना प्राकृत (अर्धमागधी) भाषा में हुई हैं।

प्राकृत भाषा थोड़ी सी अजब-गजब हैं। यह भाषा पाठक को सोचने के लिए मजबूर कर देती है, कि इस पंक्ति का अर्थ क्या होगा ? प्राकृतभाषा एक ही शब्द के अनेक अर्थ दिखलाती है। अतः नूतन वाचक चकरा जाते है कि यहाँ अभिप्रेत अर्थ कौनसा है। और शायद यही कारण हैं कि बहुत से वाचक वर्ग प्राकृतभाषा से थोड़े से डरे हुए थोड़े से घबराये हुए रहते हैं। और यह भाषा को हाथ में लेने में झिझकते हैं।

वाचक की इस घबराहट दूर करने का यहाँ संनिष्ठ प्रयास किया गया हैं। प्राकृत विज्ञान पाठमाला का ठीक से अध्ययन करने वाले विद्यार्थी भी इस चरित्र को स्वयं पढ़ सकते हैं।

जहाँ थोड़ी भी कठिनाई हो वहाँ संस्कृत अनुवाद व हिन्दी रूपान्तरण की सहाय ले सकते हैं। इन दोनों की सहायता से वाचक बड़े चाव से प्रभु महावीर के जीवन-चरित्र का रसास्वाद करेंगे। साथ-साथ प्राकृतभाषा में विद्वत्ता भी प्राप्त करेंगे।

अभ्यासी पाठक को विनम्र सूचना है कि मूल ग्रन्थ को प्राकृत में ही पढ़ने का प्रयत्न करें। मूलग्रन्थ का रसास्वाद छाया व अनुवाद में नहीं आ सकता है। जहाँ मूलग्रन्थ समझने में कठिनाई हो वहाँ पूर्णतः विचार करने के पश्चात् ही नीचे दी गई टीप्पण का उपयोग करें।

विषमपद टीप्पण हमने नूतन वाचक को ध्यान में रखकर लिखी हैं। चरित्र में जहाँ विषमपद हैं वहाँ हिन्दी अंक में १, २, ३, ४ कर के नंबर दिये हैं। उनका अर्थ नीचे दिया गया हैं। टीप्पण में विभक्तियाँ कृदन्त आदि का अर्थ न करके सिर्फ मूल धातु, शब्द का अर्थ ही हमने लिखा हैं। विभक्ति, कृदन्त आदि का अर्थ अभ्यासी स्वयं जान ले।

प्रमादवश, प्रज्ञाभाववश, जिनाज्ञा विरुद्ध या ग्रन्थकार के आशय विरुद्ध यदि कुछ प्रतिपादन हुआ हो एवं प्रिन्टींग के कारण जो कोई भी यहाँ गलती हुई हो वह गलती हेतु मिच्छामि दुक्कडं। पंडितजन हमारी भूलो को हमें ज्ञापित करे यह प्रार्थना।

– न्यायरत्न विजय

●●●

सम्पादकीय

पूर्वकाल में हस्तलिखित प्रतियाँ की प्राप्ति ही दुर्लभ थी। और टेक्नोलोजी भी इतनी आगे बढ़ी हुई नहीं थी। इसके बावजूद अथाग परिश्रम करके पूर्व सम्पादक ने जो कार्य किया था, आपकी वह श्रुतभक्ति को नतमस्तक वन्दन करते हैं।

इस चरित्र को प्राचीन [१]चार हस्तलिखित प्रतिओं से शुद्ध करने का हमने प्रयास किया है। इन आदर्शो की सहायता से अनेक पाठो को शुद्ध किये गए हैं।

पूर्व प्रकाशक ने 'अ' एवं 'ब' संज्ञा से बहुत सारे पाठान्तर निदर्शित किये हैं। वह प्रत कौन सी हैं उनका उल्लेख उनकी प्रस्तावना में किया हैं। हमारे संशोधन कार्य में हमने देखा है कि 'प.' एवं 'ह.' संज्ञा वाली प्रतो के साथ 'अ' एवं 'ब' संज्ञा के पाठो की ज्यादा समानताएँ दिखती हैं। जबकि 'ज.' एवं 'क.' संज्ञा वाली प्रतों में ज्यादा समानता दिखी हैं। सब से शुद्ध प्रत हमने 'ज.' संज्ञावाली पाई हैं। और हमने उनके पाठो को ही ज्यादा आधार बनाये हैं।

यद्यपि 'ज.' प्रत अति क्लिष्ट, अति गीच एवं अति छोटे अक्षर में लिखि गई हैं। तथापि ग्रन्थ रचना के २० साल बाद ही प्रतिलिपी होने के कारण अपने आप उसका महत्त्व बढ़ जाता हैं।

कई जगह पर पूर्व प्रकाशक निर्दिष्ट पाठान्तर हमारी समझ में नहीं आए हैं। तथापि उन पाठो को पूर्ववत् रखे हैं। चरित्र में भी कई जगह हमें अशुद्धियाँ लगती है। कई जगह बात समझ नहीं आई है। फिर भी हम पूर्णतः हस्तलिखित प्रतियाँ के प्रति वफादार रहे हैं। हमारी मति से हमने कहीं पर भी पाठ सुधारे नहीं हैं।

जहाँ भी पाठान्तर हैं वहाँ मूल ग्रन्थ में आङ्ग्लभाषा में 1, 2, 3, 4 करके हमने नंबर दिये हैं और नीचे उसका पाठान्तर दिया हैं।

विषमपद की टीप्पणी में हमने शक्यतः शब्दकोश आदि का उपयोग किया हैं। जहाँ बहुत खोजने के बाद भी हमें अर्थ पता नहीं चला, वहाँ अन्य अन्य विद्वानो से विमर्श किया हैं। तथापि जो शङ्का रह गई है उनका संभवित अर्थ हमने हमारी मति से लिखा हैं। आज भी कुछ स्थान शङ्कित हैं। पूर्व सम्पादक कुछ टीप्पण की हमने यथातथ यहाँ रखी हैं। उनके लिए पूर्व सम्पादक पूज्यश्री के हम ऋणी हैं।

---

१. हस्तलिखित प्रतियाँ का परिचय → ज. = जैसलमेर - No. 248 - Page. 157 / र.सं. 1161.
क. = खंभात - No. 205 - Page. 169 / र.सं. 1197.
ह. = पाटण पा.ता.हे.सं. - No. 124 - Page. 269
प. = पाटण पा.ता.खे.त. - No. 7 - Page. 208

चरित्र में बीच-बीच में आगे कौन सा विषय आ रहा हैं उन विषय का प्रगटीकरण हमने थोड़े शब्द में ( ) ऐसी निशानी बनाकर दिखाया हैं। वाचक उसको नहीं पढ़ना चाहे तो भी चरित्र का रसास्वाद अखण्डित ही रहेगा।

विषयविस्तार में हमने इस ग्रन्थ की विस्तृत अनुक्रमणिका दिखाई हैं। उसमें यदि कोई महात्मा की देशना की बात हो तो लिखा कि 'धर्माचार्यस्य धर्मकथा'। उसके बाद धर्मकथा में दान की बात आई, तो थोड़ी जगह छोड़कर लिखा की 'दानधर्मस्य वार्ता'। उस दान धर्म में भी अभयदान की बात आई तो फिर थोड़ी जगह छोड़कर लिखा कि 'अभयदानमाहात्म्यम्'। इस प्रकार 'मूल विषय - पेटा विषय - प्रपेटा विषय' ऐसे तीन विभाग में हमने विषयविस्तार दिखाया हैं। जिससे विद्यार्थी एवं संशोधक को चरित्र के पदार्थ जानने में सरलता महसूस होगी।

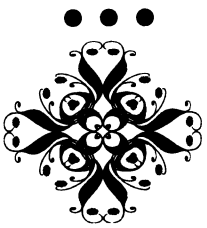
इस ग्रन्थ के सुभाषितो को प्रथम परिशिष्ट में समाविष्ट किये गये हैं। इनके अलावा ग्रन्थकार ने जगह जगह पर दुर्लभ मनुष्य जीवन की सफलता का श्रेष्ठ 'vision' अति सरल भाषा में दूध में शक्कर की तरह प्रस्तुत कीया हैं। अगर वाचक रुक रुक कर रसास्वाद लेता हुआ यात्रा करेगा तो अवश्य लाभान्वित होगा। जैसे कि 'अप्पो वि महामंतो उच्चाड़इ दुट्ठवेयालं ॥ श्लोक ७३० ॥

चरित्रकार आ.भ.श्री नेमिचन्द्रसूरिजी ने जो श्लोक आगमादि ग्रन्थो से यहाँ प्रस्तुत किये हैं, एवं जिस बात को बहुत ही संक्षिप्त में बताई है, उन सबकी विस्तृत टीका तद् तद् ग्रन्थो से प्राप्त करके हमने परिशिष्ट नं० ६ में प्रकाशित की है। उन ग्रन्थो के सम्पादक महात्माओ को भी मैं नम्रता से वंदन करता हूँ। विस्तारुचि वाला पाठक उन सब को पढ़कर अपने ज्ञान को विस्तृत करेगा।

मूल चरित्र पढ़ते पढ़ते जहाँ जहाँ ★ एसी निशानी दिखे। वहाँ समजना कि इस श्लोक की टीका - विशेषार्थ परिशिष्ट नं ६ में दर्शाया गया है। परिशिष्ट नं. ६ को पढ़ने से मूल चरित्र की बात अत्यन्त सुस्पष्ट हो जाएगी।

इस चरित्र के संशोधन-सम्पादन-टीप्पण आदि में पूर्ण सावधानी रखने के बाबजूद मेरे क्षयोपशम की मर्यादा के कारण कुछ गलतियाँ हो सकती हैं। उन सब गलतियो के लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। विद्वज्जनो को विनंति करता हूँ कि वह गलतियाँ मुझे दिखलाए ताकि मैं और अच्छा कार्य कर पाऊँ। यही एक मेरी आकांक्षा हैं।

— न्यायरत्न विजय



आज आनन्द भयो....

याद करत जब ही तोहे ऐसो लागे,
आयखु आखु रोमे रोमे अत्तरजी...

(१) प.पू. श्रुतस्थविर मुनिप्रवर श्री जंबूविजयजी महाराजा ने हस्तलिखित प्रतो की xerox copy करवा कर श्रीसंघ की सर्वश्रेष्ठ सेवा की है। उन हस्तप्रतो से हमने संशोधन का कार्य कीया है। अतः सर्वप्रथम पू.पादश्री को कृतज्ञता से वन्दन करता हूँ।

(२) छोटे से छोटे कार्य से लेकर बड़े से बड़े कार्य में जिनकी सहायता के बिना आज इस चरित्र का प्रकाशित होना असम्भव ही था। ऐसे प.पू.आ.भ.श्री मुनिचन्द्र-सूरीश्वरजी महाराजा को वन्दन करते हुए अत्यधिक आनन्द की अनुभूति करता हूँ।

(३) भवोदधितारक मेरे गुरुभगवन्त प.पू.मुनि श्री राजरत्न विजयजी म.सा. के अनगिनत उपकारो के प्रति मैं सदैव नतमस्तक हूँ। आपका अविरत उपकार ही मेरा जीवनस्रोत रहा हैं। आपके असीम वात्सल्य से हंमेशा तरबतर हूँ।

(४) प्रस्तुत सम्पादन में उपयोगी खंभात एवं जैसलमेर के प्रत की xerox प.पू. श्रुतस्थविर मुनि श्री जंबूविजयजी म.सा. के औदार्यपूर्ण सहयोग से श्री नेमि-विज्ञान-कस्तूरसूरि ज्ञानमन्दिर-सुरत के प्रिन्ट विभाग से प.पू.आ.भ.श्री सोमचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. एवं प.पू.मुनिश्री सुयशचन्द्र-सुजसचन्द्र विजयजी म.सा. की प्रेरणा से मिली है। इस हेतु पू. गुरुभगवन्तो से मैं अनुगृहीत हूँ, एवं संस्था के व्यवस्थापक को शतशः धन्यवाद।

(५) इस चरित्र को अपना कार्य मानकर इसे संशोधित संमार्जित करने वाले प.पू.मुनि श्री निर्मलयश विजयजी म.सा.ने अत्यधिक सहायता की हैं। प.पू.मुनि श्री त्रिलोकवल्लभ विजयजी म.सा. की सहायता भी अविस्मरणीय हैं। प.पू.मुनि श्री शुक्लध्यान विजयजी म.सा. ने अपने संयम जीवन के दूसरे ही वर्ष में यह ग्रन्थ संशोधित कर के अपनी विनम्र विद्वत्ता का परिचय दिया हैं।

(६) प्रूफ रीडींग की कठिनाई भरी यात्रा को आनन्द की यात्रा बनाने वाले प.पू.तपस्वी मुनि श्री भव्यरत्न विजयजी म.सा., प.पू. मुनिश्री मृदुसुन्दर विजयजी म.सा., प.पू. मुनिश्री सिद्धिरत्न विजयजी म.सा. की श्रुतभक्ति की अनुमोदना करता हूँ।

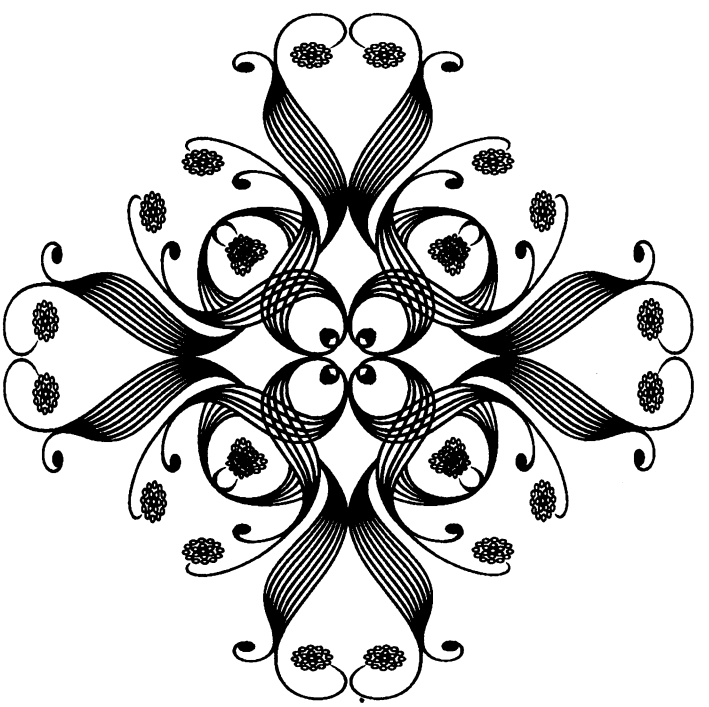
(७) प.पू.विद्वद्वर्य मुनि श्री भव्यसुन्दर विजयजी म.सा. की सूक्ष्म दृष्टि का लाभ मिलने से बहुत ही आनन्द आया है। उनके निःस्वार्थ स्नेह से अभिभूत हूँ।

(८) हमारे सभी कार्यो में जो दिन-रात सहायता के लिए खड़े रहते हैं । हस्तलिखित प्रतियाँ भिजवाना, प्रिन्टींग की जिम्मेदारी सम्भालना, ऐसे जटिल कार्यो को जो सदा उत्साह से करते हैं । ऐसे चिरागभाई जयन्तीलाल शाह को तहेदिल से धन्यवाद देता हूँ ।

(९) आ.श्री हेमचन्द्राचार्य ज्ञानभण्डार-पाटण की दो प्रतो की xerox आ.श्री कैलाशसागर सूरि ज्ञानमन्दिर - कोबा के सहयोग से हमें मिली हैं । उनको यहाँ हृदय से स्मृति पथ पर लाता हूँ ।

(१०) इस ग्रन्थ के टाईप सेटींग करने वाले अखिलेशजी मिश्रा एवं प्रिन्टींग करने वाले शिवकृपा ऑफसेट वाले रितीश भाई को शतशः धन्यवाद ॥

• • •



महावीरचरियं में निर्दिष्ट विशिष्ट बाते एवं मतांतर

१. संमत्तणाणवरचरणरयणपरिमंडियं भुवणतिलयं ।
पणमह जिणिंदपणयं, सिरिसंघं गुणगणमहग्घं ॥८॥

ग्रन्थ की आदि में परमात्मा वि. को नमस्कार करने की परंपरा हैं । महावीरचरियं में ग्रन्थकारश्री ने पंचपरमेष्ठि को वंदन करने के बाद श्रीसंघ को बड़े महर्घ्य शब्दो से वंदन कीया हैं । जो विशिष्ट बात हैं ।

२. अस्संजयस्स मुणिणो, किच्चं न कुणंति संजमपहाणा ।
न य कारिउं पि जुज्जइ, वेयावच्चं इमे मज्झ ॥११९॥

बिमारी में जब कोई भी साधु भगवंत मरीचि की सेवा नहीं करते हैं, तब उन्होंने साधु भगवन्त के लिए कुछ गलत सोचा ही नहीं, अपि तु वह मानते है कि 'सर्वविरतिधर साधु भगवंत असंयत बने हुए मेरी सेवा न करे, वह योग्य ही है । और मुझे भी उनके पास से सेवा लेनी उचित नहीं हैं' । (प्रतिकूल परिस्थिति में एसा निर्मल विवेक !!)

३. इय चिंतिय सो भणिओ, पडिपुण्णफलं जईण धम्मम्मि ।
भो कविल ! केत्तियं पि हु, मज्झ वि दिक्खाए अत्थि त्ति ॥१२४॥

कपिल ने जब मरीचि को पूछा कि क्यां आपकी दीक्षा में धर्म नहीं हैं ? तब मरीचि ने कहा कि 'धर्म वहाँ भी हैं और यहाँ भी हैं' । यह बात अति प्रसिद्ध हैं, मगर यहाँ लिखा हैं, मरीचि ने कहाँ कि 'धर्म का सम्पूर्ण फल यति दीक्षा में है, किञ्चित् फल मेरी दीक्षा में भी हैं' ।
(यह अगाढ मिथ्या-भाषण परमात्मा के आत्मद्रव्य की विशिष्टता दिखलाता हैं ।)

४. पालंताण य रज्जं, अयलतिविट्ठूण गरुयनेहाणं ।
सेज्जंसजिणसमीवे, पावियसम्मत्तरयणाणं ॥२९५॥

श्रेयांसनाथ परमात्मा के पास त्रिपृष्ठ एवं अचल ने सम्यग्दर्शन पाया था ।

५. गब्भट्ठाणं परिसोहिऊण, साहरइ तिसिलकुच्छीए ।
सुमिणे य पडिनियत्ते ते, पेच्छइ माहणी सा वि ॥६५३॥

इन्द्र की आज्ञा से हरिनैगमेषी देव ने परमात्मा को जब त्रिशला माता की कुक्षि में स्थापित कीए। तब देवानन्दा माता को एसा स्वप्न आया कि त्रिशला माता ने मेरे १४ स्वप्न हरण कीए। एसी बात यहाँ पर नहीं हैं।

६. हरिणगमेसिसमप्पियमह, भयवंतं सकरयले धरिउं।
पंचविउव्वियरूवो मेरुं, संपत्थिओ सक्को ॥७०२॥

जन्माभिषेक हेतु जब परमात्मा को लेने के लिए इन्द्र माता के पास आते हैं, तब इन्द्र खुद परमात्मा को ग्रहण नहीं करते। मगर हरिनैगमेषी देव इन्द्र के हाथों में परमात्मा को थामते हैं।

७. लोयं च पंचमुट्ठिं करेइ, सक्को पडिच्छए केसे।
अणुणविय जिणवरिंदं, खीरसमुद्दम्मि पक्खिवइ ॥८४९॥

लोच करने के बाद इन्द्र परमात्मा की आज्ञा प्राप्त कर के परमात्मा के बाल क्षीरसमुद्र में डालते हैं।

८. दट्ठूण जिणं सो, साइयत्थमब्भुट्ठिओ गरुयनेहं।
कइवि दिणे तत्थच्छिय, वच्चंतो तेणिमं भणिओ ॥८९६॥

'दूइज्जंत तापस के सामने भगवान ने बाँहें फेलाई थीं' ऐसी बात यहाँ नहीं है।

९. वच्चंतस्स य पडियं, खंधाओ सुवन्नवालुयापुलिणे।
वत्थं कंटियलग्गं, घेत्तूण य सो दिओ वलिओ ॥९६०॥

'परमात्मा के कंधे से वस्त्र गिर जाने के बाद परमात्मा ने पीछे देखा' ऐसी बात यहाँ पर नहीं है।

१०. तइयदिणे परिकुविओ, भणइ य मारेमि जइ न साहेह।
ताहे एगा थेरी, चिंतइ किं मज्झ जीएणं ? ॥१३०३॥

चन्दनबाला को छट्ठ ही होता हैं। अट्ठम नहीं।

११. सा तयवत्था सुमरिय, पिउगेहं हत्थिणि व्व नियजूहं।
मुत्ताहलसरिसाइं, रोयइ अंसूणि मुयमाणी ॥१३११॥

'अपनी पूर्वावस्था को याद करते हुए, चन्दनबाला जब रो रही थी उसी समय परमात्मा का आगमन हुआ और परमात्मा का पारणा हुआ' । परमात्मा लौट कर वापस आाए ऐसी कोई वात यहाँ नहीं हैं ।

१२. तासु य ससोणियासुं, कड्ढिज्जंतासु वेयणवसेणं ।
मुक्को महंतनाओ, तत्थ महाभइरवं जायं ॥१३५०॥

'परमात्मा के कान से जब खिल्ले निकाले गए । तब परमात्मा के मुंह से चीख नीकल गई' । मगर उस आवाज़ से शीला फट गई ऐसी बात यहाँ पर नहीं हैं ।

१३. तस्स अधिइविगमत्थं, तावससंबोहणं च नाऊणं ।
पभणइ वीरो गोयम !, वंदसु अट्ठावयजिणिंदे ॥१७७९॥

'कैवल्यप्राप्ति के लिए गौतमस्वामिजी की अधृति को देखकर परमात्मा ने गौतमस्वामिजी को सामने से अष्टापद की और प्रस्थान करने के लिए कहा' ।

१४. ता गच्छ तुमं मिंढियगामं, मग्गाहि रेवई मज्झ ।
गाहावईण कज्जे, पज्जुसियं ओसहं कप्पं ॥१९३०॥

'रेवती श्राविकाने दो पाक बनाए थे - एक कोलापाक एवं दूसरा बीजोरापाक' । अथवा 'रेवती श्राविका ने दो कोलापाक बनाए थे - एक घर हेतु दूसरा परमात्मा हेतु' । ऐसी कोई बात यहाँ नहीं है ।

१५. देवाउयं निबंधइ, परित्तसंसारियत्तणं कुणइ ।
दिव्वाणि तत्थ पंच य, पाउब्भूयाणि सयराहं ॥१९३५॥

'सिंह अणगार को वहेराते वहेराते रेवती श्राविका ने देवायुष्य ही बांधा हैं ।'
(तीर्थंकर नामकर्म के बंध की बात यहाँ नहीं हैं ।)

१६. अत्थो गओ अणत्थो, गोभद्दो वि य विसायमावन्नो ।
संपत्तो पंचत्तं, अहो ! हु सोवक्कमं जीयं ॥१९८८॥

'शालिभद्र जब भद्रा माता के गर्भ में थे, तब प्रवहण नाश के समाचार से गोभद्र शेठ का निधन एवं स्वर्गगमन हुआ' ।

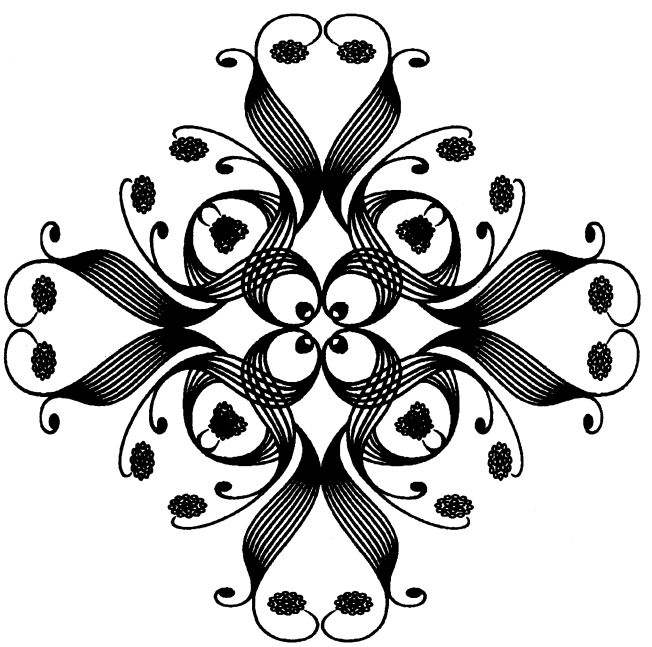
१७. जगचिंतामणि ! जगनाह !, जगगुरु ! जगरक्खण !;
जगबंधव ! जगसत्थवाह !, जगभाववियक्खण ! ।
जय जय जिणवरवद्धमाण !, सरणागयवच्छल !;
जय करुणारस ! सुहनिहाण !, भवतारणपच्चल ! ॥२०६५॥

श्रेणिक महाराजा शालीभद्रजी के गृह-मंदिर में परमात्मा की स्तुति करते हैं । यह स्तुति से सिद्ध होता है कि 'शालिभद्र के घर पर श्री महावीर प्रभु का गृह जिनालय था' ।

१८. पव्वज्जासामग्गिं, तब्भज्जा तस्स निच्छयं नाउं ।
रुयमाणी गंतूणं, जहवत्तं कहइ भाउस्स ॥२११०॥

'धन्य कुमार शालिभद्रजी को बुलाने के लिए उनके घर पे नहीं गए थे । वह चारित्र लेने हेतु सीधे परमात्मा के पास पहुँचे । सुभद्रा ने शालिभद्रजी के पास जाकर सब बात बताई और शालिभद्रजी चारित्र हेतु परमात्मा के पास पहुँचते हैं' ।

• • •



अथ रसास्वादम्

अन्दर कितना भरा पड़ा हैं कोई न जाने,
बाहर से तो सब को दिखे अक्षरजी....

१. पत्तो कमेण गेहं, कालेण य सुद्धधम्मपरिणामो ।
सोहम्मे उववन्नो पलियाउ सुरो महिड्ढीओ ॥४६॥

ग्रन्थकार श्रीनेमिचन्द्राचार्यजी ने 'शुद्ध धर्म' ऐसा शब्द लिखकर प्रबुद्ध वाचक को धर्म और शुद्धधर्म की भेदरेखा समझने का दिग्दर्शन ग्रन्थ के प्रारंभ में ही दिखाया हैं ।

२. जइ ताव एत्तिओऽवि हु, बहुनीयट्ठाणकारणं जाओ ।
भगवंतस्स मओ, ता बहुमयकारीण किं भणिमो ? ॥११६॥

परमात्मा के जीव ने यदि थोड़ा मद कीया तो यह फल मीला । जो लोग बहुत मद करते हैं उनका क्या होगा ? ।

(यह हृदयंगम उपदेश दिल को छू जाता हैं ।)

३. पसमाईगुणकलिया, कव्वालंकारवागरणकुसला ।
सिद्धंतमहोयहिणो, जत्थ य विहरंति मुणिवसहा ॥६३६॥

मुनि भगवन्त के आन्तर-बाह्य गुण वैभव को बताने वाली यह गाथा ग्रन्थकार श्री की कम शब्दों में अभिप्रेत अर्थ दिखाने की कुशलता के प्रति बहुमान भाव जगाती हैं।

४. एको च्चिय दोसो णवरि, तत्थ सावयकुलेसु सुपसिद्धो ।
अप्पधणोऽवि य धम्मे, महंतमत्थव्वयं कुणइ ॥६३७॥

अन्नोऽवि तत्थ दोसो, रायंगणरायपहे विपणिपहे ।
वियरंतभग्गपसरा, निच्चं चिय मत्तमायंगा ॥६३८॥

ग्रन्थकारश्री की विद्वत्ता का यह बेनमून उदाहरण हैं । विरोध अलङ्कार की यहाँ श्रेष्ठ मधुरता दर्शाइ गई हैं ।

५. ते वंचिया वराया, विहलं चिय तेसिं माणुसं जम्मं ।
सयलसुहाण निहाणं, णाह ! न दिट्ठो तुमं जेहिं ॥७५१॥

ग्रन्थकारश्री की यह उत्तम प्रभुभक्ति ग्रन्थ में कदम कदम पर देखने मिलती हैं ।

६. सो तावसासमाओ, तेसिं अप्पत्तियं मुणेऊणं ।
परमं अबोहिबीयं, तओ गओ हंत कालेऽवि ॥९०२॥

परमात्मा खुद निर्दोष होते हुए भी 'मेरे निमित्त से अन्य तापसो को अप्रीति होती हैं' । यह जानकर परमात्मा वर्षाकाल में भी आश्रम से निकल गए । यहाँ लिखा हैं कि अपने आचरण से यदि अन्य को अप्रीति होती हैं, तो वह अप्रीति 'परम अबोधिबीज' हैं ।

७. उवविसह त्ति भणिए, इमेण किं एत्तियाण होहि त्ति ? ।
किं तु गुरु च्चिय जाणइ, जुत्ताजुत्तं ति चिंतेउं ॥१८३९॥

गुरु गौतमस्वामिजी १५०० तापसो के पारणे में जब थोड़ी सी खीर लेकर आये । तब एक क्षण तापसो मन में संशयित हुए कि 'इतनी सी खीर में क्या होगा ?' मगर दूसरी ही क्षण उन्होंने सोचा कि 'जिनको हमने गुरु बनाए हैं, उनकी चेष्टा के उपर सोचने का हमें अधिकार ही कहाँ है ?' विनम्र भाव से सब पारणा हेतु बेठ गये । (यहाँ गुरु समर्पणता की चोटी दर्शाई गई है ।)

८. एवं हिओवएसा, पडिबुद्धा तत्थ पाणिणो बहवे ।
सामिस्स तदा जाओ, रोगायंको सकम्माओ ॥१९२२॥

'गोशालक की तेजोलेश्या से परमात्मा को छह मास तक खून की दस्ते लगी थी ।' यह अति प्रसिद्ध बात हैं । मगर यहाँ पर ऐसा कहा है कि 'परमात्मा को अपने पुराने कर्मोदय के कारण खून की दस्ते लगी' ।

(प्रबल निमित्त कारण गोशालक होने के बावजूद उसका नाम भी न लिखकर सिर्फ परमात्मा के कर्म को ही कारण बताकर ग्रन्थकार ने जिनशासन का सर्वश्रेष्ठ सिद्धान्त यहाँ प्रस्थापित किया है । कमाल ! !)

९. कंबलरयणसरूवं, सुणिऊणं चेल्लणा भणइ रायं ।
किं मम कज्जे पिययम !, एक्कं पि न तं तुमे गहियं ? ॥२०१६॥

रत्नकम्बल की किंमत सुनकर श्रेणिकराजा ने नहीं खरीदे ऐसी बात जब चेल्लणा महारानी को पता चली । तब उनके साहजिक प्रतिभाव में गर्भित मोहनीय की कूटनीति को ग्रन्थकार ने जिस प्रकार से उजागर की हैं । वह वास्तव में अद्‌भुत हैं। पहले देवी बहुत प्यार से बोलते हैं कि 'हे प्रियतम ! आपने मेरे लिए एक भी रत्नकंबल न खरीदा ?'

१०. चिट्ठा किमेरिसी तुह, कत्तणयज्जियधणस्स व महंती ? ।
अहवा सोभणवत्थुं, मम दिन्नं तुह न पडिहाइ ॥२०१७॥

फिर आगे बढ़ते हैं और ताने मारते हैं कि 'कोई भी अच्छी चीज मुजे मील जाए एसा आपको पसंद ही नहीं आता है न !' ।

११. तुज्झ पसिद्धिं सोउं, जे वणिणो आगया इह नरिंद ! ।
तेसिं पुरओ तुमए, एवं लहुईकओ अप्पा ॥२०१८॥

तं मोल्लं नो पुज्जइ जइ तुह, रयणावलिं इमं गेण्ह ।
किणसु य कंबलरयणं, विगयासा ते वि मा होंतु ॥२०१९॥

चेल्लणाजी ने देखा कि राजा के उपर उनकी बात की कोई असर नहीं हुई हैं । तब दूसरे तरीके से अपनी बात मनवाने का प्रयत्न करते हैं । 'राजन् ! आपका बहुत बड़ा नाम सुनकर जो व्यापारी आपके पास आए थे । उनके पास से एक भी रत्नकंबल नहीं खरीदकर आपने आपका मान उनके सामने कम कीया हैं । और वह दाम बहुत ज्यादा लगते हो और आपकी खरीदने की ताकत न हो तो यह मेरे रत्न के हार के बदले में आप वो रत्नकंबल खरीदो। ताकि वह व्यापारी आपके राज्य से निराश होकर न लोटे' ।

ग्रन्थकार ने मानवीय वृत्तिओ के अनोखे रंग यहाँ बखूबी दिखाए हैं । Emotional Black mailing की यह अनोखी बात बड़े मजे़ से वाचको के सामने पेश की हैं ।

१२. तं सोउं सुट्ठुयरं रुट्ठा, सा चेल्लणा भणइ एवं ।
वाणिगिणीए वि समं, सत्तं तुह नत्थि नरनाह ! ॥२०२१॥

पत्नी का ऐसा उपालम्भ प्राप्त करने के बाद श्रेणिकराजा ने रत्नकम्बल बेचने वाले व्यापारी को बुलाए और कहा कि 'एक रत्नकम्बल मुझे खरीदनी हैं । तब 'वह सब भद्रा माताने खरीद लिए हैं' । व्यापारी की यह बात सुनकर चेल्लणा महारानी ने कहा

कि महाराज ! एक बनिये के स्त्री जीतना भी आपका सत्त्व नहीं हैं ।

(यह अभिव्यक्ति बोध देती है कि जीव के भीतर में कुछ और होता हैं जबकि बाहर में दिखा रहा हैं कुछ और) ग्रन्थकार ने इस प्रसंग को इस तरह प्रस्तुत करके मोहनीय की दुर्वारता की और ईशारा किया हैं ।

१३. तो विम्हिओ विचिंतइ, रायाऽहो ! सालिभद्दसामग्गी ।
ता सुकयत्थो अहयं, जस्स पुरे एरिसा वणिणो ॥२०२६॥

कम्बलरत्न की बात में शालिभद्रजी की ऋद्धि सुनकर मगधसम्राट श्रेणिक राजा को तनिक भी इर्ष्या नहीं हुई । बल्कि 'मैं बड़भागी हूँ कि मेरे राज्य में कुबेर जैसे वणिग् लोग रहते हैं' । ऐसा उन्होंने सोचा ।

('श्रेणिक राजा तीर्थंकर की आत्मा हैं' यह बात इसका उत्तम दृष्टान्त हैं ।)

१४. न य केणइ विन्नाया, ते मुणिणो आगया वि तो तत्थ ।
खणमेत्तं चिट्ठित्ता, अदीणचित्ता पडिनियत्ता ॥२१२६॥

दीक्षा के कई साल पश्चात् परमात्मा की आज्ञा प्राप्त करके धन्ना-शालिभद्रजी भद्रा माता के घर पर पहलीबार जब वहेरने पहुँचते हैं । तब सामने आवकार देने वाला कोई नहीं था । एक दो क्षण वहाँ रुककर जब वापस लौटते हैं तब उनकी अवस्था का कमाल का वर्णन यहाँ किया है । 'एक क्षण वहाँ रुककर सहज स्वस्थता के साथ वहाँ से चले गए' ।

(ऐसी अवस्था में भी चित्त में दीनता का प्रगटीकरण न हो यह कितनी उच्चतम सिद्धि हैं ।)

इस ग्रन्थ की बहुत सारी बाते, प्रचलित बातो से हटकर हैं । जैसे कि

→ परमात्मा पहले सांवत्सरिक दान देते हैं । बाद में नवलोकान्तिक देव परमात्मा को विनंति करने आते हैं । - श्लोक नं. ८१७

→ भगवान स्वजनो की अनुज्ञा लेकर विहार करते हैं । - श्लोक नं. ८५६

→ दीक्षा के प्रथम दिन उपसर्ग करने वाले ग्वाल को इन्द्र मारते हैं । - श्लोक नं. ८७७

→ चंडकौशिक सर्प को भगवान ने बुज्झ ! बुज्झ ! के अलावा और भी उपदेश दिया । श्लोक नं. ९८५-९८८

तो कुछ अति प्रसिद्ध बातो का यहाँ उल्लेख ही नहीं किया है । जैसे कि

→ प्रथम चातुर्मास में परमात्मा के पाँच अभिग्रह धारण का उल्लेख अदृष्ट हैं ।

→ जमालि के वृत्तान्त का कोई भी उल्लेख नहीं हैं ।

→ सूर्य-चन्द्र मूल विमान के साथ परमात्मा को वन्दन करने आते हैं । वह बात नहीं है ।

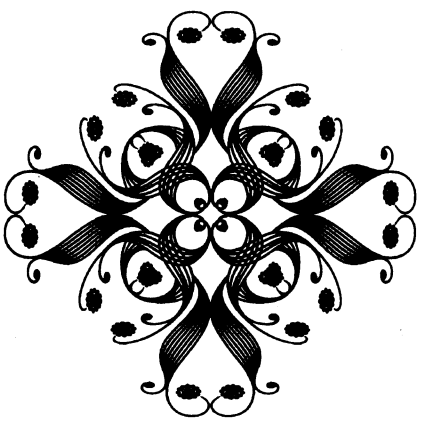
→ त्रिषष्टि में चित्रित गोशालक की विचित्र चेष्टाएँ यहाँ दृष्ट नहीं है।

संपूर्ण ग्रन्थ में कदम कदम पर सोचने के लिए मजबूर करने वाली परमात्मा की देशना, गुरूपदेश और सुक्तियाँ की पंक्तिओ से यह चरित्र लबालब भरा हुआ हैं। किञ्चित् रसास्वाद हेतु परिशिष्ट नं.-१ पढ़ें ।

परिशिष्ट विषय निदर्शन

- परिशिष्ट नं. १ - ग्रन्थ में उल्लिखित विशिष्ट सुभाषितो का संग्रह ।
- परिशिष्ट नं. २ - ग्रन्थ में निर्दिष्ट विशिष्ट विषयो का श्लोक नंबर के साथ निदर्शन।
- परिशिष्ट नं. ३ - ग्रन्थ में प्रदर्शित विशेष बातें की अनुक्रमणिका ।
- परिशिष्ट नं. ४ - ग्रन्थ में प्रयुक्त धर्मदेशनाए ।
- परिशिष्ट नं. ५ - ग्रन्थ अन्तर्गत परमात्म स्तवनाए ।
- परिशिष्ट नं. ६ - ग्रन्थगत आगमादि श्लोको की टीका ।

• • •



प्रस्तावना

– प.पू.आ.भ.श्री मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजा

श्रमणभगवान महावीर प्रभुना जीवनचरित्रना स्त्रोत

आचारांगसूत्र, स्थानांगसूत्र, समवायांगसूत्र, भगवतीसूत्र, ज्ञाताधर्मकथा, अन्तकृद्दशा, अनुत्तरोपपातिक, विपाकसूत्र, औपपातिकसूत्र, राजप्रश्नीयसूत्र, निरयावलिया, कल्पावतंसिका, पुष्पिका, उत्तराध्ययन, नंदिसूत्र, दशाश्रुतस्कंध (कल्पसूत्र) आ बधा आगमग्रंथोमां प्रभु महावीरना जीवनना प्रसंगो छूटा छवाया मळे छे.

आवश्यकनिर्युक्ति, विशेषावश्यकभाष्य, आवश्यकचूर्णि वगेरे आगमोना व्याख्या-साहित्यमां पण प्रभु महावीरना जीवनप्रसंगोनुं आलेखन जोवा मळे छे.

चउपन्न महापुरुषचरियं (कर्ता-शीलांकाचार्य, दसमो शतक)
महावीरचरियं (गद्य-पद्य, कर्ता-गुणचन्द्रसूरि, र.सं. ११३९)
महावीरचरियं (पद्य, कर्ता-आ.नेमिचन्द्रसूरि, र.सं. ११४१)
त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र (पर्व १०, कर्ता-क.स.हेमचन्द्रसूरि)
लघुत्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र (कर्ता-मेघविजय गणी)

आ रीते श्वेताम्बर परंपरा मान्य आगमग्रंथोमां थोडुं थोडुं चरित्र मळे छे. स्वतंत्र चरित्र ग्रंथोमां तो क्रमशः विस्तारपूर्वक मळे छे. त्रिषष्टिस्मृति, महापुराण चरित, पुराणसारसंग्रह, रायमल्लाभ्युदय, चतुर्विंशतिजिनचरित, वीरोदयकाव्यमां पण वीर चरित्र छे.

दिगंबर जैन साहित्यमां उत्तरपुराण (आ. गुणभद्र)
वर्धमानचरितम् (महाकवि आसग, शक सं. ९१०, इ.स. ९९९)
वीरवर्धमानचरितम् (भ. सकलकीर्ति, पंदरमी सदी).

अपभ्रंशभाषमां ग्रंथो → तिसट्ठि महापुरिस गुणालंकार, महापुराण (महाकवि पुष्पदन्त, ९मी १०मी सदी) महावीरचरित (रइधू) वड्ढमाणचरिउ (श्रीधर) वर्धमानकाव्य (जयमित्तहल्ल कवि)

आ उपरांत राजस्थानी-गुजराती (मारु-गूर्जर) भाषामां महावीर रास वगेरे रचनाओ थई छे.

बौद्धसाहित्यमां प्रभु महावीरनो उल्लेख 'निगंठ नातपुत्त' नामथी आवे छे. मुनिश्री नगराजजीए 'आगम और त्रिपिटक'मां प्रभु अने प्रभुना शिष्योना उल्लेख आवता होय एवा

एक्कावन स्थळोनो निर्देश कर्यो छे. एमां बत्रीस संदर्भो मूळ त्रिपिटकना छे. मज्झिमनिकायना दस, दीर्घनिकायना चार, अंगुत्तरनिकाय अने संयुक्तनिकायमां सात सात, सुत्तनिपातमां बे, विनयपिटकमां बे संदर्भ छे.

आम भ.महावीरप्रभुनुं क्रमबद्ध चरित्र सौ प्रथम 'चउप्पन्न महापुरुष चरियं' ९मा सैकामां मळे छे. जो के स्वतंत्र 'महावीरचरियं' तो बारमा सैकामां मळे छे. वि.सं. ११३९मां गुणचन्द्रसूरिए रचेल गद्य-पद्य अने त्यार पछी बे ज वर्षमां वि.सं. ११४१ दरम्यान आ.नेमिचन्द्रसूरिजीए रचेल प्रस्तुत पद्य महावीरचरियं नुं प्रकाशन वर्षो पूर्वे अनुक्रमे देवचंद लालभाई ग्रंथमाळामां अने आत्मानंद जैन सभा द्वारा प्रगट थयेल छे.

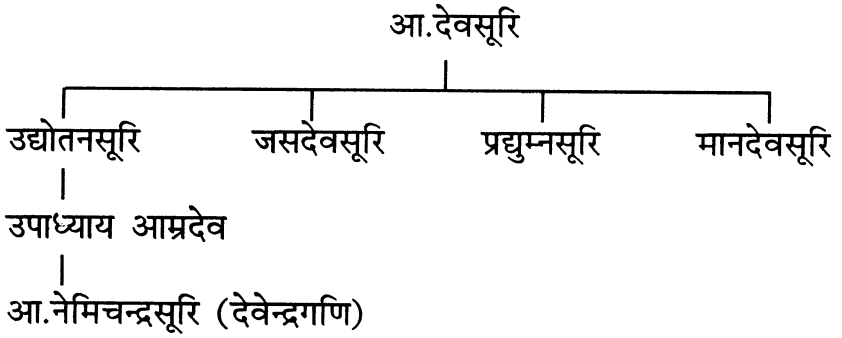
गद्य-पद्य महावीरचरित्रनुं पुनः संपादन विद्वद्वर्य मुनि निर्मलयश वि.म.ए संस्कृतछाया साथे ताजेतरमां चार भागमां प्रगट करेल छे. पद्य महावीरचरियंना पण पुनः संपादननी अपेक्षा हती. विद्वद्वर्य मुनि श्री न्यायरत्नवि.म.ना प्रस्तुत संपादनथी आ अपेक्षा पूर्ण थई रही छे. मुनिश्रीने लाख लाख धन्यवाद ! विद्वद्वर्य संपादकश्रीए 'पासनाह-चरियं'नुं संस्कृतछाया साथे ताजेतरमां संपादन कर्युं छे. (प्रस्तुत 'महावीरचरियं' संस्करणमां संपूर्ण छायाना बदले कठीन शब्दोना शब्दार्थो पूरती मर्यादित छाया करी छे.)

ग्रन्थकार

प्रस्तुत 'महावीरचरियं'ना रचयिता आ. नेमिचन्द्रसूरिजीए ग्रंथना अंते प्रशस्ति आपी छे ते मुजब -

चन्द्रकुल वडगच्छमां आ.उद्योतनसूरि → उपाध्याय आम्रदेव → आ. नेमिचन्द्रसूरि

ग्रन्थकारे पोताना 'रयणचूडचरियं'मां आपेली विगत प्रमाणे - गुरुपरंपरा आ प्रमाणे मळे छे.



द्वितीय नेमिचन्द्रसूरि रचित अनन्तनाथ चरित्रनी प्रशस्तिथी एक वस्तु स्पष्ट समजाय छे के - वडगच्छनी परंपरामां बे नेमिचन्द्रसूरि थया छे. प्रथम नेमिचन्द्रसूरि आ.आनंदसूरिना त्रण पट्टधरोमां प्रथम छे.

आ प्रथम नेमिचन्द्रसूरिजीनी ग्रंथरचना विषे जणावतां अनन्तनाथचरित्रनी प्रशस्तिमां जणाव्युं छे के -

जेण लहुवीरचरियं रइयं तह उत्तरज्झयणवित्ति ।
अक्खाणयमणिकोसो य रयणचूडो य ललियपओ ॥६॥

आम प्रस्तुत महावीरचरियं, उत्तराध्ययनसूत्र उपरनी प्राकृतवृत्ति तरीके जाणीती 'सुखबोधा' वृत्ति, आख्यानकमणिकोश, रत्नचूड वगेरे ग्रंथो ग्रंथकारश्रीए रच्या छे.

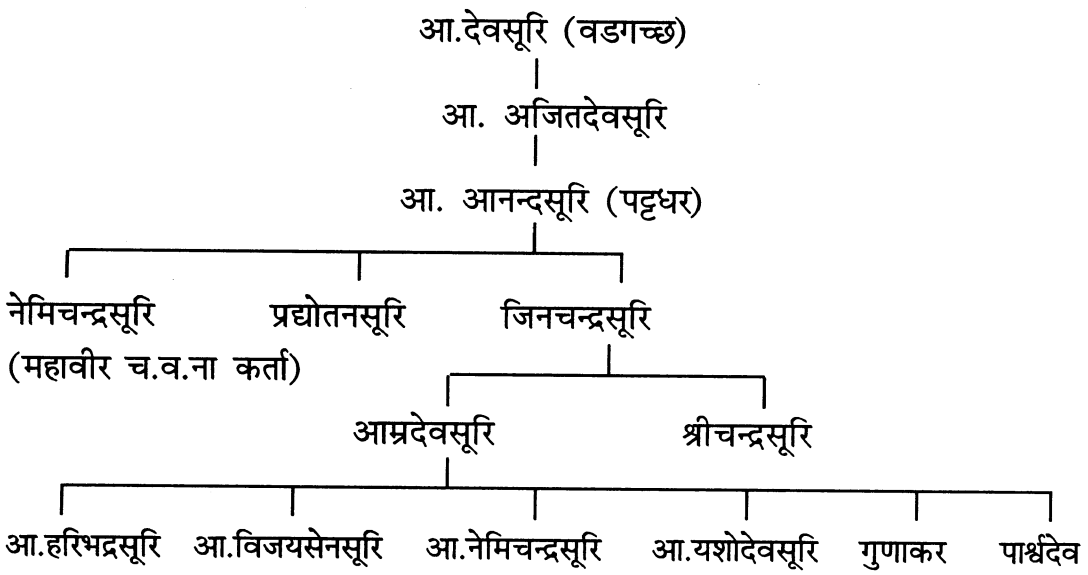
प्रथम नेमिचन्द्रसूरिना गुरुभाई जिनचन्द्रसूरिना शिष्य आ. आम्रदेवसूरिना शिष्य नेमिचन्द्रसूरि (बीजा) ए प्रवचनसारोद्धार, अणंतणाहचरियं, (र.सं. १२१६) जीवकुलक वगेरे रच्या छे.

प्रथम नेमिचन्द्रसूरि (देवचन्द्रगणि) उपा. आम्रदेवना शिष्य छे. बीजा नेमिचन्द्रसूरि (प्रवचनसारोद्धार व.ना कर्ता) आ. आम्रदेवसूरिना शिष्य छे. आम बंनेना नाम साम्य अने गुरुनाम साम्य अने गच्छ साम्यना कारणे क्यारेक क्यारेक बन्नेने एक गणवानी भूल पण थई छे.

ग्रन्थकारनी गुरुपरंपरा

ग्रंथकार आ. नेमिचन्द्रसूरि म. चंद्रकुल वडगच्छना एक तेजस्वी विद्वान छे. वडगच्छनी परंपरामां घणां विद्वान साहित्यकारो थया छे. संपूर्ण विगत माटे 'बृहद्गच्छ का इतिहास' डॉ. शिवप्रसाद (प्र. आ.ॐकारसूरि आ.भवन) जुओ.

द्वितीय नेमिचन्द्रसूरि रचित 'अनंतनाहचरियं'नी प्रशस्तिमां गुरुपरंपरा आ प्रमाणे मळे छे.



ग्रन्थ-ग्रन्थकार :

ग्रन्थकार आ. नेमिचन्द्रसूरि म. नो सत्ता समय तो १२मी सदी निश्चित छे ज. ग्रंथकारश्रीना जन्म समय, जन्मस्थळ विषे कोई उल्लेख मळतो नथी. ग्रंथकारनी आद्य ग्रंथरचना आख्यानकमणिकोश वि.सं. ११२९ पहेलां थई. अंतिम रचना प्रस्तुत 'महावीरचरियं' वि.सं. ११४१मां थई छे. ग्रंथरचनाना स्थळनो उल्लेख अमुक अमुक ग्रन्थरचनाना अंते ग्रंथकारश्रीए आप्यो छे ते प्रमाणे - 'रयणचूडचरियं'नो प्रारंभ डिंडिलपद अने पूर्णता चड्डावली एटले के चन्द्रावती (आबु पासे)मां थई. उत्तराध्ययनसूत्रनी 'सुखबोधा' टीकानी रचना अणहिलपुर पाटणमां थई. एटले ग्रंथकारश्रीनुं विचरण गुजरात अने राजस्थानमां हतुं एम समजाय छे.

ग्रंथकारश्रीनी कुल पांच रचना प्राप्त थाय छे.

१. **आख्यानकमणिकोश :** लगभग १२७ कथाओना खजाना जेवी आ कृतिनुं संपादन आगमप्रभाकर मुनि पुण्यविजयजी म.ए कर्युं छे. प्रकाशन प्राकृतग्रंथ परिषद् द्वारा थयुं छे. प्राकृत कथाओनी संस्कृत छाया साथे आनुं संपादन मुनि पार्श्वरत्नसागरजीए कर्युं छे. आनुं प्रकाशन चार भागमां आ. ॐकारसूरिज्ञानमंदिर ग्रंथावली सूरतथी थयुं छे.

२. **उत्तराध्ययन-सुखबोधावृत्ति :** वि.सं. ११२९मां रचायेली १३०० श्लोक प्रमाण आ वृत्तिमां पण प्राकृतभाषामां १२५ जेटली कथाओ छे.

३. **रयणचूडचरियं :**[१] प्राकृत भाषामां गद्य-पद्यात्मक आ ग्रंथ पण कथात्मक छे. ग्रंथकारश्री ज्यारे देवेन्द्रगणी तरीके गणीपदे बिराजमान हता त्यारे वि.सं. ११२९ पछी आ ग्रंथनी रचना थई छे. डॉ. हुकमीचंद जैने एक महानिबंध 'आ. नेमिचन्द्रसूरि कृत रयणचूडचरियं का समालोचनात्मक संपादन एवं अध्ययन' आ नामे रच्यो छे.[२] (आ ग्रन्थ अद्यावधि अप्रगट छे.)

४. **आत्मावबोधकुलक** अथवा **धर्मोपदेशकुलक.**

५. **महावीरचरियं :** २३८५ पद्य-३००० ग्रंथाग्र प्रमाण आ चरित्रनी रचना वि.सं. ११४१मां पाटणमां दोहडी शेठनी वसतिमां रहीने करी छे.

आम आ. नेमिचन्द्रसूरिए प्राकृत कथासाहित्यने समृद्ध करवामां सुंदर फाळो आप्यो छे ते स्पष्ट समजाय तेवुं छे. ग्रंथकारश्री प्राकृत उपरांत संस्कृत अने अपभ्रंशभाषाना पण सारा अभ्यासी हता. श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री ग्रंथकारश्री अने प्रस्तुत ग्रंथ विषे जणावे छे के -

महावीर चरियं (पद्यबद्ध)

प्राकृत भाषामां महावीर चरियं नामथी बे चरित्र काव्य उपलब्ध थाय छे. आ चरित्र काव्यना रचनार चन्द्रकुलना बृहद्गच्छीय उद्योतनसूरिना प्रशिष्य अने आम्रदेव उपाध्यायना शिष्य नेमिचन्द्रसूरि छे. आचार्य पद प्राप्त कर्या पूर्वे एमनुं नाम देवेन्द्रगणि हतुं. आ चरित्र ग्रंथनी रचना विक्रम संवत ११४१मां थई छे. आ ग्रन्थमां भगवान महावीरना पूर्वभवो आपवामां आव्या छे. ते साथे आवश्यक चूर्णिमां आपवामां आवेल सर्व जीवनप्रसंगो पण अत्रे आपवामां आव्या छे.

लेखके चरित्र ग्रंथने रोचक बनाववा माटे पूरतो प्रयास कर्यो छे. कथावस्तुनी सजीवता माटे वातावरणनुं मार्मिक चित्रण आपवामां आव्युं छे. भौतिक तेमज मानसिक बन्ने प्रकारना वातावरणनी चारुता प्रस्तुत ग्रंथना प्राण छे. अनुकूल अने प्रतिकूल बन्ने प्रकारनी परिस्थितिमां राग-द्वेषनी अनुभूति केवी रीते थाय छे. एनुं विवरण टीकात्मक रीते आपवामां

---

१. आ. नेमिचन्द्रसूरिकृत रयणचूडरायचरियं मे वर्णित शिक्षा एवं विद्याएँ - हुकमीचंद जैन 'संबोधि' इ.स. २००५ Vol. XXVIII (ता.क.-डॉ. हुकमीचंदना त्रण लेखो अमने आ. कैलास सागरसूरि ज्ञानमंदिर कोबाना सौजन्यथी प्राप्त थया छे.)

२. विशेष माटे जुओ 'आ. नेमिचन्द्रसूरि और उनके ग्रंथ' - ले. हुकमीचंद जैन, कर्मयोगी केसरीमल सुराणा अभिनंदन ग्रंथ, पंचम खंड

आव्युं छे. मिथ्यात्व अने सम्यक्त्वनी अभिव्यंजना पात्रोना क्रिया-कलापो वडे सुंदर रीते करवामां आवी छे.

प्रस्तुत चरित्रकाव्यमां जेटला प्रमाणमां मनोरंजननुं तत्त्व छे. एनाथी अधिक प्रमाणमां मानसिक तृप्तिनां साधनो विद्यमान छे. मरीचि अहंकारथी जीवनना आधारभूत एवा विवेक अने सम्यक्त्वनी उपेक्षा करे छे अने परिणामे अनेकवार जन्म लेवो पडे छे ते पोताना संसारनी सीमाने आम विस्तृत करे छे. चरित्रग्रंथ होवा छतां लेखके मर्मस्थानोनी एवी सुंदर योजना करी छे के वाचकोनी जिज्ञासावृत्ति अंत सुधी जळवाई रहे छे.

आ आखो ग्रंथ पद्यबद्ध छे. एनी भाषा सरल अने प्रवाहित छे.

('भ. महावीर एक अनुशीलन' देवेन्द्रमुनि शास्त्री पृ. १७८-१७९)

ग्रंथकारश्रीना रचना कौशल्य विषे लखतां डॉ. हुकमीचंद जैन 'आ. नेमिचन्द्रसूरि का व्यक्तित्व' लेखमां (श्रीमद् जयन्तसेनसूरि अभिनन्दन ग्रंथ पृ. ९०-९१) जणावे छे के -

कवि की रचनाओं को देखने से स्पष्ट है कि वे आगमों के ज्ञाता, साहित्यशास्त्र में पारंगत और सूक्ष्मदर्शी कथाकार थे । उनकी सभी रचनाओं में उनके अगाध काव्यत्व की झलक स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है । नेमिचन्द्रसूरि ने प्राकृत गाथा छंद का सर्वाधिक प्रयोग किया है तथा साहित्य में प्रयुक्त होने वाले प्रायः प्रमुख अलंकारों का प्रयोग उनकी रचनाओं में प्राप्त होता है ।

ग्रन्थकार शास्त्रीय ज्ञान के अतिरिक्त लौकिक शिक्षा में भी निष्णात थे । ग्रन्थकार की यह विशेषता है कि कथाओ मैं कौतूहल तत्त्व निरंतर बना रहता है जो कि कथा का प्राण है । उनकी कथाओं में सोद्देश्यता भी विद्यमान है ।

आवा अनूठा ग्रंथ 'महावीरचरियं'नुं कष्टसाध्य पुनः संपादन करवा माटे युवा मुनि श्री न्यायरत्नविजय म.ने अनेकशः धन्यवाद ! विद्वद्वर्य मुनिश्री आवा बीजा पण ग्रंथरत्नोनी श्रीसंघने भेट धरे ए ज आशा अपेक्षा...

• • •



विषयविस्तारः

श्लोक नं.

१. पञ्चपरमेष्ठिनमस्कारः । १-१०

२. **नयसारभववर्णनम् ।** १२-४७

★ साधुकथितधर्मकथा । ३०-४१

★ सम्यक्त्वप्राप्तिः भवान्तश्च ४२-४७

३. **मरीचिभववर्णनम् ।** ४८-१२८

★ प्रथमप्रभोर्देशना । ५७-७०

★ मरीचिदीक्षा लिङ्गान्तरं प्रभोश्च सार्द्धं विहारः । ७३-८८

★ ऋषभप्रभुकथिताऽऽगामितीर्थकराऽदिनामानि । ८९-१०१

★ तातपार्श्वे भरतस्य मरीचिभविष्यश्रवणं तत्समीपगमनं तस्य च कुलमदः । १०२-११७

★ रोगातङ्के विचारणा असत्यभाषणं च । ११८-१२८

४. साङ्ख्यमतम् । १३१-१३६

५. चतुर्थाऽऽदिभववार्ता । १३७-१४७

६. **विश्वभूतिकथानकम् ।** १४८-२२०

★ कपटेन युद्धार्थाय प्रेषणम् । १६२-१६९

★ कपटज्ञानं क्रोधः वैराग्यश्च । १७०-१८१

★ श्रीविजयसिंहाऽऽचार्याऽऽगमनम् । १८२-१८५

★ धर्मदेशना । १८६-२०३

● अष्टकर्माणि उत्तरप्रकृतयश्च । १८६-१८९

● कर्मबन्धानां विविधकारणानि । १९०-२०१

★ विश्वभूतेः दीक्षा निदानं च । २०४-२१९

७. **त्रिपृष्ठकथानकम् ।** २२१-३३७

★ पितुः स्वपुत्रीसार्द्धं विवाहः त्रिपृष्ठजन्म च । २२८-२३८

★ अश्वग्रीवदूतस्य अपमानम् । २३९-२५०

श्लोक नं.

★ शालिक्षेत्ररक्षाकृते आदेशः । २५१-२५८
★ सिंहेन सह युद्धम् । २५९-२६४
★ सिंहमृत्युः अश्वग्रीवभयश्च । २६५-२७४
★ वासुदेवप्रतिवासुदेवयोः युद्धम् । २७५-२८५
★ केशवस्य बलं सम्पत्तिश्च । २८७-२९४
★ सम्यक्त्वनाशः मृत्युश्च । २९५-३००
★ धर्मघोषाऽऽचार्यस्योपदेशः । ३०४-३३७
● मधुबिन्दुलुब्धजनकथा । ३१२-३२८
● कथायाः उपनयः । ३२९-३३५
८. अचलस्य दीक्षा मोक्षश्च । ३३८-३४१
९. **प्रियमित्रचक्रवर्तिभवः ।** ३४३-४५४
★ चतुर्दशरत्ननवनिध्यादि-ऋद्धिवर्णनम् । ३४७-३५६
★ पोट्टिलसूरेः आगमनं देशना च । ३५७-४४९
★ मनुष्यजन्मदुर्लभताविषये दशदृष्टान्तानि । ३६१-३७१
★ चतुर्गतिभवभ्रमणकारणानि । ३७४-३८९
★ कर्मवैचित्र्येण मनुष्यभवे फलविचित्रता । ३९०-४०६
★ धर्मसाधनसामग्र्यः । ४०७-४०९
★ आर्य-अनार्यदेशनामानि । ४१०-४१९
★ जातिकुलादयः धर्मसहायिनः । ४२१-४२९
★ साधुधर्मस्य माहात्म्यं स्वरूपं च । ४३१-४३९
★ श्रावकधर्मस्वरूपम् । ४४०-४४९
● त्रिकालचैत्यवन्दनं जिनपूजा च । ४४१-४४९
★ प्रियमित्रस्य दीक्षा सर्वार्थोत्पत्तिश्च । ४५०-४५४
१०. **नन्दनभववार्ता ।** ४५५-५७८

श्लोक नं.

★ पोट्टिलसूरेः आगमनं धर्मदेशना च ।..... ४६२-५१३
★ आचार्याणां षट्त्रिंशद्गुणाः ।..... ४६३-४६६
★ नरकगतिदुःखवर्णनम् ।..... ४७०-४९०
★ तिर्यग्गतिदुःखकथनम् ।..... ४९१-४९६
★ मनुष्यगतिदुःखभणनम् ।..... ४९७-५०४
★ देवगतिदुःखगदनम् ।..... ५०५-५१२
★ नन्दनराज्ञः भवविरागत्वं प्रव्रज्याप्रार्थना च ।..... ५१४-५२४
★ प्रव्रज्याधर्माऽऽराधनं जिननामबन्धश्च ।..... ५२५-५३२
★ तीर्थकरनामकर्मबन्धकारणानि विंशस्थानानि ।..... ५३३-५४०
★ अन्तिमाऽऽराधना ।..... ५४१-५७६
● दुष्कृतगर्हा ।..... ५४३-५५३
● क्षमापना ।..... ५५४-५५७
● भावना ।..... ५५८-५६५
● चतुःशरणं पञ्चनमस्कारः अनशनं च ।..... ५६६-५७५
११. प्राणतकल्पे उत्पत्तिः ऋद्धिवर्णनं च ।..... ५७९-५९६
१२. देवानन्दागर्भेऽवतरणं शक्रचिन्ता च ।..... ५९७-६०६
१३. **कुण्डग्रामनामकनगरस्य वर्णनम् ।**..... ६०७-६३८
★ नगरशोभावर्णनम् ।..... ६०९-६१६
★ विपणिसौन्दर्यवर्णनम् ।..... ६१७-६२७
★ तन्निवासिलोकवर्णनम् ।..... ६२८-६३८
१४. श्रीसिद्धार्थत्रिशलावर्णनम् ।..... ६३९-६४९
१५. गर्भसंक्रमणं चतुर्दशस्वप्नानि स्वप्नफलं च ।..... ६५०-६६५
१६. त्रिशलाशोकः प्रभोरभिग्रहश्च ।..... ६६६-६७५
१७. दिक्कुमारीणामागमनम् ।..... ६७९-६९१

श्लोक नं.

१८. इन्द्रस्य आसनकम्पः मेरुगमनं च । ६९२-७०४
१९. मेरुपर्वतस्य स्नात्रसामग्र्याश्च वर्णनम् । ७०५-७१५
२०. शक्रशङ्कानिरासाय मेरुचालनं सर्वत्राऽसमञ्जसं च । ७१६-७२६
२१. इन्द्रस्य क्षमायाचनम् । ७२७-७३४
२२. जन्ममहोत्सवः । ७३५-७४६
२३. इन्द्रस्य प्रभुस्तुतिः । ७४७-७५५
२४. सौधर्मेन्द्रस्य सुन्दरजिनभक्तिः । ७५६-७६१
२५. सिद्धार्थराज्ञा कृतः उत्सवः । ७६२-७६८
२६. भगवतः नामस्थापना । ७६९-७७४
२७. बालत्वे सुरपराभवः । ७७५-७९१
२८. पाठशालागमनं ऐन्द्रव्याकरणकथनं च । ७९२-८०१
२९. भगवत्परिवारः । ८०२-८०६
३०. प्रव्रज्याग्रहणाऽनुज्ञायाचनं भ्राता-उपरोधश्च । ८०७-८१४
३१. साधुवज्जीवनं सांवत्सरिकदानं पुनरपि च दीक्षाऽनुज्ञायाचनम् । ८१५-८२५
३२. **प्रव्रज्यामहोत्सवः ।** ८२६-८५५
★ शिबिकावर्णनम् । ८३४-८३८
★ देवनराणामुत्साहः । ८३९-८४६
★ प्रव्रज्याग्रहणं चतुर्थज्ञानोत्पत्तिश्च । ८४७-८५५
३३. ब्राह्मणाय देवदूष्याऽर्धप्रदानम् । ८५७-८६४
३४. प्रथमसन्ध्यायां गोपोपसर्गः । ८६८-८७७
३५. वैयावृत्त्यार्थं प्रभुपार्श्वे सिद्धार्थयोजनम् । ८७८-८८४
३६. प्रथमपारणकं विशिष्टसंयमश्च । ८८५-८९४
३७. तापसाऽऽश्रमे चातुर्मासाय आगमनं अप्रीतेश्च निर्गमनं च । ८९५-९०४
३८. शूलपाणिव्यतिकरः । ९०५-९१६
३९. उपसर्गानां पश्चात् निद्रा दश च स्वप्नानि । ९१७-९२९

श्लोक नं.

४०. उत्पलकथितं स्वप्नफलम् । ९३०-९३५
४१. अच्छंदकस्य वृत्तान्तः । ९३६-९५९
४२. चण्डकौशिकस्य वृत्तान्तः । ९६२-९९५
★ पूर्वभववर्णनम् । ९६५-९७६
★ प्रभोरुपदेशः सहस्त्रारे च उपपत्तिः । ९८४-९९५
४३. **सुदंष्ट्रकृतोपसर्गः ।** ९९६-१०२३
★ कम्बलसम्बलयोः कथानकम् । १००१-१०१९
४४. पुष्पसामुद्रिकवार्ता । १०२४-१०३५
४५. **गोशालकस्य वृत्तान्तः ।** १०३६-१०९४
★ पञ्चदिव्यचकितगोशालः शिष्यीभूतः । १०४५-१०४६
★ गोशालकेन कृता भगवज्ज्ञानपरीक्षा । १०४८-१०५२
★ गोशालकस्य दुश्चरितानि । १०५५-१०७२
★ गोशालककृतवैश्यायनापमानम्, तत्कृततेजोमोक्षः,
श्रीवीरेण तेजोलेश्यायाः मोचनम्, तत्साधनाकथनं च । १०७७-१०८६
★ तिलस्तम्बादिदृष्टान्तेन नियतिवादग्रहणं भगवत्सङ्गान्निर्गमनं च । १०८७-१०९४
४६. सौधर्मसभामध्ये शक्रकृतवीरगुणोत्कीर्तनम् । १०९८-११०१
४७. वीरक्षोभनार्थं संगमकस्याऽऽगमनं तत्कृतोपसर्गाश्च । ११०४-१११८
४८. स्वर्गात् संगमनिष्कासनं वीरपारणं च । ११२०-११२४
४९. शक्रकृतजिनस्तवना (देश्यभाषायाम्) । ११३०-११४१
५०. जीर्णश्रेष्ठिकथा । ११४४-११६४
५१. श्रीपार्श्वजिनवरकेवलि-आगमनं धर्मकथा च । ११६५-११८३
५२. चमरेन्द्रोत्पातः पूर्वभवश्च । ११८९-१२४४
५३. चमरकृतचरमजिनस्तुतिः (देश्यभाषायाम्) । १२४५-१२४७
५४. महावीरस्य दुरनुचराऽभिग्रहः चन्दनाकथा च । १२४८-१३१४

श्लोक नं.

५५. चन्दनादत्तकुल्माषैः वीरपारणं शेषकथा च । १३१५-१३३४
५६. गोपकृतः कीलकोपसर्गः । १३३५-१३४१
५७. खरकदृष्टभगवच्छल्यं तत्कृतचिकित्सा च । १३४२-१३५३
५८. भगवदनुचीर्णः तपोधर्मः । १३५७-१३६५
५९. ऋजुवालिकानदीतीरे केवलज्ञानप्राप्तिः । १३६७-१३७५
६०. केवलज्ञानोपलम्भे देवगणैः हर्षप्रकटनम् (देश्यभाषायाम्) । १३७६-१३८०
६१. केवलवरप्राप्ते इन्द्रकृतस्तवना (देश्यभाषायाम्) । १३८२-१३८५
६२. समवसरणरचना । १३९२-१४०९
६३. अष्टप्रातिहार्यवर्णनम् (देश्यभाषायाम्) । १४१०-१४१७
६४. द्वादशपर्षदादिवर्णनम् । १४१८-१४२८
६५. **महावीरकथितधर्मवार्ता ।** १४२९-१५११
★ श्रमणधर्मस्वरूपप्ररूपणम् । १४३१-१४४६
★ श्रावकधर्मप्ररूपणा । १४४७-१४८२
● पञ्चाऽणुव्रतादिस्वरूपम् । १४५०-१४८२
★ नवतत्त्वप्ररूपणा । १४८८-१४९९
★ सम्यक्त्वस्वरूपम् । १५००-१५१०
६६. सोमिलयज्ञे इन्द्रभूत्यागमनं तत्प्रतिबोधः दीक्षा च । १५१२-१५३७
६७. अग्निभूत्यादीनामपि प्रभुपार्श्वे प्रव्रज्या । १५३८-१५९३
६८. त्रिपदीं प्राप्य द्वादशाङ्गीरचना । १५९४-१६०१
६९. श्रीवर्धमानस्य चतुस्त्रिंशदतिशयाः । १६०४-१६१४
७०. नन्दीश्वरद्वीपवर्णनम् । १६१७-१६३७
७१. स्वऋद्ध्या भगवद्वन्दनार्थमागमनं श्रेणिकस्य । १६३८-१६४७
७२. **जिनवरवीरस्य धर्मकथा ।** १६४९-१६९४
★ दानधर्मगुणानुवादः । १६५०-१६७५

श्लोक नं.

- ज्ञानदानस्वरूपम् । १६५१-१६५६
- अभयदानस्वरूपम् । १६५७-१६६०
- धर्मोपग्रहदानस्वरूपम् । १६६१-१६६५
- वसतिदानफलनिरूपणम् । १६६६-१६७५

★ शीलधर्मप्ररूपणा । १६७६-१६७९

★ तपोधर्मप्रज्ञप्तिः । १६८०-१६८५

★ भावनाधर्मनिरूपणा । १६८६-१६९३

७३. देशनान्ते बलिविधानम् । १६९६-१७००

७४. **द्वितीयपौरुष्यां गणधरदेशना ।** १७०१-१७५२

★ चैत्यवन्दनस्वरूपम् । १७०७-१७२०

★ आवश्यकनिरूपणम् । १७२१-१७४९

- प्रथमत्रयाणि आवश्यकानि । १७२१-१७२७
- अन्तिमत्रयाणि आवश्यकानि । १७२८-१७४९

★ स्वाध्यायस्वरूपम् । १७५०-१७५२

७५. भगवत्कृतसालादिप्रतिबोधः । १७५५-१७६१

७६. **पृष्ठचम्पायां गुरुगौतमोपदेशः ।** १७६५-१७७०

★ धर्मे कषच्छेदतापविधानम् । १७६६-१७६९

७७. केवलज्ञानाऽनुद्भवेन गौतमप्रभुखेदः अष्टापदयात्रा च । १७७६-१७९१

७८. अष्टापदवर्णनम् (देश्यभाषायाम्) । १७९२-१७९८

७९. अष्टापदस्थितजिनेन्द्राणां श्रीगौतमकृता स्तुतिः । १८०१-१८०९

८०. **तत्र गुरुगौतमकथिता धर्मदेशना ।** १८१२-१८२९

★ सप्तानि सुक्षेत्राणि । १८१६-१८२३

★ भरतचक्रवर्तिकारिताऽष्टापदस्वरूपवर्णनम् । १८२४-१८२९

८१. तापसैः गुरुत्वेन स्वीकृतः गुरुगौतमः, तद्दीक्षा पारणं केवलं च । १८३०-१८४६

श्लोक नं.

८२. गुरुगौतमस्य अधृतिः वीरोपदेशश्च । १८४७-१८५७
८३. गोशालकस्वरूपजिज्ञासया श्रीगौतमप्रश्नः प्रभोश्च उत्तरः । १८५९-१८६३
८४. गोशालोक्तं श्रुत्वा भीतः आनन्दमुनिः । १८६४-१८७१
८५. गोशालकस्य वीरपार्श्वे आगमनं साधुदाहश्च । १८७२-१८८३
८६. भगवदुपरि तेजोमोक्षः तेजसश्च प्रत्यावर्तनम् । १८८४-१८९४
८७. तेजोदाहेन गोशालकोन्मत्तत्त्वं सम्यक्त्वप्राप्तिश्च । १८९५-१९०७
८८. **मिंढिकग्रामे जगद्गुरुधर्मदेशना ।** १९१२-१९२१
★ कषायस्वरूपम् । १९१६-१९१९
★ प्रमादनिरूपणम् । १९२०-१९२१
८९. रोगाऽऽतङ्कात् शरीरकान्तिक्षयः, रेवतीश्राविकादत्त-
सींहाऽऽनीतौषधभक्षणतः च निरोगीत्वम् । १९२२-१९३८
९०. गोशालकस्यागामिभवाः । १९४१-१९६१
९१. शालिभद्रपूर्वभवः । १९६६-१९८५
९२. **शालिभद्रकथा ।** १९८६-२१४६
★ कम्बलरत्नानां ग्रहणादिवार्ता । २०११-२०२४
★ शालिभद्रमीलनाय भद्रागृहे श्रेणिकाऽऽगमनम् । २०२५-२०४०
★ शालिभद्रस्य वैराग्यः । २०४२-२०४७
★ भद्रागृहे श्रेणिकस्य स्नानभोजनादिकम् । २०५४-२०६९
★ धर्मघोषाऽऽचार्योपदेशः । २०७३-२०७६
★ मातापार्श्वे संयमानुज्ञा संवादश्च । २०७७-२०९४
★ भार्याप्रतिबोधः शनैः शनैश्च त्यागः । २०९५-२१००
★ धन्यकथानकः । २१०१-२११०
★ धन्य-शालिभद्रयोः दीक्षा । २१११-२१२०
★ पूर्वभवमातृहस्तेन पारणम् । २१२१-२१३१

श्लोक नं.

★ अनशनं भद्राविलापः श्रेणिकसान्त्वना च । २१३२-२१४६
९३. **अपापायां भगवद्देशना ।** २१४९-२३१२
★ उत्सर्पिण्यां प्रथमाऽऽरकस्वरूपम् । २१५३-२१५६
★ दशविधकल्पवृक्षवार्ता । २१५७-२१६०
★ आचतुर्थाऽऽरकवर्णनम् । २१६१-२१६८
★ पञ्चमाऽऽरके कल्की नृपकथा । २१६९-२२०९
● श्रमणसङ्घपार्श्वे करयाचनं नगरदेवतया च बोधः । २१८६-२१९६
● श्रमणानां भिक्षाभागयाचनं शक्रशिक्षा च । २१९७-२२०८
★ जिनधर्मोन्नतिः । २२१०-२२१८
★ कलिकालप्रभाववर्णनम् । २२१९-२२३५
★ पञ्चमाऽऽरकपर्यन्तसमयवार्ता । २२३६-२२४४
★ षष्ठाऽऽरकवर्णनम् । २२४५-२२६१
★ उत्सर्पिणिप्रथमद्वितीयाऽऽरकवर्णनम् । २२६४-२२७३
★ सप्तकुलकरादिवार्ता । २२७४-२२७४
★ अनागततीर्थकरप्ररूपणा । २२८०-२२९५
★ सागरोपमप्रमाणप्ररूपणम् । २२९८-२३०५
★ वीरस्याऽन्तिमोपदेशः । २३०६-२३१२
९४. भस्मग्रहशान्त्यै शक्रविज्ञप्तिः । २३१४-२३२१
९५. प्रभोः निर्वाणं सर्वेषां च शोकः । २३२२-२३३३
९६. निर्वाणोत्सवादिकं देवकर्तव्यम् । २३३४-२३४६
९७. गुरूगौतमस्य शोकः केवलोत्पत्तिश्च । २३४९-२३६२
९८. सुधर्मादिपरमात्मपरिवारवर्णनम् । २३६३-२३७६
९९. ग्रन्थकृत्प्रशस्तिः । २३७७-२३८६

॥ अर्हम् ॥

वडगच्छगयणदिणयरसिरिनेमिचंदसूरिरइयं

महावीरचरियं

॥ [1]णमो वीयरागाणं ॥

(पंचपरमेट्ठिणमोक्कारेण गंथाइमंगलं)

पणमह पढमजिणिंदं, [१]भवियाणणकमलबोहणदिणिंदं ।
कोहहुयासणकं[२]दं, पणयासुरअमरनरइंदं ॥१॥

सिरि**सिद्धत्थ**नराहिवकुलनहयलविमलपु[३]ण्णिमायंदं ।
निज्जियका[२]मगइंदं, पणमह **वीरं** सया धीरं ॥२॥

सेसेऽवि य बावीसे, **अजिया[४]ईपासनाह**पज्जंते ।
जियरागदोसमोहे, वंदामि जिणेसरे सिरसा ॥३॥

जरजम्ममरणरहिए, केवलवरनाणदंसणसमग्गे ।
सिद्धे नि[५]द्ध[३]यकम्मे, [६]अणाइनिहणे सया नमह ॥४॥

पंचविहायारधरे, सुत्तत्थविसारए पसंतमणे ।
[७]भवियारविंदपडिबोहदिणयरे नमह आयरिए ॥५॥

परमत्थगहियसारे, [८]आयाराईदुवालसंगस्स ।
संजमतवनियम[४]रए, उज्झाए नमह [९]सुत्तद[5]ए ॥६॥

पंचमहव्वयगुरुभारधारए, चरणकरणसंपन्ने ।
पंचसमिए तिगुत्ते, मुत्ते साहू य [१०]सइ नमह ॥७॥

---

१. भव्याऽऽननकमलबोधनदिनेन्द्रम् । २. कं = जलं ददातीति कन्दं=मेघम् । ३. ०पूर्णिमाचन्द्रम् । ४. प्राकृतभाषा में ह्रस्व के स्थान में दीर्घ इत्यादि होता है । ५. निर्धूतकर्मणः = विनाशितकर्मणः । ६. अनादि-निधनान् = अनादि-अनन्त काल की स्थिति वाले । ७. भव्याऽरविन्द० । ८. आचाराङ्गादि-द्वादशाङ्गस्य । ९. सूत्रदान् । १०. सदा ।

1. नमो श्रुतदेवतायै – ज. ह. । नमो वीतरागाय – प.क. । 2. अ – ०मइंदं । 3. णिहुय० – ज.क.ह. । 4. ०धरे – क. । 5. सुत्तभत्तीए – क. ।

[१]सम्मत्तणाणवरचरणरयणपरिमंडियं भुवणतिलयं ।
पणमह जिणिंदपणयं, सिरिसंघं गुणगणमहग्घं [२]॥८॥

पवरसुयनाणमणहरपसत्थपोत्थयविहत्थवरहत्थं [३]।
[४]सारयससिकिरणुज्जलसव्वंगं थुणिय सुयदेविं ॥९॥

[५]वोच्छामि समासेणं, **वीर**जिणिंदस्स संतियं चरियं ।
[६]संवेगट्ठा भवियाण, अत्तणो सुमरणत्थं च ॥१०॥ ॥ जुम्मं ॥

जम्मि भवे सम्मत्तं, पत्तं पढमं तमाइओ काउं ।
सत्तावीसजिणभवे, संखेवेणं [१]पवक्खामि ॥११॥

(सत्तावीसभवकहाए पढमनयसारभववण्णणं)

अवरविदेहे खेत्ते, गाममि बलाहिवो पुरा आसि ।
[७]दयदाणविणयदक्खिन्नसायरो धम्मसद्धालू ॥१२॥

सो अन्नया कयाई, [२]रायाएसेण दारुयनिमित्तं ।
बहुपुरिसेहिं समेओ, [८]सगडे घेत्तूण संपत्तो ॥१३॥

[९]अइदुग्गं वणगहणं, तत्थ य वणछिंदणं [१०]करेंतेण ।
भोयणसमए दिट्ठा, सूरी बहुसाहु[११]परियरिया[३] ॥१४॥

पंथाओ परिब्भट्ठा, [४]इओ तओ तत्थ परिभमंता उ ।
तण्हाछुहा[१२]किलंता, [१३]परिसंता [१४]सत्थपरिहीणा ॥१५॥ तिहिं विसेसियं ॥

---

१. सम्यक्त्व० । २. महार्घम् = महामूल्य वाला । ३. ०पुस्तकविहस्तवरहस्ताम् = पुस्तक से युक्त श्रेष्ठ हस्त वाली । ४. शारदशशिकिरणोज्ज्वलसर्वाङ्गाम् । ५. वक्ष्ये । ६. संवेगाऽर्थम् । ७. दयादानविनयदाक्षिण्यसागरः = यह गुणो का सागर । ८. शकटान् । ९. अतिदुर्गम् = अति दुर्गम स्थान । १०. कुर्वता । ११. ०परिवृत्ताः = परिवेष्टिताः । १२. ०क्लान्ताः = खिन्न । १३. परिश्रान्ताः = थके हुए । १४. सार्थपरिहीनाः = सार्थ-वियुक्ताः ।

1. कहिस्सामि - ज. । 2. रायदेसेणं - प. । 3. ०परिया - क. । 4. ब - इतो ततो एवमग्रेऽपि इ-उ-ओ इत्यादयः स्वरास्तकारविशिष्टा अपि दृश्यन्ते ।

दट्ठूण मुणिवरे ते, चिंतइ अणुकंपभत्तिसंजुत्तो ।
एयारिसे अरण्णे, कहमेए साहुणो पत्ता ? ॥१६॥

तो वंदिऊण पुच्छइ, भयवं ! कत्तो समागया तुम्हे[1] ? ।
केण व कज्जेण इमं, वणगहणं भमह अइभीमं ? ॥१७॥

दाऊण धम्मलाभं, समत्थदुरिओहवारणसमत्थं[1] ।
पभणइ सूरी सुपुरिस !, अम्हे सत्थेण सह चलिया ॥१८॥

गामंतरं[2] पविट्ठा, सत्थे आवासियम्मि भिक्खट्ठा ।
जाव अम्हे[2] ता सत्थो, कत्थ वि तुरियं[3] गओ सोऽवि ॥१९॥ ॥ जुम्मं ॥

तो[3] अम्हे संखुद्धा[4], अगहियभिक्खा पहम्मि संचलिया ।
सत्थं गवेसमाणा, न य मिलिया तस्स पहभट्ठा[5] ॥२०॥

एयम्मि अरण्णम्मिं, समागया तुम्ह[6] दंसणं जायं ।
इय कहिए सो तुट्ठो, धन्नोऽहं जेणिमे[4] दिट्ठा ॥२१॥

कप्पतरु व्व मरूथले[7], दरिद्दगेहे हिरण्णवुट्ठि व्व ।
मायंगगिहे[8] एरावणो व्व, इत्थं[5] इमे दिट्ठा ॥२२॥

सफलं[6] मम मणुयत्तं, सहलं मम जम्म जीवियं अज्ज ।
जं एयम्मि अरण्णे, दिट्ठा एयारिसा साहू ॥२३॥

पुण्णकलियाण[9] मुणिणो, दंसणविसयं पि जंति हयपावा ।
चिंतामणिसंजोगो, होइ अधन्नस्स[7] न कयाइ ॥२४॥

---

१. समस्तदुरितौघवारणसमर्थम् = सभी पाप के समूह को दूर करने में समर्थ । २. सार्थे आवासिते यावद्वयं भिक्षार्थाय ग्रामान्तरं प्रविष्टाः । तावत् सोऽपि सार्थः त्वरितं कुत्र अपि गतः । इति अन्वयः । ३. त्वरितं = जल्दी से । ४. संक्षुब्धाः = क्षोभप्राप्ताः । ५. पथभ्रष्टाः । ६. येन इमे । ७. मरुस्थले = रेगिस्तान । ८. मातङ्गः = चाण्डाल । ९. ०कलितानाम् = युक्तानाम् ।

1. तुब्भे – प. । 2. जावम्हे – प. । 3. ब – ता । 4. जेण मे – प.क. । 5. एवं – ज. । 6. ता सफलं – ज.प.क. । 7. अण्णस्स – प. ।

तहा हि –

जइणो हु बंभयारी, [१]अगिहे [२]दंतिंदिए [३]पसंते य ।
तवनियमभूसियंगे, धन्न च्चिय एत्थ पेच्छंति ॥२५॥

एयं विचिंतिऊणं, भत्तिभरुल्लसियबहलरोमंचो ।
भत्तं पाणं वियरइ, जहोचियं तेसिं साहूणं ॥२६॥

[४]भुत्तुत्तरे य तेणं, [५]इच्छियपंथम्मि [६]मेलिया साहू ।
भणिओ सो य वलंतो, गुरूहिं अणुकंपजुत्तेहिं ॥२७॥

(सूरीण धम्मोवएसो)

उवविसह खणं एक्कं, रुक्खच्छायाए [७]वीसमामो त्ति ।
एवं ति तेण भणिए, उवविट्ठा तत्थ सव्वेऽवि ॥२८॥

धम्मस्स एस जोगो, एयं परिभाविऊण सूरीहिं ।
पारद्धा धम्मकहा, [८]पडिबोहत्थं इमा तस्स ॥२९॥

बहुजोणिलक्खगंहिरे, [९]संसारे दुल्लहं मणुयजम्मं ।
राहावेहो व्व [1]इहं, [१०]जुगछिद्दे [2]समिलापविसो व्व ॥३०॥

भणियं च –

काऊणमणेगाइं, जम्मणमरणपरियट्टणसयाइं ।
दुक्खेण माणुसत्तं, जइ लहइ [११]जहिच्छियं जीवो ॥३१॥

---

१. गृहरहितान् । २. दान्तेन्द्रियान् = शान्त इन्द्रियवाले । ३. प्रशान्तान् । ४. भुक्त्वा उत्तरे = भोजन के पश्चात् । ५. ईप्सितपथे = अभिलषित मार्ग । ६. मुक्ताः । ७. विश्रमामः । ८. प्रतिबोधनार्थम् । ९. ०गभीर = 'गंभीर' । १०. युगछिद्रे शमिला-प्रवेश इव = युग = धुर = बैल गाड़ी या हल खींचने के समय जो बैलो के कंधे पर रखे जाते है, उसका जो छिद्र = छेद । शमिला = युग, कीलक = उस छिद्र में डाला जाता कीलक = खील । मनुष्यजन्म की दुर्लभता बताने वाले दश दृष्टान्त में से दो दृष्टान्त की बात है । ११. यथेप्सितं = इच्छानुसार । जैसे जीव इच्छित वस्तु दुःख से प्राप्त करता है । तद्वत् मनुष्य जन्म भी दुष्प्राप्य है ।

1. केवलं ह. हस्तादर्शे अस्ति । 2. समिल० – ह. ।

इय दुल्लहलंभं[१] माणुसत्तणं, पाविऊण जो जीवो ।
न कुणइ पारत्तहियं[२], सो सोयइ संकमणकाले[३] ॥३२॥

एतदेवाह –

वारीमज्झे छूढो[४] व्व गयवरो, मच्छओ[५] व्व गलगहिओ[६] ।
वग्गुरपडिओ[७] व्व मओ[८], संवट्टइओ[९] विहंगो व्व ॥३३॥

सो सोयइ जरमच्चूकरालिओ[१०], जो सुधम्मपरिहीणो ।
ताया[११]रमविंदंतो, कम्मभरपणोल्लिओ[१२] जीवो ॥३४॥

जओ –

कुगई कयत्थणाओ, सरोगया[१३] हाणि इट्ठजणविरहो[1] ।
दारिद्दं दोहग्गं, अकालमरणं अहम्मेण[१४] ॥३५॥

धम्मेणं चिय अत्था[१५], धम्मेणं चेव उत्तमा भोगा ।
धम्मेण सग्गमोक्खा, सुहाइं सव्वाइं धम्मेण ॥३६॥

ता भो ! दुल्लहलंभं, विज्जुलयाचंचलं[१६] मणुयजम्मं[2] । .
लद्धूण जो पमायइ, सो काउरिसो[१७] न सप्पुरिसो[3] ॥३७॥

धम्मत्थिणा य धम्मो, देवो य गुरू य जाणियव्वाइं[१८] ।
धम्मगुरुदेवसद्धा, कोइ वि कत्थइ पयट्टेइ[१९] ॥३८॥

---

१. दुर्लभलाभम् । २. पारत्रहितम् = पारलौकिक हित । ३. मरण समय पर । ४. पतित, डूबा हुआ । ५. मत्स्यः । ६. गल० = मछली पकड़ने का काँटा । ७. वागुरा० = पशु को फसाने का जाल, फन्दा । ८. मृगः । ९. संवर्तकितः = तूफान में फसा हुआ । १०. ०करालितः = ग्रस्त । ११. त्रातारम् = रक्षक । १२. कर्मभरप्रणोदितः = कर्म के समूह से प्रेरित । १३. सरोगता = रोग-युक्तता । १४. अधर्मेण । १५. अर्थाः = धनानि । १६. विद्युल्लताचञ्चलम् । १७. कापुरुषः = कातर, नीच पुरुष । १८. ज्ञातव्यानि । १९. प्रवर्तयति = देव-गुरु-धर्म सम्बन्धी श्रद्धा की बात में अलग अलग मानसिकता के कारण अस्थान में भी श्रद्धा की जाती हैं । इस लिए सही स्थान बताते हैं कि...।

1. विरोहो – क. । 2. मणुस्सत्तं – ज. । माणु० क. । 3. सो पुरिसो – प.क.ह. ।

(देवगुरूधम्मसरूवं सम्मत्तपत्ती य)

सो धम्मो जत्थ दया कीरइ, सचराचरेसु जीवेसु ।
जत्थ य परमनिरोहो, इंदियनोइंदियाणं च ॥३९॥

सो च्चिय देवो एत्थं, जो अइसयसंजुओ [१]पसंतप्पा ।
रागाइदोसरहिओ, सव्वण्णू सव्वदंसी य ॥४०॥

परिचत्तघरावासो, [२]विसुद्धबंभव्वओ य सुयनाणी ।
धम्मगुरू विन्नेओ, परिग्गहारंभ[३]पडिविरओ ॥४१॥

इय धम्मकहं सोउं, संबु[१]द्धो परमहरिसमावन्नो ।
निच्चलसम्मद्दिट्ठी, जाओ सो सावगो पवरो ॥४२॥

भणिओ य तेण गुरू -

उद्धरिओऽहं भयवं !, तुमए भवसायरम्मि निवडंतो ।
अहवा **उत्तमसंगो, उत्तमकल्लाणहेउ** त्ति ॥४३॥

एवम[२]भिनंदिऊणं, नमिऊण गुरुं मुणी य सो चलिओ ।
[४]अत्ताणं मन्नंतो, सुकयत्थं बोहिलाभेण ॥४४॥

तथा हि -

धन्नोऽहं जेण मए, [५]अणोरपारम्मि भवसमुद्दम्मि ।
भवसयसहस्सदुलहं, लद्धं [६]सद्धम्मजाणं ति ॥४५॥

पत्तो कमेण गेहं, कालेण य सुद्धधम्मपरिणामो ।
सोहम्मे उववन्नो [७]पलियाउ सुरो [८]महिड्ढीओ ॥४६॥

---

१. प्रशान्ताऽऽत्मा । २. ०गृहाऽऽवासः । ३. प्रतिविरतः = निवृत्त । ४. आत्मानम् । ५. (दे०) अणोरपारे=अनादि-अनन्त । ६. सद्धर्मयानम् । ७. पल्योपमाऽऽयुः । ८. महर्द्धिकः = महा ऋद्धि वाला ।

1. संखुद्धो - ज.प. । 2. ०भिवंदि० - ज. ।

भोत्तूण तत्थ भोए, दिव्वे सुररमणिमज्झयारम्मि ।
आउयखयम्मि चविउं, जत्थुववन्नो तयं सुणह ॥४७॥

(महइमहावीरवद्धमाणसामिस्स मरिइभवसरूवं)

अत्थि [१]**अउज्झा**नयरी, मणिकणगमया सुरेहिं निम्मविया ।
बारसजोयणदीहा, नव [२]वित्थिण्णा परमरम्मा ॥४८॥

तत्थ य **भरहो** राया, छखंड**भरहा**हिवो पढम[1]चक्की ।
सिरि**उसहसामि**तणओ, [३]उइण्णसुहपुन्नपब्भारो ॥४९॥

तस्स सुओ उववन्नो, सव्वंगोवंगसुंदरो [४]जुइमं ।
धम्मप्पिओ अकूरो, **मिरि** त्ति नामेण विक्खाओ ॥५०॥

सो तारुण्णे [2]पत्तो, पंचपयारे उ भुंजए भोए ।
नियपासायवरगओ, [५]इट्ठो नियजणणिजणयाणं ॥५१॥

सिरि**उसभ**स्स भगवओ, उप्पन्ने केवलम्मि देवेहिं ।
रइयम्मि समोसरणे, केवलिमहिमाए परमाए ॥५२॥

वट्टंताए **भरहो**, समागओ पुत्त[६]नत्तुयसमेओ ।
भयवंतवंदणत्थं, परमेणं भत्तिराएणं ॥५३॥ ॥ जुम्मं ॥

काऊण य [७]तिक्खुत्तो, [८]पयाहिणं वंदिऊण भयवंतं ।
[९]निव्वत्ते नाणमहे, उवविट्ठो रइयकरकमलो ॥५४॥

[3]**मिरिई भरहे**ण समं, **उसभजिणं** पणमिऊण विणएणं ।
धरणीयले निसन्नो, भयवंतं [१०]पज्जु[4]वासंतो ॥५५॥

---

१. अयोध्या० । २. विस्तीर्णा । ३. उदीर्णशुभपुण्यप्राग्भारः = उदय प्राप्त शुभ पुण्य के समूह वाला = पुण्यशाली । ४. द्युतिमान् । ५. इष्टः । ६. ०नप्तृक० = पौत्र । ७. त्रिकृत्वः = तीन बार । ८. प्रदक्षिणाम् । ९. निवृत्ते ज्ञानमहे = केवलज्ञान का महोत्सव पूर्ण होने पर । १०. पर्युपासन् = सेवा, भक्ति करना ।

1. ०चक्कवट्टी - प. । 2. पत्ते - ह. । 3. ब - मिरिय वि । 4. अ - ०वासिंतो ।

एत्थंतरम्मि भयवं, जोयणणीहारिणीए[१] वाणीए ।
सुरअसुरनरसभाए[१], धम्मं कहिउं समाढत्तो[२] ॥५६॥

(पढमजिणवरपढमवरधम्मदेसणा)

परमंगाणि उ चत्तारि, दुलहलंभाणि एत्थ जीवाणं ।
माणुस्सं धम्मसुई, सद्धा तवसंजमे विरियं ॥५७॥

संसारविरत्तेहिं, एयं[२] नाऊण धीरपुरिसेहिं ।
सव्वायरेण जत्तो[३], कायव्वो धम्मकज्जेसु ॥५८॥

बहुदुक्खपीडियाणं, मच्चुपरद्धाण[४] कम्मवसगाणं ।
अन्नं न किं पि सरणं, धम्मं मोत्तूण संसारे ॥५९॥

विहडंति[५] सुया[३], विहडंति बंधवा, विहडइ सुसंचिओ अत्थो ।
एक्को नवरि न विहडइ, विहिणा आराहिओ धम्मो ॥६०॥

सयणाइमोहमूढो, काऊण महापरिग्गहारंभे ।
एक्को जाइ[४] परभवं[५], एक्को च्चिय वेयए दुक्खं ॥६१॥

जह कयलीए न सारो, जह[६] वालुयपीलणे[६] य नो तिल्लं[७] ।
मायण्हियाए[८] न जलं[७], तह संसारे सुहं नत्थि ॥६२॥

किंपागस्स फलं पिव, हालाहलमीसिय[८] व्व[९] परमन्नं ।
आवायमेत्तसुहया[१०], विसया परिणामविरसा उ ॥६३॥

---

१. ०निर्हारिण्या = फैलने वाली या निर्हादिन्या = गूंजने वाली । २. समारब्धः । ३. यत्नः । ४. ०परद्धानाम् = पीड़ित, दुःखित । ५. विघटन्ति = अलग होना । ६. वालुकापीलने = रेत को पीलना । ७. तैलम् = तेल । ८. मृगतृष्णिका = मरू-मरीचिका । ९. हालाहलमिश्रितम् = जहर मिश्रित । १०. आपातमात्रसुखदाः ।

1. ०सहाए - ज.क. । 2. धम्मं - क. । 3. सुही - क.ह. । 4. जायइ - क. । 5. ब - परभवे । 6. जहा - ज.क. । 7. ब - मायण्हियाए व जलं - क.ह. । 8. ०मिसियं - क. ।

जह किर दुद्धं पेच्छइ, मज्जारी न उण लउडयं[१] मुद्धा ।
तह मूढो विसयसुहं, पेच्छइ नो नरयदुक्खाइं ॥६४॥

जह रयणखणिं[२] पत्तो, महग्घमोल्लाइं[३] मोत्तु रयणाइं ।
गेण्हइ वण्णड्ढाइं[४], अइमूढो कायखंडाइं[५] ॥६५॥

तह पत्ते मणुयत्ते, सग्गपवग्गाइसोक्खसंजणगे[६] ।
न करंति धम्मतत्तिं[७], विसए सेवंति[८] मूढप्पा ॥६६॥

जो विसयसुहपसत्तो, लद्धुं मणुयत्तमाइसामग्गिं[९] ।
न कुणइ धम्मं, काकिणिसहस्सहारगसरिच्छो सो ॥६७॥

एवं नाउं तुम्हे, जाव न वाही विडंबए देहं ।
जाव न जरा न मच्चू, अप्पहियं ताव चिंतेह ॥६८॥

सम्मत्तं पडिवज्जह, करेह सावज्जजोगवेरमणं[१०] ।
निज्जिणह कसायरिवू, दंडत्तियनिग्गहं[११] कुणह ॥६९॥

मिच्छद्दंसणअविरइकसायमणमाइदुट्ठजोगेहिं ।
जीवो बंधइ कम्मं, कम्मेण य भमइ संसारे ॥७०॥

इय एवमाइ सोउं, धम्मकहं भयवओ सवणसुहयं[१०] ।
भववेरग्गमुवगया, पडिबुद्धा पाणिणो बहवे ॥७१॥

पंच य पुत्तसयाइं, **भरहस्स** य सत्त नत्तूयसयाइं ।
सयराहं[११] पव्वइया, तम्मि कुमारा समोसरणे ॥७२॥

---

१. लकुटम् = डंडा । २. ०खनिम् = खान । ३. ०मूल्यानि । ४. वर्णाऽऽढ्यानि = वर्णयुक्तानि = रंगबिरंगी । ५. काचखण्डानि । ६. स्वर्गाऽपवर्गाऽऽदिसौख्यसञ्जनके = स्वर्ग और मोक्ष इत्यादि सुख को उत्पन्न करने वाले । ७. ०तप्तिम् = विचार । ८. काकिणीसहस्रहारकसदृशः = कौड़ी के लिए हजार सौनामहोर को नाश करने वाले जैसा । ९. ०रिपून् । १०. श्रवणसुखदम् । ११. (दे.) शीघ्र ।

1. ब – ०संजणगं । 2. ब – ०सेवेंति । 3. ब – ०सामग्गी । 4. ब – ०उवरमणं । 5. डंडत्ति० ब ।

(मरिइस्स जिणसमीवे जिणदिक्खागहणं)

आपुच्छिऊण **भरहं, मिरिइ**कुमारोऽवि परमसंविग्गो ।
संमत्तनिच्छियमई, धम्मं सोऊण पव्वइओ ॥७३॥

पंचसमिओ तिगुत्तो, सज्झायज्झाणविणयसंपन्नो ।
तवनियमसंजमरओ, विहरइ सो सामिणा [1]सद्धिं ॥७४॥

एक्कारसअंगाइं, तेण अहीयाइं गुरुसयासम्मि ।
[2]गीयत्थो संजाओ, धम्मकहालद्धिसंपन्नो ॥७५॥

अह अन्नया[4] कयाई, गिम्हे उण्हेण तावियसरीरो ।
[3]अण्हाणेण [4]किलंतो, कम्मवसा चिंतए एवं ॥७६॥★

मेरुगिरीसमभारे, वोढुं संपइ खणं पि न समत्थो ।
सामण्णगुणे अगुणो, [5]अहयं संसारमणुकंखी ॥७७॥

न य घरवासो जुत्तो, बहुसावज्जो पमायहेउ त्ति ।
ता लिंगंतरधारी, सावगधम्मं पवज्जामि ॥७८॥★

किं च तं लिंगंतरम् ?

समणा [1]तिदंडविरया, [2]भगवंता कुसलमण[6]वईकि[3]रिया ।
[7]डंडत्तियनिहयस्स य, होउ तिडंडं ममं [8]चिंधं ॥७९॥★

[9]लोइंदियमुंडा संजया य, अहयं [10]खुरेण [11]ससिहाओ ।
[12]थूलगपाणिवहाईवेरमणं, मे सया होउ ॥८०॥★

---

१. सार्धम् = सहित । २. गीतार्थः । ३. अस्नानेन । ४. क्लान्तः = खिन्नः । ५. अहं । ६. ०वाक्० । ७. दण्डत्रिकनिहतस्य = तीन दंडो से पराजित । ८. चिह्नम् । ९. लोच – इन्द्रियमुण्डाः = श्रमणाः द्रव्यतः भावतश्च मुण्डाः । कथम् ? द्रव्यतः लोचेन, भावतस्तु इन्द्रियैः मुण्डाः = इन्द्रिय कषाय से रहित, विमुख । १०. क्षुरेण । ११. सशिखाकः = चौटी सहित । १२. स्थूलक० ।

1. ब – तिडंडवि० । 2. भगवंतो – ज.क. । 3. ०काया – क. ।

★ एसे चिह्न से निर्दशित श्लोक की टीका परिशिष्ट नं. ६ में दिखाई गई हैं ।

समणा अमोहछण्णा, [१]मोहछण्णस्स होउ मे छत्तं ।
निरुवाहणा य समणा, मज्झं तु [२]उवाहणा होंतु ॥८१॥★

[३]सुक्कंबरा य समणा, विसुद्धचित्ता उ [४]धाउरत्ताइं ।
[1]होंतु य मे वत्थाइं, रागाईकलुसियमणस्स ॥८२॥★

निक्किंचणा य समणा, मज्झं पुण किंचि किंचणं होउ ।
सीलसुयंधा समणा, होउ ममं देहसक्कारो ॥८३॥★

[५]वज्जिति [६]वज्जभीरू, बहुजीवसमाउलं जलारंभं ।
होउ मम परिमिएणं, जलेण [७]ण्हाणं च पियणं च ॥८४॥

एवं परीसहभीरू, सच्छंदविगप्पियं [९]इमं लिंगं ।
परिकप्पिय जुत्तिजुयं, [१०]पारीवज्जं पवत्तेइ ॥८५॥★

तं लिंगंतरधारिं, [११]सकोउगो पुच्छई जणो धम्मं ।
सो कहइ साहुधम्मं, जहट्ठियं सुद्धपरिणामो ॥८६॥★

[२]कहियम्मि जणो पभणइ, न [१२]कुणसि तं कीस अप्पणो एयं ? ।
मेरुगिरीसमभारे, [१३]इच्चाई तस्स सो कहइ ॥८७॥

धम्मकहा[१४]अक्खित्ते, उवट्ठिए देइ सामिणो सीसे ।
गामागरणगराइं विहरइ, सो सामिणा सद्धिं ॥८८॥★

(भरहरायस्साणागयतित्थयराइविसयपुच्छा)

उज्झाउरीए पत्तं, भयवंतं अन्नया **भरह**राया ।
[3]अहिवंदिऊण पुच्छइ, कहंतरे विणयसंपन्नो ॥८९॥

---

१. मोहछन्नस्य = मोह से आच्छादित । २. उपानहौ । ३. शुक्लाऽम्बराः । ४. धातुरक्तानि = गेरु जैसे लाल = केसरी । ५. वर्जयन्ति । ६. अवद्यभीरवः । ७. स्नानम् । ८. पानम् । ९. ०विकल्पितम् । १०. पारिव्राज्यम् । ११. सकौतुकः । १२. त्वं कथं आत्मने एतं न करोषि ? । १३. मेरूगिरीसमभारान् इत्यादीन् । १४. ०आक्षिप्तान् = आकृष्टान् ।

1. अ – हुंतु । 2. तं सुणिय – ज. । 3. अभि० – ज.क.ह. ।

[१]जारिसया लोगगुरू, **भरहे** वासम्मि केवली तुम्हे ।
तारिसया कइ अन्ने, [२]ताया ! होहिंति तित्थयरा ? ॥९०॥

तो भणइ जिणवरिंदो, **भरहे** वासम्मि जारिसो उ अहं ।
[३]एरिसया तेवीसं, अन्ने होहिंति तित्थयरा ॥९१॥

होही **अजिओ संभव, अभिनंदण सुमइ सुप्पह सुपासो** ।
ससि पुप्फदंत सीयल, सेज्जंसो वासुपुज्जो य ॥९२॥

विमलोऽणंतइ धम्मो, संती कुंथू अरो य **मल्ली** य ।
मुणिसुव्वय नमि नेमी, पासो तह **वद्धमाणो** य ॥९३॥

अह भणइ नरवरिंदो, **भरहे** वासम्मि जारिसो अहयं ।
[४]तारिस[१]या कइ अन्ने, ताया ! होहिंति रायाणो ? ॥९४॥

तो भणइ जिणवरिंदो, जारिसओ तं नरिंद[५]सद्दूलो ।
एरिसया एक्कारस, अन्ने होहिंति रायाणो ॥९५॥

होही **सगरो मघवं, सणंकुमारो** य **संति कुंथुं अरो** ।
तह य **सुभुमो पउमो, हरिसेणो** तह **जओ बंभो** ॥९६॥

[६]अप्पु[२]ट्ठो कहइ जिणो, इमाए ओसप्पिणीए होहिंति ।
जे केसवबलदेवा नव, नव पडिवासुदेवा य ॥९७॥

[३]होइ **तिविट्ठु** [७]**दुविट्ठु, सयंभु** [४]**पुरिसोत्तिमे पुरिससीहे** ।
तह **पुरिसपुंडरीए, दत्ते नारायणे कण्हे** ॥९८॥

अयले विजए भद्दे, सुप्पभे य **सुदंसणे** ।
आनंदे नंदणे पउमे, रामे [८]आवि अपच्छिमे ॥९९॥

---

१. यादृशाः । २. हे ताताः ! हे त्रातरः ! वा । ३. ईदृशाः । ४. तादृशाः । ५. ०शार्दूलः - सिंहपर्यायः, बाघ । ६. अपृष्टः । ७. द्विपृष्ठ स्वयंभू । ८. चापि ।

1. एरि० - क. । 2. अह पुट्ठो - क. । आपुट्ठो - ज. । 3. होंति - क. । 4. पुरिसोत्तमे - क.ह. ।

आसग्गीवे [१]**तारए, मेरए** [२]**महुकेढवे निसुंभे** य ।
बलि [३]**पहराए** तह, **रावणे** य नवमे **जरासंधे** ॥१००॥

एए खलु पडिसत्तू, [४]कित्तीपुरिसाण वासुदेवाण ।
सव्वे य चक्कजोही, सव्वेऽवि हया सचक्केहिं ॥१०१॥

पुणरवि पुच्छइ **भरहो, अजिया**ईजिणवराण मज्झम्मि ।
भयवं ! कोइ भविस्सइ, तित्थयरो तुम्ह [५]परिसाए ? ॥१०२॥

तत्थ **मिरी** पुव्वुत्तो, [६]आइपरिव्वायओ **उसभ**[७]**णत्ता** ।
सज्झायझाणजुत्तो, एगंते झायइ महप्पा ॥१०३॥

तं दरिसेइ जिणिंदो, एवं [1]नरिंदेण पुच्छिओ संतो ।
होही चरिमो एसो, तित्थयरो **वीर**नामो त्ति ॥१०४॥

पढमो य वासुदेवो, **तिविट्ठु** नामेण **पोयणा**हिवई ।
पियमित्तचक्कवट्टी, **मूय**पुरीए **विदेह**म्मि ॥१०५॥

तं वयणं सोऊणं, राया [८]अंचियतणूरुहसरीरो ।
अभिवंदिऊण पियरं, **मिरिस्स** [९]अभिवंदओ जाइ ॥१०६॥★

सो विणएण उवगओ, काऊण पयाहिणं च तिक्खुत्तो ।
वंदइ [१०]अभित्थुणंतो, इमाहिं महुराहिं [११]वग्गूहिं ॥१०७॥★

लाभा हु ते [१२]सुलद्धा, [2]जम्मि [१३]तुमं धम्मचक्कवट्टीणं ।
होहिसि [१४]दसचोद्दसमो, अपच्छिमो **वीर**नामो त्ति ॥१०८॥★

---

१. तारक मेरक । २. मधुकैटभ । ३. प्रह्लाद । ४. साक्षात् कीर्तिस्वरूप = कीर्तिपुरुष । ५. पर्षदि । ६. आदिपरिव्राजकः = प्रथमपरिव्राजकः । ७. ऋषभनप्ता = ऋषभपौत्रः । ८. अञ्चितानि तनूरूहाणि यस्य सः = रोमाञ्चितशरीर वाला । ९. अभिवन्दिष्यते इति अभिवन्दकः = वन्दन करने की इच्छा वाले भरत राजा । १०. अभिस्तुवन् । ११. वाग्भिः । १२. सुलब्धाः । १३. यस्मात् । १४. दशचतुर्दशः = चतुर्विंशतितमः ।

1. भरहनरिं० – क. । 2. ब – जंसि ।

आई य [१]दसाराणं, **पोयणपुर**सामिओ **तिविट्ठु** त्ति ।
मूयाए **विदेह**म्मी, **पियमित्तो** नाम चक्कि त्ति ॥१०९॥

न वि ते [२]पारीवज्जं वंदामि, [1]अहं इमं च ते जम्मं ।
जं होहिसि तित्थयरो, अपच्छिमो तेण वंदामि ॥११०॥

एवं सो थोऊणं, काऊण पयाहिणं च तिक्खुत्तो ।
आपुच्छिऊण पियरं, **विणीय**[३]नयरिं अह पविट्ठो ॥१११॥

(भरहवत्तासवणेण कओ कुलमओ मरिइणा)

तं वयणं सोऊणं, [४]तिवइं [५]अप्फोडिऊण तिक्खुत्तो ।
अब्भहियजायहरिसो, [२]तत्थ य **मिरिई** इमं भणइ ॥११२॥★

जइ वासुदेवपढमो [३]होहं, चक्की **विदेह**वासम्मि ।
चरिमो तित्थयराणं, अहो ! अलं मज्झ सेसेणं ॥११३॥

अहयं च दसाराणं पढमो, [६]जणओ य चक्कवट्टीणं ।
[७]अज्जो तित्थयराणं, अहो ! कुलं उत्तमं मज्झ ॥११४॥

एवं च कुलमएणं, [८]णीयागोयं समज्जियं तेण ।
जस्स विवागेण इहं, नीयत्तं पाविही बहुसो ॥११५॥

जइ ताव एत्तिओऽवि हु, बहुनीयट्ठाणकारणं जाओ ।
भगवंतस्स मओ, ता बहुमयकारीण किं भणिमो ? ॥११६॥

जओ भणियं –

[९]जच्चाइमयफलेणं, नीयट्ठाणाइं पावमाणो उ ।
भमइ चिरं संसारे, तम्हा उ मए विवज्जेज्जा ॥११७॥

---

१. दशार्हाणाम् = वासुदेवानाम् । २. पारिव्राज्यम् । ३. विनीता० = अयोध्या । ४. त्रिपदीम् = त्रिदंड अथवा पूर्व काल में नाटकादि में मञ्चभूमि पर तीन कदम आगे चलकर मल्ल ताड़न करता हैं तद्वत् । ५. आस्फोट्य = आस्फालन कर के । ६. जनकः । ७. आर्यः = पितामह । ८. नीचगोत्रम् । ९. जात्यादि० = जाति वि. ८ मद स्थान ।

1. अ – इहं । 2. ब – ०त्थ मिरीई । 3. होही – ज. ।

(रोयविहुरसरीरे मरिइवियारणा)

सो अन्नया [१]गिलाणो जाओ, [२]पडियग्गिओ न साहूहिं ।
[३]अस्संजउ त्ति काउं, [४]ताहे चिंतेउमाढत्तो ॥११८॥

अस्संजयस्स मुणिणो, किच्चं न कुणंति संजमपहाणा ।
न य कारिउं पि जुज्जइ, वेयावच्चं इमे मज्झ ॥११९॥

ता किंचि तहारूवं, [५]अप्पसहायं करेमि सीसमहं ।
भवियव्वयाए [६]पउणो जाओ, इय चिंतमावन्नो ॥१२०॥

तस्स [७]सयासं पत्तो, कयाइ **कविलो** त्ति नाम रायसुओ ।
पुच्छइ धम्मं सोऽवि य, [८]जइधम्मं [९]अवितहं कहइ ॥१२१॥

न कुणसि कीस तुममिमं ?, इय पुट्ठे कहइ [१०]वइयरं निययं ।
कविलोऽवि हु धम्मत्थी, जइधम्मं काउमसमत्थो ॥१२२॥

पभणइ किं तुज्झ [११]वए, धम्मफलं नत्थि किंचि इय भणिए ।
गुरुकम्मो एसोऽवि हु, जइधम्मं नेच्छए काउं ॥१२३॥

इय चिंतिय सो भणिओ, [१२]पडिपुण्णफलं जईण धम्मम्मि ।
भो **कविल** ! [१३]केत्तियं पि हु, मज्झ वि दिक्खाए अत्थि त्ति ॥१२४॥

॥ तिहिं विसेसियं ॥

[१४]सीसत्थिणा उ एयं, मिच्छत्त[१५]विवड्ढिकारगं वोत्तुं ।
बद्धं असुभं कम्मं, भवभमणनिबंधणं घोरं ॥१२५॥

भणियं च –

---

१. ग्लानः । २. प्रतिजागरितः = शुश्रूषा, भक्ति करना । ३. असंयतः । ४. तदा । ५. आत्मसहायम् । ६. प्रगुणः = नीरोगी । ७. सकाशम् = पास । ८. यतिधर्मम् = साधुधर्म । ९. अवितथम् = सत्य । १०. व्यतिकरम् = बात । ११. व्रते । १२. प्रतिपूर्णफलम् = सम्पूर्णफल । १३. कियदपि । १४. शिष्याऽर्थिना । १५. ०विवृद्धिकारकम् ।

[१]दुब्भासिएण एक्केण, **मिरीई** दुक्खसागरं पत्तो ।
भमिओ कोडाकोडिं, [२]सागरसरिनामधेज्जाणं ॥१२६॥

पव्वाविओ य **कविलो**, तेण समं किं पि विहरिउं कालं ।
[३]चुलसीइ पुव्वलक्खे, सव्वाउं पालिउं तत्तो ॥१२७॥

[४]अप्पडिकंतो दुब्भासियस्स, कालं गओऽणसणविहिणा ।
दससागरोवमाऊ, **बंभे** कप्पे सुरो जाओ ॥१२८॥ ॥ जुम्मं ॥

आसुरिपमुहा सीसा, **कविले**णं दिक्खिया समायारं ।
कहिउं तेसिं नियमं, **बंभे** कप्पे गओ सोऽवि ॥१२९॥

ओहिं पउंजिऊणं, तत्तो नियदंसणाणुराएणं ।
नरलोए अवयरिउं; कहइ ससीसाण [५]**संखमयं** ॥१३०॥

तं पुण पणुवीस[६]तत्तरूवं, ताणि य इमाणि –

[१][७]पढमं तत्तं पयई, सत्तरयतमाण जा समावत्था ।
तीए य महं [२]जायइ, जं भण्णइ बुद्धिसद्देणं ॥१३१॥

तत्तो य अहंकारो, सोलस तत्ता तओ समुप्पन्ना ।
पंच य तम्मत्ताइं, एगारस इंदियाइं च ॥१३२॥

---

१. दुर्भाषितेन । २. सागरसदृशनामधेयानाम् = सागरोपम, सागर के समान जिसका नाप है वह । ३. चतुरशीति० = ८४ लाख पूर्व । ४. अप्रतिक्रान्तः = अकृतप्रायश्चित्तः । ५. साङ्ख्यमतम् । ६. तत्त्वरूपम् ।

७. प्रथमं तत्त्वं प्रकृतिः, सत्त्वरजस्तमानां या समाऽवस्था ।
तस्याः महज्जायते, या भण्यते बुद्धिशब्देन ॥१३१॥

ततश्चाऽहङ्कारः, षोडशानि तत्त्वानि ततः समुत्पन्नानि ।
पञ्चानि च तन्मात्रानि, एकादशेन्द्रियाणि च ॥१३२॥

1. अ – साङ्ख्यतत्त्वसंग्राहकमेतद्गाथापञ्चकं प.क. पुस्तके एवोपलभ्यते । 2. जाई – प. क. ।

[१]फासणरसणाघाणचक्खूसोत्ताइं बुद्धिकरणाइं ।
करपाय[२]पायुवत्था, मणवायाकम्मकरणाइं ॥१३३॥

गंधरसरूवफासा, सद्दो तम्मत्तया य मे तत्तो ।
पुढविजलतेयमारुय, तह भूयाई अह कमेण ॥१३४॥

पणुवीसइमं तत्तं आया, पुरिसो य तस्स पज्जाओ ।
एएसिं तत्ताणं, विन्नाणाओ हवइ मोक्खो ॥१३५॥

सो [३]पंचवण्णमंडलयसंठिओ, [1]अंतरट्ठिओ देवो ।
पणुवीसं तत्ताइं कहिऊण, गओ नियं ठाणं ॥१३६॥

(मरिइभवाऽणंतरभवपरंपरा)

आसुरिपमुहेहिं तओ, [४]सीसपसीसप्परंपराए उ ।
काऊण कुसत्थाइं, **भागवयं** दंसणं एयं ॥१३७॥

वित्थारियं महियले, इओ य सो **बंभ**सुरवरो **मिरिई** ।
कोल्लागसन्निवेसे चविउं, [५]**कोसिय**दिओ जाओ ॥१३८॥ ॥ जुम्मं ॥

---

१. स्पर्शनरसनाघ्राणचक्षुःश्रोत्राणि बुद्धिकरणानि ।
करपाद-पायु-उपस्थाः, मनोवाक्कर्मकरणानि ॥१३३॥

गन्धरसरूपस्पर्शाणि, शब्दः तन्मात्रता च मे तत्त्वम् ।
पृथिवीजलतेजोमरूत्तथा, भूतादयः अथ क्रमेण ॥१३४॥

पञ्चविंशतितमं तत्त्वं, आत्मा पुरुषः च तस्य पर्यायः ।
एतेषां तत्त्वानां, विज्ञानात् भवति मोक्षः ॥१३५॥

स पञ्चवर्णमण्डलकसंस्थितः, अन्तरस्थितो देवः ।
पञ्चविंशतिः तत्त्वानि कथयित्वा, गतो निजं स्थानम् ॥१३६॥

२. पायु = गुदा । उपस्थ = जननेन्द्रिय । ३. कपिल पाँच रंग वाले मण्डल के अन्दर रहा हुआ है । और उसके अंदर देव की आत्मा है । मतलब कि देव कपिल का रूप लेकर एसे मण्डल के अन्दर रहकर....। अथवा अन्तरस्थितः = आकाशस्थितः । ४. शिष्यप्रशिष्यपरम्परया । ५. कौशिकद्विजः ।

1. अंतरे ट्ठिओ - ज. ।

असिइं च सयसहस्सा, पुव्वाणं पालिऊण [१]सव्वाउं ।
परिवायगवयधारी, मरिऊण गओ स **[1]सोहम्मे** ॥१३९॥

[२]चविऊण चिरं कालं, संसारं भमिय [२]माहणो जाओ ।
थूणाए पूसमित्तो, बावत्तरिपुव्वलक्खाऊ ॥१४०॥

घेत्तुं **भागवय**वयं, **सोहम्म**सुरत्तणेण उववन्नो ।
चविउं **अग्गिज्जोओ, चेइय**नयरे दिओ जाओ ॥१४१॥

चउसट्ठि पुव्वलक्खा, तत्थाउं [३]होइउं परिव्वाओ ।
ईसाणे उववन्नो, तओ चुओ **मंदिर**पुरम्मि ॥१४२॥

जाओ य **अग्गिभूई**माहण, परिवायगो य होऊण ।
छप्पण्णपुव्वलक्खा, सव्वाउं पालइत्ताणं ॥१४३॥

पत्तो **सणंकुमारं, सेय[४]विया**ए य आउयखएणं ।
जाओ **भारद्दाओ,** पत्तो परिवायगत्तं च ॥१४४॥ तिहिं विसेसियं ॥

[५]चोयालीसं लक्खा, पुव्वाणं तत्थ आउयं जायं ।
मरिउं **माहिंद**सुरो, संजाओ [६]मज्झिमठिईओ ॥१४५॥

तो संसारं [७]हिंडिय, चिरकालं **थावरो** त्ति नामेणं ।
रायगिहे पवरदिओ, तत्थ वि परिवायगो जाओ ॥१४६॥

चउतीस पुव्वलक्खा, [३]परमाउं पालिऊण **बंभम्मि** ।
कप्पम्मि सुरो जाओ, भमिओ तत्तो य संसारे ॥१४७॥

(विस्सभूइभववण्णणं)

रायगिहम्मि पुरवरे, राया नामेण **विस्सनंदि** त्ति ।
भज्जा तस्स **पियंगू, विसाहनंदी** य ताण सुओ ॥१४८॥

---

१. सर्वाऽऽयुः । २. ब्राह्मणः । ३. भूत्वा । ४. श्वेतवीकापुर्याम् । ५. चतुश्चत्वारिंशत् । ६. मध्यमस्थितिकः । ७. हिण्डित्वा = भटक कर ।

1. सोहम्मं - ज.क. । 2. अ - तत्तो य । 3. परियायं - ह. ।

रण्णो तस्स कणिट्ठो भाया, नामं **विसाहभूइ** त्ति ।
सो जुवरज्जे ठविओ, तस्स पिया **धारिणी** देवी ॥१४९॥

सो **मिरिइ**[1]जीवदेवो, [2]चविऊणं **बंभलोग**कप्पाओ ।
धारिणिपुत्तो जाओ, नामेणं **विस्सभूइ** त्ति ॥१५०॥

जणणिजणयाण इट्ठो, पंचहिं धाईहिं लालियसरीरो ।
चंदो इव वड्ढंतो, कमेण सो जोव्वणं पत्तो ॥१५१॥

केरिसो य सो ?,

कुसलो सव्वकलासुं, [1]सूरो [2]चाई य सत्तवंतो य ।
धम्मप्पिओ [3]अकूरो, [4]गुरुयणभत्तो अयसभीरू ॥१५२॥

पुप्फकरंडुज्जाणं, तम्मि पुरे पवरतरुवर[3]समिद्धं ।
कीलइ सो तत्थ सुहं, अंतेउरपरिगओ विविहं ॥१५३॥

कीलेउं [4]तत्थिच्छइ, रायकुमारो **विसाहनंदि** त्ति ।
[5]नवरि न विरहं पावइ, [6]अहिट्ठिए **धारिणि**सुएण ॥१५४॥

पुप्फाईण निमित्तं, तत्थ गयाहिं **पियंगु**दासीहिं ।
दिट्ठो सो कीलंतो, तो [7]ईसावेसकलियाहिं ॥१५५॥

भणिया **पियंगु**देवी, सामिणि ! [8]**दोगुंदुगो** व्व उज्जाणे ।
कीलइ जुवरायसुओ, तुम्ह सुओ न लहइ पवेसं ॥१५६॥ ॥ जुम्मं ॥

एवं सोउं [9]उप्पन्नमच्छरा, रोसमुवगया सा वि ।
[10]कोवहरम्मि पविट्ठा, ससंभमं पुच्छिया रण्णा ॥१५७॥

---

१. शूरः । २. त्यागी । ३. ०समृद्धम् । ४. तत्र इच्छति । ५. विश्वभूति अन्दर होने के कारण प्रवेश नहीं होता है । ६. अधिष्ठिते । ७. ईर्ष्याऽऽवेशयुक्ताभिः । ८. दौगुन्दकः = उत्तम जातीय देवविशेष । ९. उत्पन्नमात्सर्या = ईर्ष्या । १०. कोपगृहे = क्रोध आने पर राज परिवार का सदस्य जहाँ जाकर बैठ जाता है वह स्थान ।

1. ०देवजीवो० - ह. । 2. चइऊणं - ह. । 3. अक्कूरो - क. । 4. गुरूण भत्तो - प. ।

तं देवि ! कीस कुविया ?, तीए भणियं न तुम्ह इह रज्जं ।
राया **विसाहभूई**, जस्स सुओ कीलइ जहिच्छं ॥१५८॥

पुप्फकरंडुज्जाणे, **विसाहनंदी** य न लहइ पवेसं ।
रण्णा भणियं सुंदरि !, अम्ह कूले एस कप्पो[१] त्ति ॥१५९॥

जं एगम्मि कुमारे, पुव्वपविट्ठे चिरेण वि न बीओ ।
पविसइ तत्थ कुमारो, जाव न सो निग्गओ सुयणु ! ॥१६०॥

णवरं जइ निब्बंधो, तुम्हं ता अवसरेण केणावि ।
जह तुह पुत्तो पविसइ, तत्थुज्जाणे तह करिस्सं ॥१६१॥

एवं तं संठविउं, आलोचेऊण मंतिणा सद्धिं ।
ताडाविया सुघोरा, पयाणभेरी कइयवेण[२] ॥१६२॥

तं सोउं संभंतो, उज्जाणाओ विणिग्गओ कुमारो ।
पत्तो रायसमीवं, विणएण य पणमिउं भणइ ॥१६३॥

किं देव ! पयाणमिणं ?, रण्णा भणियं विउत्थिओ[३] अम्हं ।
नियबलगव्वियचित्तो, सामंतो **पुरिससीहो** त्ति ॥१६४॥

मंडलमुवद्दवेई[४], नो पडिवन्नं च सो करं देइ ।
ता तस्सोवरि जत्ता[५], इय कहिए भणइ सो कुमरो ॥१६५॥

वीसत्था[६] इह चिट्ठह तुम्हे, को उवरि तस्स संरंभो ? ।
देह ममं आएसं, गंतुं तं जेण साहेमि[७] ॥१६६॥

इय भणिउं सो चलिओ, नियखंधावार[८]परिगओ सहसा ।
आगच्छंत[1] सोउं, सम्मुहमाओ[९] **पुरिससीहो** ॥१६७॥

---

१. कल्पः = आचार, व्यवस्था । २. कैतवेन = मायया । ३. व्युत्थितः = विरोधी होना । ४. देशमुपद्रवति । ५. युद्ध-यात्रा । ६. विश्वस्ताः । ७. साधयामि । ८. ०स्कन्धावारः = सैन्य । ९. सन्मुखमागतः ।

1. ब - आगच्छंतो ।

नीओ तेण सनयरं, कयसम्माणो य भोयणाईहिं ।
वियरियसविसेसकरो[१], विसज्जिओ विणयपणएणं ॥१६८॥

परिभमिउं नियदेसं, अद्दिट्ठउवद्दवो पडिनियत्तो ।
रण्णा **विसाहनंदी,** पवेसिओ तम्मि उज्जाणे ॥१६९॥

सोऽवि य नियपुरपत्तो, **पुप्फकरंडम्मि** पविसमाणो उ ।
पडिहारेण निसिद्धो, **विसाहनंदी** पविट्ठो त्ति ॥१७०॥

इय सोउं सो रुट्ठो, मायाए नीणिओ[२] अहं एत्तो ।
तो मुट्ठिपहारेणं, तप्पुरओ पहणइ कविट्ठिं[३] ॥१७१॥

पाडइ[४] सव्वकविट्ठे, भणइ य तुम्हं सिराइं पाडंतो[1] ।
एवं तु[२] तुज्झ पिउणो, पावा जइ हं न लज्जंतो ॥१७२॥

इय भणिय निग्गओ सो, **पियंगु**चेट्ठं च मुणियवुत्तंतो[३] ।
वेरग्गगओ चिंतइ, **अहो ! अणज्जाओ महिलाओ** ॥१७३॥

(विस्सभूइस्स वियारणाओ)

अवि य –

महिला कुडिलसहावा, बंधवकुलभेयकारिणी महिला ।
महिला निद्दयहिययया, पच्चक्खा रक्खसी महिला ॥१७४॥

महिला आलकुलहरं[५], महिला लोयम्मि दुच्चरियखेत्तं ।
महिला सकज्जनिट्ठा[६], महिला जोणी अणत्थाणं ॥१७५॥

---

१. वितरितसविशेषकरः = जिसने ज्यादा कर दिया है । २. निष्कासितः । ३. कपित्थम् = 'कोठानुं झाड़' । ४. सभी कोठे के फल गिराते है और बोलते है कि तुम्हारे पिताजी के पाप से = (असदृश आचरण से) में लज्जित हूँ। शर्मिन्दा हूँ। यदि बेशर्म होता तो बदले में इस कोठे की तरह आप सभी के मस्तक को गिरा देता। अथवा इस पेड़ के फल की तरह आप सभी के एवं आप के पिताजी के भी मस्तक मैं गिरा सकता हूँ। मगर मैं पाप से लज्जित = डरता हूँ। इस लिए ऐसा नहीं करता हूँ। ५. आलकुलगृहम् = दोष का स्थान । ६. स्वकार्यनिष्ठा = स्वार्थी ।

1. पाडिंतो – ज.ह.क. । 2. महल्लपिउणो – ज. । 3. पुव्वुत्तं – ह.ज. ।

किं च -

विसयासत्ता पुरिसा, विडंबणं तं जयम्मि [1]पाविंति ।
[2]जं कहिउं पि न तीरइ, [1]धूलीवुक्कावणं[3]महं व ॥१७६॥

अवि य -

[2][4]जोव्वणमयणुम्मत्तेहिं, विसयतण्हाविमोहियमणेहिं ।
तं तं कीरइ पुरिसाऽहमेहिं, जं जं कुगइहेउं ॥१७७॥

लहिउं मणुस्सजम्मं, [3]सोग्ग[5]इगमणुग्गसाहणमणग्घं ।
रयणं [4]वराडियाए व्व, हारए विसय[6][5]गिद्धीए ॥१७८॥

पुरिसत्तणं विवेयं, कुलमज्जायं विसिट्ठसंसग्गिं ।
लज्जं गुरुयणसेवं, चएइ विसएहिं [6]वेलविओ ॥१७९॥

विसयसुहलालसाणं, [7]सुधम्ममंदायराण पुरिसाणं ।
अमुणियसारासाराण, गलइ हत्थट्ठियं [8]अमयं ॥१८०॥

[9]विसयासेवणदविणज्जणम्मि, कुकुडुंबतत्तिकरणम्मि ।
[10]निच्चक्खणिया अजरामर व्व, चिट्ठंति मूढप्पा ॥१८१॥

ता उज्झिउं [11]दुरंते, विसए पावस्स आसवद्दारे ।
साहेमि अणन्नमणो, सप्पुरिसनिसेवियं धम्मं ॥१८२॥

इय वेरग्गगएणं, दिट्ठो सिरि[7]**विजयसीह**आयरिओ ।
कुमरेण तेण विणएण, वंदिउं पुच्छिओ एवं ॥१८३॥

---

१. धूल उडाने का उत्सव = धुलेटी, जैसे धुलेटी में नये कपड़े पहने हो तो बिगड़ने से बचा नहीं पाते, वैसे विडंबना भी न रोकी जा सकती हैं, न कही जा सकती है। २. यौवनमदनोन्मत्तैः। ३. सुगतिगमनोग्रसाधनमनर्घम्। ४. वराटिकाः = कौड़ी। ५. ०गृद्धि = आसक्ति। ६. व्याकुल। ७. सुधर्मे मन्दाऽऽदराणाम्। ८. अमृतम्। ९. कुत्सित-कुटुम्ब०। १०. नित्याऽक्षणिकाः = नित्यव्यग्राः। ११. दुरन्तान् = जिसका अन्त दुःखदायी हैं।

1. ब - पावेंति। 2. अ - जह। 3. अ - ०मह व्व। 4. जोयण० ह.ज.। 5. ०गममग्ग-साहणमहग्घं - ह.ज.। 6. ०गेहीए - ह.ज.। 7. संभूओ नाम मुणिवरो - ज.।

भयवं ! भवाडवीए, परिभामिज्जंति पाणिणो केणं ? ।
सासयसोक्खे मोक्खे, केणं [1]व वच्चंति ? मे कहसु ॥१८४॥

धम्मोवयारनिरओ, एसो [१]धम्मत्थिओ त्ति मुणिऊणं ।
कुमरेण पुट्ठमत्थं, सो सूरी कहिउमाढत्तो ॥१८५॥

(सिरिविजयसिंहायरियस्स धम्मकहा)

जम्मजरमरण[२]वाहीविओगसोगाइदुक्खपउरम्मि ।
संसारे भमइ [३]जिओ, कम्मेण [४]टुप्पयारेणं ॥१८६॥

नाणस्स दंसणस्स य, आवरणं वेयणीयं मोहणियं ।
आउ य नामं गोत्तं, अट्ठमयं अंतरायं च ॥१८७॥

पंच नव दोन्नि अट्ठावीसा, चउरो तहेव [५]बायाला ।
दोन्नि य पंच य, कमसो उत्तरपयडीओ कम्माणं ॥१८८॥

मिच्छद्दंसणमविरइकसायजोगा य बंधहेउ त्ति ।
ओहेण तस्स संपइ, विसेसहेऊ [२]णिसामेहि ॥१८९॥

(अट्ठकम्मबंध-कारणाइं)

[६]पडणीय[३]मंतराइए, उवघाए तप्पओस निण्हवणे ।
बंधइ **णाणावरणं**, एवं चिय **दंसणावरणं** ॥१९०॥

[७]भूयाणुकंपजिणभत्तिसंजुओ, खंतिदाणविणयपरो ।
बंधइ [८]**सायावेयं**, [4]विवरीओ बंधए इयरं ॥१९१॥

अरहंतसिद्धचेइयतित्थाइसु, [९]पच्चणीयजोगेहिं ।
मिच्छत्तमोहणीयं, बंधइ संसारवुड्ढिकरं ॥१९२॥

---

१. धर्मार्थी = धर्म की इच्छावाला । २. ०व्याधि० । ३. जीवः । ४. अष्टप्रकारेण । ५. द्विचत्वारिंशत् । ६. ज्ञान या ज्ञानी का विरोधी होना और उनको अन्तराय करना । ७. भूताऽनुकम्पा० = जीवदया । ८. शातावेदनीयम् । ९. प्रत्यनीकयोगैः = विरोधी कार्य करने से ।

1. य - ज. । 2. अ. - ०निसाहेमि - ह.ज. । 3. ०मंतराइ य उव० - प. । 4. ब- विवरीए बंधई ।

तिव्वकसाओ[१] बहुमोहपरिणओ, चरणकरणपडणीओ ।
बंधइ **चरित्तमोहं,** दुविहं[२] पि चरित्तगुणघाई ॥१९३॥

कुणिमाइ[३]भक्खणरओ, मिच्छत्तमहापरिग्गहारंभो ।
नरयाउयं निबंधइ, पावमई रुद्द[४]परिणामो ॥१९४॥

उम्मग्गदेसओ मग्गनासओ, अट्टज्झाण[५]ज्झाइल्लो ।
बहुनियडि[६]संपउत्तो, **तिरियाउं**[2] बंधई जीवो ॥१९५॥

पयई[७]ए तणुकसाओ, दाणरओ पयइ[८]भद्दगविणीओ ।
मज्झिमगुणेहिं जुत्तो, **मणुयाउं**[3] बंधई जीवो ॥१९६॥

अणुव्वयमहव्वएहिं, बालतवाकामनिज्जराईहिं ।
देवाउयं निबंधइ, सम्मद्दिट्ठी उ जो जीवो ॥१९७॥

मणवयणकायवंको, गुण[९]दोसी गारवेहिं पडिबद्धो ।
असुहं बंधइ **नामं,** तप्पडिवक्खो य सुह**नामं** ॥१९८॥

अरहंताइसु भत्तो, सुत्तरुई पयणु[१०]माण गुणरागी ।
बंधइ **उच्चागोयं,** विवरीओ[4] बंधए[5] इयरं ॥१९९॥

पाणवहाईनिरओ, जिणपूयादाणभोयविग्घ[6]करो ।
अज्जेइ **अंतरायं,** न लहइ जेणि[११]च्छियं लाभं ॥२००॥

इय पावकम्मबंधस्स, हेउणो जाणिऊण सुविवे[१२]या ।
भवभमणभीरुणो जे, पयत्तओ ते विवज्जंति ॥२०१॥

---

१. तीव्रकषायः । २. द्विविधमपि = देशविरति + सर्वविरति । ३. (दे.) मांस । ४. रौद्र-परिणामः । ५. ०ध्यायी । ६. ०निकृति० = माया । ७. प्रकृत्या । ८. प्रकृतिभद्रकविनीतः । ९. गुणदोषिन् गुणद्वेषिन् वा । १०. प्रतनुमानः = अति अल्प मान कषाय वाला । ११. येन ईप्सितम् । १२. सुविवेकाः ।

1. रोद्द० - ज.ह.क. । 2. बंधए - ज. । 3. ब- बंधए । 4. अ - विवरीए । 5. ब- बंधई । 6. ब - ०विग्घयरो ।

णाणाइगुणवसेणं, असेसकम्मक्खए य निव्वाणं ।
होइ जियाणं तम्हा, णाणाइसु चेव जइयव्वं ॥२०२॥

तहा हि –

नाणेण मुणइ भावे, सद्दहइ य सम्मदंसणगुणेणं ।
चरणेण नासवेई[१] कम्मं, पुण सुज्झइ तवेणं ॥२०३॥

(संवेगावेगाओ विस्सभूइदिक्खा)

इय सुणिय **विस्सभूई,** अइसयसंवेगभावियमईओ ।
पडिवन्नो पव्वज्जं, अणवज्जं[२] गुरुसयासम्मि[३] ॥२०४॥

पंचसमिओ तिगुत्तो, पंचिंदियनिग्गहेण[1] परिकलिओ ।
निज्जियचउक्कसाओ, छक्कायदयाधरो[४] धीरो ॥२०५॥

समसत्तुमित्तभावो, समतिणमणिलेट्ठुकंचणो[५] मइमं ।
जियउवसग्गपरीसहसेन्नो[६], विहरइ गुरूहिं समं ॥२०६॥ ॥ जुम्मं ॥

कालेणं गीयत्थो जाओ, विहरइ सगुरुअणुन्नाओ ।
एगल्लविहारेणं, सव्वत्थ य अपडिबद्धो त्ति ॥२०७॥

विहरंतो संपत्तो **महुर**पुरिं, तत्थ मासपारणए[७] ।
भिक्खट्ठाय पविट्ठो, दिट्ठो[२] भवियव्वयवसेणं[८] ॥२०८॥

पुरिसेहिं विवाहत्थं, **विसाहनंदिस्स** आगयस्स तहिं ।
संजायमच्छरेहिं, पविसंतो[3] तेहिं सिट्ठो उ ॥२०९॥ ॥ जुम्मं ॥

---

१. न आसेवति नाशयति वा । २. अनवद्यम् = निर्दोष । ३. ०सकाशे = निकट, पास । ४. षट्कायेसु दयाधरः । ५. समतृणमणिलेष्ठुकाञ्चनः = तृण और मणि, मिट्टी और सोने में जिस को कोई भेद नहीं है = समदृष्टि हैं । ६. जितोपसर्गपरिषहसैन्यः । ७. मासक्षपणपारणके । ८. भवितव्यतावशात् ।

1. अ – ०निग्गहे य । 2. ब – कमसो । 3. अ – पयंसिओ तस्स विण्णाओ ।

एत्थंतरम्मि तेसिं[१], गावीए अहिणवप्पसूयाए[२] ।
पेच्छंताणं सिंगेहिं[३], पेल्लिओ महियले पडिओ ॥२१०॥

सो साहू तवसुसिओ[४], उवहसिओ तेहिं कलयलं[५] काउं ।
तं संपइ कत्थगयं, कविट्ठपाडणबलं तुज्झ ? ॥२११॥

तं सोउं ते[६] य वियाणिऊण, सो कम्मदोसओ रुट्ठो ।
घेत्तूण य तं गावि, सिंगग्गेहिं[७] भमाडेइ ॥२१२॥

नियसीसोवरि तणपूलियं व, सो खिवइ भूमिवट्ठम्मि ।
ते पभणइ भयभीए, सो रुट्ठो निट्ठुरगिराए ॥२१३॥ ॥ जुम्मं ॥

रे रे पावा ! किं कोल्हुएहिं[९], सीहस्स दुब्बलस्सावि ।
लंघिज्जइ देहबलं ?, इय भणिउं निग्गओ तत्तो ॥२१४॥

गुरुअहिमाणवसेण य, रोसुच्छाइयविवेगरयणेणं[१०] ।
बद्धं तेण नियाणं, **धी[११] ! धी ! कम्मस्स परिणामो** ॥२१५॥

तं च केरिसं ?

जइ होज्ज इमस्स फलं, मएऽणुचिण्णस्स तवविसेसस्स ।
तोऽहं भविस्सकाले, अतुलबलपरक्कमो होज्जा ॥२१६॥

वरकणगेणं रीरिं[१२]·[1], रासहमेरावणेण अइमूढो ।
कप्पूरेण[2] व छारं[१३], वेरुलिएणं[१४] व[3] कायमणिं[१५] ॥२१७॥

गुंजाओ[१६] मोत्तिएहिं, जह मग्गइ कोइ तह इमं तेण ।
मोक्खपसाहणतवसा, देहबलं मग्गियमसारं ॥२१८॥ ॥ जुम्मं ॥

---

१. तेषां प्रेक्षताम् । २. अभिनवप्रसूतया = जिसने अभी अभी बच्चे को जन्म दिया है, वैसी गाय द्वारा । ३. धक्का लगाया हुआ । ४. तपःशोषितः । ५. कलकलं = कोलाहल । ६. तान् । ७. शृङ्गाग्राभ्याम् । ८. तान् । ९. (दे.) शृगालैः । १०. रोषोच्छादितविवेकरत्नेन = क्रोध के कारण नाश किया है विवेक रत्न जिसने (विश्वभूति) । ११. धिग् । १२. रीरीम् = पित्तल । १३. क्षारम् = भस्म, भूति । १४. वैडूर्येण । १५. काँच खण्ड । १६. तुच्छ फलविशेष ।

1. रीरियं - ज. । 2. य - ह.ज.क. । 3. च - ह.ज.क. ।

काउं नियाणमेयं, अपडिक्कंतो य तस्स ठाणस्स ।
सो मासियभत्तेणं कोडी[१][1]वासाउओ होउं ॥२१९॥

कप्पम्मि **महासुक्के,** उक्कोस[२][2]ठिईय सुरवरो जाओ ।
कयसुरकिच्चो, भुंजइ पंचविहे दिव्वकामगुणे ॥२२०॥ ॥ जुम्मं ॥

इओ य -

(सिरिवीरजिणिंदस्स अट्ठारसइमभववत्ता)

अत्थि इह **भरह**वासे, णयरं **पोयणपुरं** परमरम्मं ।
तत्थ **रिवुपडिसत्तु**[३][3]राया, तं भुंजइ विजियपडिवक्खो ॥२२१॥

भद्दा य तस्स भज्जा, **अयलो** नामेण तीए परम[३]सुओ ।
चउहिं महासुमिणेहिं, सूइयजम्मो समुप्पन्नो ॥२२२॥

भगिणी तस्स कणिट्ठा, **मिगावई** पवर[४][4]रूवसंपन्ना ।
सा पढमजोव्वणत्था, सव्वालंकारवरदेहा ॥२२३॥

पिउपायवंदणत्थं, जणणीए पेसिया वरनिमित्तं ।
नियउच्छंगनिविट्ठा, पलोइया तेण सव्वगं ॥२२४॥ ॥ जुम्मं ॥

अज्झु[४]ववन्नो तीए, रूवम्मि मणोरमम्मि पुच्छेइ ।
सामंत[५]मंतिवग्गं, मेलेउं पउरलोयं च ॥२२५॥

जं एत्थ मज्झ भवणे, रयणं उप्पज्जए तयं कस्स ।
भो ! आ[६][5]हव्वं जायइ ?, तो भणियं तेहिं सव्वेहिं ॥२२६॥

अमुणियपरमत्थेहिं, सव्वम्मि वि तुज्झ[७]मंडले सामि ! ।
जं उप्पज्जइ रयणं, तं तुम्हं, किं पुण गिहम्मि ? ॥२२७॥ ॥ जुम्मं ॥

---

१. कोटिवर्षाऽऽयुः । २. उत्कृष्टस्थितिकः । ३. श्रेष्ठसुतः । ४. अध्युपपन्नः = अत्यन्त आसक्त । ५. सामन्त० = अधीन राजा, समीप देश का राजा । ६. आभाव्यम् = मालिकी । ७. देशे । ८. गृहे ।

1. कोडिय० - ज. । 2. उ - ज.ह.क. । 3. अ - पडिसत्तू । 4. ०रूयसं० - ज.क.प. । 5. ब - आभव्वं - ज.प.क.ह. ।

(पयावइस्स सपुत्तीसद्धिं विवाहो)

जइ एवं ता एसा, **मिगावई** [१]पवरमित्थियारयणं ।
भज्जा मज्झ भविस्सइ, जं वयणं अवितहं तुम्हं ॥२२८॥

ते [२]सवयणेण छलिया, अहोमुहा लज्जिया गया सव्वे ।
णियणियठाणं[1], पच्छा सव्वेसिं [३]कूयमाणाणं ॥२२९॥

गंधव्वविवाहेणं, सयमेव विवाहिया [2]निया कन्ना ।
भद्दा निवारयंती, न य गणिया रायमूढेणं ॥२३०॥ ॥ जुम्मं ॥

[३]सा खेयसमावन्ना चिंतइ, इमिणा अकज्जमायरियं ।
[४]कुलगोत्तलंछणकरं, **अहो ! हु रागस्स माहप्पं** ॥२३१॥

अहवा –

[५]ताव फुरइ वेरग्गु चित्ति, कुललज्ज वि तावहिं ।
ताव अकज्जह तणियसंक, गुरुयणभउ तावहिं ॥२३२॥

[६]ताविंदियहं वसाइ, जसह सिरि [4]सहायइ तावहिं ।
मयरद्धयवेयालवसिउ, नरु होइ न जावहिं ॥२३३॥ ॥ जुम्मं ॥

एवं परिभाविंती[5], **अयले**ण समं गया तओ **भद्दा** ।
दक्खिणदेसे नयरिं, [७]**माहेसरियं** निवेसेइ ॥२३४॥

---

१. प्रवरं स्त्रीरत्नम् । २. स्ववचनेन । ३. कूजताम् = आवाज, विरोध करना । ४. कुलगोत्र-लाञ्छनकरम् ।

५. तावत् स्फुरति वैराग्यं चित्ते, कुललज्जाऽपि तावत् ।
तावत् अकार्याणि [१]ततशङ्कानि, गुरुजनभयः तावत् ॥२३२॥

६. तावदिन्द्रियाणि वश्यानि, यशःश्रियौ [२]सहायाते तावत् ।
मकरध्वजवेतालवशः, नरः भवति न यावत् ॥२३३॥ ७. माहेश्वरीम् ।

---

१. विस्तीर्णशङ्कानि अकार्याणि = अकार्य करते वक्त शङ्का वहाँ तक ही होती हैं । । २. साहाय्यिनौ वा ।

1. ०ट्ठाणं – ज.ह. । 2. अ – नियय० । 3. अ – वेरग्गसमा० – क.प. । 4. हायइ – ज.क.ह. । 5. ०भावंति – ज.क.ह. ।

अयलो तत्थ ठवेउं जणणिं, पिउमूलमागओ तस्स[1] ।
जायं नामं च **पयावइ** त्ति, रण्णो जहत्थमिणं[2] ॥२३५॥

अह **विस्सभूइ**जीवो, सत्तमकप्पाउ सुरवरो चविउं ।
सत्तमहासुमिणेहिं, वज्जरिओ[1] **केसवो** पढमो ॥२३६॥

उववन्नो कयपुण्णो, **मिगा**ए देवीए कुच्छिसंभूओ ।
पुत्तो **पयावइ**स्स, **तिविट्ठु**नामो त्ति विक्खाओ ॥२३७॥

सो जोव्वणमणुपत्तो, कलासु कुसलो य कीलइ[2] जहिच्छं ।
अयलेण भाउणा सह, बलदेवेणं विगयसंको ॥२३८॥

इओ य –

अत्थि महामंडलिओ, **आसग्गीवो** पयंडनरनाहो ।
सो पुच्छइ नेमित्तिं, कस्स सयासाउ[3] मज्झ भयं ॥२३९॥

नेमित्तिएण भणियं –

जो **चंडमेह**दूयं धरिसेही[4] तुज्झ, तह य बलवंतं । .
जो सीहं मारेही[5], तस्स सयासाउ तुज्झ भयं ॥२४०॥

इय कहिए सो भीओ, दोऽवि **पयावइ**णरिंदपुत्ते य ।
बलवंते सोऊणं, दूयं पेसइ **पयावइ**णो ॥२४१॥

(पयावइपुत्तकयचंडमेहदूयावमाणं)

तं **चंडमेह**[3]नामं, पेच्छणए[6] संठियाण सो पत्तो ।
कोउगअक्खित्ताणं[7], तिण्हं पि नरिंदकुमराणं ॥२४२॥

---

१. कथितः । २. क्रीडति । ३. सकाशात् । ४. धर्षिष्यति = पराभव करना । ५. मारयिष्यति । ६. प्रेक्षणके = नाटक । ७. ०आक्षिप्तानाम् = एकतान, लीन ।

1. ०तत्थ – अ । 2. अ–०त्थमिमं । 3. अ – ०मेहदूयं ।

[१]पेच्छाभंगो जाओ, दूयागमणेण **आसगीव**स्स ।
रुट्ठा दोऽवि कुमारा, पेच्छाभंगो कओ केण ? ॥२४३॥ तिहिं विसेसियं ॥

कहियं च तेसि पिउणा, जस्साणाकारिणो बहुनरिंदा ।
भरहद्धवासिणो इह, तस्सेसो आगओ दूओ ॥२४४॥

सम्माणिओ य दूओ, कय[1]कज्जो [2]पत्थिओ सपुर[2]हुत्तं ।
अद्धपहे गंतूणं, कुमरेहिं [3]पिट्टि[3]ओ गाढं ॥२४५ ॥

[4]तप्पुरिसा य पलाणा, सोऽवि य भीएण [4]तेसि जणएणं ।
बिउणं तिउणं दाउं, खमाविओ विणयजुत्तेणं ॥२४६॥

एएहिं कुमारेहिं, [5]अयाणुएहिं [6]सिसुत्तदोसेणं ।
[7]जं अवयरियं तुम्हं, सव्वं चिय खमसु तं मज्झ ॥२४७॥

ण य कहियव्वं एयं, रण्णो दुच्चेट्ठियं कुमाराणं ।
[8]सामोवयारगहिओ, सो [5]विय [9]पच्चाह, न कहिस्सं ॥२४८॥

इय भणिय गओ दूओ, पुव्वपलाणेहिं [10]साहियं सव्वं ।
पुरिसेहिं [11]दूयहणणं, **[6]अस्सग्गीव**स्स कुमरकयं ॥२४९॥

तं सोउं सो कुविओ, दूओऽवि समागओ तयं पुट्ठो ।
तेण वि सव्वं कहियं, पुव्वं चिय मुणियमिमिण त्ति ॥२५०॥

(सालिखेत्तरक्खए आसग्गीवाऽऽणा)

पुणरवि दूओ भणिओ, गंतूण **पयावइ**स्स साहेसु ।
[12]साली[12]खेत्तं रक्खसु, [13]कसिज्जमाणं तुमं मज्झ ॥२५१॥

---

१. प्रेक्षाभङ्गः = नाटकभङ्ग । २. (दे.) अभिमुख = संमुख । ३. पिट्टितः = ताड़ितः । ४. द्विगुणं त्रिगुणम् । ५. अज्ञायकाभ्यां = अज्ञानी । ६. शिशुत्वदोषेण । ७. अपकृतम् । ८. साम्योपचारगृहीतः । ९. प्रत्याह = जवाब देना । १०. कथितम् । ११. दूतहननम् । १२. शालि० = चावल । १३. कृष्यमाणम् ।

1. ०किज्जो – ज. । 2. अ – पट्ठिओ – प. । 3. अ – पेट्टिओ – प. । 4. तस्स – ह. । 5. च्चिय – प. । 6. ब – आसग्गी० ।

दूएण य गंतूणं, आएसो साहिओ जहा भणिओ ।
केसवपिउणो, तेण वि भीएण सुया उवालद्धा[१] ॥२५२॥

धरिसंतेहिं तहा तं, तुब्भेहिं **चंडमेह**दूयं ति ।
हो पुत्ता ! किमयंडे, वीसत्थो[२] खवलिओ[३] मच्चू ? ॥२५३॥

जं अज्ज अकाले च्चिय, सालीरक्खा उ मह समाइट्ठा ।
तेहिं उ भणियं अम्हे, रक्खिस्सामो तयं[४] सालिं ॥२५४॥

सत्थो चिट्ठउ ताओ, इय भणिउं ते गया भयविमुक्का ।
जत्थ कसिज्जइ साली, पुट्ठा ते करिसगा[५] तेहिं ॥२५५॥

कह रक्खिज्जइ एसा, केच्चिरकालं[1] च, तेहिं ते भणिया ।
चउरंगेण बलेणं, रक्खिज्जइ जाव छम्मासा ॥२५६॥

भणियं **तिविट्ठु**णा तो, खिज्जिस्सइ[६] को णु एत्तियं कालं ? ।
जो एत्थुवद्दवकरो, तं मम दरिसेह[2], किं बहुणा ? ॥२५७॥

एत्थ गुहाए चिट्ठइ, कुमार ! सीहो कयंतसारिच्छो ।
सो वसहं[३]करिसगाई[७], संहारइ[८] अकयपडियारो[९] ॥२५८॥

(उत्तमपुरिसाण उत्तमया)

तो तं सीहस्स गुहं, कुमरो अइवयइ[१०] रहसमारूढो ।
उट्ठइ वियंभमाणो, सीहो जणकलयलरवेणं ॥२५९॥

पयचारी एस अहं रहम्मि, ता विसरिसं[११] इमं जुद्धं ।
इय चिंतिय असिफरए[१२], घेत्तूण रहाओ ओयरिओ[४] ॥२६०॥

---

१. उपालब्धौ = उपालम्भ दिया । २. विश्वस्तः = विश्वास युक्त, शान्त । ३. (दे.) कुपित । ४. तम् । ५. कृषकाः = किसान । ६. खिद् = खेत्स्यति = उद्विग्न होना, थकना । ७. वृषभ-कर्षकान् । ८. संहरति = विनाश करना । ९. अकृतप्रतिकारः = जिसका प्रतिकार = उपाय नहीं किया है । १०. अभिव्रजति अतिव्रजति वा । ११. विसदृशम् = असमानता । १२. असिफलकौ = तलवार एवं ढाल ।

1. ०केचिर० - क. । 2. दरिसेहि - ज.प. । 3. ०करिसयाइं - ह. । 4. ब - उत्तरिओ - ह. ।

एस वराओ दाढानहरत्थो,[१] सत्थपहरणो[२] उ अहं ।
असमंजसमेयं पि हु, इय कुमरो मुयइ सत्थाणि[1] ॥२६१॥

तं पेच्छिय[२] सो रुसिओ, अहो ! धारिट्ठं[४] इमस्स पुरिसस्स ।
एगागी गुहमाओ[५], बीयं परिचत्तरहसत्थो ॥२६२॥

इय चिंतिय अवदारियवयणो[६], कुमरस्स देइ ओखंदं[७] ।
तेण वि दोण्णि वि ओट्ठे[८], घेत्तूणं दोहिं वि करेहिं ॥२६३॥

जुण्णपडओ[९] व्व सीहो, हेलाए[१०] फाडिओ[३] स दुट्ठप्पा[११] ।
जो आसि पुव्वकाले, **विसाहनंदि** त्ति रायसुओ[१२] ॥२६४॥ ॥ जुम्मं ॥

(करुणापुण्णहिअयस्स सारहिस्स अमियवयणं)

रोसेण फुरुफुरंतो[१३], माणुसमेत्तेण मारिओऽहं ति ।
सारहिणा उवसमिओ[१४], सो सीहो महुरवायाए ॥२६५॥

पसुसीहो भद्द ! तुमं, नरसीहो एस पुण कुमारो त्ति ।
ता जइ सीहो सीहेण, मारिओ को किरामरिसो[१५] ? ॥२६६॥

अमयं पिव मन्नंतो, सारहिवयणं सुरुद्द[४][१६]परिणामो ।
मरिऊण गओ नरए[५], सीहो अइदुक्खपउरम्मि[१७] ॥२६७॥

अह सन्निहियसुरेहिं, मुक्कं कुमरोवरिं कुसुमवरिसं ।
केसरिचम्मं घेत्तुं, चलिया कुमरा सपुरहुत्तं[१८] ॥२६८॥

---

१. दंष्ट्रानखास्त्रः = दांत और नाखून ही जिसके शस्त्र हैं। २. शस्त्रप्रहरणः = शस्त्र और आयुध वाला। ३. प्रेक्ष्य। ४. धार्ष्ट्यम् = धृष्टता। ५. गुहां आगतः। ६. अवदलितवदनः = खुला मूँह वाला। ७. अवस्कन्दम् = हमला करना, 'तराप'। ८. ओष्ठौ = अधर। ९. जीर्णपटः = पुराना कपड़ा। १०. हेलया = सरलता से, अल्प प्रयास से। ११. स्फाटितः = विदारित। १२. दुष्टाऽऽत्मा। १३. पोस्फुराय् = खूब काँपना, तड़फना। १४. उपशमितः = शान्त किया। १५. किलाऽमर्षः = असहिष्णुता, क्रोध। १६. सु-रौद्रपरिणामः = अति रौद्र परिणाम वाला। १७. अतिदुःखप्रचुरे। १८. स्वपुरसन्मुखम्।

1. अ - सत्थाइं। 2. पेच्छिवि - ज.क.। 3. ब - फालिओ - ह.क.। 4. अ - सुरोद्द० - प.। 5. ब - णरयं - ज.क.ह.।

भणिया य करिसगा ते, **धोडयगीवस्स**[1] कहह गंतूणं ।
चिट्ठ तुमं वीसत्थो, तुह सत्तू मारिओ सीहो ॥२६९॥

कहियं च तेहिं गंतुं, वयणं तं **आसगीव**रायस्स ।
सोऽवि निसामिय दूयं, पेसेइ **तिविट्ठु**जणयस्स ॥२७०॥

पेसेसु नियकुमारे, जेणं पेच्छेमि देमि देसे य ।
इय भणिए सो गंतुं, आएसं कहइ तं तस्स ॥२७१॥

तो भणइ **तिविट्ठु**पिया, सयमागच्छामि रायपासम्मि ।
अज्ज वि बाला कुमरा, सेवं काउं न याणंति ॥२७२॥

दूएण य रूसिऊणं[2] भणियं, किं जंपिएण इह बहुणा ? ।
अह पेसेसु कुमारे, अहवा[3] भव जुज्झसज्जो त्ति ॥२७३॥

इय भणिए सो दूओ, कुमरेहिं धाडिओ[4] गले घेत्तुं ।
तेण य तं सविसेसं, नियपहुणो साहियं सव्वं ॥२७४॥

कंडारिओ[5] व्व सीहो, सो तक्खणमेव रोसमावन्नो ।
बहुसामंतसमेओ, बहुदलअक्खोहणिसमग्गो[6] ॥२७५॥

अक्खोहणीए पुण पमाणं –

इगवीससहस्साइं, अट्ठसया सत्तरा करिरहाणं ।
तिउणा आसा, अक्खोहिणीए सुहडा य पंचगुणा ॥२७६॥

---

१. अश्वग्रीवस्य । २. निस्सारितः = निष्कासित = बाहर निकाला । ३. उत्कीर्णः = क्षत, घायल अथवा काण्डाऽऽर्तः = बाण से घायल । ४. ०दल० – सैन्य । ५. ०अक्षौहिणी० = एक बड़ी सेना, जिस में २१,८७० हाथी, २१,८७० रथ, ६५,६१० घोड़े और १०,९३,३५० पैदल होते है ।

1. ब – ०घोडग्गी – ज.ह. । 2. हसि० – प. । 3. अ – ठायसु – ज.क. । 4. ब – गंतुं – ह. । 5. अ – ०रिउ व्व – प. । 6. ०समेओ – ह.क. ।

[1]अवसउणखलियगमणो, **तिविट्ठुअयलाण** [1]पत्थिओ उवरिं ।
[2]अमरिस[2]पहरियहियओ, ताडियभेरीरवरउद्दो ॥२७७॥

चिंतियं [3]च तेण –

(आसग्गीवतिविट्ठूणं जुद्धं)

[3]थोवं पि छिज्जइ [4]रिणं, [5]अग्गी थेवोऽवि [6]विज्झवेयव्वो ।
[7]मउओऽवि [8]गओ छिज्जइ, बालो च्चिय [9]हम्मए सत्तू ॥२७८॥

विन्नायतयागमणो, **पयावई** [5]नियकुमारपरियरिओ ।
नियबलसहिओ [10]थक्को, देसंते तं [11]पडिच्छंतो ॥२७९॥

मिलियाण तत्थ दोण्ह वि, बलाण जुद्धं सुदारुणं जायं ।
बहुदिवसाणि [6]य, बहुनरकरितुरयसहस्ससंहरणं [12]॥२८०॥

बहुजीवखयं पेच्छिय, **तिविट्ठु**णा भाणिओ स पडिसत्तू ।
किं निरवराहजणमारणेण, बहुपावमूलेणं ? ॥२८१॥

तुज्झं मज्झ य जुज्झं, संपज्जउ वइरभावजुत्ताणं ।
इय भणिए [7]ते दोण्णि वि, जुज्झेण [8]परोप्परं लग्गा ॥२८२॥

खीणेसु पहरणेसुं, **आसग्गीवो** उ मुयइ वरचक्कं ।
केसववहणनिमित्तं, पडियं [13]तुंबेण तं तस्स ॥२८३॥

---

१. अपशकुनस्खलितगमनः । २. अमर्षप्रभरितहृदयः = क्रोध से पूर्ण भरा हुआ हृदय वाला । ३. स्तोकमपि । ४. ऋणम् = कर्ज । ५. अग्निः । ६. विध्यापयितव्यः । ७. मृदुकोऽपि = सामान्य । ८. गदः = रोग । ९. हन् = हन्यते । १०. (दे.) स्थितः । ११. प्रतीक्षमाणः । १२. ०संहरणम् = संहार, नाश । १३. तुम्ब = चक्र का मध्य भाग । छाती के ऊपर चक्र का मध्य भाग ठुकराया, धार नहीं । अथवा वह चक्र पुण्योदय से अलाबु 'तुंबडु' की तरह गीरा = पीड़ा नहीं हुई ।

1. अ – पट्ठिओ – ज. । 2. अ – अमरिसविहरिय० – प. । 3. अ – चणेण । 4. ब – वि य । 5. वि य – ज.ह.क. । 6. य नास्ति – क.ज.प । 7. ब – तो – ज.प.ह. । 8. ब – परोपरं – ह. । 9. ०हणण० – क. ।

जओ –

[1]कंतारे जलमज्झे, रिउगहणे भीम[2]सावयसमूहे ।
[3]वसणावडियं पि नरं, रक्खइ [4]पुव्वज्जिओ धम्मो ॥२८४॥

तेण वि तं चिय घेत्तुं, छिन्नं सीसं तु **तुरयगीव**स्स ।
भवियव्वयानिओगो, न तीरए अण्णहा काउं ॥२८५॥

जइ पविसइ पायालं, दुग्गगिरिं [1]वसइ लंघइ समुद्दं ।
कुणइ य बहुपडियारे, तह वि न भवियव्वया मुयइ ॥२८६॥

[5]उक्कि[2]कट्ठिनायपुव्वं, देवेहिं [6]निवाडि[3]यं कुसुमवरिसं ।
भणियं च पढमके[7]सी, उववन्नो एत्थ **भरह**म्मि ॥२८७॥

कोडिसिला सीसोवरि, धरिया छत्तं व बाहुदंडेहिं ।
सुरनरपच्चयहेउं, **तिविट्ठु**णा सुबलकलिएणं ॥२८८॥

परिहायंतम्मि बले, सेसेहिं ऊणमूणमुक्खित्ता ।
जा चरिमकेसवेणं, नियजाणुयमेत्तमुक्खित्ता ॥२८९॥

जओ केसवबलं –

सोलसरायसहस्सा, सव्वबलेणं तु [8]संकलनिबद्धं ।
[9]अंछंति वासुदेवं, अगडतडम्मिं ठियं संतं ॥२९०॥★

घेत्तूण संकलं सो, वामगहत्थेण [4]अंचमाणाणं ।
[10]भुंजेज्ज [11]विलिंपेज्ज व, **[12]महुमहणं** ते न [13]चायंति ॥२९१॥ ॥ जुम्मं ॥★

---

१. कान्तार = जङ्गल । २. ०श्वापद० = जङ्गली पशु । ३. व्यसनाऽऽपततम् = दुःख, कष्ट में पतित । ४. पूर्वाऽर्जितः । ५. उत्कृष्टनादपूर्वम् । ६. निपातितम् । ७. ०केशवः । ८. शृङ्खलानिबद्धम् । ९. कृषन्ति = खींचना । १०. भुञ्ज्यात् । ११. विलिम्पेत् । १२. केशवम् । १३. शक्नुवन्ति ।

1. विसइ – ह. । 2. उक्कुट्ठि० – क. । 3. विपाडियं – क. । 4. अंच्छ० – ज.क. – अंछ० – ह. ।

पढमो एस [१]दसारो जाओ, इय मुणिय सव्वसामंता ।
आणाकारी जाया, पणमियचलणा **तिविट्ठु**स्स ॥२९२॥

[२]ओयवियं **भरहद्धं**, सत्त य रयणाणि तस्स जायाणि ।
चक्कं छत्तं धणुयं, मणि माला [1]तह य गय संखो ॥२९३॥

सोलससाहस्सीणं, जाओ सो मउडबद्धराईणं ।
सामी बत्तीसाए, [३]अवरोहवहूसहस्साणं ॥२९४॥

पालंताण य रज्जं, **अयलतिविट्ठू**ण गरुयनेहाणं ।
सेज्जंसजिणसमीवे, पावियसम्मत्तरयणाणं ॥२९५॥

[४]वोलीणो बहुकालो, [५]अप्पडिहयसासणाण **भरहद्धे** ।
अह अन्नया **तिविट्ठु**स्स, असुहकम्मोदयवसेणं ॥२९६॥

बाहुबलभोगसंपयनिवलच्छीप्पमुहगव्वकलियस्स [2]।
परिगलियं सम्मत्तं, जं दुलहं भवसएहिं पि ॥२९७॥ ॥ तिहिं विसेसियं ॥

अवि य -

संपत्तो कप्पतरू, अहवा चिंतामणी अह निहाणं ।
अहवा वि महाविज्जा, जह नासइ मंदपुण्णस्स ॥२९८॥

तस्स वि तह संमत्तं, [६]दोग्गइमहणं असेसगुणमूलं ।
सयलसुहाण निहाणं, नट्ठं मिच्छत्तउदएणं ॥२९९॥ ॥ जुम्मं ॥

[७]चुलसीइ[3] वरिसलक्खा, आउं [८]अणुहविय बद्धनरयाऊ ।
मरिउं सोऽसुहलेसो, सत्तमपुढवीए उववन्नो ॥३००॥

---

१. दशार्हः = वासुदेव । २. साधितम् । ३. अवरोध० = अन्तःपुर । ४. गतः = व्यतीतः । ५. अप्रतिहत० = अखण्डित । ६. दुर्गतिमथनम् । ७. चतुरशितिः । ८. अनुभूय ।

1. ब - तह गया - ज.ह. । 2. अ - ०च्छिप - प. । 3. अ - ०सीउ - प. ।

(तिविट्ठुमच्चू अयलभवनिव्वेओ य)

अयलोऽवि य [1]भाइविओगसोगसंतत्तमाणसो जाओ ।
चिट्ठइ कयमयकिच्चो, [१]दुहेण वेरग्गमावन्नो ॥३०१॥

अह तत्थ समायाओ, आयरिओ नाम **धम्मघोसो** त्ति ।
नाणी बहुमुणिसहिओ, सीसो **सेज्जंस**णाहस्स ॥३०२॥

अयलो तस्सागमणं, णाउं गुरुहरिसपुलइयसरीरो ।
उज्जाणे गंतूणं, तं वंदइ पज्जु[2]वासेइ ॥३०३॥

(धम्मघोसायरियाण धम्मदेसणा)

भवजलहिजाणवत्तं, दुहहरणं सुहकरं च सो सूरी ।
दाऊण धम्मलाभं, धम्मकहं कहिउमाढत्तो ॥३०४॥

दुहरूवो दुक्खफलो, दुहाणुबंधो य एस संसारो ।
[२]तुसमुट्ठि व्व असारो, भयकारी पेयभवणं व ॥३०५॥

जओ –

मत्तकरिकण्णचवला, [३]विज्जुलयाचंचला मणुयलच्छी ।
[४]संझब्भरागसरिसा, [५]वाउद्धूयवेजयंतिसमा ॥३०६॥

[६]जलबुब्बुओवमाणं, [७]कुसग्गजलबिंदुचंचलं जीयं ।
गिरिणइवेगसमाणं, [८]कयलीक्खंभो व्व निस्सारं ॥३०७॥

तरु[९]खुडियकुसुमलावन्नसन्निभं, [१०]इंदियालकणगसमं ।
गंधव्वपुरसरिच्छं, जोव्वणमथिरं मणुस्साणं ॥३०८॥

---

१. दुःखेन । २. तुष = धान्य के छिलके । ३. विद्युल्लताचञ्चला । ४. सन्ध्याऽभ्रागसदृशी । ५. वातोद्धूतवैजयन्तीसमा = पवन से उड़ी हुई पताका समान । ६. जलबुद्बुदुपमानम् । ७. कुशाऽग्रजलबिन्दुचञ्चलम् । ८. कदली के पेड़ के थड़ से काष्ठ वि. कुछ मिलता नहीं है । ९. ०खण्डित० = पतित । १०. इन्द्रजालक-नगसमम् = भ्रान्त पर्वत जैसा अथवा इन्द्रजाल-कनकसमम् = मायावी सुवर्ण समान ।

1. भायवि० – ज । 2. ब – ०वासइ य – ज.ह.क. ।

जह रयणीए [१]संउणाण संगमो, जह पहे य पहियाणं ।
जह सुमिणे निहिजोगो, तह अथिरो इट्ठसंजोगो ॥३०९॥

असुइनिहाणं देहं, [२]बहुवाहीवसणवेयणाविहुरं ।
[३]जरकट्ठं व [४]घुणेणं, [५]घुणिज्जइ जराए मणुयाणं ॥३१०॥

मच्चू कुणइ अकाले, बहुआसापासमोहियमणाणं ।
अणि[1]वारणिज्जपसरो, आसा[2]भंगो मणुस्साणं ॥३११॥

अन्नं च -

मन्नंति विसय[3]सुक्खं, जं पि य मूढा मणोरमं [4]एत्थ ।
तं पि महुबिंदुसरिसं, न सुहं परमत्थओ होइ ॥३१२॥

सुणसु एत्थ दिट्ठंतं - **(महुबिंदुलुद्धमुद्धजणकहा)**

एगो दरिद्दपुरिसो, [६]उच्छन्नकुलो [७]सुदुक्खिओ दीणो ।
देसंतरं पयट्टो, एगागी [5]अह [८]सुहासाए ॥३१३॥

वच्चंतो य अरण्णे, [९]अणोरपारम्मि पिट्ठओ नियइ ।
[१०]आगच्छंती सिय[११]कत्तियाकरी [१०]रक्खसीमे[6]गां ॥३१४॥ ॥ जुम्मं ॥

अन्नो रुट्ठवणकरी आगच्छइ, तं करेण घेत्तुमणो ।
ते पेच्छिय सो भीओ, धावइ वेगेण [१२]तेऽवि तहा ॥३१५॥

---

१. शकुनानाम् = पंछी । २. बहुव्याधिव्यसनवेदनाविधुरम् । ३. जीर्णकाष्ठमिव । ४. घुणः = काष्ठभक्षक कीट । ५. घूर्ण् = ग्रस्त करना, भक्षण करना । ६. उत्सन्न० = नष्ट । ७. सु-दुखितः = बहुत दुःखी । ८. सुखाऽऽशया । ९. (दे.) अति विस्तीर्ण । १०. एतत्पदद्वयं लुप्तद्वितीयान्तम् । ११. शितकर्तिकाकरीम् = तीक्ष्ण शस्त्र जिसके हाथ में है वैसी । १२. राक्षसी एवं हाथी ।

1. अ - ०वारिज्ज - ज.प. । 2. ब - ०भंग - ज.ह. । 3. ब - ०सोक्खं - क.ह.ज. । 4. ब - एत्थं । 5. ब - असुहहा० । 6. ब - ०एगा - ह. ०एगं - क. ।

दिट्ठो तत्थ महंतो, वडरुक्खो हत्थिरक्खसिअगम्मो[१] ।
तम्मि य सो आरुहिउं, न तरइ तो हेट्ठुओ[२] नियइ ॥३१६॥

पेच्छइ य अंधकूवं, तम्मज्झे तेण घत्तिया[३] झंपा ।
तडसंठियसरथंभे[४] लग्गो, चिट्ठइ पलंबंतो ॥३१७॥

कूवतडेसुं चउसु वि, पेच्छइ चउरो य भीसणभुयंगे ।
पयहेट्ठा[1] य पसारियवयणं, गुरुअयगरं नियइ ॥३१८॥

छिंदंति य सरथंभं, सियकसिणा[५] मूसगा दुवे सययं ।
तिक्खाहिं[2] दाढाहिं, वाहेइ[३] करं करी[६] तस्स ॥३१९॥

जाहे[७] य तं न पावइ, ताहे दंतेहिं हणइ वडरुक्खं ।
वडकंपणेण भिण्णं, महुयालं[८] साहयंतठियं[९] ॥३२०॥

निवडंति य महुबिंदू, तस्स निडालोवरिं[१०] विरलविरला[११] ।
ते होट्ठग्गे[१२] पत्ता, जीहाए लिहइ हिट्ठमणो[१३] ॥३२१॥

महुयालकंडराहिं[१४] य, खज्जइ[१५] सो निट्ठुरं च सव्वंगे[4] ।
बहुवसणसंकडे[१६] वि हु, पडिओ मन्नइ सुहं चेव ॥३२२॥

महुबिंदुलिहणलोलो[१७], जा चिट्ठइ ताव खहयरो[१८] एगो ।
पत्तो तम्मि पएसे, तं दट्ठुं भणइ दयजुत्तो[१९] ॥३२३॥

भो ! तं दुहगहणाओ[२०], इमाओ मोएमि[२१] वडदुमं एयं ।
सव्वोवद्दवरहियं, आरोवेऊण जइ भणसि ॥३२४॥

---

१. हस्तिराक्षसी-अगम्यः । २. अधस् । ३. क्षिप्ता = दत्ता । ४. ०शरस्तम्भः = तृण की रस्सी 'वडवाई' । ५. श्वेत-कृष्णौ । ६. तस्य वृक्षस्य करं = शाखां वाहयति = चलाता, हिलाता है । ७. यावत् । ८. मधुपटलम् = 'मधपुडो' । ९. शाखाऽन्तस्थितम् । १०. ललाट० । ११. विरलविरला = अल्प, थोड़े थोड़े । १२. ओष्ठाऽग्रे । १३. हृष्टमनाः । १४. मधुपटलमक्षिकाभिः । १५. खाद्यते = डंख मारना । १६. बहुव्यसनसङ्कटे । १७. ०लेहने लोलः = स्वाद में आसक्त । १८. खेचरः । १९. दयायुक्तः । २०. दुःखगहनात् । २१. मोचयामि ।

1. अ – तह हे० – प. । 2. तिक्खाहिउं – ज.ह.क. । 3. ब – वाहइ य – ज.क. । 4. सव्वंगो – ह. ।

सो भणइ न कज्जं मे, महुबिंदुसुहं तेरामि[१] नो चइउं ।
गच्छ तुमं नियट्ठाणं, **को लद्धसुहं परिच्चयइ ?** ॥३२५॥

खयरेण पुणो भणियं[1], सरथंभे मूसए[2]हिं छिन्नम्मि ।
पडिहिसि अयगरवयणे[२], खज्जिहिसि[३] य दुट्ठभुयगेहिं ॥३२६॥

सो पभणइ विज्जाहर !, को जाणइ किं भविस्सइ ममेत्थ ? ।
आसाएमि[४] अपावियपुव्वे[५], महुबिंदुणो ताव ॥३२७॥

इय भणिए सो खयरो, दुब्बुद्धी एस न सुहभागि त्ति ।
चिंतिय गओ सट्ठाणं, सुण उवणयमिण्हिमेयस्स[६] ॥३२८॥

(महुबिंदुकहाउवणओ)

पहिओ संसारि जिओ, भवो अरण्णं व, रक्खसि व्व जरा ।
मत्तकरी य कयंतो, मोक्खो वडपायवसमाणो ॥३२९॥

कूवो य मणुस्सभवो, सरथंभो आउयं च जीवस्स ।
सियकसिणा दो पक्खा, आखू[७] दाढा य दिणरयणी ॥३३०॥

दुट्ठाहिणो कसाया, नरओ पुण अयगरो व्व भयहेऊ ।
महुबिंदू विसयसुहं, गेहिनिमित्तं[८] च तुच्छं च ॥३३१॥

विविहाओ आवयाओ, जीवं बाहिंति कंडराओ[९] व्व ।
विज्जाहरो य सूरी, मोक्खो[4] जं पुण वडारोहो ॥३३२॥

जह सो पहिओ करिमाइवसणभीओऽवि सुहकरं नियमा ।
हियविज्जाहरवयणं, न गणइ महुबिंदुलोहेणं[१०] ॥३३३॥

---

१. शक्नोमि । २. अजगरवदने । ३. खादिष्यसे । ४. आस्वादे । ५. अप्राप्तपूर्वान् । ६. उपनयमिदानीम् । ७. आखु = चूहा । श्वेत एवं कृष्ण दो चूहे शुक्ल और कृष्ण दो पक्ष के समान हैं । और उनके दांत को दिन एवं रात्रि की उपमा दी गई हैं । ८. गृद्धि० = आसक्ति । ९. मधुमक्षिकाः । १०. ०लोभेन ।

1. अ - भणिओ - ज.क.प. । 2. अ - ०ए य - प. । 3. ब - ०उ व्व - ह. । 4. ब - ०क्खे नयणं - ज.ह.क. ।

तह [१]मच्चूजराभीओ, भवे भमंतोऽवि, [२]नरयत[1]त्तोऽवि ।
[३]बहुआवइविहुरत्तणकोहाइकयत्थिओऽवि दढं ॥३३४॥

विसयसुहलेस[४]लुद्धो, जीवो दुक्खं भविस्समगणंतो ।
धम्मे पवत्तयंतं, धम्मगुरुं मण्णइ न मूढो ॥३३५॥ ॥ तिहिं विसेसियं ॥

तम्हा –

विसया किंपागफलं, विसया हालाहलं विसं परमं ।
विसया विसमं सल्लं, विसया [५]आसीविस[2]भुयंगा ॥३३६॥

विसया [3]उ[६]कूडपासो, विसया [७]कंडुज्जुओ नरयमग्गो ।
इय मुणिय विसयसंगं, धीरा वज्जंति दूरेणं ॥३३७॥ ॥ जुम्मं ॥

(बलदेवस्स दीक्खा मोक्खगमणं च)

एमाई धम्मकहं, पडिबुद्धो सोउ**मयल**बलदेवो ।
संवेगभावियमणो, [८]निक्खंतो सूरिपासम्मि ॥३३८॥

गहिऊण दुविहसिक्खं, सज्झायज्झाणविणयसंजुत्तो ।
निम्मलसंजम[4]निरओ, दुक्करतवचरणसंपन्नो ॥३३९॥

खविऊण घाइकम्मं, उप्पाडेऊण केवलं नाणं ।
लोयालोयपयासं, [९]अप्पडिहयमपडिवायं च ॥३४०॥

पडिबोहिऊण बहवे, भवियजणे सयलक[5]म्ममलमुक्को ।
संपत्तो परमपयं, जम्मणजरमरणदुहरहियं ॥३४१॥ ॥ तिहिं विसेसियं ॥

---

१. मृत्यु० । २. नरकतप्तोऽपि । ३. बहु-आपद्-विधुरत्व-क्रोधादिकदर्थितोऽपि दृढम् = अनेक आपत्ति से व्याकुलत्व एवं क्रोधादि कषाय से अत्यन्त कदर्थित । ४. ०लुब्धः । ५. आशीविषभुजङ्गः = जहरीला साँप । ६. कूटपाशः = एक प्रकार का मछली पकड़ने का जाल । ७. काण्डर्जुः = बाण की तरह सीधा । ८. निष्क्रान्तः = दीक्षा लेना । ९. अप्रतिहतमप्रतिपातम् ।

1. तत्थो वि – ज.क. । 2. ब – भुयंगो – ह. । 3. अ – उक्कड० – ज.क.प. । 4. ०कलिओ – क. । 5. ब – ०म्मउम्मुक्को – ज.ह.क. ।

नरगाओ उव्वट्टिय, **तिविट्ठु**जीवो अरण्णमज्झम्मि ।
सीहत्ताए जाओ, मरिऊण पुणो गओ नरयं ॥३४२॥

(पियमित्तचक्कवट्टिभववण्णणं)

परिभमिउं [1]संसारं, [१]कत्थइ [२]मणुयत्तणं च लहिऊण ।
[३]आवज्जियसुहकम्मो, **महाविदेह**म्मि [४]आयाओ ॥३४३॥

मूगाए पुरवरीए, **धणंजओ** आसि पवरनरनाहो ।
तस्स य **धारिणि**भज्जा, सो पुत्तो तेसिमुववन्नो ॥३४४॥

[५]चोद्दसहिं महासुमिणेहिं, [६]सूइओ पवरलक्खणसमेओ ।
जाओ कालकमेणं, **पियमित्तो** नाम वरकुमरो ॥३४५॥

सो जोव्वणमणुपत्तो, पिउणा [७]संठाविओ नियरज्जे ।
[८]अइरेण य संजाया, [२]चउद्दसरयणा इमे तस्स ॥३४६॥

(चउद्दसवररयणनवमहानिहिसरूवं)

सेणावइ गाहावइ, पुरोहि गय तुरय वड्ढई इत्थी ।
चक्कं छत्तं चम्मं, मणि कागणि खग्ग दंडो य ॥३४७॥★

चक्कं छत्तं दंडो, तिन्नि वि एयाइं [९]वामतुल्लाइं ।
चम्मं [१०]दुहत्थदीहं, बत्तीसं अंगुलाइं [११]असी ॥३४८॥★

चउरंगुलो मणी पुण, तस्सद्धं चेव होइ [१२]वित्थिण्णो ।
चउरंगुलप्पमाणा, सुवण्णवर[3]कागिणी नेया ॥३४९॥★

---

१. कुत्राऽपि । २. मनुजत्वम् । ३. आवर्जितशुभकर्मा । ४. आयातः । ५. चतुर्दशभिः । ६. सूचितः । ७. संस्थापितः । ८. अचिरेण । ९. व्यामो नाम प्रसारितोभयबाहोः पुंसस्तिर्यग्-हस्तद्वयाङ्गुलयोरन्तरालम् । प्रायः ५ फीट जितना । १०. द्विहस्तदीर्घम् । ११. असिः = तलवार । १२. विस्तीर्णः ।

1. ब - ०संसारे । 2. अ - चोद्दस० - ह. । 3. ०कागणी - ज.क.प. ।

णेसप्पे पंडुयए, पिंगलए सव्वरयण महरयणे ।
काले य महाकाले, माणवगे[1] नवमए संखे ॥३५०॥★

मणिकणगरयणपुन्ना, अहोनिसिं[2] चेव दिज्जमाणा वि ।
निट्ठंति[२] न पुन्नवसा, ते निहिणो तस्स संजाया ॥३५१॥

नवजोयण वित्थिण्णा, बारस दीहा समूसिया[3] अट्ठ ।
जक्खसहस्सपरिवुडा, चक्कट्ठपइट्ठिया[४] नव वि ॥३५२॥

छक्खंडविजयखेत्तं[५] साहिय,[६] आणावडिं[७] इच्छियं[3] काउं ।
पियमित्तो बलवंतो, पत्तो चक्कित्तणं पवरं ॥३५३॥

चउदस वि जस्स रयणा, एक्केक्केणं च सुरसहस्सेणं ।
निच्चमहिट्ठियदेहा, दोहिं[८] सहस्सेहिं य सरीरं ॥३५४॥

चउसट्ठिसहस्साइं, जस्स य अंतेउरं मणभिरामं[९] ।
बत्तीसं च सहस्सा, जस्स वसे मउडबद्धाणं ॥३५५॥

चुलसी करिरहलक्खा[4], अट्ठारस वरतुरंगकोडीओ ।
छन्नवइ गामकोडी, रिद्धी एमाइया[१०] जस्स ॥३५६॥

(पोट्टिलसूरिआगमणं धम्मदेसणा य)

सो चक्कवट्टिभोए भुंजंतो, संठिओ चिरं कालं ।
अह अन्नया कयाई, विहरंतो तत्थ उज्जाणे ॥३५७॥

---

१. ९ निधि के नाम । २. निःतिष्ठन्ति = निष्ठां याति, खत्म होना । ३. समुच्छ्रिता = ऊँचा । ४. चक्राऽष्टप्रतिष्ठिताः = आठ चक्र = पहिये वाली गाड़ी के ऊपर स्थित । ५. षट्-खण्ड० । ६. साधयित्वा । ७. आज्ञाप्रतीप्सितम् = आज्ञा के अधीन कर के । ८. २००० अङ्गरक्षक देव । ९. मनोरम, सुन्दर । १०. एवमादिका ।

1. अ - ०गमहानिही - क. । 2. ब - ०सीं जे वइज्ज० - ज.क.ह. । 3. ब - ०च्छगं - ज.ह. । 4. ०संखा - ज. ।

संपत्तो मुणिजुत्तो, **पोट्टिल**[1]सूरी सुणाण[१]चरणड्ढो ।
चक्की य वंदणत्थं, तस्स गओ परमभत्तीए ॥३५८॥ ॥ जुम्मं ॥

वंदित्तु सुहनिसण्णस्स तस्स, सूरी पेरेसि[२] हियनिरओ ।
संसारुच्छेयकरिं, धम्मकहं कहिउमाढत्तो ॥३५९॥

अइदुलहं[३] मणुयत्तं, जीवाणं कम्मपरिणई चित्ता[४] ।
ता[2] पाविय सामग्गिं[3], कीरउ जिणभासिओ धम्मो ॥३६०॥

तत्थ इमेहिं दिट्ठंतेहिं[५] दुल्लहं मणुयत्तं -

(मणुयजम्मदुल्लहत्तं दसदिट्ठंतेहिं)

चोल्लग पासग धन्ने, जूए रयणे य सुमिण चक्के य ।
चम्म जुगे परमाणू, दस दिट्ठंता मणुयलंभे ॥३६१॥ [4]इय दारगाहा ।

चोल्ल[६]त्ति भोयणं, चक्कवट्टिपरिवार**भरह**गेहेसु[5] ।
भोत्तुं दियस्स दुलहं, पुण चक्किगिहे तह नरत्तं ॥३६२॥

वरलद्धि[७]च्छियपासयपडणे[८], दीणारपत्ति[९]जूयम्मि ।
अण्णस्स जओ दुलहो जह, तह मणुयत्तणं दुलहं ॥३६३॥

धन्ने त्ति **भरह**धन्ने, सिद्धत्थग[१०][6]पत्थय[११]स्स खेवम्मि ।
थेरीए अवसोहिय, तं मेलण दुल्लहं एयं ॥३६४॥

जूयम्मि रज्जकंखिस्स, जह जओ थेरनिवइपुत्तस्स ।
थंभट्ठसय[१२]संसीणं, तहेव दुलहो मणुयजम्मो ॥३६५॥

---

१. सुज्ञानचरणाऽऽढ्यः = श्रेष्ठ ज्ञानी एवं संयमी । २. परेषाम् । ३. अतिदुर्लभम् । ४. चित्रा = विचित्र । ५. दृष्टान्तैः । ६. द्विजस्य । ७. वरलब्ध-ईप्सित-पाशकपतने । ८. ०प्राप्ति० । ९. जयः । १०. सिद्धार्थ० = सर्षप, सरसों । ११. ०प्रस्तक = मापविशेष । १२. स्तम्भाऽष्टशताऽश्रीणाम्, अश्रि = कोना = १०८ कोने वाले १०८ स्तंभ ।

1. अ - पुट्टिल० - प. । 2. ब. - तो । 3. अ - ०मग्गी - क.प. । 4. इति पाठः नास्ति - ज.प.क.ह. । 5. ०गेहे - ज. । 6. सिद्धत्थय० - क.ह. ।

रयणे त्ति भिन्नपोयस्स[१], रयणनासे समुद्दमज्झम्मि ।
अन्नेसणम्मि[२] तल्लाभदुल्लहं माणुसं जम्मं ॥३६६॥

सुमिणम्मि चंदगिलणे, रज्जफलं निवसुयस्स सोऊणं ।
दमगस्सेसियतस्सुमिणदंसणोवममिह नरत्तं[३][४] ॥३६७॥

चक्के[१] त्ति निव्वुईए[५] संयवरे, जह विसिक्खकुमरेहिं[६] ।
चक्कट्ठंतरराहावेहो[७], दुलहो तह नरत्तं ॥३६८॥

सेवाल**चम्म**पिहिए, दहम्मि[८] पुव्वोवलद्धछिद्दस्स ।
कुम्मेण[९] दंसणं जह पुण, दुलहं तह उ[२] मणुयत्तं ॥३६९॥

जलहिम्मि पुव्वदिसि, खित्त**जुगय**[३]छिद्दम्मि दुल्लहं जह य ।
अवरदिसि ट्ठियसमिलापवेसणं, तह नरत्तमिणं ॥३७०॥

पीसियखंभरएणं[१०], **मेरु**सिरट्ठियसुरेण नेलियाए[११] ।
जह फूमिएण[१२] दुलहं, तग्घडणं[४][१३] तह य मणुयत्तं ॥३७१॥

इय दुलहं पुण एयं, अन्नाणपमायदोसबहुलस्स ।
जीवस्स पुढविमाइसु गयस्स, जं तेसि कायठिई ॥३७२॥

अस्संखोसप्पिणिउसप्पिणीओ, एगिंदियाण उ चउण्हं ।
ता चेव ऊ अणंता, वणस्सईए उ बोद्धव्वा ॥३७३॥ ॥ जुम्मं ॥

संपइ कम्मपरिणइं निसामेहि –

कम्मेण विचित्तेणं, संसारं भमइ चउगइसमेयं ।
विविहाओ अवत्थाओ, पावइ जीवो सकम्मेणं ॥३७४॥

---

१. ०पोत = प्रवहण । २. अन्वेषणे । ३. द्रमकस्य = भिखारी । ४. ०ईर्ष्यित० = इर्ष्या युक्त । ५. निर्वृतौ । ६. बाण युक्त कुमारो द्वारा । ७. चक्राऽष्टाऽन्तरेण । ८. द्रहे । ९. कूर्मेण । १०. पिषितस्तम्भरजसा । ११. 'भूंगलू' । १२. फूत्कुर्वता । १३. तत्परमाणुभिः पुनः रचनम् ।

1. अ – ०क्कि त्ति – प. । 2. पुण – ह. । 3. ब – ०जूयछि० – ज.ह.प. । 4. ब – तह घ० ह.क. ।

तथा हि -

(चउग्गइभमणविविहकारणाइं)

जो मारओ जियाणं, परधणपरदारहिंसओ[१] चंडो ।
महआरंभपरिग्गहसत्तो[२], मुणिखिंसणपरो[३] य ॥३७५॥

कुणिमाहारपसंगी[४], तंदुलमच्छो व्व रुद्दपरिणामो[५] ।
मिच्छद्दिट्ठी मरिउं, दुहपउरे[६] जाइ सो **नरए** ॥३७६॥ ॥ जुम्मं ॥

तत्थ वि -

पढममसन्नी[७] बीयं सिरीसिवा[८], पक्खिणो य तइयम्मि ।
सीहाइया चउत्थिं, उरगाई[९] पुण पंचमिं[१०] जंति ॥३७७॥

छट्ठिं[११] च नरित्थीओ[१२], मच्छा मणुया य सत्तमं नरयं ।
उक्कोसेणं एसा, भणिया नरयम्मि उप्पत्ती ॥३७८॥

अट्टज्झाणोवगया[१३], परदुक्खुप्पायगा[१४] नियडिबहुला[१५] ।
बहुमोहन्नाणपरा[१६], जीवा **तिरियत्तण**मुवेंति ॥३७९॥

अप्पकसाया[१७] दाणुज्जया[१८] य, खमविणयमद्दवपहाणा[१९] ।
दक्खिण्णपरा पयईए, भद्दगा[२०] जंति **मणुयत्तं** ॥३८०॥

जे य महव्वयधारी[२१], अविरयसम्मा य देसविरया य ।
जिणपूयणदाणरया, बालतवाऽकामनिज्जरणा[२२] ॥३८१॥

---

१. ०दारा० । २. महाऽऽरम्भः । ३. ०आसक्तः । ४. ०खिंसन० = अवर्णवाद । ५. मांस । ६. ०प्रसङ्गी = आसक्त । ७. दुःखप्रचुरे । ८. सरीसृपाः = सर्प । ९. नरस्त्रियः । १०. आर्तध्यान-उपगताः = युक्ताः । ११. मायाप्रचुराः । १२. ०अज्ञानपराः । १३. अल्प० । १४. दानोद्यताः । १५. क्षमाविनयमार्दवप्रधानाः । १६. दाक्षिण्यपराः । १७. भद्रकाः = सरलाः । १८. महाव्रतधारी । १९. अकामनिर्जरणा = अकामनिर्जरा वाले ।

1. अ - गुरु० - ज.क.प. । 2. ब - रोद्द० - ज.क.ह. । 3. दुहपरे - म. । 4. अ - ०उरगा - प. । 5. पंचमं - प. । 6. अ - छट्ठं - प. । 7. ब - ०हिल्ला य णरा - ह. ।

परिणामविसुद्धीए, देवाउयकम्मबंधजोगाए ।
नरपंचिंदियतिरिया, **सुरगइ**गमणं समज्जिंति ॥३८२॥ ॥ जुम्मं ॥

अवि य - **(देवभवेसु को कत्थ वच्चइ ?)**

साहू जा **सव्वट्ठं, सोहम्मा** जाव [1]**अच्चुयं** [2]संङ्घो ।
[2]वावन्नदंसणो वि हु, [3]मुणिलिंगी जाव **गेवेज्जे** ॥३८३॥

पंचिंदिओ तिरिक्खो, गुणधारी [4]जाइ [5]जा **सहस्सारं** ।
परिवायगा य **बंभे, जोइसिए** तावसा जंति ॥३८४॥

बालतवे पडिबद्धा, [6]उक्कडरोसा तवेण [7]गारविया ।
वेरेण य पडिबद्धा, मरिउं **असुरे**सु गच्छंति ॥३८५॥

रज्जुग्गहणे विसभक्खणे य, जलणे य जलपवेसे य ।
[8]तण्हाछुहाकिलंता, मरिऊणं [2]होंति [9]**वंतरिया** ॥३८६॥

[10]असढा विणयपहाणा, [11]सुसहावा [12]अप्पलोहखमजुत्ता ।
[13]सच्चव्वया [14]अचवला, महिला **पुरिसत्तण**[3]मुवेइ ॥३८७॥

[16]अलिय[4]मब्भक्खाणरओ, असच्चभासी य चंचलसहावो ।
साहसकारी परवंचणो य, पुरिसो हवइ **महिला** ॥३८८॥

जो [17]तुरयवसहमहिसाइयाण, [18]निल्लंछणं कुणइ कूरो ।
[19]उक्कडमोहो य तहा, जीवो **संढत्तण**मुवेइ ॥३८९॥

---

१. श्राद्धः = श्रावक । २. व्यापन्नदर्शनः = जिस ने सम्यक्त्व गँवाया हैं । ३. साधु वेशधारी । ४. याति । ५. यावत् । ६. उत्कटक्रोधाः । ७. गौरविताः = अभिमानी । ८. तृष्णाक्षुधाक्लान्ताः । ९. व्यन्तराः । १०. अशठा = सरल । ११. सुष्ठु-स्वभावा । १२. अल्पलोभा । १३. सत्यव्रता । १४. अचपला । १५. पुरुषत्वम् । १६. अलिकाऽभ्याख्यानरतः । १७. तुरगवृषभमहिषाऽऽदिकानाम् । १८. निर्लाञ्छनम् = शरीर के किसी अवयव का छेदन । १९. उत्कटमोहः । २०. षण्ढत्वम् = नपुंसकत्वम् ।

1. अ - अच्चुए । 2. हवंति - ह. । 3. अ - ०वेंति - प. । 4. अलियक्खाण० - क. ।

(मणुयभवे परिणामविचित्तेण विविहफलसंपत्तीओ)

पुढवाईवहनिरओ, परलोयं नेय[१] मण्णए मूढो ।
अइसंकिलिट्ठकम्मो[२], **अप्पाऊ**[३] सो भवे पुरिसो ॥३९०॥

सीलव्वयखंतिजुत्ता[1], अणुकंपासंजुया महुरभासी ।
पाणिवहाओ नियत्ता[४], **दीहाऊ** जंतुणो होंति ॥३९१॥

सयणासणवत्थं वा[2], भत्तं पत्तं च ओसहं पाणं ।
साहुण देइ तुट्ठो, सो **भोगी** जायए पुरिसो ॥३९२॥

देइ न नियय[५] संतं, दिन्नं हारेइ[६], वारए[७] दिंतं ।
देइ य अमणुन्नं[८] वा, भोगेहिं विवज्जिओ होइ ॥३९३॥

अगुणो वि गव्विओ जो, अप्पं[९] संथुणइ[१०] निंदइ गुणड्ढं[११] ।
माणी विडंबओ[१२] जो[3], सो जायइ **दुब्भगो**[१३] पुरिसो ॥३९४॥

गुरुदेवाणं भत्तो, विणयपरो खंति[१४]जुत्त-मिउ[१५]भासी ।
सव्वजणप्पियकारी, सो पुरिसो जायए **सुहगो**[4] ॥३९५॥

जो पढइ सुणइ चिंतइ, अन्नं पाढेइ देइ उवएसं ।
सुयगुरु[१६]भत्तीजुत्तो, मरिउं सो होइ **मेहावी**[१७] ॥३९६॥

तवणाणगुणसमिद्धं अवमन्नइ[१८], वट्टई य विग्घम्मि ।
पढणसवणाइयाणं[१९], **दुम्मेहो** होइ सो पुरिसो ॥३९७॥

---

१. नैव । २. अतिसक्लिष्टकर्मा । ३. अल्पाऽऽयुः । ४. निवृत्ताः । ५. निजकम् । ६. हारयति = नाश करना । ७. वारयति । ८. अमनोज्ञम् = खराब, हल्की चीज । ९. आत्मानम् । १०. संस्तौति । ११. गुणाऽऽढ्यम् । १२. विडम्बकः = तिरस्कार करने वाला । १३. दुर्भगः = अभागा, अप्रिय । १४. क्षान्तियुक्तः । १५. मृदुभाषी । १६. श्रुतगुरुभक्तियुक्तः । १७. मेधावी = बुद्धिवाला । १८. अवमन्यते = अवज्ञा करना । १९. पठन-श्रवणादि करने वाले ।

1. अ - सीलवयखंतिजुया - प. । 2. चारू पत्तं व - ज.प. । 3. तहा - ज. । 4. अ - ०हओ ।

पक्खीण[१] सावयाण य, विच्छोहं[२] न य करेइ जो पुरिसो ।
जीवेसु य कुणइ दयं, तस्स अवच्चाइं[३] न मरंति ॥३९८॥

जो परछिद्दाइं[४] अदिट्ठयाइं, दिट्ठाइं जंपइ अणज्जो[५] ।
छायाभंस[६]पयत्तो, **जच्चंधो**[७] होइ सो मणुओ ॥३९९॥

असुयं[८] पि सुयं भासइ, धम्मविरुद्धाइं कहइ लोयस्स ।
पिसुणो[९] परतत्तिल्लो[१०], सो **बहिरो** होइ **मूओ** य ॥४००॥

दहणंकणघायणछेयणेहिं, दुक्खं जियाण पकरिंतो[११] ।
बहुरोगी होइ नरो, विवरीओ जायइ **अरोगो** ॥४०१॥

जो कुणइ अंतरायं धणज्जणे[१२], णासगं[१३] व[२] अवहरइ ।
परधणहरणपसत्तो, **दोगच्चं**[१४] लहइ सो पुरिसो ॥४०२॥

महुघायं[१५] अग्गिदाहं, वहणं[३][१६] जो कुणइ इत्थियाईणं[१७] ।
बालवणस्सइघाई[१८], **कुट्ठी**[१९] सो जायए पुरिसो ॥४०३॥

जो महिसं खरं करहं, अइभारारोवणेण पीडेइ ।
अहवा मणुस्सजाइं, सो पुरिसो **खुज्जओ**[२०] होइ ॥४०४॥

मंटा[२१] वडभा[२२][४] य सया, साहूणमणज्जकारिणो[२३] होंति ।
विच्छोहकारयाणं[२४], न पयाण थिरत्तणं होइ ॥४०५॥

---

१. श्वापदानाम् । २. (दे.) विरह, वियोग । ३. अपत्यानि । ४. अदृष्टानि । ५. अनार्यः । ६. छाया० = शोभा, अन्य व्यक्ति की कीर्ति का नाशक । ७. जात्यन्धः । ८. अश्रुतमपि । ९. पिशुनः = खल, दुर्जन । १०. दूसरो की चिंता (पंचात) करने वाला । ११. प्रकुर्वन् । १२. धनाऽर्जने । १३. न्यासकं वा = अथवा अमानत 'थापण' का अपहरण करता हैं । १४. दौर्गत्यम् = दारिद्र्य । १५. मधुघातं = मधुमक्खी के छज्जे का नाश करना । १६. हिंसा । १७. स्त्री-आदीनाम् । १८. बाल-वनस्पतिघाती । १९. कुष्ठी । २०. कुब्जकः । २१. मण्ढाः = अनङ्गुल्यः । २२. वामनाः । २३. ०अन्याय्यकारिणः = साधु अथवा सज्जनो के साथ अन्याय करने वाले । २४. विक्षोभ० = अन्य लोगो का अप्रिय या वियोग कराने वाले की संतति अस्थिर हो जाती हैं = पुत्रादि का वियोग होता हैं ।

1. ०पसन्नो - ज. । 2. अ - व्व । 3. दहणं - ज.क. । 4. मडहा - ज. ।

तवसीलसंजुयाणं, जो जंपइ विप्पियं[१] असच्चं वा ।
सो **पूइमुहो**[२] जायइ, **कुंठो**[३] पुण पण्हिघाएणं[४] ॥४०६॥

तो[५] सामग्गिं पाविय त्ति संपइ वण्णिज्जइ -

माणुस्सखेत्तजाई, कुलरूवारोगमाउयं[६] बुद्धि ।
धम्मसुइअवधारणसद्धा, धम्मस्स सामग्गी ॥४०७॥

तत्थ मणुयत्तं पढमं साहणं धम्मस्स -

जं माणुसजम्मे च्चिय, पडिपुन्नो[७] संजमो तवो होइ ।
दव्वत्थओ य परमो, विसिट्ठसग्गोऽपवग्गो य ॥४०८॥

तत्थ वि आरियखेत्ते[८], **मगहादेसाइए** मुणिविहारे ।
न उ **सगजवणाईए**[९], विवज्जिए धम्मसन्नाए[१] ॥४०९॥

(आरिय-अणारियदेसनामाणि)

रायगिह[१०] **मगह चंपा, अंगा** तह **तामलित्ति वंगा** य ।
कंचणपुरं कलिंगा, वाणारसि चेव **कासी** य ॥४१०॥

साकेय[२] **कोसला, गयपुरं** च **कुरु सोरियं कुसट्टा** य ।
कंपिल्लं पंचाला, अहिछत्ता जंगला चेव ॥४११॥

वारवई य **सुरट्ठा, मिहिल विदेहा** य **वच्छ कोसंबी** ।
नंदिपुरं संडिब्भा, भद्दिलपुरमेव मलया[३] य ॥४१२॥

---

१. विप्रियम् । २. पूति० = दुर्गन्धी । ३. कुण्ठः = मूर्ख । ४. पार्ष्णिघातेन । ५. ततः का सामग्री अस्माभिः प्राप्ता सा अधुना वर्ण्यते इति भावार्थः । ६. ०आरोग्यम् । ७. पूर्ण संयम और तप मनुष्य जन्म में ही हैं । परम द्रव्यस्तव एवं विशिष्ट स्वर्ग और मोक्ष की प्राप्ति भी मनुष्य जन्म में ही हैं । ८. आर्यक्षेत्रे । ९. शकयवनाऽऽदिके = अनार्य देश विशेष । १०. यहाँ से ६ श्लोक तक आर्य देश के नाम दिये गए है ।

1. अ - ०द्धाए । 2. ब - साएय । 3. ब - मलए य - ह. ।

[1]**वइराड वच्छ वरुणा, अच्छा** तह **मन्नियावइ दसन्ना** ।
सोत्तियमई य [2][3]**चेई** य, [4]**वीइभयं सिंधु सोवीरा** ॥४१३॥

महुरा य **सूरसेणा, पावा भंगी** य **मासपुरिवट्टा** ।
सावत्थी य **कुणाला, कोडीवरिसं** च **लाढा** य ॥४१४॥

सेयविया वि य नयरी, **केयइ**अद्धं च **आरियं** भणियं ।
जत्थुप्पत्ति जिणाणं, चक्कीणं रामकण्हाणं ॥४१५॥

[१]**सगजवणसबरबब्बरकायमुरुंडोडु**[5]**गोड**[6]**पक्कणया** ।
अरवागहोणरोमयपारसखसखासिया चेव ॥४१६॥

डोंविलवलउसवोक्कस[8]**भिल्लिंदपुलिंद**[9]**कुंभभमररुया** ।
[10]**कुंचा** य **चीणचुंचुयमालवदमिलाकुलग्घा** य ॥४१७॥

केकयकिरायहयमुहखरमुहगयतुरगमिंढ[11]**गमुहा** य ।
हयकन्ना गयकन्ना अण्णे वि [12]**अणारिया** बहवे ॥४१८॥

पावा य चंडकम्मा, [२]अणारिया [३]निग्घिणा निर[13]णुतावी ।
धम्मो त्ति अक्खराइं, तेसु न नज्जंति [४]सुविणेऽवि ॥४१९॥

(जाइकुलाइणो धम्मसहाइणो)

[५]माइसमुत्था **जाई** जम्हा, सा माइसुद्धिओ भणिया ।
[६]पीइसमुत्थं च **कुलं**, जं पिउ[14]सुद्धीए तयं भणियं ॥४२०॥

---

१. यहाँ से तीन श्लोको में अनार्यदेशो के नाम दिये गए है । २. अनार्याः । ३. निर्घृणाः = निर्दय । ४. स्वप्नेऽपि । ५. मातृसमुत्था । ६. पितृसमुत्थम् ।

1. वइरा उ - ज. । 2. ब - ०तीम० - ज.क.ह. । 3. अ - चेइ - ह. । 4. ब - वीभयं० - ह. । 5. अ - ०गोडुप० । 6. ०पक्कणिया - ज.क.ह. । 7. ०लयल० - ज.क.ह. । 8. अ - ०भिल्लद्ध० । ०भिल्लंध० - ज.क. । 9. ०कुंच० - ज.क.प. । 10. ब - ०कोच - ज.ह. । 11. ०मेंढग० - ज.ह.क. । 12. य - ज.ह.क. । 13. ०णुकंपा - प. । 14. ०सुद्धीए तं - ज. । सुद्धं तयं - ह. ।

जाईए संपन्नो, सुविणीओ होइ सुस्सहावो य ।
लज्जइ अकज्जकरणे, तम्हा **जाई** वि धम्मगुणो ॥४२१॥

वयनियमतवविसेसस्स, पारगामी सयं पवन्नस्स ।
होइ न कुलपरिहीणो, **कुलं** पि धम्मस्स हेउ त्ति ॥४२२॥

[१]हीणाहियंगुवंगो, विसमसहावो [1]उ होइ पाएणं ।
ता **रूवं** धम्मगुणो, [२]**जत्थागीई गुणा तत्थ** ॥४२३॥

कुट्ठजलोयर[३]सोसाइएहिं, रोगेहिं [४]विहुरियसरीरो ।
नालं वयगहणाइसु, ता **आरोगं** पि धम्मगुणो ॥४२४॥

कह कुणइ नाणवुड्ढिं, तववुड्ढिं संजमस्स सो वुड्ढिं ।
जो मणुओ अप्पाऊ, धम्मगुणो **आउयं** तेण ॥४२५॥

[५]हेयमुवाएयं वा, न जाणए विमलबुद्धिपरिहीणो ।
न य धम्माइ[६]परिक्खं, **बुद्धी** ता धम्महेउ त्ति ॥४२६॥

संवेगो निव्वेओ, नाणावरणस्स तह [७]खओवसमो ।
त[२]त्ता[८]हिगमो जायइ, गुरूवएसस्स **सवणगुणा** ॥४२७॥

[९]निसुयं पि [१०]छिड्डुकुडसंनिभस्स, न हवइ [११]विसिट्ठगुणहेऊ ।
अवधारणरहियस्स य, तम्हा **अवधारणा** परमा ॥४२८॥

निसुयमवधारियं वा, [१२]सद्धारहियस्स कं गुणं कुणइ ? ।
देवगुरुधम्मतत्ते, **सद्धा** ता सव्वगुणहेऊ ॥४२९॥

इय एसा सामग्गी, दुलहा जीवाण भवसमुद्दम्मि ।
धम्मरहियाण जायइ, निरत्थिया ता [१३]तयं कुणह ॥४३०॥

---

१. हीनाऽधिकाङ्गोपाङ्गः । २. यत्र आकृतिः । ३. ०शोष० = दाहरोग । ४. विधुरित० = व्याकुल । ५. हेयमुपादेयम् । ६. ०परीक्षाम् । ७. क्षयोपशमः । ८. तत्त्वाऽधिगमः । ९. निश्रुतमपि । १०. छिद्रकुट० = तूटा हुआ घड़ा । ११. विशिष्टगुणहेतुः । १२. श्रद्धा० । १३. तकं = तं = धर्मम् ।

1. य - ज.क. । 2. अ - ०त्ताभि० - प. ।

(धम्मस्स माहप्पं सरूवं य)

भवकूवे निवडंतं, हत्थालंबो व धरइ जो जीवं ।
सो धम्मो त्ति पवुच्चइ, सो पुण जिणभासिओ चेव ॥४३१॥

रुक्खेसु कप्परुक्खो, मणीसु चिंतामणी जह पहाणो[१] ।
अमयं[२] रसेसु, गोसीसचंदणं चंदणेसु जहा[1] ॥४३२॥

तह पावकम्ममहणो[३], सयलदुहनिवारणो सुहनिहाणं ।
सव्वेसिं धम्माणं, जिणधम्मो चेव सुपहाणो[४] ॥४३३॥ ॥ जुम्मं ॥

सव्वेसिं जीवाणं, अहिंसणं चेव थावरतसाणं ।
सच्चवइभासणं[५] तह, अदिन्नपरवत्थुपरिहरणं[६] ॥४३४॥

अब्बंभवज्जणं[७] तह, सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ।
राईभोयणविरई, समिईओ तिन्नि गुत्तीओ ॥४३५॥

समसत्तुमित्तभावो, समतिणमणिलेट्ठुकंचणत्तं च ।
सव्वत्थ निम्ममत्तं[८], असन्निहीसंचओ[९] चेव ॥४३६॥

(दसहा जइधम्मो सामायारी य)

खंतीमद्दवअज्जवमुत्तीतवनियम[2]बंभगुत्तीओ ।
पडिलेहणपमज्जणसज्झाओ झाणजोगो य ॥४३७॥

दसहा सामायारी, इच्छाकारो य मिच्छकारो य ।
तइओ य तहक्कारो, निसीहियावस्सिया चेव ॥४३८॥

आपुच्छण-पडिपुच्छा, निमंतणा छंदणा य साहूणं ।
उवसंपया गुरूणं, एमाई साहुधम्मो य ॥४३९॥ ॥ जुम्मं ॥

---

१. प्रधानः । २. अमृतम् । ३. ०मथनः = नाशकः । ४. सुप्रधानः । ५. सत्यवाग्० । ६. ०वस्तु० । ७. अब्रह्म० । ८. निर्ममत्वम् । ९. संनिधेः असंचयः ।

1. ब - तहा - ह.क. । 2. - ०संजम० - क. ।

तथा - (**सावयधम्मसरूवं**)

पंच य अणुव्वयाइं, गुणव्वयाइं च होंति तिन्नेव ।
सिक्खावयाइं चउरो, सावगधम्मो दुवालसहा ॥४४०॥

अन्नं च - (**तियालचेइयवंदणं तप्फलपरूवणं य**)

मुद्दातियसुद्धीए, पंचंगपणामपुव्वयं विहिणा ।
कुणइ तिसंझं सड्ढो, [१]चीवंदणमेगचित्तो उ ॥४४१॥

तथा हि -

पुव्वण्हे समणोवासगस्स, [1]पाणं पि कप्पइ न पाउं ।
नो जाव चेइयाइं, साहू वि य वंदिया विहिणा ॥४४२॥

मज्झण्हे पुणरवि वंदिऊण, नियमेण कप्पए भोत्तुं ।
पुण वंदिऊण [२]ताइं, [३]पओससमयम्मि सो सुयइ ॥४४३॥

एयस्स फलं मोक्खो, तयभावे होइ सुरसुहमुयारं ।
सुकुलुप्पत्ती बोही, पव्वज्जा मोक्खसंपत्ती ॥४४४॥

इह लोगेऽवि न हाणी, [४]पायं [५]निववण्हितक्कराईहिं ।
अन्नेऽ[२]वि य उवसग्गा, न होंति एयम्मि [3]जुत्ताणं ॥४४५॥

तथा - (**अट्ठहा जिणपूजापरूवणा**)

[१]ण्हाण[२]विलेवण[३]वरवास[४]कुसुम[५]धूव[६]क्खएहिं [७]वत्थेहिं [4]।
[८]रयणकण[९]गाइएहिं करेइ, सयं पूयं जिणिंदाणं ॥४४६॥

जत्थत्थि चेइयाइं, जत्थ य साहूहिं होइ संजोगो ।
[६]जत्थन्ने [७]साहम्मी, तत्थ [८]निवेसे वसइ [९]सड्ढो ॥४४७॥

---

१. चैत्यवन्दनम् । २. तानि । ३. प्रदोष० = शाम । ४. प्रायः । ५. नृपवह्नितस्करादिभिः । ६. यत्र अन्ये । ७. साधर्मिकाः । ८. निवेशः = आवास स्थान । ९. श्राद्धः ।

1. अ - पाणिं - प. । 2. ब - च्चिय - ह. । 3. जत्तेणं - ज.ह. । 4. पवरेहिं - ज. ।

[१]साहुसगासे सवणं, पच्चक्खाणं [२]अपुव्वपढणं च ।
दाणं च साहुवग्गे, तित्थस्स पभावणं कुज्जा ॥४४८॥

तित्थाण वंदणं, सुहभावणनवकारचिंतणाईयं ।
एमाइ सावयाणं, नरिंद ! धम्मो समक्खाओ ॥४४९॥

(पियमित्तचक्किणो पोट्टिलसूरिसमीवे दीक्खागहणं)

इय सोउं सो चक्की, परमं संवेगमागओ [३]खिप्पं ।
[४]अट्ठाहियमहिमाओ, काऊण जिणिंदभवणेसु ॥४५०॥

दाऊण महादाणं, रज्जे संठाविऊण नियपुत्तं ।
निक्खंतो [५]सुपसंतो, **पोट्टिल**सूरिस्स पासम्मि ॥४५१॥ ॥ जुम्मं ॥

[१]वासकोडिं पालिय, सामण्णं [६]निक्कलं महासत्तो ।
चुलसीइ पुव्वलक्खा, सव्वाउं पालइत्ता णं ॥४५२॥

अणसणविहिणा कालं, काउं सुहझाणभावणाजुत्तो ।
सव्वट्ठविमाणम्मि, उववन्नो [७]**सुक्क**कप्पम्मि ॥४५३॥ ॥ जुम्मं ॥

सत्तरस सागराऊ तम्मि य, सो दिव्वभोग[८]दुल्ललिओ ।
नियमाउय[२]मणुपालिय, आयाओ मणुयलोगम्मि ॥४५४॥

(सिरिमहावीरजीओ पंचवीसइमभवे नंदणो जाओ)

नयरीए **छत्तगाए**, **जियसत्तू** नरवई महिड्ढीओ ।
भद्दा य तस्स भज्जा, सव्वंतेउरपहाणा उ ॥४५५॥

सो तेसि सुओ जाओ, परममहासुमिणसूइओ [९]सुहओ ।
[३]रूवस्सी बंधुपिओ, **नंदण**नामो सुकयपुन्नो ॥४५६॥

---

१. साधुसकाशे = ०पार्श्वे । २. अपूर्वपठनम् = नूतन अध्ययन । ३. क्षिप्रम् = तुरन्त । ४. अष्टाऽह्निका० । ५. सुप्रशान्तः । ६. निष्कलङ्कम् । ७. महाशुक्रकल्पे = सप्तमदेवलोके । ८. ०दुर्ललितः = व्यसनी, आदत वाला । ९. सुखदः ।

1. वासाकोडिं - ज. । 2. ०परिपालिय - क. । 3. ब - रूवंसी - ह. ।

सो पंचधाइकलिओ, कलाकलावेण तणुउवचएणं ।
वड्ढंतो चंदो इव, [१]मणुण्णतारुण्णमणुपत्तो ॥४५७॥

परिणाविओ य पिउणा, बहुयाओ [२]पवररायकन्नाओ ।
[१]रज्जे य तयणु ठविओ, पव्वज्जं घेत्तुकामेणं ॥४५८॥

[३]कयसव्वपयारक्खं, रज्जमुदग्गं च विजियपडिवक्खं ।
बहु [४]समईओ कालो, [५]नाएणं पालमाणस्स ॥४५९॥

न य परचक्कपवेसो, न य [२]बंदिगहो न तक्करप्पसरो ।
न य किं पि य [६]उड्डमरं, संजायं जस्स रज्जम्मि ॥४६०॥

सो [७]पयइ च्चिय कारुण्णसायरो, पुरिसयार[८]सोडीरो ।
सुमई य दाणनिरओ, सुप्पियधम्मो सहावेणं ॥४६१॥

तत्थन्नया कयाई, **पोट्टिल**सूरी समागओ मइमं ।
छत्तीसगुणसमग्गो, उज्जाणे साहुपरियरिओ ॥४६२॥

ते य गुणा पुण एए - (**आयरियस्स छत्तीसगुणा**)

देसकुलजाइ[३]रूवे, संघ[४]यणधीइजुओ [९]अणासंसी ।
[१०]अविक[५]त्थणो अमाइ, थिर[११]परिवाडी [१२]गहियवक्को ॥४६३॥★

जियनिद्दो जियपरिसो, [१३]मज्झत्थो देसकाल[१४]भावण्णू ।
[१५]आसण्णलद्धपइभो, नाणाविहदेस[१६]भासण्णू ॥४६४॥★

---

१. मनोज्ञ० = मनोहर। २. प्रवर० = श्रेष्ठ। ३. कृतसर्वप्रजारक्षाम्। ४. समतीतः = पसार किया। ५. न्यायेन। ६. उड्डामरम् = भय, कलह। ७. प्रकृत्या। ८. ०शौण्डीरः। ९. अनाशंसी = अनभिलाषी। १०. अविकत्थनः = स्वप्रशंसा न करने वाले। ११. स्थिर-परिपाटिः = अति अभ्यास के कारण स्थिर श्रुतज्ञान वाले। १२. ग्राह्यवाक्यः। १३. मध्यस्थः। १४. ०भावज्ञः। १५. आसन्नलब्धप्रतिभः = सुन्दर प्राप्त की हुई प्रतिभा वाले, औत्पातिकी बुद्धि वाले। १६. ०भाषाज्ञः।

1. ब - ०रज्जे तयणु ट्ठ० - ह.। 2. बंद० - ज.ह.क.प.। 3. ०रूवी - क.। 4. संघयणे धी जुओ - ह.। 5. अविकंथणो - ज.क.ह.।

पंचविहे आयारे जुत्तो, सुत्तत्थतदुभयविहण्णू[१] ।
आहरणहेउकारणनयनिउणो[२], गाहणाकुसलो[३][४] ॥४६५॥★

ससमयपरसमयविऊ, गंभीरो दित्तिमं[५] थिरो[१] सोमो[६] ।
इय छत्तीसगुणजुओ, आयरिओ होइ हु[२] जहत्थो[७] ॥४६६॥★

तस्सागमणं नाउं, सहरिसचित्तो महाविभूईए ।
नीहरइ वंदणत्थं, मयगलखंधं[८][३] समारुहिउं ॥४६७॥

वंदित्ता य निसन्नो, परितुट्ठो धम्मलाभदाणेणं ।
भयवं पि महुरवाणी, उवएसं दाउमाढत्तो[४] ॥४६८॥

(पोट्टिलसूरिधम्मकहा)

संसारे नत्थि सुहं, चउसुं पि गईसु वट्टमाणाणं ।
जीवाणमओ[९][५] भद्दा !, मोक्खत्थं उज्जमं[६] कुणह ॥४६९॥

तथा हि - **(नरयगइदुक्खं)**

अच्छिनिमीलणमेत्तं पि, नत्थि सोक्खं जियाण[१०] **नरय**म्मि ।
सारीरमाणसेहिं, दुक्खेहिं पच्चमाणाणं[११] ॥४७०॥

उववन्नस्स उ[७] नरए, संपुडघडियालमज्झयारम्मि[८][१२] ।
संडासकड्ढणाओ, पढमं चिय दारुणं दुक्खं ॥४७१॥

उण्हनरयाउ गिम्हे, पज्जलियचियाए[१३] नारगो खित्तो ।
देवेण सुहं मन्नइ, अइउण्हं[९] उण्हणरएसु ॥४७२॥

---

१. ०विधिज्ञः । २. आहरण० = उदाहरण । ३. ०निपुणः । ४. ग्राहणा० = ग्रहण कराना । ५. दीप्तिमान् = प्रभावशाली । ६. सौम्यः । ७. यथार्थः । ८. हाथी । ९. अतः । १०. जीवानाम् । ११. पच्यमानानाम् = पकाते हुए, पीड़ित । १२. संपुटघटिकामध्ये = घड़े के दो भाग, कपाल को संपुट कहते है। वह दोनों से पूर्ण घट बनता है। 'सांकडा मुख वाळा घडानी मध्यमां' । १३. प्रज्वलितचितायाम् ।

1. अ - सिवो - ज.प.क. । 2. ब - उ - ज.ह.क. । 3. ०खंधे - ज.क. । 4. अ - ०उत्तो । 5. ब - आयरं - ह. । 6. भणह - क. । 7. य - क. । 8. ब - ०कुड० - ज.ह.क. । 9. अ - इय उण्हं - क.ज. ।

कत्थइ य गाढसीयं, [१]इहच्चसीयाओ तं असंखगुणं ।
[२]अयभारसहस्समओ गोलो, जेणं [३]विलिज्जेज्जा ॥४७३॥

केइ वि [४]कुंभीपागं, [५]भंडित्तपागं च [६]भट्टपागं च ।
केइ वि [७]लोहीपागं कुणंति, [८]इय अग्गिवियणाओ ॥४७४॥

कुव्वंति जंतपीलं, केइ वि करवत्तदारुणं घोरं ।
केइ वि सिलायलम्मी, [९]अच्छोडणमंबरस्सेव ॥४७५॥

[१०]कुव्वंतसिपत्तवणं, पडंतपत्तेहिं लुणइ अंगाइं ।
जं [११]चक्कासिसमेहिं, केइ वि सूलासु रोवेंति ॥४७६॥

तिक्खेहिं [१२]वासिपरसूक[1]प्पणिचक्कासिछुरियमाईहिं ।
[१३]कण्णोट्ठ[2]नासिकरचरणबाहुगीवाओ [3]छिंदंति ॥४७७॥

[१४]जीहच्छिमुक्खणंति उ, [१५]कुच्छीहिययोदराणि भिंदंति ।
सेल्लेहिं तिसूलेहिं य, [4]पहणंति य मोग्गरेहिं सिरे ॥४७८॥

कुव्वंति [१६]कंटयाउलसिंबलिरुक्खावरुंडणं करिउं ।
[१७]कड्ढोकड्ढीदुक्खं, उक्कत्तंती य [१८]तणुखल्लं ॥४७९॥

---

१. इहत्य० = इस लोक की । २. अयस् = लोहा । ३. वि + ली = नष्ट होना, पिघल जाना । ४. कुम्भी के अन्दर पकाना । ५. भटित्र० = शूलपक्व मांसादि = वैसे नारक को पकाना । ६. भ्राष्ट्र० = भूनने का बर्तन, उस में पकाना । जैसे मकाई के दाने भूनने से पोपकोर्न बनती है । ७. लोही = कराह = लोहे का भाजन विशेष में पकाना । ८. इति अग्निवेदनाः । ९. आच्छोटन० = आस्फालन । १०. ०असिपत्रवनम् । ११. चक्र-असि-समानैः पत्रैः । १२. वासिः = बसूला, बढ़ई का एक अस्त्र । १३. कर्णौष्ठ० । १४. जीह्वा-अक्षिमुत्खनन्ति । १५. कुक्षि-हृदय-उदराणि । १६. कण्टकाऽऽकुलशाल्मलिवृक्षाऽवरुंडनम् = आलिङ्गनम् । १७. कर्षा-ऽपकर्ष० = खींचातान । १८. शरीर की चमड़ी ।

1. ब - ०प्पणच० - ज.क. । 2. ०नास० - ज. । 3. भिंदंति - ज. । 4. ब - ०हरं० - ह. ।

[1]तउतंबसीसयाइं, केइ वि पाइंति [१]कढकढिंताइं ।
[२]तिसिए परमाहम्मी, नेरइए [3]कंदमाणे उ ॥४८०॥

वेयरणीए णईए, [४]जलंत[५]वसरुहिर[६]पूयपुन्नाए ।
बोलंति [2]य [७]लोलंति य, अइतत्ते [८]वालुयापुलिणे ॥४८१॥

[९]खावंति समंसाइं खंडेहिं, जे [१०]भविंसु [3]मंसासी ।
तत्तायसमहिलाओ, आलिंगाविंति परदारी ॥४८२॥

[११]जोइत्तिय लोहरहे, जलंतसमिलाजुगम्मि महिसे व्व ।
[१२]अवहंते पुण रुसिउं, कुट्टंति य लउडघाएहिं ॥४८३॥

कत्थइ य रिंछचित्तयवराहसद्दूलसु[4]णयमाईहिं ।
वेउव्वियरूवेहिं, खायंति सुतिक्खतुंडेहिं ॥४८४॥

बंधंति उद्धपाए, जलंतजलणोवरिं च तरु[१३]विडवे ।
पाडिंति अंबराओ, पडियं च सिलाहिं [१४]चुन्नंति ॥४८५॥

मारेह हणह छिंदह भिंदह, [१५]खइरं [5]व कुट्टह दहेह ।
एयस्स [१६]लेह वद्धे, इय सद्दे ते पभासेंति ॥४८६॥

हा ताय ! [6]माय ! सामिय ! भाइय !, पणओऽम्हि तुम्ह दासोऽहं ।
मा मं दीणमणाहं, सरणागयमिय [१७]कयत्थेह ॥४८७॥

---

१. उबलता हुआ, अति गरम होने की वजह से कढ् कढ् आवाज करता हुआ । २. तृषितान् । ३. क्रन्दमानान् । ४. ज्वलत् = आग जैसे जलते । ५. वसा० = मेद, चरबी । ६. पूय० = पीब, 'परु' । ७. लोठयन्ति = सुलाना । ८. तट, किनारे की रेत में । ९. खादयन्ति । १०. अभवन् । ११. योजयित्वा । १२. अवहति = भार वहन न करते है तो । १३. ०विटपे = शाखा । १४. चूर्णयन्ति । १५. खदिरं = वृक्षविशेष । १६. लाहि वध्ये = वधस्थान में ले आओ अथवा एतस्य वध्रान् लाहि = इसकी चमड़ी उतार दो । १७. कदर्थयत = कदर्थना, दुःखी करना ।

1. ब - तंब तउ० - प. । 2. ब - य अतितत्ते अन्ने पुण वा० - ह. । 3. ब - हविंसु । 4. अ - ०णह० । 5. ब - व्व - ह. । 6. बंधु - ह. । पहू - प. ।

एवं पि विलवमाणं, सेहिंति[1] उ दढयरं विगयकरुणा ।
न मरंति ते अकाले, सहस्ससो खंडियतणू वि ॥४८८॥

इय नारयदुक्खाइं, अपमाणाइं[2] न साहिउं तरइं[2] ।
अइसयनाणविरहिओ, तमंधयारेसु[3] नरएसु ॥४८९॥

तीसु[3] परोप्परजणियं, परमाहम्मियकयं च पुढवीसु ।
दुक्खं **नेरइयाणं**, सेसासु परोप्परकयं तु ॥४९०॥ ॥ जुम्मं ॥★

(तिरियगइविडंबणा)

तिरियगईए दुक्खं, पच्चक्खं चेव दीसइ जियाणं ।
पंचेंदियपज्जवसाणयाणमेगिंदियादीणं ॥४९१॥

सिसिरम्मि सीयदुक्खं, गिम्हेसु[4] च चंडआयवसमुत्थं ।
वासासु[5] निरंतरमेहवारिभूयं, कओ सोक्खं ? ॥४९२॥

वाएण य विज्झडणं[6], खुहापिवासाओ सत्थघायं[4] च ।
वाहणदोहणदहणंकणं च, छविच्छेयरूवं च ॥४९३॥

केइ वि[7] आराविंधणमन्ने[8] पुण[9] ताडणं कसादीहिं ।
अंकुसदारणमवरे[10], सहंति अवरे[11] य गुरुभारं ॥४९४॥

केइ गलकत्तणाइं, जालग्गहणं[6] च पासबंधं च ।
वागुरबंधं पंजरबंधं च, सहंति दीणमणा ॥४९५॥

किंचि दुहं मणुयकयं, किंचि परोप्परकयं तिरिक्खेसु ।
कालाइभावजणियं, किंची किंचि च्च सयमेव ॥४९६॥

---

१. शिक्षयन्ति । २. अप्रमाणानि । ३. त्रिषु = प्रथम तीन नरक में । ४. ०आतप० । ५. वर्षासु निरन्तरमेघवारिसंभूतं दुखम्, कुतः सौख्यम् ? । ६. हवा से धक्का लगना "पवनथी फंगोलाववुं" । ७. बैल वि. । ८. आराविन्धनम् = तीक्ष्ण लकड़ी से प्रतिघात । ९. घोड़ा वि. । १०. हाथी वि. । ११. बैल, ऊँट वि. ।

1. सेहंति - ज.क. । 2. ०ई - ह. । 3. अ - अति० - प. । 4. ब - तोत्तघायं - ह. । 5. अ - सहिंति - प. । 6. ब - गलजालगहं - ज.ह.क. ।

(मणुयगइपीडा)

[1]**मणुयगईए** दुक्खं, असुईकीडयसमस्स गब्भम्मि ।
पढमं चिय अइदुसहं, जायइ [1]संकोडियंगस्स ॥४९७॥

भणियं च –

[2]अग्गिव्वन्नाहिं सूईहिं, संभिन्नस्स निरंतरं ।
[3]जावतियं जायए दुक्खं, गब्भे अट्ठगुणं [2]तओ ॥४९८॥

गब्भाओ नीहरंतस्स, जोणीजंतनिपीलणे ।
जं तं सयगुणं, तत्तो सहस्सगुणमेव वा ॥४९९॥

[4]दंतुब्भेयाईसुं दुक्खं, बालत्तणे जुवत्ते य ।
इच्छियवत्थुअजोगे, अहवा पियविप्पओगम्मि ॥५००॥

इंदियहाणी कंपण, [5]परिभवणाइदुहं च **थेरत्ते** ।
मरणदुहं पुण [6]सो च्चिय, जाणइ अहवा वि सव्वण्णू ॥५०१॥

दारिद्दं दोहग्गं, इट्ठवियोगं च अत्थणासो य ।
दासत्तं पेसत्तं, परसेवा [7]आवईओ य ॥५०२॥

चिंता सोगो बहुवाहिवेयणा, तह कुभोयण-कुवासो ।
कुकलत्तं कुपुत्तत्तं, सयणं वरवाहणाभावो ॥५०३॥

सयणविरोहो कन्ना[3]बहुत्तणं, सीयतावछुहतण्हा ।
एमाइ **मणुयलोए**, पयडं चिय दीसए दुक्खं ॥५०४॥ ॥ तिहिं विसेसयं ॥

---

१. संकोटित० = संकोचित । २. अग्निवर्णाभिः = इतनी गरम हुई कि खुद अग्नि जैसी हो गई । ३. यावत् = जितना । ४. दन्तोद्भेदादिषु = दांत जब नये निकलते है तब । ५. परिभव० = पराभव, अपमान । ६. जो मृत्यु प्राप्त कर रहा हैं । ७. आपत्तयः ।

1. ब – एवं मणुयगईए दुक्खं असुइंमि कीडयसमस्स । गब्भंमी पढमं चिय जायइ – ह. । 2. ब – तयं – ह. । भवे – क. । 3. अ – ०पहु० – प. ।

(देवगइवेयणा)

देवाण वि णत्थि सुहं, कोहाइकसायकलुसियमणाणं ।
समयम्मि जओ एए, निदंसिया दुक्खहेउ त्ति ॥५०५॥

तथा हि -

सपरोभयाण संतावकारओ, कुगइगमणहेऊ य ।
पीईविच्छेयकरो, **कोहो** ता दुक्खहेउ त्ति ॥५०६॥

माणोऽवमाणहेऊ, मन्नस्स[१] वि कुणइ माणिणो[1]ऽवन्नं ।
गुरुविणयभंसकारी, **माणो** इय दुक्खहेउ त्ति ॥५०७॥

माया कुविगप्पेहिं, भवमाणेहिं परवंचणनिमित्तं ।
चित्तस्स वाउलत्तं कुणइ, अतो दुक्खहेउ त्ति ॥५०८॥

रक्खणवायामेणं[२] संतेसु, असंतएसु कंक्खाए ।
अज्जणवावारेणं, **लोभो** दुक्खस्स हेउ त्ति ॥५०९॥

ईसा भयं विसाओ, मद्दलियत्ताइ[२]आभिओगित्तं[३] ।
केसिंचि सुराण[3] दुहं, किब्बिसियत्तं[४] च केसिंचि ॥५१०॥

पियदेवीए चवणे गुरुदुक्खं, रूसणम्मि वा तीए ।
छम्मासियविय[4]णाए, महिड्ढियसुरस्स घाएणं ॥५११॥

सुररिद्धिं चिंतंतो[५], चवणं[६] सग्गाओ गब्भवासम्मि ।
असुइम्मि य उववायं[७], सहइ महंतं सुरो दुक्खं ॥५१२॥

---

१. मान्यस्य = मानार्ह व्यक्ति की भी अहंकारी अवज्ञा - अपमान करता हैं । २. रक्षण-व्यायामेन = रक्षण करने का प्रयत्न । ३. मृदंग बजाना आदि । ४. किल्बिषिकत्वम् । ५. चिन्तयन् । ६. च्यवनम् । ७. उपपातम् = उत्पत्ति ।

1. ब - माणओ - ह. । 2. ०त्ताइं आ० - ज. । 3. अ - सुरगणाणं - प. । 4. ब - ०याए वियणा - ह.क. ।

इय चउगइयं दुक्खं, नाऊण विवेइणो सुकयकम्मा ।
भवपरिभमणुव्विग्गा, कुणंति धम्मं जिणाभिहियं ॥५१३॥

(नंदणरायस्स भवविरायत्तं)

एवं निसामिउं सो, तुरियं चिय भवविरागमावन्नो ।
राया पभणइ भयवं !, असंसयं एवमेवेयं ॥५१४॥

काऊण रज्जसुत्थं, दिक्खागहणेण तुम्ह पासम्मि ।
करिकन्नचंचलं माणुसजम्मं, सफलं करिस्सामि ॥५१५॥

देवाणुपिया ! तुज्झं अहासुहं, मा करेह पडिबंधं ।
किच्चमिणं भवियाणं, इय भणिओ सूरिणा तुट्ठो ॥५१६॥

गंतूण नियं भवणं, आपुच्छेऊण मंतिसामंते ।
रज्जे संठविय सुयं, काऊण जिणिंदपूयाई ॥५१७॥

सिवियारूढो गंतुं, उज्जाणं पवररिद्धिफलकलियं ।
नमिऊण य गुरुचलणे, जंपइ पंजलिउडो एवं ॥५१८॥ ॥ तिहिं विसेसियं ॥

(नंदणरायस्स पवज्जापत्थणा)

आलित्तो य पलित्तो भयवं !, सव्वो वि एस लोगो त्ति ।
आलित्तपलित्तोऽवि य, जराए रोगेहिं मरणेणं ॥५१९॥

जह गेहम्मि पलित्ते, तस्स पहू सारवक्खरं गिण्हे ।
नित्थारियमेयं मे हियं, सुहं होहिही नूणं ॥५२०॥

---

१. त्वरितम् । २. असंशयम् । ३. राज्यसौस्थ्यम् । ४. करिकर्णचंचलम् = हाथी के कान जैसा चञ्चल । ५. रूकावट, विलम्ब । ६. कृत्यमिदम् । ७. आदीप्तः = चारो और से जला हुआ । ८. प्रदीप्तः = विशेष ज्वलित । ९. अत्यन्त प्रदीप्त । १०. जैसे घर में आग लगने पर गृहस्वामी विशिष्ट रत्नादि उपकरण लेकर निकल जाता है । वह सोचता है, कि भूतकाल में भी इस चीजो से मेरा हित हुआ था और आगे भी इस से ही मुझे सुख मिलेगा ।

1. अ – ०भवणु० – प. । परिभवमणु० – क. । 2. ०चलं – प. । 3. ब – सुगुरु० – ह. । 4. मरणेहिं – ह. । 5. ब – नीणे – ह. ।

एवमहं अप्पाणं, निंत्थारिस्सामि दुहपलित्तम्मि ।
भवरण्णे पडिवज्जिय, दिक्खं सासयसुहनिमित्तं ॥५२१॥

संबलएण विरहिओ, जो पडिवज्जइ महंतमद्धाणं ।
सो वच्चंतो पावइ, दुक्खं तण्हाछुहाहिंतो ॥५२२॥

एवं धम्ममकाउं सुहजणणं, परभवम्मि जो जाइ ।
सो होइ दुक्खभागी, पए पए जम्ममरणत्तो ॥५२३॥

ता पव्वावेह ममं, काऊणाणुग्गहं सहत्थेण ।
सिक्खवह साहुकिरियं, सीसोऽहं तुम्ह पयसेवी ॥५२४॥

पव्वाविओ य गुरुणा, जहाविहाणेण सुद्धलेसिल्लो ।
विहरइ य तेहिं सद्धिं, विणीयविणओ पसंतप्पा ॥५२५॥

(नंदणमुणिपवज्जापालनसरूवं)

अब्भसियसाहुकिरिओ, सुत्तत्थविसारओ य अइरेण ।
मासोववासणिरओ, निरंतरं धीरसत्तो सो ॥५२६॥

दोहिं पि बंधणेहिं, रहिओ दोहिं असुद्धझाणेहिं ।
दंडेहिं गारवेहिं य, सल्लेहिं तिहिं वि परिमुक्को ॥५२७॥

उवसंतचउक्कसाओ, विगहासन्नाहिं वज्जिओ चउहिं ।
पंचकिरियानियत्तो, पंचसु कामेसु वि विरत्तो ॥५२८॥

पंचसु समिइसु समिओ, छज्जीवनिकायरक्खणपरो य ।
सत्तभयट्ठाणरहिओ, अट्ठमयट्ठाणपरिहीणो ॥५२९॥

---

१. निस्तारयिष्यामि । २. संबलकः = 'भाथु' । ३. ०अध्वानम् = मार्ग । ४. तृष्णाक्षुधाभ्याम् । ५. जन्ममरणाऽऽर्तः । ६. शिष्योऽहम् । ७. शुद्धलेश्यावान् । ८. कृतः विनीतानां विनयः येन सः = गुर्वादि विनयकारी । ९. प्रशान्ताऽऽत्मा । १०. अभ्यस्तसाधुक्रियः । ११. सूत्राऽर्थविशारदः । १२. चार विकथा + चार संज्ञा । १३. ०निवृत्तः ।

1. अ - तिण्हं - प. । 2. ब - समीसु - ज.ह. ।

नवबंभचेरगुत्तो[1], उवउत्तो दसविहम्मि धम्मम्मि ।
अट्ठारसविहबंभे, सूरो बारसविहतवे य ॥५३०॥

पंचविहे सज्झाए उज्जुत्तो[1], चउविहोवसग्गेहिं ।
अखलियचित्तो, धीरो बावीसपरीसहेहिं च ॥५३१॥

वीसाए[2] ठाणेहिं, बहुसो आसेविएहिं[3] विमलेहिं ।
तित्थयरनामकम्मं, **नंदण**मुणिणा अह निबद्धं ॥५३२॥

वीसं ठाणाणि पुण इमाणि - (**तित्थयरणामकम्मकारणाइं वीसा ठाणाइं**)

अरहंत-सिद्ध-पवयण-गुरु[2]-थेर-बहुस्सुए तवस्सीसुं ।
वच्छल्लं[4] कुणमाणो, तित्थयरत्तं[5] समज्जिणइ ॥५३३॥★

संघो पवयणमि[3]त्थं[6], गुरुणो धम्मोवएस[4]गाईया ।
सुत्तत्थोभयधारी, बहुस्सुया होंति[7] विक्खाया[5] ॥५३४॥

जाईसुयपरियाए पडुच्च, थेरो तिहा[8] जहकमेणं ।
सट्ठीवरिसो[9] समवायधारओ[10] वीसवरिसो य ॥५३५॥

भत्ती पूया वन्न[11]प्पयडण-वज्जणमवन्नवायस्स ।
आसायण[12]परिहारो, अरहंतादीण[6] वच्छल्लं ॥५३६॥

नाणुवओगो भिक्खं[13], दंसणसुद्धी य विणयसुद्धी य ।
आवस्सयजोगेसुं, सीलवएसु य निरइयारो ॥५३७॥

संवेगभावणा झाणसेवणं, खणलवाइकालेसुं ।
तवचरणं[7] जइजणसंविभागकरणं जहासत्ती ॥५३८॥

---

१. उद्युक्तः = प्रयत्नशील । २. विंशत्या । ३. आसेवितैः । ४. वात्सल्यम् । ५. तीर्थकरत्वम् । ६. पादपूर्ति में प्रयुक्त अव्यय । ७. भवन्ति । ८. त्रिधा । ९. षष्टिवर्षः । १०. समवायाङ्गधारकः । ११. ०वर्णप्रकटन० = प्रशंसा करना । १२. आशातना० । १३. अभीक्ष्ण = बारंबार ।

1. ०गुत्तिसु -ज.क. । 2. ब - ०रुबहुसुयथेरसु त० - ज. । 3. ०मेत्थं - ह.क. । ०मत्थं - प. । 4. ब - ०माईया - ह. । 5. ब - हुंत वि० - ह.क. । 6. ०हन्नाईण - ज.क. । 7. ०करणं - ज.ह. ।

वेयावच्चं दसहा, गुरुमाईणं समाहिजणणं च ।
[१]किरियादारेण तहा, अपुव्वनाणस्स गहणं च ॥५३९॥

आगमबहुमाणो वि य, तित्थस्स पभावणा जहासत्ती ।
एएहिं ठाणेहिं, तित्थयरत्तं लहइ जीवो ॥५४०॥

(नंदणरिसिणो अंतिमाराहणा)

इय सो [1]बहु कालं, [२]सामन्नं निक्कलं [३]चरेऊणं ।
पज्जंते आराहणमे[2]वं, काउं समाढत्तो ॥५४१॥

दुक्कडगरिहा [3]जीवाण खामणं, भावणा य चउसरणं ।
पंचण्ह नमोक्कारो, अणसणमाराहणा एसा ॥५४२॥

तत्थ [४]दुक्कडगरिहा -

कालविणयाइओ खलु, **नाणायारो** य अट्ठहा भणिओ ।
जो मे तत्थ [५]इयारो, कोइ कओ तमिह निंदामि ॥५४३॥

निस्संकियाइयम्मी, अट्ठविहे **दंसण**स्स आयारे ।
जो अइयारो विहिओ, तिविहेणं वोसिरे तं पि ॥५४४॥

सुहुमो य बायरो वा, **पाणिवहो** मोह[६]लोहजुत्तेणं ।
जो कोइ कओ पुव्वि, तिविहेणं वोसिरे [4]तमहं ॥५४५॥

जं किंचि **मुसं** भणियं, हास[७]भया कोहलोहमोहेहिं ।
तं सव्वं निंदामि, पायच्छित्तं पवज्जामि ॥५४६॥

---

१. क्रियाद्वारेण = शास्त्रोक्तानुष्ठानेन । २. श्रामण्यम् । ३. निष्कलङ्कम् अथवा निक्कल (दे.) पोलापन, अपवाद से रहित । ४. दुष्कृतगर्हा । ५. अतिचारः । ६. ०लोभयुक्तेन । ७. भयात् ।

1. ब - बहुयं का० - ह. । पचूय० - क. । पभूय० - प. । 2. ब - ०मेयं - क. । 3. अ - जंतूण - प. । 4. तमिहा - ज. ।

अप्पं [1]बहुं व कत्थइ, परदव्व[१]**मदिन्नयं** च जं गहियं ।
रागेण व [2]दोसेण व, तं सव्वं मज्झ [२]वोसिरियं ॥५४७॥

जं सुरतिरिक्खमाणुस**मेहुण**मासेवियं मए पुव्विं ।
तिविहेण वि करणेणं, तं निंदे तं च गरिहामि ॥५४८॥

जो [3]कोऽवि [4]लोहदोसा, [३]धणधन्नचउप्पयाइबहुभेओ ।
गहिओ **परिग्गहो** मे, वोसिरिओ सो मए इण्हिं ॥५४९॥

राईए जो भुत्तो, असणाइचउव्विहोऽवि आहारो ।
इंदियवसगेण मए, तं पि य निंदामि भावेण ॥५५०॥

जो पुत्तकलत्तेसुं, बंधुसु मित्तेसु गिहधणे धन्ने ।
एमाईसु ममत्तो सो, सव्वो मज्झ वोसिरिओ ॥५५१॥

जो कोइ कओ कोहो, माणो माया य दुट्ठलोहो य ।
रागो दोसो कलहो, पेसुन्नं परपरीवाओ य ॥५५२॥

अब्भक्खाणं इय एवमाइ, जं किंचि दुट्ठमायरियं ।
अन्नाणाइवसेणं, तं तिविहं वोसिरे सव्वं ॥५५३॥ ॥ जुम्मं ॥

[5]जंतुखामणा पुण –

जो कोइ मए [४]वहिओ, [५]कडुयं भणिओ य, जस्स मे [६]हरियं ।
[७]अवयारो जस्स कओ, सव्वोऽवि हु खमउ सो मज्झं ॥५५४॥

मित्तो व अमित्तो वा, सयणो वा परजणो व जो कोइ ।
सो खमउ मज्झ सव्वो, समभावो मज्झ सव्वेसु ॥५५५॥

---

१. अदत्तम् । २. व्युत्सृष्टम् । ३. धनधान्यचतुष्पदाऽऽदिबहुभेदः । ४. वधितः, हतः । ५. कटुकम् = कटु वचन । ६. हृतम् । ७. अपकारः ।

1. ब – बहुयं – ह. । अप्पं च बहुं च – क. । 2. दोसेणं – प. । 3. ब – कोइ – ज.क. । 4. लोहदोसो – ह.क. । 5. ब – ०खामणं पुण – ह. ।

देवत्तणम्मि देवा, तिरिया तिरियत्तणम्मि जे केइ ।
नरयम्मि वि नेरइया, मणुया मणुयत्तणे जे उ ॥५५६॥

दुक्खम्मि मए ठविया, खमंतु ते मज्झ खामणपरस्स ।
अहमवि खमामि तेसिं, मेत्ती मे सव्वभूए[1]सु ॥५५७॥ ॥ जुम्मं ॥

भावणा पुण –

जीयं[१] जोव्वण[२]मिड्ढी[2], रूवं पियसंगमो बलं सव्वं ।
विसमखरमारुयाहयकुसग्गजलबिंदुणा सरिसं ॥५५८॥

जम्मजरामरणेहिं, अभिभूयाण बहु[३]वाहितत्ताणं ।
जंतूण नत्थि सरणं, धम्मो जिणभासिओ मोत्तुं ॥५५९॥

सव्वे जाया सयणा, सव्वे जीवा य परजणा जाया ।
सव्वेसिं जीवाणं, पडिबंधं ते[3]सु को कुणइ ? ॥५६०॥

एगो पावइ जम्मं, एगो च्चिय मरइ कम्मवसगो त्ति ।
एगो सुहदुक्खाइं, जीवो अणु[4]हवइ संसारे ॥५६१॥

अन्नं इमं सरीरं, अन्ना धणधन्नसंपया स[5]यला ।
अन्नो य एस जीवो, बहुहा परिभमइ संसारे ॥५६२॥

वसमंसरुहिरचम्मट्ठिविरइए, असुइपूरिए अंतो ।
देहेऽसुइघरसरिसे, मु[४]च्छं को कुणइ जाणंतो ? ॥५६३॥

अइलालियं पि अइपालियं पि, देहमइरेण मोत्तव्वं ।
भा[५]डीगहियं व्व घरं, विद्धं[६]सणधम्मयं एयं ॥५६४॥

---

१. जीवनम् । २. ऋद्धिः । ३. ०व्याधि० । ४. मूर्च्छाम् । ५. भाटी० = भाड़ा, किराया । ६. विध्वंसनधर्मकम् = विनाशी स्वभाव वाला ।

1. ब – ०जीवेसु – ज.क.ह. । 2. ब – ०मिद्धी – ह. । 3. ब – तेऽत्थु – ह. । 4. ०भवति – ह. । 5. अ – सयणा – ज.प. ।

धीरेण वि मरियव्वं, [१]काउरिसेण वि अवस्स मरियव्वं ।
तह मरियव्वं विउसा, जह मरणं पुण न [१]संभवइ ॥५६५॥

चउसरणं पुण इमं –

अरहंता मह सरणं, सिद्धा साहू य बंभवयजुत्ता ।
केवलिणा [२]पन्नत्तो, धम्मो [२]ताणं च सरणं च ॥५६६॥

जिणधम्मो मह माया, जणओ य गुरू, सहोयरा साहू ।
सह धम्मयरा मह बंधवा य, सेसं पुणो जालं ॥५६७॥

पंचनमो[3]क्कारो इमो –

उसभाईतित्थयरे, चउवीसं [३]सुरनए नमंसामि ।
[४]भरहेरवयविदेहे, जे केई ते य वंदामि ॥५६८॥

अरहंतणमोक्कारो, जीवं [५]मोएइ भवसहस्साओ ।
भावेण कीरमाणो, होइ पुणो बोहिलाभाए ॥५६९॥

सिद्धाण णमोक्कारं, करेमि भावेण निट्ठियट्ठाणं ।
भवसयसहस्सबद्धं, [४]दड्ढं कम्मिंधणं जेहिं ॥५७०॥

पंचविहं आयारं, आयरमाणाण [६]पन्नवें[5]ताणं ।
आयरियाणं पि णमो, धारिज्जइ पवयणं जेहिं ॥५७१॥

उवज्झायाणं पि णमो, [७]संगोवंगं सुयं [६]धरें[6]ताणं ।
सीसगणस्स [८]हियट्ठा, [९]झरमाणाणं तयं चेव ॥५७२॥

---

१. कापुरुषेणाऽपि = कायर पुरुष द्वारा भी । २. त्राणम् । ३. सुरनतान् । ४. भरत-ऐरावत और महाविदेह में विराजमान । ५. मोचयति भवसहस्रभ्रमणात् । ६. प्रज्ञापयताम् = उपदेश देने वाले । ७. साङ्गोपाङ्गम् । ८. हितार्थाय । ९. क्षरताम् = श्रुत को बरसाने वाले ।

1. संहवइ – ह. । 2. ब – ०लिपन्नतो मे धम्मो – ज.ह.क. । 3. ब – ०क्कारा इमे – ह. । 4. अ – दड्ढं – ज.प. । 5. पन्नविंताणं – ज.ह.क. । 6. ब – धरं० – क.ह.ज. ।

साहूण णमोक्कारं, करेमि सीलव्वए धरंताणं ।
भवसयसहस्सबद्धं, जे किर निन्नासए[१] पावं ॥५७३॥

अणसणं चेमं –

सव्वं चिय सावज्जं, जोगं उवहिं च बाहिरंतरयं ।
तिविहेण वोसिरामी, तिविहमहं[2] जावज्जीवाए ॥५७४॥

असणं पाणं खादिम-साइमयं वोसिरामि सव्वं पि ।
संपइ जावज्जीवं, चरिमुस्सासे[३] य देहं पि ॥५७५॥

इय आराहणमिणमो[३], आराहेऊण **नंदणो** भयवं ।
धम्मायरियं समणे, समणीओ खामए[4] सम्मं ॥५७६॥

वासाण सयसहस्सं, परियायं[५] पालिऊण सुहझाणो ।
पणुवीससयसहस्से, सव्वाउं अणुभवेऊणं ॥५७७॥

संपुन्नकयाणसणो, णिप्पडिकम्मो[५] य निम्ममत्तो य ।
आलोइयपडिकंतो, विहिणा कालं गतो धीरो ॥५७८॥ ॥ जुम्मं ॥

(नंदणाणगारस्स देवलोयोप्पत्ती)

पाणयकप्पे पुप्फुत्तरम्मि, विउलम्मि वरविमाणम्मि ।
उववायसहामज्झे, सुरसयणिज्जम्मि उववन्नो ॥५७९॥

देवो महिड्ढिओ सो, अंतमुहुत्तेण[६] सव्वपज्जत्तो ।
अवणीय देवदूसं, उवविट्ठो नियइ पासाइं[७] ॥५८०॥

दट्ठुं तं सुररिद्धिं, विमाणरयणाइं[८] देवसंघायं ।
विम्हइयमणो चिंतइ, दिव्विड्ढी पाविया एसा ॥५८१॥

---

१. निर्नाशयति । २. चरिमोश्वासे । ३. इणमो = इदं (सर्व.) नपु.द्वि.ए.व. । ४. पर्यायम् । ५. निष्प्रतिकर्मा = शारीरिक चिन्ता रहित । ६. पश्यति । ७. पार्श्वानि = आस-पास । ८. दिव्यर्द्धि ।

1. अ – ०भय० । 2. जावजीवाए – क. । 3. अ – सेहि दे० – प. । 4. ब – ०मिउं – ज.ह. ।

केण मए कम्मेणं, तवेण दाणेण देवभत्तीए ।
दुद्धरवयधरणेणं[1], ओहिं[1] च पउंजए[2] तत्तो ॥५८२॥ ॥ जुम्मं ॥

पेच्छइ पुव्वभवं सो, निच्चलसामन्नपालणं मुणइ ।
चिंतइ अहो ! पभावो[2], जिणवरधम्मस्स सुकयस्स ॥५८३॥

एत्थंतरम्मि दट्ठुं, उप्पन्नं तं सुरं महिड्ढीयं ।
हिट्ठमणा पंजलिया[3], मिलंति सुरकिंकरा बहवे ॥५८४॥

भणंति य –

जय जय नंदा ! जय जय भद्दा !, तं अम्ह सामिओ देवो[3] ।
अजियं जिणाहि सुरपहु !, जियं पुणो पालयाहि त्ति ॥५८५॥

तुम्ह विमाणं एयं, आणाकारी य एस सुरनियरो ।
उववणमेयं सुरतरुसुसमिद्धं[4] कीलणट्ठाए[5] ॥५८६॥

मज्जणवावी[6] एसा, मज्जणयसहाइयाओ[7] एयाओ ।
एयं सिद्धाययणं[8], अत्थाणसहा[9] **सुहम्मा** य ॥५८७॥

एयाण तुमं सामी, अम्हं पुन्नोदएण जाओऽसि ।
संपइ उट्ठह[10] सामिय !, मज्जणयसहाए उवविसह ॥५८८॥

इय भणिओ सो गंतुं, मज्जणयसहाए बहुसुरसमग्गो ।
सीहासणे निसीयइ, पुव्वाभिमुहो सपयपीढे[11] ॥५८९॥

खीरोयाइजलेहिं[12] अभिसित्तो, विविहकलसखित्तेहिं ।
किंकरसुरेहिं, तत्तोऽलंकारसहाए गंतूणं ॥५९०॥

---

१. अवधिम् । २. प्रयुङ्क्ते । ३. प्राञ्जलिताः = नमस्कार के लिए हाथ जोड़े हुए । ४. ०सुसमृद्धम् । ५. क्रीडनार्थाय । ६. मज्जनवापी । ७. ०सहायिकाः = सहाय करने वाली स्त्री । ८. सिद्धायतनम् । ९. आस्थानसभा० = सभास्थान । १०. उत्तिष्ठत । ११. सपादपीठे । १२. क्षीरोदादि = क्षीरोदधि समुद्र वि. ।

1. अ – ०तवचरणेणं – प. । 2. ब – पसाओ – ह. । 3. ब – देव – ह.ज. । 4. सिद्धायतणं – क. । 5. अ – ०याहि० – ज.क.प. ।

निवसेइ देवदूसे, वरहरियंदणविलेवणं कुणइ ।
बंधइ सिरोहराए, सुरपायवकुसुममालाओ ॥५९१॥ ॥ जुम्मं ॥

केऊरकडयकुंडलहारलयामउडमाइयाभरणं ।
सव्वंगेसु पिणद्धइ, रेहइ नं कप्परुक्खो व्व ॥५९२॥

ववसायसहं गंतुं, पोत्थयरयणं च वायए पवरं ।
पुप्फाईपूयंगं घेत्तुं, सिद्धालयं विसइ ॥५९३॥

अट्ठोत्तरपडिमसयं, ण्हावइ पूएइ वंदइ थुणेइ ।
तो **सोहम्म**सहाए, अत्थाणं देइ सुरमज्झे ॥५९४॥

पेक्खणयगीयवाइयमहूसवं, अणुहवेइ गुरुहरिसो ।
दिव्वे य कामभोए, जहिच्छिए माणए तत्थ ॥५९५॥

कल्लाणगे जिणाणं, आगच्छइ एत्थ तह **विदेहे**सु ।
वंदइ जिणिंदचंदे, निम्मलसम्मत्तगुणधारी ॥५९६॥

वीसं च सागराइं, आउठिइं पालिउं तओ चविओ ।
तिहिं नाणेहिं समग्गो, अवयरिओ एत्थ **भरह**म्मि ॥५९७॥

हत्थुत्तरजोगेणं, आसाढे सुद्धपक्खछट्ठीए ।
विगए य अद्धरत्ते, अग्गाहारे दियवराणं ॥५९८॥

---

१. ०हरिचन्दन० = चन्दन की जाति विशेष । २. शिरोधरायाम् = गला, ग्रीवा । ३. केयूर० = बाजुबंध । ४. ०कटक० = कड़ा, वलय । ५. पिनिदधाति = पहनाना, बांधना । ६. राजते । ७. व्यवसायसभाम् = कार्य करने का स्थान, कार्यालय । ८. पुस्तकरत्नम् । ९. ०पूजाङ्गम् = पूजन की सामग्री । १०. ०वादित्र० = ०वाद्यमहोत्सवम् । ११. यथेच्छान् = इच्छा के अनुसार । १२. मानयति = अनुभव करना । १३. च्युतः । १४. अवतीर्णः । १५. शुक्लपक्षषष्ट्याम् । १६. (दे.) अग्राहारे = उच्चजीविका वाला । १७. द्विजवराणाम् । अथवा श्रेष्ठ ब्राह्मणो के लिए 'अग्र्याऽऽधारे' = मुख्य आधारस्थान वैसे माहणकुंड गाँव में ।

1. ब - सिरे वराओ - ह.ज. । 2. पिणिंधइ - प.ह. । 3. ब - ०हारस० ह. । 4. ब - पवायए - ज.ह.क. । 5. ब - अट्ठत्त० - ज.ह. । 6. ब - ०णए - ह. । 7. ब - निच्चलस० - ज.ह. ।

माहणकुंडग्गामे, **कोडालस**गोत्तमाहणो आसि ।
नामेण **उसहदत्तो**, उववन्नो तस्स गेहम्मि ॥५९९॥ ॥ जुम्मं ॥

गयमाइमहासुमिणेहिं, सूइओ माहणीए [1]चोद्दसहिं ।
देवाणंदाए जिणो, कुच्छीए [1]कुल[2]मदवसेणं ॥६००॥

तुट्ठो य **उसहदत्तो, देवाणंदा** य पवरसुमिणेहिं ।
होही [3]सुओ त्ति अम्हं, वेदविऊ दियकुलपहाणो ॥६०१॥

अह दिवसे [3]बासीई, वसइ तहिं माहणीए कुच्छिसि ।
सक्को आसणकंपे जाए, तो ओहिणा नियइ ॥६०२॥

पेच्छइ जिणमुववन्नं, चिंतइ य अहो ! अजुत्तमावन्नं ।
जं एसो [4]चरमजिणो, उववन्नो माहणकुलम्मि ॥६०३॥

जओ –

[4]उग्गकुले [5]भोगकुले, इक्खागकुले य तह य हरिवंसे ।
नायकुले [6]कोरव्वे, उववज्जंती पुरिससीहा ॥६०४॥

एसो पुण नीयकुले, तिलोयमहिओ जिणो समुववन्नो ।
अहवा **न जिनवरेण वि, लंघिज्जइ कम्मपरिणामो** ॥६०५॥

[7]अच्छरमिणं जायइ, अणंतकालाओ समयनिद्दिट्ठं ।
[8]जीयं पुण **सक्का**णं, जिणस्स गब्भंतरे नयणं ॥६०६॥

इओ य – (**सिरिकुंडग्गामसोहाभिहाणं**)

अत्थि इह **भरह**वासे, मज्झिमदेसस्स मंडणं परमं ।
सिरि**कुंडगाम**नयरं, वसुमइरमणीतिलयभूयं ॥६०७॥

---

१. कुलमदवशात् आगतः । २. वेदविद् । ३. द्व्यशीतिं । ४. आरक्षकाः उग्रदण्डकारित्वात् उग्राः । ५. गुरुस्थानीयाः भोगाः । ६. कौरव्ये = कुरु वंश में । ७. आश्चर्यम् । ८. जीतम् = आचारम् ।

1. चउद्दसहिं – क. । 2. ०मय० – ज.ह. । 3. पुत्तो – ज. । 4. चरिम० – प.ह. ।

अमराउरि व्व अलया[१]उरि व्व, **लंकाउरि** व्व रमणीयं ।
बहुविहविलासकीला[२]णच्चणगेयाइसोहाहिं ॥६०८॥

जं च –

ति[३]यच[४]उक्क[५]च[६]च्चर[७]चउमुहर[८]च्छामुहेहिं सोहिल्लं ।
उत्तुंग[९]वियडमणहरबहु[१०]गोउरदारकयसोहं ॥६०९॥

[११]कविसीस[१२]ट्टालयपरिगएण, [१३]निट्ठुरसिलानिबद्धेणं ।
[१४]सालेण [१५]वलइयमिणं, सुपुरिसहिय[१]यं व तुंगेणं ॥६१०॥

[२]परि[१६]हाए पइ[३]वयाए, महा[४]सईए व्व सव्वगहिरमज्झाए ।
सव्वदिसिं परिखित्तं, परपुरिसालंघणिज्जाए ॥६११॥

आरामुज्जाणाइं, **नंदण**वणसन्निभाइं रेहंति ।
[५]जत्थ फलफुल्लपल्लवमणहरवणराइकलियाइं ॥६१२॥

वरवारि[१७]भरियसरवरवावीकूवेहिं परिसरं [६]जस्स ।
सव्वदिसासु विरायइ, ब[१८]हुकीलाठाणरमणिज्जं ॥६१३॥

---

१. अलकापुरी = कुबेर की नगरी । २. ०नर्तन० । ३. त्रिक० = मार्गत्रयसङ्गमः । ४. ०चतुष्क० = चौक, चौराहा । ५. ०चत्वर० = अनेकमार्गसङ्गमः । ६. ०चतुर्मुख० = देवकुलच्छत्रिकादि । ७. ०रथ्या० = राजमार्ग, मोहल्ला । ८. शोभावत् । ९. ०विकट०=विशाल, सुन्दर । १०. ०गोपुर० = नगर के किले का दरवाजा । ११. कपिशीर्षकः = प्राकार का अग्र भाग । १२. अट्टालकः = महल का ऊपरि भाग, अटारी । १३. अत्यन्त मजबूत । १४. वप्रेण । १५. वलयितं इदं = कंगन की तरह गोलाकार नगर ।

१६. परिखया [१]प्रतिवप्रया, महासतीव सर्वगभीरमध्यया ।
सर्वदिक्षु परिक्षिप्तं, परपुरुषाऽलङ्घनीयया ॥६११॥

१७. ०भृत० । १८. बहुक्रीडास्थानरमणीयम् ।

---

१. पक्षे पतिव्रतया ।

1. ब – ०य व्व – ह. । 2. ब – फरि० – ज.ह.क. । 3. अ – पइभया० – प. । परिभयाए – ज.क. । 4. ब – ०ईइ व्व । महासईए – प. । 5. अ – तत्थ – प. । 6. अ – तस्स – प. ।

[१]सरयब्भखंडपंडुरपासायसएहिं तुंगसिहरेहिं ।
जत्थ [२]खलिज्जइ मन्ने, रविणो रहतुरयसंचारो ॥६१४॥

[३]**कम्हीरमलय**गिरिणो, उवहसई [४]घुसिणचंदणोहेणं ।
[५]घणसारदीवमणुहरइ, पवरकप्पूरपूरेणं ॥६१५॥

(तन्नयरगयविविहहट्टसोहाकहणं)

बहुसुरहिदव्वपब्भार[१]परिमलुग्गारवासियदियंता ।
आणंदइ जत्थ जणं, [६]गंधियहट्टी [७]बहुधणड्ढा ॥६१६॥

तत्थुब्भवेहिं [८]देसागएहिं, वत्थेहिं पंचवन्नेहिं ।
जत्थ विरायइ, [९]अइघण[१०]दोसियहट्टाण [११]रिछोली ॥६१७॥

कत्थइ रुप्पसुवन्नयपवालमुत्ताहलेहिं अइरम्मा ।
रेहइ **वियड्ढ**[१२]तुंगा, सोवन्नियहट्टियापंती ॥६१८॥

कत्थइ [१३]कइगजणघणा, [१४]पूगीफलनालिएरनियरेहिं ।
बहुपडिपुन्ना [२]हट्टा, [१५]तप्फलदी[३]व व्व [१६]रेहंति ॥६१९॥

कत्थइ जा[१७]सुयणोवम[१८]कुसुंभसंभारभरियभूमितला ।
कत्थइ सुगंधविक्किज्जमाणअणवरयघयतेल्ला ॥६२०॥

क[४]त्थइ गिरिगुरु[१९]वारडिप्पयरा, रेहंति **विंझ**देस व्व ।
कत्थइ [२०]उडु[५]नियरो व्व सउज्जलकप्पासपब्भारा ॥६२१॥

---

१. शरदभ्रखण्डपाण्डुरप्रासादशतैः = शरद ऋतु के बादलो के टुकड़ो के जैसे उज्ज्वल... । २. स्खल्यते = स्खलित होना । ३. कश्मीर० । ४. घुसृण० = केसर, कुङ्कुम । ५. घनसार० = कपूर । ६. गन्धिक० = गन्धद्रव्य बेचने वाला, पंसारी । ७. ०हट्टिका = छोटी दुकान । ८. अन्यदेशात् आगतैः । ९. कतारबंध = 'गीचोगीच' । १०. ०दौष्यीक० = वस्त्र का व्यापारी । ११. (दे.) पङ्क्ति, श्रेणी । १२. सौवर्णिक० = सोने की, सुनार की । १३. क्रयिक० = ग्राहक । १४. पुगीफल० = सुपारी । १५. तत्फलद्वीपाः = वह फल के द्वीप जैसे लगते है = बहुत सारे हैं । १६. शोभन्ते । १७. 'जासुद का फूल' । १८. कुसुम्भ० = कुसुमवृक्ष का पुष्प । १९. (दे.) लाल वस्त्र । २०. चन्द्र ।

1. ०वरमलु० – ह. । 2. हट्टाओ फल० – ज । 3. अ – तरुफलदीवो व । 4. अ – ०त्थ य । 5. ०रोवमउ० – प. ।

१ 1
कड्ढिज्जमाणवलयाइकम्मपरिकम्ममाणकरिदसणा ।
२ 2 3
कत्थइ सुगंधगंधाइदव्वसुरभा विवणिपंती ॥६२२॥

३
कत्थइ जिणसमया इव, बहुविहसुत्तत्थसारपरिकलिया ।
४
कत्थइ सुकट्ठपउरा, दारिद्दक्कंतसेणि व्व ॥६२३॥

५
सत्तरसविहधन्नाणं, कुसुमाण फलाण पत्तसागाणं ।
दहिखीराणं दीसंति, विक्कया ठाणठाणेसु ॥६२४॥

६ ७ ८ ९ १० 4 ११
सालिजववीहिकोद्दवरालयतिलमुग्गमासचवलचणा ।
१२ १३ १४ १५
तुवरिमसूरकुलत्था, गोहुमनिप्फावअयसिसणा ॥६२५॥

इय केत्तियं व भन्नइ, जहट्ठियं विवणिमग्गवन्नणयं ।
१६
उक्कोसहीणमज्झिमविक्कयदव्वायरे तम्मि ॥६२६॥

१७ १८
विन्नाणं सिप्पकला, आभरणं वत्थमन्नवत्थुं वा ।
7
तन्नत्थि वसुमईए, ण होज्ज जं तम्मि वरनयरे ॥६२७॥ ॥ तेरसेहिं विसेसियं ॥

---

१. हाथी के दांत को सुशोभित करने हेतु या तो उनमें से कोई चीज का निर्माण हेतु दुकान से बहार निकाले जाते है । २. खुश्बु वाले गन्धादि द्रव्यो से सुगंधी । ३. यथा जिनसमयाः = जिनाऽऽगमाः बहुविधसूत्राऽर्थसारपरिकलिताः भवन्ति तथा तस्मिन्नगरे कुत्रचित् बहुविधसूत्राऽस्त्रसारपरिकलिता विपणिपङ्क्तिः दृश्यते । (अनेक प्रकार के वस्त्र एवं श्रेष्ठ शस्त्रो से युक्त) । ४. यथा दारिद्र्याऽऽक्रान्तश्रेणिः सुकष्टप्रचुरा भवति । तथा तस्मिन्नगरे कुत्रचित् सुकाष्ठप्रचुरा विपणिपङ्क्तिः अस्ति । या निर्धनजनानां श्रेणिः इव अतिदीर्घा परिदृश्यते । ५. पत्र-शाकानाम् । ६. शालि = चावल । ७. व्रीहि = धान्य विशेष । ८. कोद्रव = धान्य विशेष 'कोदो' । ९. रालय० = धान्य विशेष, एक प्रकार की कंगु । १०. माष = उड़द । ११. (दे.) अन्न विशेष, चौला । १२. कुलत्थ = कुलथी, एक प्रकार की दाल । १३. निष्पाव० = 'वाल' । १४. अतसी = अलसी, अन्न विशेष । १५. शणा = धान्य विशेष । १६. उत्कृष्टहीनमध्यमविक्रयद्रव्याऽतरे = सागर । ०द्रव्याऽऽकरे वा । १७. विज्ञानम् । १८. शिल्पकला ।

1. ०कम्मं - ज. । 2. ब - ०दव्वाइ० । ०धूवाइ - ज. । 3. विपण० - क. । 4. ०सवल्ल० - ह. । 5. ०उ - ज. । 6. ०वग्ग० - क. । 7. ब - तं न० - क. ।

किं च - (**कुंडग्गामणिवासिलोगवण्णणं**)

लायन्नरूवजोवणविलाससिंगारचारुवेसाओ ।
जत्थ हरंति निरु मणं, तियसाण वि वेसविलयाओ ॥६२८॥

उज्जलपसंतवेसो, परोवयारी य सुइसमायारो ।
जत्थ महायणवग्गो, रेहइ णयविणयसंपन्नो ॥६२९॥

मिउमहुरभासिणीओ, विणयपहाणाओ सीलकलियाओ ।
उज्जलनेवत्थाओ, जत्थ य पउराण जुवईओ ॥६३०॥

वरकणयकलसकिरणावलीहिं, पिंजरियगयणमग्गाइं ।
सरयब्भविब्भमाइं, **हिमगिरि**सिहरं व तुंगाइं ॥६३१॥

णरकरितुरंगमणहरपडिरूवयबिंबभत्तिकलियाइं ।
जणनयणागरिसणसालभंजियावलयकलियाइं ॥६३२॥

वरसिप्पिविरइयाइं, जत्थ विरायंति देवभवणाइं ।
उत्तुंगतोरणाइं, सग्गविमाणं व्व पवराइं ॥६३३॥ ॥ तिहिं विसेसयं ॥

मणिमंडियचामीयरपवरालंकारभूसियंगाहिं ।
महरिहजिणपडिमाहिं, अहिसंसियगब्भहरयाइं ॥६३४॥

जगइपरिसंठिएहिं, पडिजिणभवणेहिं पुहइसारेहिं ।
निच्चपवत्तियजत्तामहूसवाइं जिणहराइं ॥६३५॥ ॥ जुम्मं ॥

---

१. ०शृङ्गार० । २. (अ.) निश्चित । ३. वैश्यविलयाः = महाजन की स्त्री । ४. श्रेष्ठ सुवर्ण कलश के किरणो की श्रेणी से पिञ्जरित = विभाजित या केसरी वर्ण युक्त किए हैं आकाश मार्ग जिन्होने वैसे देवभवनो । ५. भक्ति० = भेद, रचना । ६. ०आकर्षणशालभञ्जिका० = काष्ठ आदि की पुतली । ७. ०शिल्पिविरचितानि । ८. स्वर्ग० । ९. ०चामीकर० = सुवर्ण । १०. अभिशंसित-गर्भगृहाणि = सुन्दर गभारे, 'वखणायेल' ।

1. ब - ०रूयजो० - ह. । 2. अ - ०यविविहभ० - प. । 3. ०सुरपडिमाइं - प.क. । 4. अ - ०पवि० - प. ।

पसमाईगुणकलिया, कव्वालंकारवागरणकुसला ।
सिद्धंतमहोयहिणो, जत्थ य विहरंति मुणिवसहा ॥६३६॥

एको च्चिय दोसो णवरि, तत्थ सावयकुलेसु सुपसिद्धो ।
अप्पधणोऽवि य धम्मे, महंतमत्थव्वयं कुणइ ॥६३७॥

अन्नोऽवि तत्थ दोसो, रायंगणरायपहे विपणिपहे ।
वियरंतभग्गपसरा, निच्चं चिय मत्तमायंगा ॥६३८॥

(सिरिसिद्धत्थनिवो गुणरयणखाणी)

तम्मि पुरे सुपसिद्धो, णायनरिंदकुलणहयलमियंको ।
पणिवइयवच्छलो, वित्थरंतनिवलच्छिपरिकलिओ ॥६३९॥

सिरि**सिद्धत्थ**नरिंदो, उद्दंडपयावनिहयपडिवक्खो ।
गरुयपरक्कमसामंतनमिरसिरघुट्ठपयजुयलो ॥६४०॥

तरणि व्व पयावेणं, **भीमो** व्व परक्कमेण गरुएणं ।
पणयजणकप्परुक्खो, **कन्नो** विव चायसोडीरो ॥६४१॥

सच्चपइन्नो नीईवियक्खणो, परकलत्तविमुहो य ।
दुट्ठजणनिग्गहपरो, सव्वपयापालणेक्करओ ॥६४२॥

दट्ठुं जं गयखंधे, रूवक्खित्ताओ पउरजुवईओ ।
सुन्नमणाओ दिवसे पि, गेहकम्माइं न कुणंति ॥६४३॥

---

१. काव्याऽलङ्कारव्याकरण० । २. श्रावककुलेषु । ३. अल्पधन० । ४. अर्थव्ययम् । ५. विचरन्तः = घूमना । ६. अभग्नप्रसराः = अखण्डित-फैलाव, बेरोक-टोक । ७. ज्ञातनरेन्द्र-कुलनभस्तलमृगाङ्कः । ८. प्रणिपतित० = नत । ९. विस्तरत् = फैली हुई, बढ़ी हुई । १०. ०प्रतिपक्षः = शत्रु । ११. घृष्ट० = स्पृष्ट । १२. तरणिः = सूर्य । १३. पराक्रमेण । १४. कर्णः । १५. त्यागे शौण्डीरः = महादानी । १६. रुपाऽऽक्षिप्ताः ।

1. खंताई० - प.क. । 2. अ - ०गणि - प. । 3. ब - ०रायमग्ग० - ज. । 4. ब - ०हर० - ह. । 5. ०नरिंदो - क. । 6. ०घिट्ठ० - ज. । 7. ०परो - क. । 8. दिवसं - ज. ।

[1]दंतपहारुप्पेल्लियभूमीभारेण, सेसफणनिव[2]हं ।
जस्सोनामिंति दढं, बलवंता मत्तमायंगा ॥६४४॥

निट्ठुरखु[3]रुक्खएणं, भूमिरओहेण[२] जस्स वियरंता ।
अंधारयंति गयणं, द[३]प्पु[4]द्धुरतुरयसंघाया ॥६४५॥

[४]चक्कासिकुंत[5]कुंतीकोदंडपयंडसेन्नविगराले ।
दट्ठुं जस्स भडे नणु, वेयालगणा वि [6]णासंति ॥६४६॥

जम्मि य जत्ताभिमुहे, उग्गपयावे भएण विहुराइं ।
पडिवक्खमंडलाइं, [५]खलहलयं जंति सव्वदिसिं ॥६४७॥ ॥ नवहिं विसेसयं ॥

तस्स य [7]**तिसला** भज्जा, **रंभा** इव [8]पवररूयलायन्ना ।
कामकरिकुंभविब्भमपओहरा, सरयससिवयणा ॥६४८॥

वियसियकुवलयनयणा, [६]रंभाखंभसुकुमालसव्वंगा ।
गुरुखमदमविणय[७]ज्जवसच्चदयादाणसीलगुणा ॥६४९॥ ॥ जुम्मं ॥

अह भणइ **नेगमेसिं** देविंदो, एस एत्थ तित्थयरो ।
लोगुत्तमो महप्पा, उववन्नो माहणकुलम्मि ॥६५०॥

खत्तियकुंडग्गामे, **सिद्धत्थो** नाम खत्तिओ अत्थि ।
तस्स घरे तं [८]साहर, **तिसिला**देवीए कुच्छिंसि ॥६५१॥

---

१. दन्तप्रहार-उत्प्रेरित-भूमिभारेण = हाथी जमीन के ऊपर दन्तप्रहार करते है । और दन्तप्रहार से पृथ्वी का भार बढ़ जाता है, जिस से अपने सिर के ऊपर पृथ्वी का भार झेलने वाले शेष नाग झुक जाते है । मतलब जिस के हाथी अपने दन्त प्रहार से शेष नाग को झुकाते हैं । २. भूमिरजः - ओघेन । ३. दर्पोद्धुर० = अहंकार से प्रबल । ४. शस्त्रविशेषनामानि । ५. (दे.) क्रि.वि. = क्षोभप्राप्त । ६. कदली स्कन्ध । ७. ०विनय-आर्जव० । ८. संहर = स्थानान्तर कर, मुञ्च ।

1. अ - दत्त० - प.क. । ०मीभाएण० - ज. । 2. ब - ०वहो - ह. ०निवहे - ज. । 3. ०खुर० - प. । भूमिरओहिं । 4. ०दप्पुद्धर० - ज.क. । 5. अ - ०जुंगी - प. । 6. अ - तासंति - प. । ०गणो वि नासिंति - ज. । 7. तिसिला - ज. । 8. ब - परम० - ज.ह.क. ।

[१]बाढं ति भणिऊणं, [२]वासारत्तस्स पंचमे पक्खे ।
साहरइ [३]पुव्वरत्ते, हत्थुत्तरतेरसीदिवसे ॥६५२॥

गब्भट्ठाणं [४]परिसोहिऊण, साहरइ **तिसिल**कुच्छीए ।
सुमिणे य [५]पडिनियत्ते ते, पेच्छइ [६]माहणी सा वि ॥६५३॥ ॥ जुम्मं ॥

कहियं च इमं पइणो, दोऽवि [७]विसन्नाइं ताइं चित्तेणं ।
निहिलंभे [८]णयणुप्पाडणं व, विहिणा कयमिमं ति ॥६५४॥

तिसिलाऽवि [९]सगिहम्मि, [1]सुहसुत्ता पेच्छए महासुमिणे ।
तिहुयणदिवायरम्मि, गब्भम्मि [१०]समाहरिज्जंते ॥६५५॥

कुंदेंदुसंखवन्ने, गयवसह[११]मयाहिवे पसन्नमुहे ।
लच्छीए अभिसेयं, दामजुयं रयण[१२]कब्बुरियं ॥६५६॥

किरण[१३]करालं तरणिं, निम्मलजोण्हं च पुन्नि[2]माइंदं ।
मणिमयदंडं च [१४]झयं, पउमपिहाणं च वरकलसं ॥६५७॥

पउमसरं पवरजलं, महल्लकल्लोल[१५]मालियं जलहिं ।
मणिरयणमयविमाणं, बहुविहरयणाण [१६]मुक्कुरुडं ॥६५८॥

निद्धूमसिहाजालं जलणं, इय पेच्छिउं [१७]सुहपबुद्धा ।
अब्भहियजायहरिसा, [१८]साहइ **सिद्धत्थ**नरवइणो ॥६५९॥ ॥ चउहिं विसेसयं ॥

---

१. स्वीकार सूचक उक्ति । २. अश्विन कृष्णा त्रयोदशी । ३. पूर्वरात्रे = रात्री का पूर्व भाग । ४. गर्भस्थान शुद्ध कर के । ५. प्रतिनिवृत्तान् = वापस लौटते हुए । ६. ब्राह्मणी । ७. विषण्णौ = खिन्न, विषादयुक्त । ८. नयनोत्पाटनम् = उन्मूलनम् । ९. स्वगृहे । १०. समाहियमाणे = 'लवाते छते' । ११. ०मृगाऽधिपान् । १२. ०कर्बुरितम् = अनेक रंग वाले रत्न युक्त । १३. ०करालम् = विकसित, शोभित । १४. ध्वजम् । १५. ०शोभितम् । १६. (दे.) राशि, ढेर । १७. सुखप्रबुद्धा = सुख से जाग्रत । १८. कथयति ।

1. ०हम्मि ते पेच्छए - ज.क.प. । 2. ०माइंदुं - ह., ०मायंदं - ज. ।

तं सोउं सो राया, पहिट्ठचित्तो य पुलइयसरीरो[१] ।
कल्लाणभोगसुहअत्थकारया, देवि ! तुह सुमिणा ॥६६०॥

अइरेण य ते पुत्तो होही, कुलकित्तिवद्धणो सूरो ।
इय भणिउं तं **तिसिलं**, विसज्जए नियपासाओ ॥६६१॥

पुव्वण्हे अत्थाणे, वाहरिउं सुमिणपाढगे राया ।
पुच्छइ सुमिणाण फलं, तेऽवि ससत्थाणुसारेण[१][२] ॥६६२॥

कहयंति राय ! सत्थे, बायालीसं[३] हवंति सुमिणाइं ।
तीसं च महासुमिणा, चोद्दस[४] तं मज्झयारम्मि ॥६६३॥

तित्थयरे चक्किम्मि य, उववज्जंतम्मि पेच्छए जणणी ।
सत्त उ केसवजणणी, चउरो बलदेवजणणीओ[२] ॥६६४॥ ॥ तिहिं विसेसयं ॥

ता **तिसिला** तित्थयरं, चक्कहरं वा वि पसविही नूणं[३] ।
इय[४] भणिय उवज्झाया, कयपूया[५] ते गया सगिहं ॥६६५॥

तं सोउं सा **तिसिला,** अइसयहरिसुल्लसंतरोमंचा ।
तं गब्भं परिपालइ, भोज्जेहिं हियसुहकरेहिं ॥६६६॥

भयवं तिनाणसहिओ[६], जणणीए पीडरक्खणनिमित्तं ।
संकोडियंगमंगो[७], अच्छइ[८] अणुकंपगयचित्तो ॥६६७॥

तं निप्फंदं[९] नाउं, भीयमणा परमसोयमावन्ना ।
चिंतइ गलिओ गब्भो, मतो[१०] व्व हरिओ व्व केणावि ॥६६८॥

तो सा पणट्ठनिद्दा, अजंपिरी चत्तभोयणविलासा ।
चिट्ठइ नं गयजीवा, हियरज्जा[११] नट्ठसव्वस्सा ॥६६९॥

---

१. पुलकित० = रोमाञ्चित । २. स्वशास्त्राऽनुसारेण । ३. द्विचत्वारिंशत् । ४. चतुर्दश । ५. कृतपूजाः । ६. त्रिज्ञानसहितः । ७. संकोटिताऽङ्गोपाङ्गः = संकोचित अङ्ग और उपाङ्ग वाले । ८. तिष्ठति अनुकम्पायुक्तचित्तः । ९. निष्पन्दम् = स्थिर । १०. मृतः वा हृतः वा । ११. हृतराज्या नष्टसर्वस्वा ।

1. य सत्था० - प. । 2. ०णी उ - प. । 3. नियमा - ज.क. । 4. ब - उवझाया सम्माणिय क० - ह. ।

हा ! पेच्छ अहन्नाए विहिणा, चिंतामणी [1]ममं दाउं ।
हरिओ [1]विडंबणट्ठा, धिरत्थु ता मज्झ जीवस्स ॥६७०॥

इय सोगभर[2]रुच्छइयं, जणणिं दट्ठुं जिणेण संचलियं ।
निरुवहओ मे गब्भो त्ति, सा वि पुण हरिसमावन्ना ॥६७१॥

[2]भयवं पि अदिट्ठस्स वि, अहो ! इमाए ममोवरिं नेहो ।
ता जइ जीवंतीए, दिक्खागहणं करेमि अहं ॥६७२॥

ता मोहमोहियमणा, मम विरहुप्पन्नसोय[3]संतत्ता ।
अट्टज्झाणोवगया, बंधइ असुहं बहुं कम्मं ॥६७३॥ ॥ जुम्मं ॥

[4]दुप्पडियाराणि दढं, अम्मापियरो हवंति लोगम्मि ।
ता [3]एएसिं [5]मधिई, रक्खेयव्वा मए ऽवस्सं ॥६७४॥

इय चिंतियमभिगिण्हइ, अभिग्गहं सत्तमम्मि मासम्मि ।
नाहं समणो होहं, अम्मापियरम्मि जीवंते ॥६७५॥

तिसिलागब्भगयम्मी, भयवंते तिरियजंभगा देवा ।
सक्कस्स समाएसा, खिवंति **सिद्धत्थ**भवणम्मि ॥६७६॥
[6]उच्छन्नसामियाइं, [7]गामारन्नपुरपव्वयगयाइं ।
विविहाइं निहाणाइं, जिणवरपुन्नाणुभावेणं ॥६७७॥ ॥ जुम्मं ॥

अह [8]**चेत्त**तेरसीए सुद्धाए, अद्धरत्तसमयम्मि ।
हत्थुत्तराहिं जाओ, तिहुयणचिंतामणी **वीरो** ॥६७८॥

आसणचलणाणंतर[9]मोहिन्नाणेण, [10]मुणियजिणजम्मो ।
[4]तक्खणमेव आगओ, दिसाकुमारीण संघाओ ॥६७९॥

---

१. विडम्बनार्थम् । २. ०उच्छदिताम् = आच्छादिताम् । ३. ०सन्तप्ता । ४. दुष्प्रतिकारौ = जिसका प्रतिकार = प्रत्युपकार अशक्य हैं । ५. मकारोऽलाक्षणिकस्ततोऽधृतिरित्यर्थः । ६. उत्सन्न० = नष्ट । ७. ग्राम-अरण्य-पुर-पर्वतगतानि । ८. चैत्र शुक्ला त्रयोदशी । ९. ०अवधिज्ञानेन । १०. ज्ञात० ।

1. ब - महं - ह. । 2. ब - ०वं अद्दि० - ह. । 3. ०एसिमधिई - ज. । 4. ०मेवायाओ - ह. ।

तथा हि –

अहलोगउड्ढलोगे[1], पुव्वाई**रुयग**वासिणीओ य ।
अट्ठट्ठ विदिसि चउरो, मज्झिम**रुयगा**ओ चत्तारि ॥६८०॥

छप्पन्न[१] सुरवहूओ, सव्वालंकारभूसियंगीओ ।
नमिऊण जिणं **तिसिलं**, थुणंति परमप्पमोएणं ॥६८१॥ ॥ जुम्मं ॥

तुज्झ नमो परमेसर !, जगमुद्धरिउं तुमं सि[2] अवयरिओ ।
भवचारयनिम्महणो जणपत्थियसोक्खकप्पतरू[२] ॥६८२॥

अत्थमिए[३] **पास**जिणे, लोगाइच्चे अणाहयं **भरहं** ।
उववन्ने नाह ! तुमे, अज्ज सणाहं पुणो जायं ॥६८३॥

तुज्झ नमो जय सुंदरि !, सुकयत्था सव्वलक्खणा तं सि ।
जं नररयणं उयरे, जगप्पईवो जिणो धरिओ ॥६८४॥

इय एवमाइ थोउं, दिसाकुमारीओ जीयमेयं[४] ति ।
अणुजाणावि[५]य जणणिं, नियनियकिच्चाइं कुव्वंति ॥६८५॥

अट्ठ विउव्वियवाया[६], भूमी सोहंति अट्ठ कयमेहा ।
गंधजलं वासंति[७] य, जाणुपमाणं च कुसुमोहं[८] ॥६८६॥

अट्ठ उ आयंसधरा[९], अट्ठ उ भिंगारधारिया[१०] अट्ठ ।
वरतालियंट[११]हत्था, अट्ठ उ वरचमरधारीओ ॥६८७॥

दीवयधरा[3] उ चउरो, चउरो मज्झिमगरुयगवासाओ ।
कप्पिति नालमुचियं, निहणंति य रयण[4]वियरम्मि ॥६८८॥

---

१. षट्पञ्चाशत् । २. जनप्रार्थितसौख्य० । ३. अस्तमिते । ४. जीतम् = आचार । ५. अनुज्ञाप्य = माताजी की अनुज्ञा लेकर । ६. विकुर्वितवाताः । ७. वर्षयन्ति । ८. ०ओघं = समूह । ९. आदर्शधराः = दर्पण । १०. भृङ्गार० = भाजन विशेष, 'झारी' । ११. ०तालवृन्त० = पंखा ।

1. ब – ०लोगो – ह. । ०लोगा – क. । 2. ब – ०सिमव० – ज.ह.क. । 3. दीविय० – ज.क. । 4. रयणिविरमम्मि – क. ।

अब्भंगिंति य [१]दोन्नि वि, सयपागसहस्सपागतेल्लेहिं ।
[२]उव्वट्टणं च काउं, उदगेहिं [३]तिहि उ ण्हाविंति ॥६८९॥

हरियंदणाणुलेवं, सव्वालंकारमणहरं काउं ।
[४]रक्खाकम्मं [२]विविहं, आसीसाएऽभिनंदंति ॥६९०॥

एवं किच्चं काउं, सयणिज्जे ठाविउं जिणं जणणिं ।
गायंति मंगलाइं, सव्वाओ महुरसद्देणं ॥६९१॥

(इंदस्सासणकंपो इहाऽऽगमणं य)

एत्थंतरम्मि **हरिणो, सोहम्म**पहुस्स आसणं चलियं ।
सो नियइ [५]पउत्तोही, **कुंडग्गामे** जिणं जायं ॥६९२॥

[६]अब्भुट्ठइ संभंतो, [७]घोलिरहारो पलंबवणमालो ।
कुंडलविलिहियगंडो, [८]हरिसाडोवेण चलमउडो ॥६९३॥

सत्तट्ठपए गंतुं, [९]पंचंगपणामपुव्वयं [३]दाहिणयं ।
भूमिं निहित्तु जाणुं, [४]वाममंचेवि [१०][११]पंजलिओ ॥६९४॥

हरिसुल्लसंतपुलओ, [१२]**सक्कथयं** पढइ [१३]एगवयणेण ।
भणइ य वंदामि जिणं, तत्थगयं [१४]नियउ मं भयवं ॥६९५॥

---

१. माता और पुत्र दोनो को तेल से अभ्यङ्गन करते हैं। २. उद्वर्तनम् = शरीर पर से मल वि. को दूर करना। ३. त्रिभिः उदकैः = गन्धोदक-पुष्पोदक-शुद्धोदकैः। स्नपयन्ति। ४. रक्षाकर्म = बच्चे की रक्षा के लिये राख वि. से की जाती क्रिया। ५. प्रयुक्ताऽवधिः। ६. अभ्युत्तिष्ठति = आदर करने के लिए खड़ा होना। ७. घूर्णितृ० = घूमता, हिलता। ८. हर्षाऽऽटोपेन = अति हर्ष से। ९. पञ्चाङ्गप्रणामपूर्वकं दक्षिणं जानुं भूमौ स्थापयित्वा प्राञ्जलितः वामं अञ्चेति। इति अन्वयः। १०. ऊँचा करना। दोनों हाथ जोड़ कर बायाँ पाँव जमीन के उपर रखकर दायाँ पाँव खड़ा कर के (चैत्यवन्दन मुद्रा में) मू. तित्थयराभिमुहे सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ, अंचित्ता दाहिणं जाणुं धरणितलंसि साहट्टु....॥ कल्प. प्रथमः क्षणः। टी. वामं जानुं उत्पाटयति = भूमौ अलग्नं स्थापयति। तथा संस्थाप्य, दक्षिणं जानुं धरणीतले निवेश्य...। ११. प्राञ्जलितः = संयुक्त कर द्वय। १२. शक्रस्तवम्। १३. एकवचनेन = अखंड धारा से। १४. पश्यतु।

1. अ - ०न्न वि - प.। 2. विहियं - क.। 3. वामं - प.क.ह.। 4. दाहिण० - प.ह.। वाममं०- ज.।

पच्चुट्ठिओ[१] य सीहासणम्मि[१], उवविसिय सुरविबोहट्ठा[२] ।
ताडावेइ **सुघोसं**, घंटं **हरिणेगमेसि**[३]सुरं ॥६९६॥ ॥ चउहिं विसेसयं ॥

तीए य ताडियाए, तस्सद्देणं च काउमाढत्ता ।
बत्तीसघंटलक्खा, एगूणा कणकणारावं ॥६९७॥

घंटासद्दं सोउं मिलिया, सव्वे सुरा सदेवीया ।
सक्कोऽवि हु संचलिओ[२], आरुहिउं **पालग**विमाणं ॥६९८॥

तस्सट्ठ[४] अग्गमहिसी, परिसाओ तिन्नि[५] तह य चउरासी[६][३] ।
सामाणियसाहस्सी[७], चउग्गुणा आयरक्खा[४] उ ॥६९९॥

सत्तेव[८] अणीयाइं, एमाई दिव्वरिद्धिसंजुत्तो ।
महया विच्छड्डेणं[१०], **कुंडग्गामे** य संपत्तो ॥७००॥ ॥ जुम्मं ॥

भयवं पयक्खिणेउं, वंदित्ता भत्तिनिब्भरसरीरो ।
ओसोयणिं[११] च दाउं, पडिरूवं तत्थ ठविऊणं ॥७०१॥

हरिणेगमेसि[५]समप्पियमह, भयवंतं सकरयले धरिउं ।
पंचविउव्वियरूवो, **मेरुं** संपत्थिओ **सक्को** ॥७०२॥ ॥ जुम्मं ॥

गहियजिणिंदो एक्को, दोन्नि य पासेसु गहियवरचमरो ।
धरियधवलायवत्तो[१२] एक्को, एक्को य वज्जधरो ॥७०३॥

मणिरयणकंचणमयं, पत्तो **सक्को** खणेण **मेरु**गिरिं ।
सव्वेऽवि तत्थ इंदा, समागया नियविभूईए ॥७०४॥ ॥ जुम्मं ॥

---

१. प्रत्युत्थितः = 'उभा थयेला शक्र' । २. सुरविबोधनार्थम् । ३. तृतीया विभक्ति का अर्थ करे। ४. पद्मा, शिवा, शची, अञ्जूः, अमला, अप्सराः, नवमिका, रोहिणीत्यभिधानाः । ५. बाह्य, अभ्यन्तर, मध्यम । ६. चतुरशितिः सामानिकानां सहस्रम् । ७. इन्द्रसमान-ऋद्धयः । ८. ३,३६,०००। ९. गन्धर्व, नाटक, अश्व, गज, रथ, सुभट, वृषभ इत्यादयः सप्त अनीकाः । १०. विच्छर्द० = ऋद्धि, वैभव । ११. अवस्वापिनीम् । १२. ०आतपत्रः ।

1. ब - सिंघा० - ह. । 2. अ - ०हिओ - प. । 3. चउसट्ठिं - ज. । 4. अ - ०क्खातो - ज.प. । 5. ब - ०गवे० - ज.क. ।

सो य केरिसो ? (**कणयाचलसरूवं**)

जोयणसहस्समेगं, अवगाढो धरणिमज्झयारम्मि ।
नवनउइं [१]उव्विद्धो, [२]चउवरवणसंडरमणिज्जो ॥७०५॥

भूमीए **भद्दसालं**, मेहलजुयलम्मि दोन्नि रम्माइं ।
नंदणसोमणसाइं, सिहरम्मि य **पंडग**वणं तु ॥७०६॥

[1]चउसु वणेसु चउद्दिसि, चउरो चउरो य होंति जिणभवणा ।
तस्सोवरिं तु चूला, जिणभवणजुया [२]दुवी[३]सुच्चा ॥७०७॥

पंडगवणम्मि चउरो सिलाओ, चउसु वि दिसासु चूलाए ।
चउजोय[४]णूसियाओ, सव्व[५]ज्जुणकंचणमयाओ ॥७०८॥

पंचसया[६]यामाओ, तस्सद्धं चेव होंति [७]रुंदाओ ।
[८]चंदद्धसंठियाओ, तासुं सीहा[३]सणा छच्च ॥७०९॥

पुव्वावरासु दो दो, सिलासु सीहासणाइं रम्माइं ।
[९]जम्माए [१०]उत्तराए सिलाए, एक्केक्कयं भणियं ॥७१०॥

दाहिणसिलाए सिंहासणम्मि, करकमलधरियजिण[4]चंदो ।
सक्को य समुवविट्ठो, [११]कयत्थमत्ताण मन्नंतो ॥७११॥

खीरोदहिस्स सलिलं, **मागहगंगा**इयाण आणीयं ।
अभिओगियदेवेहिं, **अच्चुय**सुरनाहवयणेणं ॥७१२॥

रुप्पस्स कंचणस्स य, मणीण तह चेव रुप्पकणयाणं ।
रुप्पमणीणं मणिकंचणाण, मणिकणयरुप्पाणं ॥७१३॥

---

१. उद्विद्धः = ऊँचा गया हुआ । २. चतुर्वरवनषण्ड० = श्रेष्ठ चार वनखण्ड़ । ३. ४० योजन ऊँची चूलिका । ४. ०उच्छ्रित० = उन्नत । ५. ०अर्जुन० = सफेद सोना । ६. आयाम० = लम्बाई, दैर्घ्य । ७. (दे.) विस्तीर्ण, चौड़ाइ । ८. चन्द्राऽर्धसंस्थिताः = अर्धचन्द्राकार । ९. याम्यायाम् = दक्षिण दिशा में । १०. उत्तरायाम् । ११. कृतार्थमात्मानम् ।

1. ब - ०सु वि वणेसु चउदि० - प. । 2. दुवीसोच्चा - ह. । 3. ब - ०सणे - ह. । 4. ब - इंदो - ज.क.ह. ।

कलसाण मिउमयाणं[१], पउमपिहाणाण[२] पउमनिहियाणं[३] ।
अट्ठसहस्सं भरियं, पत्तेयं गंधवारिस्स ॥७१४॥ ॥ जुम्मं ॥

जिणवरमज्जणकज्जे, उक्खित्ता भत्तिनिब्भरमणेहिं ।
चंदणचच्चियकलसा[४], **अच्चुय**इंदाइअमरेहिं ॥७१५॥

(भत्तिभरनिब्भरहिययत्तणेण सक्कस्स पहुचिंता)

तं कलसभरं[५] दट्ठुं, **सक्को** चिंतेइ संकमावन्नो[६] ।
लहुयसरीरो भयवं, विसहिस्सइ किं व समकालं ? ॥७१६॥

बहुकलससहस्सजलं सुरखित्तं, मह इमा गरुयचिंता ।
भयवं पि य तं नाउं, ओहीनाणेण **सक्क**स्स ॥७१७॥

चलणग्गेणं[७] चालइ **मेरु**गिरिं, लेट्टुयं[८] व्व लीलाए ।
इंदस्स अलियसंकाअवणयणत्थं[९] अतुलथामो[१०] ॥७१८॥ ॥ तिहिं विसेसयं ॥

चलमाणेण समंता[११] **सुरगिरि**णा, वसुमई वि हलहलिया[१२] ।
टलटलिया[१३] धरणिधरा, चलंत[१४]-गुरुगंडसेलोहा ॥७१९॥

उच्छलिया मयरहरा[१५], महल्लकल्लोलहल्लिरजलोहा[१६] ।
संखुहियमच्छमयरा[१७], णइप्पवाहा य उत्थल्ला[१८] ॥७२०॥

उत्तत्था[१९] थलचारी, दिसोदिसिं सव्वओ पलायंति ।
तडुवियकन्नजुयला[२०], णासंति दिसागइंदा वि ॥७२१॥

---

१. मृन्मयानाम् = मिट्टि के । २. पद्मपिधानानाम् = पद्म से ढंके हुए । ३. पद्मनिहितानाम् = पद्म के ऊपर स्थापित । ४. ०चर्चित० = विलिप्त । ५. ०भरम् = समूह । ६. शङ्काम् । ७. चरणाग्रेण । ८. लेष्टु = मिट्टी का टुकड़ा, 'माटीनुं ढेफु' । ९. अलीक० = जूठी । १०. अतुलस्थामा = अतुल शक्तिवाले । ११. समन्तात् । १२. (दे.) कम्पिता । १३. बड़े बड़े शिखर गिरने से टल् टल् आवाज वाले पर्वत हुए । १४. जिसके बड़े बड़े शिखर काँप रहे है वैसे पर्वतो का समूह । १५. मकरधराः = समुद्र । १६. (दे.) चलनशील । १७. संक्षुभितमत्स्यमगराः = क्षोभप्राप्त० । १८. (दे.) परिवर्तन = नदी की बहने की दिशा ही बदल गई । १९. उत्त्रस्ताः = भयभीताः । २०. तत० = विस्तीर्ण ।

1. ब - मिम्मया० - ह. । मिम्मिया० - ज. । 2. ब - ०सुर० - ज. ।

थरथरथरंति बाढं, देउलपायारतुंगधवलहरा[१] ।
भज्जंति कडयडंता, फलफुल्लभरोणया[२][३] तरुणो ॥७२२॥

भुवणं हल्लोहलियं[४], सुरअसुरतिरिक्खखयरणरकलियं[५] ।
चिंतइ किं किं एयं, अकंडविड्डरमहो जायं ? ॥७२३॥

किं एस पलयकालो[६] ?, किं कोइ महिड्ढिओ सुरो कुविओ ? ।
खलियारियस्स[७] रिसिणो, किं कोववियंभियं एयं ? ॥७२४॥

आभग्गो फणनिवहो, वसुमइभारेण किं फणिंदस्स ? ।
जिन्नत्तणेण[९] भग्गा, आइवराहस्स[१०] किं दाढा ? ॥७२५॥

इय एवमाइ जाए, संखोहे[1] **सुरवई** वि चिंतेइ ।
हा ! किं संतिविहाणे[११], वेयालो उट्ठिओ एसो ? ॥७२६॥

(ओहिनाणेण णायं अयलकंपकारणं)

तो किं विड्डरमेयं ति, जाव जोएइ[१२] अवहिणा सम्मं ।
पेच्छइ य ताव जिणचलणकोडिसंचालियं[१३][2] **मेरुं** ॥७२७॥

तो लज्जिओ विलक्खो, पच्छायावेण दुम्मणो **सक्को** ।
चिंतइ असंकणिज्जं पि, संकियं पेच्छ मूढेणं ॥७२८॥

कप्पदुमपोओ[१४][3] वि, वियरइ कप्पियफलाइं लोयस्स ।
चिंतामणी पयच्छइ, चिंतियवत्थूणि तणुओऽवि ॥७२९॥

---

१. देवकुलप्राकारतुङ्गधवलगृहाणि । २. कड़ कड़ आवाज करते हुए । ३. ०अवनताः = झुके हुए । ४. (दे.) व्याकुल । ५. ०विड्वरम् = आटोप, रौद्र । ६. स्खलिताऽरिकस्य = नष्ट किए हैं आन्तर शत्रु जिसने वैसे अथवा स्खलिताऽऽर्यस्य = साधना में विघ्न प्राप्त ऋषि श्रेष्ठ का... । ७. ऋषेः । ८. ०विजृम्भितम् = प्रगट होना । ९. जीर्णत्वेन । १०. आदिवराहस्य = अजैन मान्यतानुसार बात है । ११. शान्तिविधाने । १२. पश्यति । १३. ०चरणकोटि० = चरणाग्रभाग । १४. कल्पद्रुमपोतोऽपि वितरति कल्पितफलानि लोकाय = छोटा सा भी कल्पवृक्ष लोगो को इच्छित फल देता हैं ।

1. संखोभे - प. । 2. अ - ०कोटिसं० - प. । 3. ब - ०द्रुमपातोऽवि हु - ह. । ०द्रुमो उ वियरइ नूणं क० - प ।

[१]लहुया वि हु दीवसिहा, तमनियरं नासए महंतं पि ।
अप्पोऽवि महामंतो, उच्चाडइ दुट्ठवेयालं ॥७३०॥

[२]उत्थ[१]ल्लि वि महिवट्टुं, **मंदरदंडं** धरंति छत्तं व ।
जे किर ते सिसुणो वि हु, अतुलबला चेव तित्थयरा ॥७३१॥

इय [२]चिंतिउं सखेओ, **वीर**जिणं खामए विणयपणओ ।
कुविगप्पेहिं जिणेसर !, [३]अयाण[३]माणेण जा तुम्ह ॥७३२॥

आसायणा उ विहिया, तं सव्वं खमह खंतिसुपहाण ! ।
कुणह पसायं, **होइ हु [४]चुक्कखलियं सकम्मस्स** ॥७३३॥ ॥ जुम्मं ॥

भयभीयं भुवणमिणं, [५]आसासह सामि ! करिय गुरुकरुणं ।
मन्नामि गुरुमणुग्गहमिय, जं मिच्छत्तमवणीयं ॥७३४॥

(बालमहावीरमज्जणमहोच्छवो)

उवसंते संखोहे, जिणस्स वरमज्जणं समाढत्तो ।
काउं **अच्चुय**इंदो, भत्तिभरावज्जियसरीरो ॥७३५॥

गायंति केऽवि वायंति, केऽवि नच्चंति तियसरमणीओ ।
जय जय करेंति केई, पढंति केई सुरा तुट्ठा ॥७३६॥

[७]वासंति केइ गज्जंति केइ, केइ पुण [८]विज्जुयाइंति ।
फलकुसुमरयण[९]वन्नयवत्थाइं, केऽवि मुंचंति ॥७३७॥

[१०]उक्किट्ठिसीहनाए करेंति, [४][११]वग्गिंति दिंति [५][१२]किरणाइं ।
[१३]एमाइहरिसचेट्ठा, कुणंति जिणमज्जणे अमरा ॥७३८॥

---

१. लघुकाऽपि । २. उत्स्थाली = उल्टी – ऊँची थाली जैसे । ३. अजानता । ४. भ्रष्टस्खलितम्, 'भूल चूक' । ५. आश्वासय = आश्वासन देना । ६. इति । ७. वर्षन्ति । ८. विद्योतन्ते = देव खुद के शरीर की शोभा बढाते है या बीजली करते हैं । ९. ०वर्णक० = चन्दन चूर्ण । १०. उत्कृष्ट० । ११. वल्गन्ति = कूदना । १२. एक दूसरे के ऊपर प्रकाश फेंकते है । जैसे बेटरी से कोई मजाक करे वैसे अथवा 'लेजर शो' दिखाते हैं । १३. एवमादि हर्षचेष्टाः ।

1. उत्थल्ले – ज. । 2. अ – ०चिंतियं – प. । 3. अ – ०माणेहिं – प. । 4. अ – वग्गेंति देंति – प. । 5. ब – कर० – ह.क. ।

तित्थजलमट्टियाहिं, सव्वकसाएहिं[१] पुप्फगंधेहिं ।
सव्वोसहीहिं, गोसीसचंदणाईहिं य ण्हवंति ॥७३९॥

एवं च ण्हाविऊणं, सव्वालंकारभूसियं काउं ।
अच्चुयइंदो पणमइ, संथुणइ य महुरवग्गूहिं[२] ॥७४०॥

एवं कमेण सव्वे, करेंति जिणमज्जणं सुरवरिंदा ।
अंते[३] य कुणइ **सक्को, ईसाणो** पंचरूवो य ॥७४१॥

धरइ जिणं उच्छंगे, छत्तं धारेइ ढालए[1] चमरे ।
एक्को य सूलपाणी, चिट्ठइ पुरओ जिणवरस्स ॥७४२॥ ॥ जुम्मं ॥

चत्तारि[४] धवलवसहे, **सक्को** विउरुव्विऊण चउपासे ।
अट्ठविसाणेहिंतो[५], निस्सारइ वारिधाराओ ॥७४३॥

गोखीरसन्निभाओ, उड्ढं[2,६] ता उप्पइत्तु[७] एगत्थ ।
मिलिउं निवडंति सिरे, **वीर**स्स भवारिमहणस्स ॥७४४॥

काऊण विहिं एयं, कप्पो त्ति तओ य **अच्चुइंदो**[८] व्व ।
सव्वं करेइ ण्हाणं, रुप्पसुवन्नाइकलसेहिं ॥७४५॥

हरियंदणाणुलेवण[३]सव्वालंकारमंडण[९]विहीए ।
मंडित्तु जिणं वंदइ, गुरुआणंदो थुइं कुणइ ॥७४६॥ ॥ जुम्मं ॥

(इंदकयपरमप्पथ्थुई)

जय जय तिहुयणसामिय !, **सिद्धत्थ**णरिंदकुलनहमियंक ! ।
जय जय निन्नासियपावपंक[१०] !, अकलंक ! जिण**वीर** ! ॥७४७॥

---

१. कषाय० = सुगन्धी, लाल-पीला वर्ण । २. ०वाग्भिः । ३. अन्ते शक्रः अभिषेकं करोति । इशानेन्द्रः शक्रः इव पञ्च रूपान् विकुर्व्य एक-रूपेण जिनं उत्सङ्गे धारयति । इति सम्बन्धः कार्यः । ४. विकुर्व्य । ५. ०विषाण० = शृङ्ग । ६. उर्ध्वम् । ७. उत्पत्य । ८. प्रथममभिषेकं अच्युतेन्द्रः करोति । तत्पश्चात् विलेपन-पुष्पादिभिः पूजां करोति । अच्युतेन्द्रवत् एतत्सर्वमपि सौधर्मेन्द्रोऽपि करोति, इति भावः । ९. ०मण्डन० = भूषण, भूषा । १०. निर्नाशितपापपङ्क ।

1. ब - दोहि सियच० - ह. । 2. ब - उड्ढेणं उ० - ह. । 3. ब - ०मज्जा० - प.ह. । ०मल्लालं० - ज.क. ।

जय परमरूव[1] ! कारुन्नपुन्न !, लावन्नविजिय[2]तेलोक्क ! ।
जगदप्पभंजण[१]णुद्धुरमयरद्धयमाणनिम्महण[२] ! ॥७४८॥

कमलदलदीहलोयण !, पडिपुन्नमयंकसरिसमुहसोह ! ।
सिरिवच्छवच्छलंछिय[३] !, जयभूसण ! जयपहु ! नमो ते ॥७४९॥

जगचिंतामणि ! जयगुरु !, जगबंधव ! जगपईव ! जगनाह ! ।
सयलजगजंतुरक्खण !, तारसु मं भवसमुद्दाओ ॥७५०॥

ते वंचिया वराया, विहलं चिय तेसिं माणुसं जम्मं ।
सयलसुहाण निहाणं, णाह ! न दिट्ठो तुमं जेहिं ॥७५१॥

ताव जरजम्ममच्चू, ताव च्चिय रोय[४]सोयसंतावा ।
होंति जियाण[५] सामिय !, जाव न पत्तो पहू तं सि ॥७५२॥

भवचारयम्मि भीमे, देव ! अहं रोद्द[६]दुहसया[3]इन्ने ।
वसिओ कालमणंतं, कम्ममहासंकलनिबद्धो ॥७५३॥

तुह दंसणमलहंतो, करुणायर ! ता करेसु कारुन्नं ।
नीसेसवसण[७]संतावविरहियं, देसु सुहनिवहं ॥७५४॥ ॥ जुम्मं ॥

तं मह नाहो तं मज्झ बंधवो, तं जिणिंद ! मह सरणं ।
तं चिय आ[८][4]साठाणं, पत्तो[5] मे नाह ! पुन्नेहिं ॥७५५॥

(सक्कस्स जिणभत्ती नंदीसरजत्ता य)

एवं थोउं गहिऊण करयले, सुरवई विभूईए ।
कुंडग्गामे गंतुं, ठवेइ जणणीए पासम्मि ॥७५६॥

---

१. ०उद्धुरमकरध्वज० = प्रबल कामदेव । २. ०निर्मथन ! । ३. श्रीवत्सवत्सलाञ्छित ! = श्रीवत्स से युक्त छाती वाले । ४. रोगशोकसन्तापाः । ५. जीवानाम् । ६. रौद्रदुःखशताऽऽकीर्णे । ७. ०व्यसन० = दुःख । ८. आशास्थानम् ।

1. ब – ०रूय – ह. । 2. ब – ०यतिलोक्क – ह. । 3. ०सयावन्ने – क. । 4. ब – आसट्ठाणं – ह.क. । 5. पत्तोसि – प. ।

[1]साहरिउं पडिरूवं, विज्जं [2]अवसोयणिं च [3]अवणेउं ।
घोसावेइ [4]घोसणयं, सुरनरमज्झे महासद्दं ॥७५७॥

उवरिं जिणस्स जिणजणणिए य, जो [5]मंगुलं मणो कुणइ ।
फुट्टिस्सइ [6]मुद्धाणं, तस्स[7]ज्जगमंजरि व्व फुडं ॥७५८॥★

खिवइ हिरन्नसुवन्नयकोडीओ, जिणगिहम्मि बत्तीसं ।
बंधइ जिणसयणोवरि, लंबंतं कणयलं[8]बूसं ॥७५९॥

[9]खोमं कुंडलजुयलं, [10]सिरिदामं चेव देइ **सक्को** से ।
मणिकणगरयणवासं, वासंति य [11]जंभगा देवा ॥७६०॥

एवं **सक्का**ईया, जिणजम्ममहूसवं [12]करिय [2]अमरा ।
नंदीसरम्मि [13]जत्तं,·काऊण गया उ सट्ठाणं ॥७६१॥

सिद्धत्थणरिंदेणं, पहायसमए य सव्वनयरीए ।
घोसावियं महंतं, वद्धावणयं सुतोसेणं ॥७६२॥

अवि य - (**सिद्धत्थणरिंदकओ उच्छओ**)

[14]संमज्जिओवलित्तं, [15]वंदणमालासहस्सरमणिज्जं ।
[16]उब्भियचंदणचच्चियजुगमुसलसहस्सपरिकलियं ॥७६३॥

---

१. संहृत्य । २. अवस्वापिनीं विद्याम् । ३. अपनीय । ४. घोषणाम् । ५. (दे.) अनिष्ट । ६. मूर्धानम् = मस्तक । ७. तस्य अर्जकमञ्जरी = अर्जकवृक्ष की कली से फूल बनते वक्त या तो फूल से फल बनते वक्त मूल चीज टुकड़े टुकड़े हो जाती है । तद्वत्... । ८. (दे.) कन्दुक के आकार का एक आभरण । ९. क्षौमम् = कार्पासिक वस्त्र, दुकूल युगल । १०. श्रीदामन् = शोभावाली माला । ११. जृम्भकाः । १२. कृत्वा । १३. यात्राम् । १४. संमार्जितोपलिप्तम् = पहले साफ किया बाद में लिम्पन किया हुआ । १५. वन्दनमाला० = घर के द्वार पर मंगल के लिए बंधी जाती पत्र माला । १६. उर्ध्वित-चन्दनचर्चित-युगमुशल० = माङ्गलिक कर्तव्य ।

1. अ - ०रियं - प. । 2. सम्मं - क. ।

मंचाइमंचपवरं, [1]उब्भडवेसं [2]विमुक्कचारगिहं ।
मुक्ककरदंड[2]सुक्कं, [3]वड्ढियउम्माणमाणं च ॥७६४॥

गंधव्वनट्टपउरं, पारद्धोदारजिणभवणपूयं ।
दिज्जंतमहादाणं, उग्घोसियअभयदाणं च ॥७६५॥

[4]ऊसियधयप्पडायं, वरतोरणहट्ट[5]सोहरेहिल्लं ।
कुंडग्गामं नयरं, सुरलोयसमं तहिं जायं ॥७६६॥ ॥ चउहिं विसेसयं ॥

किं च –

तुट्ठाओ देवीओ, देवा आणंदिया [3]सपरिसगा ।
भयवम्मि **वद्धमाणे**, तेलोगसुहावहे जाए ॥७६७॥

सिद्धत्थो य नरिंदो, **तिसिला**देवी य रायलोओ य ।
सव्वो तया पुरजणो, हरिसेण न माइ अंगेसु ॥७६८॥

(भगवओ नामट्ठवणं)

वित्ते वद्धावणए, कए य सव्वम्मि [6]जायकम्मम्मि ।
नामं बारसमदिणे, गुणनिप्फन्नं जिणस्स कयं ॥७६९॥

गब्भप्पभिई वड्ढइ, अम्हगिहं कणयरयणमाईहिं ।
तम्हा उ **वद्धमाणो** त्ति, नामओ होउ अम्ह सुओ ॥७७०॥

बालत्तणेऽवि सूरो, पयईए गुरुपरक्कमो भयवं ।
वीरो त्ति कयं नाम, **सक्के**ण य तुट्ठचित्तेणं ॥७७१॥

---

१. मञ्चाः = महोत्सवविलोककजनानां उपवेशननिमित्तं मालकाः = 'स्टेज', अतिमञ्चकाः = तेषां अपि उपरि कृताः मालकाः, तैः प्रवरम् । २. अपराधी लोगो को जैल से मुक्ति । ३. तोल-मान जहाँ बढा दिए गये है मतलब ग्राहक को ज्यादा दिया जाता है । ४. उच्छ्रितध्वजपताकम् = ध्वज छोटे होते हैं और पताका लम्बी होती हैं । ५. ०सौध-राजितम् अथवा सुन्दर तोरण जहाँ लगाए है वैसी दुकानो सें शोभित । ६. जातकर्मणि = प्रसृति कर्म ।

1. अभडपवेसं – ज. । 2. ०डंडसुंकं – ज. । 3. अ – सपरिसागा – प. ।

अह वट्टइ सो भयवं, दिय[१]लोयचुओ अणो[२]वमसिरीओ ।
दासीदासपरिवुडो, परि[३]किन्नो पीढ[४]मद्देहिं ॥७७२॥

अ[५]सियसिरओ सुनयणो, बिं[६]बोट्ठो धवलदंतपंतीओ ।
वरपउमगब्भगो[७]रो, फुल्लुप्पलगंधनीसासो ॥७७३॥

जाईसरो उ भयवं, अ[८]प्परिवडिएहिं तिहिं उ [1]नाणेहिं ।
कंतीए बुद्धीए, अब्भहिओ ते[९]हिं मणुएहिं ॥७७४॥

(बालत्ते कीडणं सुरपराहवो च)

अह [१०]ऊणअट्ठवासो, भयवं कीलइ कुमारएहिं समं ।
आमलिया[११]खेल्ले[2]णं, लोयपसिद्धेण पुरबाहिं ॥७७५॥

तत्थ य [१२]खेड्डु रुक्खं, [१३]आरुहियव्वं तु खे[3]लयनरेहिं ।
एत्थंतरे य **सक्को, सोहम्म**सहाए उवविट्ठो ॥७७६॥

[१४]संतगुणुक्कित्तणयं करेइ, **वीर**स्स अमरमज्झम्मि ।
[4]वीरत्तगुणवियारे, परगुणगहणम्मि [१५]तल्लिच्छो ॥७७७॥ ॥ जुम्मं ॥

बालो अबालभावो, [१६]अबालपरक्कमो **महावीरो** ।
न हु [5]सक्को भेसेउं, देवेहिं सइंदएहिं पि ॥७७८॥

तं वयणं सोऊणं, मिच्छद्दिट्ठी उ अह सुरो एगो ।
चिंतइ माणुसमेत्तं, तत्थ वि सिसुभावमावन्नं ॥७७९॥

---

१. देवलोकच्युतः । २. अनुपमश्रीकः । ३. परिकीर्णः = परिवृत्त । ४. पीठमर्दकैः = वयस्य, मित्र । ५. अश्वेतशिरः = काले बाल वाले । ६. बिम्ब० = कुन्दरुन का फल जो लाल होता है, तद्वत् रक्त अधर वाले । ७. ०गौर = शुक्ल वर्ण । ८. अप्रतिपतितैः । ९. उस काल के मनुष्यो से । १०. न्यूनाऽष्टवर्षः । ११. ०क्रीडया । १२. खेले । १३. आरोहितव्यम् । १४. सत् = श्रेष्ठ – विद्यमान । १५. (दे.) तत्पर । १६. अबाल-पराक्रमः = महान् पराक्रमी ।

1. ब – नाणाहिं – ह. । 2. अ – ०खेडेणं – ज.क. । 3. अ – लणं० – प. । 4. ब – धीर० – ह. । 5. अ – सक्का – प.क. ।

देवेहिं वि नो तीरइ भेसेउं, सद्दहामि णो एयं ।
ता गंतुं भेसेमी, इय चिंतिय आगओ तत्थ ॥७८०॥

कीलइ जत्थ जिणिंदो, कीलणरुक्खं च वेढइ समंता ।
कज्जलवन्नं काउं, फणिरूवं दीहरं भीमं ॥७८१॥ ॥ तिहिं विसेसयं ॥

तं दट्ठूण पलाणा[१], भयभीया कीलमाणया कुमरा ।
सव्वेऽवि ठिओ **वीरो**, फणिणा वि कओ फणाडोवो[२] ॥७८२॥

सो घेत्तूण करेणं, उल्लालेऊण[३] घल्लिओ[४] दूरं ।
भयरहिएण जिणेणं, तो मिलिया ते पुणो डिंभा ॥७८३॥

चिंतइ सुरो न भीओ एत्थं, ता अन्नहा[१] पुणो भेसे ।
एत्थंतरम्मि **वीरो**, **तिंदूसय**[५]कीलणं कुणइ ॥७८४॥

तेहिं कुमारेहिं समं, सोऽवि सुरो डिंभरूवयं काउं ।
कीलइ **वीरेण** समं, जिओ य सो भगवया तत्थ ॥७८५॥ ॥ जुम्मं ॥

तप्पट्ठीए **वीरो** आरूढो, तस्स वाहण[६]निमित्तं ।
एसो च्चिय तत्थ पणो[७], जियस्स जं पुट्ठि[८]आरुहणं ॥७८६॥

सो वड्ढिउं पयत्तो, वेयालाकारधारओ रुद्दो[९] ।
सत्ततल[१०]माणदेहो, संजाओ भेसण[११]ट्ठाए ॥७८७॥

जिणणाहेण वि पहओ, पट्ठीए वज्जक[१२]ढिणमुट्ठीए ।
सो आराडिं[१३] काउं, भएण ससगो[१४] व्व संकुडिओ[१५] ॥७८८॥

---

१. पलायिताः । २. फणाऽऽटोपः = फण का फैलाव, विस्तार । ३. उत् + नमय् = ऊँचा करना, उन्नमय्य = ऊपर फेंकना । ४. (दे.) क्षिप्तः । ५. कन्दूक, गेंद की क्रीडा । ६. वाहन० = चलाना । ७. पणः = शर्त, प्रतिज्ञा । ८. पृष्ठाऽऽरोहणम् । ९. रौद्रः । १०. सप्ततल० = सात मंजिला इमारत के माप का देह वाला । ११. भीषणार्थम् । १२. वज्रकठिनमुष्ट्या । १३. (दे.) विलाप, क्रन्दन । १४. खरगोश । १५. संकुचितः ।

1. अ – अम्हहा – प. । 2. ब – पोट्ठि० – ज.ह. ।

पायडियामररूवो[१], रंजियहियओ य पणमइ जिणिंदं ।
भणइ तुहं परमेसर !, वीरत्तं[1] तारिसं चेव ॥७८९॥

जारिसयं सुरवइणा, सुरमज्झे वन्नियं[2] ति ता खमसु ।
मज्झ तुमं भेसविओ, परिक्खणत्थं[२] जमेवं ति ॥७९०॥ ॥ जुम्मं ॥

भुज्जो भुज्जो खामिय, पणमिय **वीरं** गओ स **सोहम्मं** ।
भयवं पि गिहे चिट्ठइ, विसिट्ठकीलाविणोएणं ॥७९१॥

(भगवओ पाढसालागमणं)

मोहेणम्मापियरो[३], जाणित्ता अहियअट्ठवासं तु ।
ण्हायं विलित्तदेहं, कयकोउयमंगलं[४] **वीरं** ॥७९२॥

सव्वालंकारधरं, सोहणदिवसे कलाण गहणत्थं ।
कयपूयासक्कारस्स, उवज्झायस्स उवणिंति[3] ॥७९३॥ ॥ जुम्मं ॥

एत्थंतरम्मि **सक्को,** आसणकंपेण संपउत्तोही[५] ।
चिंतइ अहो ! महंतो, मोहो **सिद्धत्थ**रायस्स ॥७९४॥

तिहिं नाणेहिं समग्गो, तित्थयरो सव्वसत्थतत्तन्नू[६] ।
जं उवणिज्जइ, पागयणरस्स[७] अप्पप्पविज्जस्स[८] ॥७९५॥

विज्जागहणनिमित्तं, इय चिंतिय आगओ तहिं तुरियं ।
उज्झायस्स निमित्तं, रइए सीहासणे पवरे ॥७९६॥

तस्सेव य पच्चक्खं, **वीर**कुमारं निवेसइ पहट्ठो[९] ।
वंदित्तु सद्दलक्खणमह, पुच्छइ मउलकरकमलो[१०] ॥७९७॥ ॥ तिहिं विसेसयं ॥

---

१. प्रकटिताऽमररूपः । २. परीक्षणार्थम् । ३. ०अम्मा० । ४. ०कौतुक० = दृष्टि दोषादि से रक्षा के लिए किया जाने वाला काजल का तिलक 'टीलु' । ५. संप्रयुक्ताऽवधिः । ६. ०शास्त्रतत्वज्ञः । ७. प्राकृतनर = सामान्य आदमी । ८. अल्पाल्पविद्यस्य = बहुत ही अल्प ज्ञान वाले के पास । ९. प्रहृष्टः । १०. मुकुलित० ।

1. ब - धीरत्तं - ह. । 2. अ - तु - प. । 3. ब - ०वर्णेंति - ह.क. ।

भयवं पि वागरेइ, जहट्ठियमसंकियं तयं पुट्ठो ।
[1]उवज्झाओऽवि पमुइओ, निसुणइ परमेण विणएणं ॥७९८॥

पेच्छ अहो ! अच्छरियं, बालोऽवि हु पढणसुणणरहिओऽवि ।
सव्वन्नू विव साहइ, जहट्ठियं सद्दसत्थत्थं ॥७९९॥

तुट्ठा अम्मापियरो, एवं नाउं वियक्खणं[१] **वीरं** ।
सक्कोऽवि य सट्ठाणं, वंदिय **वीरं** गओ खिप्पं ॥८००॥

वीरजिणस्स सगासे, अवधारिय सद्दलक्खणलवेणं ।
[2]उवज्झाएण वि रइयं, वागरणं किर [२]**अइंदं** ति ॥८०१॥

(सिरिवीरस्स परिवारो)

उम्मुक्कबालभावं, कमेण नवजोव्वणं समणुपत्तं ।
भोगसमत्थं नाउं, अम्मापियरो **महावीरं** ॥८०२॥

तिहि[३]रिक्खम्मि पसत्थे, महंतसामंतकुलपसूयाए ।
कारिंति पाणिगहणं, **जसोय**वरायकन्नाए ॥८०३॥ ॥ जुम्मं ॥

पंचविहं माणुस्सं विसयसुहं, तस्स अणुहवंतस्स ।
[४]ससिलेहा [५]सोमतणू, जाया **पियदंसणा** धूया ॥८०४॥

परिणीया समयम्मि य, **जमालि**णा पवरनरवइसुएणं ।
वीरस्सम्मापियरो, दिवं गया एत्थ समयम्मि ॥८०५॥

वीरस्स जेट्ठभाया, अहिसित्तो **नंदिवद्धणो** कुमरो ।
वरायलक्खणधरो, रज्जे सामंत[3]मंतीहिं ॥८०६॥

(पवज्जागहणत्थं जेट्ठभाअरस्स समीवे अणुण्णाजायणं)

वीरोऽवि **नंदिवद्धण**पमुहं, आपुच्छए सयणवग्गं ।
पव्वज्जागहणत्थं, पडिपुन्नाभिग्गहत्तेण ॥८०७॥

---

१. विचक्षणम् = विद्वान्, दक्ष । २. ऐन्द्रम् । ३. ०ऋक्ष = नक्षत्र । ४. चन्द्र की कला । ५. सौम्यतनुः ।

1. ब - उज्झा० - ह. । 2. ब - उवझा० - ज.क.ह. । 3. ०माईहिं - क. ।

तो भणइ जेट्ठभाया, मम जणणीजणयविरहदुहियस्स ।
तुह विरहग्गी सुंदर !, खयम्मि[१] खारोवमो होइ ॥८०८॥

एवं भणिए जेट्ठेण, भाउणा परमपणयकलिएणं ।
तस्सेव बोहणत्थं, भणइ जिणो भवविरत्तमणो ॥८०९॥

नडपेच्छणए पेच्छयजणाण, जह दीहरो[२] ण संजोगो ।
तह बंधुसमाजोगो[३], अथिरो च्चिय एत्थ संसारे ॥८१०॥

किं च -

पीमाइभाइभइणीभज्जापुत्तत्तणेण[४] सव्वेऽवि ।
जीवा जाया बहुसो, जीवस्स उ एगमेगस्स ॥८११॥

ता कम्मि कम्मि कीरइ पडिबंधो, कम्मि कम्मि वा नेय ? ।
इय नाऊण[१] महायंस !, मा किज्जउ सोयसंतावो ॥८१२॥ ॥ जुम्मं ॥

नंदिवद्धणोण भणियं -

अहमवि जाणामि इमं, किं तु[५] ममं बंधणाइं[६] तुट्टंति ।
जीवियभूएण तए, अज्ज वि मुक्कस्स सयराहं[७] ॥८१३॥

ता मह उवरोहेणं, वासाइं दोन्नि चिट्ठसु[२] गिहम्मि ।
उत्तमपुरिसा[३] दट्ठुं, दुहियं करुणायरा[४] होंति ॥८१४॥

एवं चोवरुद्धेण[८] भणियं **वीरेण** -

एवं होउ नरीसर[५] !, किं तु महट्ठा[६] ण[१०] कोइ आरंभो ।
कायव्वोऽहं फासुय[११]भोयणपाणेण चिट्ठिस्सं ॥८१५॥

---

१. क्षते क्षारोपमः । २. दीर्घः । ३. ०समायोगः = संयोग । ४. पिता० । ५. किन्तु अद्यापि जीवितभूतेन त्वया मुक्तस्य मम बन्धनानि = प्राणानि सयराहं त्रुटन्ति । इति अन्वयः । ६. प्राणानि । ७. (दे.) शीघ्र, एकसाथ । ८. उपरुद्धेन = अवरुद्ध । ९. नरेश्वर ! । १०. ममाऽर्थम् । ११. प्रासुक० = अचित्त ।

1. जाणिउं - ज. । 2. ब - चेट्ठसु - ह. । 3. उत्तिम० - ज. । 4. ब - ०परा, ०धरा हुंति - ज. । 5. ब - णरेसर - ह. । 6. ब - ममट्ठा - ह. ।

एवं ति य[१] पडिवन्ने, चिट्ठइ सुहझाणभावणो **वीरो** ।
विसयसुहनिप्पिवासो,[१] दयावरो[२] सव्वजीवेसु ॥८१६॥

(महावीरस्स संवच्छरियदाणं)

संवच्छरेण होही, अभिनिक्खमणं तु मुणिय जिणचंदो ।
आढत्तो[३] दाउं जे,[४] संवच्छरियं महादाणं ॥८१७॥

एगा[५] हिरन्नकोडी, अट्ठेव अणूणगा[६] सयसहस्सा ।
सूरोदयाओ दिज्जइ, जाव य मज्झण्हसमओ[१] त्ति ॥८१८॥

वरह वरं वरह वरं, इय घोसिज्जइ महंतसद्देण ।
पुरतियचउक्कचच्चररच्छारायप्पहाईसु ॥८१९॥

जो जं वरेइ[७] तं तस्स, दिज्जए हेमवत्थमाईयं[८] ।
वियरंति तत्थ तियसा, **सक्का**एसेण सव्वं पि ॥८२०॥

तिन्नेव[९] य कोडिसया, अट्ठासीइं च होंति कोडीओ ।
असिइं[२] च सयसहस्सा, एयं संवच्छरे दिन्नं ॥८२१॥

एत्थंतरम्मि य -

सारस्सय-माइच्चा, वण्ही वरुणा य **गद्दतोया** य ।
तुसिया अव्वाबाहा, अग्गिच्चा चेव **रिट्ठा** य ॥८२२॥

एए समयं नाउं नियय, **लोगंतिया** सुरा पत्ता ।
पभणंति विणयपणया, वंदित्ता महुरवग्गूहिं ॥८२३॥ ॥ जुम्मं ॥

हत्थालंबोऽसि तुमं सामिय !, निवडंतयाण भवकूवे ।
सव्वजगज्जीवहियं, ता पहु ! तित्थं पवत्तेहि ॥८२४॥

---

१. ०निष्पिपासः = निःस्पृहः । २. दयापरः । ३. आरब्धः । ४. पादपूर्ति में प्रयुक्त अव्यय । ५. १ क्रोड ८ लाख । ६. अन्यून० = अधिक, सम्पूर्ण । ७. वरयति = इच्छति याचते वा । ८. ०वस्त्रम् । ९. ३,८८,८०,००,००० = ३८८ क्रोड, ८० लाख ।

1. ब - ०समउ - ह.क. । 2. ब - असियं - ह. ।

पुट्ठो य पुणो भाया, जिणेण **वीरे**ण विगयमोहेणं ।
तुह संतिओ हु [1][१]अवही, [२]पुत्तो गिण्हामि दिक्खमहं ? ॥८२५॥

(वद्धमाणस्स पवज्जामहोच्छवो)

वयगहनिच्छयमेवं, नाउं **वीर**स्स जेट्ठभाया उ ।
[3]बाहजलाउलनयणो, निक्खमणमहं [४]समाइसइ ॥८२६॥

[५]धयहट्टसो[2]हवंदणमालामंचाइमं च रमणिज्जं ।
कुंडग्गामं नयरं, सुरलोयसमं कयं [६]तइया ॥८२७॥

[७]जम्मु[3]त्तकलसनियरेण, ठाविओ **नंदिवद्धण**निवेणं ।
[4]निक्खमणत्थं परमो, अहिसेओ **वद्धमाण**स्स ॥८२८॥

चलियासणा य इंदा, सव्वेऽवि समागया [5]सपरिसगा ।
सक्केणावि तह च्चिय, [६]उवट्ठविओ [८]कलससंघाओ ॥८२९॥

दोऽवि य परोप्परं ते, अंतब्भूया समाणकलसेसु ।
तो रन्ना **सक्के**ण य, महाविभूईए अभिसित्तो ॥८३०॥

सुरचंदणाणुलित्तो, सुरतरुवरकुसुममालाचिंचइओ[९] ।
सियवत्थपा[१०]उयंगो, [7]जस्स उ मोल्लं सयसहस्सं ॥८३१॥

भासुर[११]किरीड[१२]मउली, हारविरायंतकंठवच्छयलो ।
केऊरकडयमंडियभुयदंडो, कुंडलाहरणो ॥८३२॥

---

१. अवधिः = मर्यादा, समय । २. पूर्णः । ३. बाष्पजलाऽऽकुलनयनः = बाष्पजल से व्याप्त नयन । ४. समादिशति । ५. ध्वजहट्टशोभा० । ६. तदा । ७. जन्मोक्त० = जन्म समय पर कहा वैसा । ८. उपस्थापितः । ९. ०मण्डितः = विभूषित । १०. ०प्रावृताऽङ्गः = आच्छादित । ११. ०किरीट० = मुकुट । १२. मौलिः = मस्तक ।

1. अ - य - प. । 2. अ - ०यवं० - प. । 3. ब - जम्मो० - ह.क. । 4. अ - निक्क० - प. । 5. सपरिसागा - ज.प. । 6. अ - ०ठविओ कलसाण सङ्घाओ - प., उवठविओ - ह. । 7. तस्स - क. ।

सिवियाए समारोहइ, **वीरो चंदप्पहा**भिहाणाए ।
मणिरयणकंचणमए, निविसइ सिंहासणे तत्थ ॥८३३॥ ॥ जुम्मं ॥

केरिसी[1] य सा सिविया ?-

[१]पन्नासं आयामा धणुइं, [२]रुंदा य [2]पन्नवीसं[४] तु ।
छत्तीसं[३] उव्विद्धा, मणिकंचणरयणविच्छुरिया[४] ॥८३४॥

उत्तुंगपवरसिहरा, महग्घवरवत्थविरइ[५]उल्लोया ।
उम्मुक्कहारदामा[६], परिलंबिरकुसुममालोहा[७] ॥८३५॥

णरवइआएसेण य, उक्खित्ता सा नरेहिं बहुएहिं ।
तरुणेहिं सरूवेहिं, सव्वालंकारधारीहिं ॥८३६॥ ॥ तिहिं विसेसयं ॥

[८]पच्छा वहंति [९]सीयं, **सक्कीसाणबलिचमर**इंदाओ ।
कोणेसु चउसु अमरा, सेसा वि जहारिहं[3] लग्गा ॥८३७॥

भणियं च -

चलचवलभूसणधरा, सच्छंदविउव्वियाभरणधारी ।
देविंददाणविंदा, वहंति सीयं जिणिंदस्स ॥८३८॥

(णिक्खमणकाललोगट्ठिइवण्णणं)

कुसुमाणि पंचवन्नाणि मुयंता, दुंदुभी[4]ओ वायंता ।
देवगणा उ [११]पहिट्ठा[5], भूमिं गयणं च [१२]छायंति ॥८३९॥

वणसंडो [6]व्व कुसुमिओ, पउमसरो वा जहा सरयकाले ।
सोहइ कुसुमभरेणं, इय गयणयलं सुरगणेहिं ॥८४०॥

---

१. पञ्चाशत् । २. (दे.) चौड़ाई । ३. उद्विद्धा = उच्छ्रिता । ४. ०विच्छुरिता = खचिता, युक्ता । ५. ०विरचित-उल्लोच = आच्छादन, 'चंदरवो' । ६. शोभा हेतु आभूषण एवं पुष्पमाला जहाँ रखी गई हैं । ७. ०माला-ओघा = ढेर सारी लटकती हुई पुष्पमाला युक्त । ८. पश्चात् । ९. शिबिकाम् । १०. शक्र-इशान० । ११. प्रहृष्टाः । १२. छादयन्ति = ढक देना ।

1. अ ०सिया - प. । ०सया सा - ज. । 2. पन्नु० - ज. । 3. अ - ०विहं - प. । 4. ब - ०भीउ - क.ह. । 5. पहट्ठा - प.क. । 6. ब - व - क.ह. ।

अयसीवणं[१] व कुसुमियं, सिद्धत्थवणं[२] व चंपगवणं[1] व ।
तिलगवणं व कुसुमियं, इय गयणयलं सुरगणेहिं ॥८४१॥ ॥ जुम्मं ॥

वरपडहभेरिझल्लरिदुंदुभिसंखसहिएहिं तूरेहिं ।
धरणियले गयणयले, तूरनिनाओ परमरम्मो[३] ॥८४२॥

निग्गच्छंतो य तया, **कुंडग्गाम**णयरस्स[२] मज्झेणं ।
अभिनंदिज्जइ **वीरो**, आसीसाहिं[३] बहुविहाहिं ॥८४३॥

जय जय नंदा, जय जय भद्दा, धम्मे य होअविग्घं[४] ते ।
जय जय खत्तियवरवसभ !, तुज्झ दुक्खक्खओ होउ ॥८४४॥

अग्घे[4] पडिच्छमाणो[५], णयणसहस्सेहिं दीसमाणो[६] उ ।
अवरोप्परं[७] च दरिसिज्जंतो, अंगुलिसहस्सेहिं ॥८४५॥

एवं सदेवमणुयासुराए, परिसाए परिवुडो भयवं ।
अभिथुव्वंतो गिराहिं, संपत्तो **णायसंडवणं** ॥८४६॥

(णिरवज्जपवज्जागहणखणो)

उज्जाणं संपत्तो, ओरुहिउं उत्तमाए सीयाए ।
छट्ठेणं भत्तेणं, लेसाहिं विसुद्धपरिणामो ॥८४७॥

ओमुयइ अलंकारं, पडिच्छए[5] तं च अंबधाईओ[८] ।
हत्थुत्तरजोएणं, **मग्गसिरे** किण्हदसमीए ॥८४८॥

लोयं च पंचमुट्ठिं[९] करेइ, **सक्को** पडिच्छए केसे ।
अणुणविय[१०] जिणवरिंदं, **खीरसमुद्दम्मि** पक्खिवइ ॥८४९॥ ॥ तिहिं विसेसयं ॥

---

१. अतसी० = धान्यविशेष । २. सर्षप, सरसों । ३. ०रम्यः । ४. भवतु अविघ्नम् । ५. अर्घान् = पूजा, आदर । ६. दृश्यमानः । ७. परस्परम् । ८. धावमाता । ९. एकया मुष्ट्या कूर्चम्, चतसृभिः मुष्टिभिः शिरोजान् । १०. अनुज्ञा प्राप्त करके ।

1. ब - व्व । 2. ०यरमज्झमज्झेणं - क. । 3. अ - ०साइं - प. । 4. अग्घेण - क. । 5. अ - ०च्छइ - प. ।

दिव्वो मणुस्सघोसो, [1]तुरियणिणाओ य **सक्क**वयणेणं ।
[2]खिप्पामेव [3]निलुक्को, [4]जाहे पडिवज्जइ चरित्तं ॥८५०॥

सिद्धाण नमोक्कारं काऊण, अभिग्गहं तु सो गिण्हे ।
सव्वं मे अकरणिज्जं, पावं ति चरित्तमारूढो ॥८५१॥

भंते त्ति [5]सद्दवज्जं, सव्वं उच्चरइ सामइयसुत्तं ।
पडिवन्ने य चरित्ते, **मणपज्जव**नाणमुप्पन्नं ॥८५२॥

भणियं च –

तिहिं नाणेहिं समग्गा, तित्थयरा जाव होंति गिहवासे ।
पडिवन्नम्मि चरित्ते, चउनाणी जाव छउमत्था ॥८५३॥

[1]एगं च देवदूसं, **सक्क**[6]विइन्नं खिवेइ खंधम्मि ।
सीसाण सचेलं चिय, [2]धम्मविहिं पन्नविस्सामि ॥८५४॥

सक्काईया देवा, भयवंतं वंदिउं सपरितोसा ।
कय**नंदीसर**जत्ता, नियनियठाणाइं संपत्ता ॥८५५॥

(सिरिवीरस्स जम्मणयराओ पयाणं)

वीरोऽवि बंधुवग्गं, आपुच्छिय पत्थिओ विहाराए ।
सोऽवि य विसन्नचित्तो, वंदिय भयवं पडिनियत्तो ॥८५६॥

एत्थंतरम्मि एगो, आजम्मं चेव निद्धणो भट्टो ।
[7]धणलाभत्थी पत्तो, [8]आसं काउं जिणसयासे ॥८५७॥

सो पुण दाणावसरे जिणस्स, देसंतरं गओ आसि ।
[9]लाहत्थमेव [10]रडिओ, भज्जाए आगओ संतो ॥८५८॥

---

१. तूर्यनिनादः = वाद्य का अवाज़ । २. क्षिप्रमेव । ३. (दे.) तिरोहितः = शान्त । ४. यदा । ५. शब्दवर्जम् । ६. ०वितीर्ण = अर्पित । ७. धनलाभाऽर्थी । ८. आशाम् । ९. लाभार्थमेव । १०. रटितः = चिल्लाना ।

1. ब – एवं – ह. । 2. ब – ०म्ममहं – ह.क. ।

एवं जिणेण दिन्नं सव्वस्स,[1] ढणक्कए[१] तुमं देसि ।
तो निल्लक्खण ! अज्ज वि, गंतूण तमेव मग्गेसु ॥८५९॥

भणियं च तेण भयवं !, दीणोऽहं दुत्थिओ[२] अभग्गो य ।
मग्गंतभमंतस्स[2] वि, न किंचि मे सामि ! संपडइ[३] ॥८६०॥

किं च -

किं किं न कयं, को को न पत्थिओ[४], कत्थ कत्थ न य भमियं[3] ? ।
दुब्भरउयरस्स[4] कए, तं पि कयं, जं न कायव्वं[५] ॥८६१॥

दिन्नं च तए दाणं सव्वस्स, जहिच्छियं चिरं कालं ।
नासि तया एत्थाहं[६], ता सामि ! करेसु कारुन्नं ॥८६२॥

(णिद्धणबंभणस्स वत्थपयाणं)

देसु मह किंचि दाणं, सव्वस्स जगस्स तं सि कारुणिओ ।
इय विन्नत्तो[७] भयवं, करुणेक्करसोऽणुकंपाए ॥८६३॥

वियरइ सुरदूसद्धं[८], अन्नं मह नत्थि किं पि इय[5] भणिउं ।
सोऽवि गओ पणमित्ता[९], महापसाओ त्ति तं गहिउं ॥८६४॥ ॥ जुम्मं ॥

तुन्नागस्सुवणीयं[१०] दसियाकज्जम्मि[११], तेण सो भणिओ ।
भमसु जिणमग्गओ[१२] तं[१३], खंधाउ पडिस्सइ तमद्धं ॥८६५॥

न य घेच्छी[६] सो भयवं[१४], निस्संगो तो तुमं तमाणेज्ज ।
दोऽवि अहं तुन्नेउं[१५] अद्धे, सगलं[१६] करिस्सामि ॥८६६॥

---

१. भगवान ने पटह बजाकर सब को दान दीया तो आपको भी देंगे अथवा आप मांगोगे तो आपको भी देंगे । २. अभाग्यः = भाग्यहीन । ३. संपद्यते । ४. प्रार्थितः । ५. दुर्भर० । ६. अत्राऽहम् । ७. विज्ञप्तः । ८. देवदूष्याऽर्धम् । ९. प्रणम्य । १०. तुन्नवायस्य = वस्त्र को सांधने वाला । ११. दशिकाकार्ये = वस्त्र जहाँ से आधा किया हैं, वहाँ से थोड़े बहुत धागे निकालने से वस्त्र का सौन्दर्य बढ़ जाता हैं । फिर कुछ खराब नहीं दिखता है । १२. (दे.) पीछे-पीछे । १३. त्वम् । १४. ग्रहीष्यति । १५. (दे.) फटे हुए वस्त्र को जोड़ना । १६. सकलम् = संपूर्ण ।

1. अ - ०ज्झ ढ० - प. । 2. ब - ०रुवंत० - ह. । 3. अ - भमिओ - प. । 4. ब - ०पेट्टस्स - क.ह. । ०पोट्टस्स - ज. । 5. ब - जं भ० - ह. । 6. अ - पेच्छी - प.ज. ।

दीणारसयसहस्सं लहिही, तं विक्कयम्मि तो तुज्झं ।
मज्झं च अद्धमद्धं होही, भणिओ इय गओ सो ॥८६७॥

भयवं पि **महावीरो,** तीसं वासाइं वसिय गिहवासे ।
पडिवज्जिऊण दिक्खं, विहरंतो तम्मि चेव दिणे ॥८६८॥

संझाए संपत्तो, **कुमारगाम**म्मि तस्स बाहिम्मि ।
पडिमाए ठिओ [1]भयवं, धम्मज्झाणं झियायंतो ॥८६९॥ ॥ जुम्मं ॥

(गोवस्स उवसग्गो सक्केण निवारिओ)

गोवो य तत्थ एगो, दिवसं सव्वं हलम्मि वाहेउं ।
[१]नियबइल्ले घेत्तुं, संपत्तो **वीर**पासम्मि ॥८७०॥

तस्सासन्ने मोत्तुं, गामस्सब्भंतरं पविट्ठो सो ।
गोदोहाइनिमित्तं, तेऽवि चरंता गया [२]रन्नं ॥८७१॥ ॥ जुम्मं ॥

गोवो तत्थायाओ, न बइल्ले तत्थ पेच्छइ तओ य ।
[३]सामी पुच्छइ वसहे, कत्थ गया ते [४]इसी ! कहसु ॥८७२॥

सामी मोणेण[५]च्छइ, न मुणइ एसो त्ति [६]सव्वराइं पि ।
सो [७]मग्गिउं [२][८]पयत्तो, न य लद्धा तो विसन्नमणो ॥८७३॥

पुण आगओ पहाए, सामिसमीवे य पेच्छए वसहे ।
ते पुण रत्तिं चरिउं, [९]माणुसनिस्सं [१०][3]समल्लीणा ॥८७४॥ ॥ जुम्मं ॥

तो सो कुवि[4]ओ, एए [११]इमिण च्चिय नूण आसि [१२]ओहरिया ।
संपइ पुण [१३]पायडिया, रयणीए न सक्किया णेउं ॥८७५॥

---

१. निजकबलीवर्दौ । २. अरण्यम् । ३. लुप्तद्वितियान्तप्रयोगः । ४. हे ऋषे ! । ५. आस्ते = तिष्ठति । ६. सर्वरात्रिमपि । ७. मार्गयितुम् = ढूंढना । ८. प्रवृत्तः । ९. मानुषनिश्राम् । १०. समालीनाः = आश्रय करना । ११. अनेन । १२. (दे.) अपहृताः । १३. प्रकटिताः ।

1. ब – धीमं – ज.क.ह. । 2. ब – पवत्तो – ह. । 3. समु० – ज. । 4. ०ओ चिंतइ इमेणं – क. ।

उग्गामिऊण[१] सेल्लं[२], पहाविओ भगवओ पहणणत्थं[३] ।
एत्थंतरम्मि **सक्को** चिंतइ, किं कुणइ अज्ज जिणो ? ॥८७६॥

दट्ठूण तमुवसग्गं, वेगेणागम्म पहणए गोवं ।
पुच्छइ य सुहविहारं, सामीं वंदइ नमंसइ य ॥८७७॥ ॥ जुम्मं ॥

भणइ य भयवं ! तुम्हं, बारसवरिसाइं सोवसग्गं ति ।
ता तेसि वारणेणं, वेयावच्चं करेमि अहं ? ॥८७८॥

नो भूयं नो भव्वं, न भविस्सं देवराय ! जं होज्जा ।
परनिस्साए केवलणाणुप्पत्ती जिणिंदाणं ॥८७९॥

नियबलपरक्कमेणं, कम्माण खयं कुणंति तित्थयरा ।
मोक्खो अवेइयाणं[४] तेसिं, जं होज्ज न कयाइ[५] ॥८८०॥

एत्थंतरे सहरिसों, माउसियसुओ[६] उ **वद्धमाण**स्स ।
वंदणहेउं पत्तो, **सिद्धत्थो** वंतरसुरोऽवि ॥८८१॥

सो य **सक्के**ण भणिओ ।

भो **सिद्धत्थ** ! न मन्नइ, भयवं मं वारयंतमुवसग्गे[२] ।
करिसंघट्टे सीहो[३], अहिलसइ किमन्नसाहेज्जं ? ॥८८२॥

ता चिट्ठ[४] तुमं बारसवरिसाइं, भगवओ समीवम्मि ।
पाणंतियमुवसग्गं, वारेज्जसु[५] अप्पमत्तो[७] उ ॥८८३॥

इय तज्जिऊण[८] **सक्को सिद्धत्थं**, नयजिणो[९] गओ सग्गं ।
इयरोऽवि भत्तिमंतो, चिट्ठइ सामिस्स सन्निहिओ ॥८८४॥

---

१. उठाकर, ऊँचा कर के । २. (दे.) कुन्त, बर्छा । ३. प्रहननार्थम् = मारणार्थम् । ४. अवेदितानां कर्मणाम् । ५. कदाचित् । ६. मातृस्वसृसुतः = माता की बहन का लड़का = मौसी का लड़का । ७. अप्रमत्तः । ८. कथयित्वा । ९. नतजिनः शक्रः ।

1. ब – य ह० – ज.ह. । 2. अ – ०सग्गं – प. । 3. ब – सिंहो – ह. । 4. ब – चेट्ठ – क.ह. । 5. ब – ०सुमप्प० – ह. ।

(सिरिवीरस्स पढमपारणयं)

कोल्लागसन्निवेसे, भयवं पि य [1]छट्ठखमणपारणए ।
भिक्खट्ठाए पविट्ठो, दियस्स **बहुल**स्स गेहम्मि ॥८८५॥

[१]घय[२]महुसंजुत्तेणं परमन्नेण, पडिलाभिओ तेणं ।
हरिसुद्धुरेण पंच य, पाउब्भूयाणि दिव्वाणि ॥८८६॥ ॥ जुम्मं ॥

गंधजलकुसुमवुट्ठी, हिरन्नवुट्ठी पभूयकोडीओ ।
चेलुक्खेवो सुर[2]दुंदुही य, घुट्ठं अहो ! दाणं ॥८८७॥

बहुलेण तेण तइया, दाणेणं [3]गाहगाइसुद्धेणं ।
देवाउयं निबद्धं, कओ [४]परित्तो य संसारो ॥८८८॥

(जिणवरस्स विसिट्ठसमणजीवनं)

सामी तं पारेउं, विहरइ गामनयराउलं पुहइं ।
पंचसमिओ तिगुत्तो, जिइंदिओ जियकसाओ य ॥८८९॥

अममो विसुद्धलेसो, उवसग्गपरीसहाण य अभीओ ।
वाउ व्व अपडिबद्धो, निक्कंपो **मंदरगिरि** व्व ॥८९०॥

सीहो व्व भयविमुक्को, सोडीरो कुंजरो व्व [५]मयमुक्को ।
चंदो व्व [६]सोममुत्ती, तवतेएणं दिणयरो व्व ॥८९१॥

गयणमिव निरुवलेवो, संखो [3]व्व [७]निरंजणो [4]विगारेहिं ।
धरणिं पिव सव्वसहो, महासमुद्दो व्व गंभीरो ॥८९२॥

लाभम्मि अलाभम्मि य, जीवियमरणे सुहे य दुक्खे य ।
सव्वत्थ वि समभावो, समो य माणावमाणेसु ॥८९३॥

---

१. घृत० = घी । २. ०मधु० = पुष्परस, मधुररस । ३. ग्राहकादि० । ४. परीतः = परिमित । ५. मदमुक्तः । ६. सौम्यमूर्ति । ७. निरञ्जनः = निर्लेप ।

1. ब – तत्थ० – ह. । 2. ०दुंदुहीओ – क. । 3. ब – व – ह. । 4. ०णोऽविगा० – प.क.ह. ।

दुक्करतवचरणरओ, [१]खंतिखमो उग्गबंभचेरो य ।
अप्पपरतुल्लचित्तो, [२]मोणव्वय-[३]पाणिभोई य ॥८९४॥

[1]दूइज्जंतगतावसगामम्मि, गओ य विहरमाणो उ ।
तत्थच्छइ [२]पिइमित्तो[४], जयपहुणो तावसाहिवई ॥८९५॥

दट्ठूण जिणं सो, [५]साइयत्थमब्भुट्ठिओ[७] गरुयनेहं ।
कइवि दिणे [६]तत्थच्छिय, वच्चंतो तेणिमं भणिओ ॥८९६॥

[८]आगच्छेज्जह एत्थं, [९]वासावासत्थमम्हमुवरोहा ।
सामी वि विहरिऊणं, वासासमए समायाओ ॥८९७॥

तग्गामे कुलवइणा, समप्पिए [१०]तणगिहम्मि तत्थ ठिओ ।
[११]चारिमपावंताइं, तृणाइं उडयाण [३]कड्ढंति ॥८९८॥
भु[१२]क्खियगोरू[४]वाइं, सामी नो वारए [१३]विगयसंगो ।
तो कुलवइणा भणिओ, कुमार ! [१४]सउणी वि नियनीडं ॥८९९॥

रक्खइ ता किं न तुमं, रक्खसि नियइं [१५]उवस्सयं एयं ।
[१६]खज्जंतं इय भणिए, [१७]अचियत्तो [१८]उग्गहो [5]एसो ॥९००॥

धम्मत्थिणा य कस्सइ, [१९]अपत्तियं सव्वहा न कायव्वं ।
इय चिंतिय निक्खंतो, पाउससमयम्मि पढमम्मि ॥९०१॥ ॥ पंचहिं विसेसयं ॥

---

१. क्षान्तिक्षमः । २. मौनव्रतः । ३. पाणिभोजी = हाथ में भोजन करने वाले । ४. पितृमित्रः । ५. स्वागतार्थम् । ६. तत्र आसित्वा । ७. तेन इदम् । ८. आगच्छेत । ९. वर्षावासाऽर्थमस्माकमुपरोधात् । १०. तृणगृहे = झोंपड़ी । ११. चारिम् = चारा अप्राप्नुवन्ति गोरूपाणि = गावः उटजानां तृणानि कर्षन्ति । १२. बुभुक्षितगोरूपाणि = भूखी गायें । १३. विगतसङ्गः = वीतराग । १४. शकुनिः = पक्षी । १५. उपाश्रयम् = आश्रयस्थान । १६. खाद्यमानम् । १७. (दे.) अनिष्ट, अयोग्य । १८. अवग्रहः । १९. अप्रीतिकम् ।

1. ब - दूई० - ह. । 2. ब - पीमि० - प. । 3. कड्ढिंति - ज.ह.क. । 4. ब - भूखियगोरुव्वाइं - ह. । 5. ब - एस - क.ह.ज. ।

[1]भणियं च –

सो तावसासमाओ, तेसिं अप्पत्तियं मुणेऊणं ।
परमं अबोहिबीयं, तओ गओ हंत [1]कालेऽवि ॥९०२॥

इय सव्वेण वि सम्मं, सक्कं अप्पत्तियं [2]सइ जणस्स ।
नियमा परिहरियव्वं, [3]इयरम्मि [4]सतत्तचिंताओ ॥९०३॥

तथा हि –

जिणभवणसाहुदंसणमाई वि, हु जेण होइ केसिंचि ।
अप्पत्तियस्स हेउं, **कुंतलनमुया**इयाणं[2] व ॥९०४॥★

(सूलपाणिकओ उवसग्गो)

निग्गंतूण य तत्तो, **अट्ठिय**गामे गओ **महावीरो** ।
तत्थ ठिओ [5]आययणे, जक्खस्स उ **सूलपाणि**स्स ॥९०५॥

सो पुण [6]दुट्ठसहावो, वासं कस्सइ न देइ रयणीए ।
सो पुव्वभवे [3]वसहो, आसी **धणदेव**वणियस्स ॥९०६॥

पंचसए सगडाणं, उत्तारेउं नईए[4] सो [7]तुट्टो ।
गामस्स **वद्धमाण**स्स, बाहिं [5]मोत्तुं गओ वणिओ ॥९०७॥

पाणियचारिनिमित्तं, दव्वं [8]गामेल्लयाण दाऊण ।
तेहिं य न किंचि दिन्नं, तण्हाए छुहाए सो मरिउं ॥९०८॥

जाओ य **सूलपाणी**, रुट्ठो उवरिं च तस्स गामस्स ।
मारिं विउव्विऊणं, [1]निवाइओ बहुजणो तेणं ॥९०९॥ ॥ तिहिं विसेसयं ॥

---

१. वर्षाकालेऽपि । २. सदा । ३. इतरस्मिन् = अप्रीतिपरिहारे अशक्ये सति । ४. स्वतत्त्व० = खुद के ज्ञानादि गुणो में निमग्न रहना । ५. आयतने = देवमन्दिर स्थान । ६. दुष्ट स्वभाव वाला । ७. मृतप्रायः भूतः । ८. ग्रामीणेभ्यः । ९. निपातितः ।

1. अ – 'भणियं च' इति नास्ति – प. । 2. ब – ०ण व्व । नमुइयाणं – क.ह. । 3. ब – वसभो – ह.ज. । 4. अ – ०ई उ – प. । 5. अ – मुत्तुं – प. ।

लोगेणं विन्नविओ[1], तव्वयणेणं च देउलं[2] काउं ।
तप्पडिमा कारविया, जत्तं पूयं च कारेंति ॥९१०॥

तम्मारियजणअट्टीनियरो, दीसइ पए पए तत्थ ।
तो सो **अट्ठिय**गामो त्ति, लोयमज्झम्मि विक्खाओ ॥९११॥

तस्सेव बोहणत्थं, भयवं पडिमाए संठिओ[3] रत्तिं ।
तस्सायययणे[4] सो चिय, दट्ठुं रुट्ठो जिणस्सुवरिं ॥९१२॥

उवसग्गिउमाढत्तो[5] संझाए, कुणइ भूमिभेयकरं ।
अट्टट्टहाससद्दं, मणुयतिरिक्खाण तासणयं[6] ॥९१३॥

तत्तो य हत्थिरूवं, पिसायरूवं च नागरूवं च ।
काउं उवसग्गेई[7], खुहइ[8] मणागं पि नो भयवं ॥९१४॥

सिरकन्ननासनहअच्छिदंतपट्ठीसु[9] वेयणं कुणइ ।
एक्केक्का जा जीवियहरणे, अन्नस्स सुसमत्था ॥९१५॥

जाहे[3] य सव्वरयणिं, भयवं उवसग्गिओऽवि नो खुहिओ[4] ।
तो[5] उवसंतो खामइ, संथुणइ य गरुयसद्दं सो ॥९१६॥

अट्ठंगनिमित्तविऊ[6], **पासा**[9]वच्चिज्जओ[10] तहिं गामे ।
चिट्ठइ आगमकुसलो, **उप्पलओ** सिद्धपुत्तो त्ति ॥९१७॥

सो देवच्चयकहियं[11], सामिसरूवं सुणेइ[6] उव्विग्गो ।
मन्ने **वीर**जिणिंदो, छउमत्थो[12] एत्थ आयाओ ॥९१८॥

---

१. देवकुलम् । २. संस्थितः । ३. ०आरब्धः । ४. त्रासनकम् । ५. उपसर्गयति । ६. क्षोभते । ७. ०अक्षि० । ८. भूमि, उत्पात, स्वप्न, अन्तरिक्ष, अङ्ग, स्वर, लक्षण, व्यञ्जन यह आठ हैं । ९. पार्श्वऽपत्यीयः = पार्श्वनाथ भगवान की परम्परा वाला । १०. प्राग्गृहीतदीक्षः । ११. देवार्चकः = पूजारी । १२. छद्मस्थः ।

1. ब - विन्नत्तो - ह. । 2. अ - ०यणं - ज.प. । 3. ब - ताहे सव्वं रयणिं - ज.ह. । 4. ब - चलइ - ज.ह. । 5. ब - ता - ह. । 6. ब - सुणेवि० - ज.ह.क. ।

सुम्मइ य किलिकिलिरवो, जक्खाययणम्मि ता न नज्जेज्जा ।
कं पि अवत्थं जक्खो, सो दुट्ठो कुणइ सामिस्स ॥९१९॥

समइक्कंता रयणी, इय चिंताए अलद्धनिद्दस्स ।
तस्स पहाए य गओ, जक्खाययणे जिणं दट्ठुं ॥९२०॥

भयवं पि सव्वरयणिं, सुरेण संताविओ पहायम्मि ।
उवसंतसव्ववियणो, मुहुत्तमेत्तं गओ निद्दं ॥९२१॥

(तिभुवणसामिणा दिट्ठाइं दस सुमिणाइं)

पेच्छइ दस सुमिणाइं, तालपिसाओ हओ मए दुज्जओ ।
सेयविहंगो तह चित्तकोइलो पज्जुवासंतो ॥९२२॥

वरकुसुमदामजुयलं, सियगोवग्गो य पज्जुवासंतो ।
नित्थिन्नो य समुद्दो, वियसियपउमो य पउमसरो ॥९२३॥

सूरो य उग्गमंतो, परिपसरियकिरणभासुरो अहियं ।
अंतेहिं **माणुसोत्तर**सेलो, परिवेढिओ दिट्ठो ॥९२४॥

आरूढो **सुरसेलं** अहं ति, दट्ठुं इमाणि पडिबुद्धो ।
लोगो य तत्थ बहुओ, समागओ **उप्पलेण** समं ॥९२५॥

दट्ठूण कुसुमवासं, गंधामोयं च धूयगंधं च ।
अक्खयदेहं च जिणं, लोगो सव्वोऽवि आउट्टो ॥९२६॥

भणइ अहो ! उवसमिओ, जक्खो भट्टारएण एएणं ।
इय हरिसनिब्भरंगो, पडिओ चलणेसु **वीर**स्स ॥९२७॥

---

१. श्रूयते । २. समतिक्रान्ता । ३. अलब्धनिद्रस्य । ४. प्रभाते । ५. उपशान्तसर्ववेदनः । ६. दुर्जयः । ७. श्वेतगोवर्गः । ८. निस्तीर्णः । ९. परिप्रसृत० = अतिविस्तृत, चारो और विस्तृत । १०. अधिकम् । ११. अन्त्रैः = आंत = 'आतरडुं' । १२. मेरूम् । १३. लोक । १४. ०वर्षाम् = वृष्टि । १५. गन्ध-आमोदः = सुगन्धि चूर्ण । १६. आद्दतः = आदर युक्त । १७. भट्टारक० = पूज्य, पूजनीय ।

1. ब - किलकिल० - ह. । 2. ब - जए - ह. । 3. ब - ०विलो - ज.ह. । 4. ब - ०संति - ह. । 5. ब - निच्छिन्नो - ह. ।

[१]सामी दट्ठुं गुरुहरिसनिब्भरो **उप्पलो** पणमिऊणं ।
[२]पुच्छित्तु सुहविहारं, भणइ [३]तुमे रयणिविरमम्मि ॥९२८॥

दिट्ठा पहु दस सुमिणा, ते य मए जाणिया निमित्तेणं ।
[४]ऊहाए तेसि फलं णायं, णवरं ण एगस्स ॥९२९॥ ॥ जुम्मं ॥

(उप्पलकहियं सुविणफलं)

तालपिसाओ मोहो, **सुक्क**ज्झा[1]णं च सेयसउणो त्ति ।
चित्तो कोइलपक्खी, दुवालसंगं बहुसरूवं ॥९३०॥

सियगोवग्गो संघो, भवो समुद्दो य [५]दुहजलाइन्नो ।
पउमसरो सुरपरिसा, सूरो पुण केवलं नाणं ॥९३१॥

अंतावेढो **माणुसन**गस्स, सव्वत्थ निम्मला कित्ती ।
मंदररुहणं देसणसमए, सीहासणारुहणं ॥९३२॥

दामदुगं च न जाणे, तो भगवं आह **उप्पला** ! एयं ।
साहूण सावयाण य, धम्मस्स परूवणं दुविहं ॥९३३॥

एवं कहियं सोउं, परितुट्ठो **उप्पलो** गओ सगिहं ।
वंदित्तु जिणं, चिट्ठइ **वीरो** निरुवद्दवो तत्थ ॥९३४॥

जक्खेण [७]थुव्वमाणो, निच्चं चिय अद्धमासखमणेहिं ।
[६]**सरयं**ते निग्गंतुं, गओ य **मोरागवास**म्मि ॥९३५॥

(जिणभत्तेण इंदेण कओ अच्छंदगस्स अंगुलिच्छेओ)

उज्जाणे तत्थ ठिओ, **अच्छंदो** नाम तत्थ पासंडी ।
जोइसमंतनिमित्तेहिं, जीवए लोयविक्खाओ ॥९३६॥

---

१. लुप्तद्वितीयान्तप्रयोगः । २. पृष्ट्वा । ३. त्वया । ४. ऊहा = तर्क, विचार, बुद्धि । ५. दुःख-जलाऽऽकीर्णः । ६. शरदन्ते । ७. निर्गत्य ।

1. ब - ०णं ति - ह. ।

तस्स विगोयणकज्जे, केलिपियत्तेण तह जिणिंदस्स ।
पूयाए जणणत्थं, **सिद्धत्थो** वाहरेऊण ॥९३७॥

आसन्ने गच्छंतं एगं, गोवं च कहइ जिणरूवो ।
जं तेण कयं भुत्तं, दिट्ठं संपत्थिओ जत्थ ॥९३८॥ ॥ जुम्मं ॥

एमाई नियं चिट्ठं, सोउं सो रंजिओ गओ गामे ।
सव्वजणाणं साहइ, तीयाणागयनिमित्तविऊ ॥९३९॥

उज्जाणगओ चिट्ठइ, एगो देवज्जगो तओ लोगो ।
सव्वोऽवि समागंतुं पुच्छइ, सोऽवि य परिकहेइ ॥९४०॥ ॥ जुम्मं ॥

सो आउट्टो **वीरं,** वंदइ पूएइ पज्जुवासेइ ।
कहइ य एत्थ वि चिट्ठइ, **अच्छंदो** जाणओ एगो ॥९४१॥

सिद्धत्थेण य भणियं, न किं पि सो मुणइ वंचए लोगं ।
एमेव तओ लोगो, गंतूणं तस्स तं कहइ ॥९४२॥

सो अमरिसिओ पभणइ, जइ पुरओ मज्झ मुणइ तो सव्वं ।
जाणइ सो देवज्जो, गओ य जणसंजुओ तत्थ ॥९४३॥

ठाउं जिणस्स पुरओ, तणं च घेत्तूण दोहिं वि करेहिं ।
भणइ इमं भज्जिस्सइ न व त्ति, सो चिंतइ इमं ति ॥९४४॥

जं एस किं पि भणिही, विवरीयं चेव तं करिस्सामि ।
सिद्धत्थेण य भणियं, न भज्जिही सोऽवि आढत्तो ॥९४५॥

---

१. विगोपनकार्य = तिरस्कार, फजीहत हेतु । २. केलि० = मजाक, परिहास । ३. उत्पन्न करना । ४. जिनरूपधरः सिद्धार्थः । ५. संप्रस्थितः । ६. एवमादि । ७. अतीत० । ८. देवार्यकः = पूज्य व्यक्ति । ९. लोकः । १०. ज्ञायकः । ११. अमर्षितः = असहिष्णु, मत्सरी । १२. तृणम् । १३. आरब्धः ।

1. ब – अच्छंतं – ह. । 2. अ – संपत्तिओ त० – प. । जं पत्थि० – क. । 3. ब – ०ई नियचे० – ज.ह. । अ – एमाइ नियं । 4. ब – चि – ज.ह.क. । 5. ब – लोयं – ज.ह.क. । 6. सव्वे – ज. ।

[१]भंजेउं **सक्के**ण वि, दिन्नुवओगेण [२]पक्खिविय वज्जं ।
अच्छंदगस्स छिन्ना, करंगुलीओ दस वि [३]रुसिउं ॥९४६॥ ॥ जुम्मं ॥

इय [४]विग्गुत्तो लोएण, [५]खिंसिओ आगओ य [६]वेलक्खं ।
सामी परमपसिद्धिं, संपत्तो परमपूयं च ॥९४७॥

(सिद्धत्थकयाच्छंदगकयत्थणा)

सिद्धत्थो पुण रुट्ठो, लोयस्स कहेइ एस चोरो त्ति ।
किं चोरियमेएणं ?, अत्थि इहं **वीरघोसो** त्ति ? ॥९४८॥

एगो पणमिय पभणइ, एस अहं, तुज्झ अमुगकालम्मि ।
[७]वट्टं [८]दसपलमाणं नट्ठं ?, [1]आमं, [९]तयं हरियं ॥९४९॥

इमिणा, तं [2]कत्थच्छइ ?, [१०]महसिंदुतरुस्स हत्थमेत्तेणं ।
पुव्वदिसाए निहि[3]यं, एयस्स [११]पुरोहडे चेव ॥९५०॥ ॥ जुम्मं ॥

गिण्हह तं खणिऊणं, गया य दिट्ठं च आगया तत्थ ।
कलकलरवं कुणंता, अन्नं पि सुणेह एयस्स ॥९५१॥

[१२]अत्थेत्थ **इंदसम्मो** ?, [4]एसोऽहं, तुज्झ [१३]ऊरणो नट्ठो ।
अमुगे काले ?, आमं, एएणं चेव सो [१४]खइओ ॥९५२॥

[१५]उक्कुरुडि[5]गाए बयरीए, दाहिणे [१६]अट्ठियाणि चिट्ठंति ।
ते तत्थ गया दिट्ठाणि, आगया [१७]कुक्कु[6]यंता य ॥९५३॥

---

१. भङ्क्तुम् । २. प्रक्षिप्य । ३. रोषित्वा । ४. विगुप्तः = तिरस्कृतः । ५. खिंसितः = निन्दितः । ६. वैलक्ष्यम् = लज्जा-शरम । ७. (दे.) प्याला 'वाड़को' । ८. कि.ग्रा. जैसा एक प्रकार का नाप । ९. तद् वट्टम् । १०. वृक्ष विशेष । ११. (दे.) अग्रद्वार, बाड़ा = अच्छंदग के घर के मुख्य दरवाजे की पूर्व दिशा में । १२. अस्ति अत्र । १३. ऊरणः = मेष, भेड़ । १४. खादितः । १५. (दे.) कूड़ा डालने की जगह पर स्थित बदरी वृक्ष के... । १६. अस्थिकानि । १७. (दे.) आवाज करना, कलकलं कुर्वन्तः ।

1. ब - आमं ति तं - ज.ह.क. । 2. कत्थिच्छ० - ज. । 3. अ - विहियं - प. । 4. अ - स अहं - प. । 5. ब - ०गाइ - ह. । उक्करिडिगाइ - ज. । 6. कक्कु० - ज. ।

[1]तइयमवच्चमकज्जं, कहिही एयस्स भारिया चेव ।
सा पुण तस्स विरत्ता, चिट्ठइ छिद्दाणि मग्गंती ॥९५४॥

[2]अक्कोसदाणनिरया, तम्मि दिणे चेव [3]पिट्टिया तेण ।
लोगेण य सा पुट्ठा, मा गेण्हह एयनामं ति ॥९५५॥ ॥ जुम्मं ॥

एसो अकज्जकारी, इय [1]भणिउं साहए इमो पावो ।
भगिणीए समं अच्छइ, तं सोउं खिंसए लोगो ॥९५६॥

[2]धी[4] एस महापावो, फलियं अज्जेव [5]दुकयमेयस्स ।
अंगुलिच्छेएणेवं, तह सो सव्वत्थ विग्गुत्तो ॥९५७॥

जह भिक्खं पि न पावइ, ताहे दीणो [6]रहे पणमिऊणं ।
पभणइ सामी तुब्भे, अन्नत्थ वि [7]पूयणिज्जाओ ॥९५८॥

मम नत्थि अन्न[8]थामं, मा भंजह मज्झ [9]जीवियं [3]तम्हा ।
अचिय[4]त्तमिमं नाउं, सामी वि हु विहरिओ तत्तो ॥९५९॥ ॥ तिहिं विसेसयं ॥

वच्चंतस्स य पडियं, खंधाओ [10]सुवन्नवालुयापुलिणे ।
वत्थं कंटियलग्गं, घेत्तूण य सो [11]दिओ [5]चलिओ ॥९६०॥

[12]तुन्नागस्सुवणीयं, तुन्नियमेएण लक्खमोल्लं च ।
जायं [13]अद्धद्धेण य, दव्वं दोहिं पि तं गहियं ॥९६१॥ ॥ जुम्मं ॥

(चंडकोसिअपडिबोहणत्थं चलिओ महावीरो)

संपत्थिओ य भयवं, **उत्तरचावाल**संनिवेसम्मि ।
तत्थ य [14]उज्जू वंको, दो मग्गा उज्जुणा चलिओ ॥९६२॥

---

१. तृतीयं अकार्यं अवाच्यम् । २. आक्रोश० । ३. पिट्टिता = ताडिता । ४. धिग् । ५. दुष्कर्म० । ६. रहः = एकान्त । ७. पूजनीयाः । ८. (दे.) स्थान । ९. आजीविका । १०. बिहारप्रान्तवर्ति - श्वेताम्बिकानगरीसमीपवर्तिस्थानम् । ११. द्विजः । १२. तुन्नवायस्य उपनीतम् । १३. अर्धम् अर्धेन । १४. ऋजुः, वक्रः ।

1. ०णियं - क. । 2. अ - ता - प. । 3. जम्हा - क. । 4. ब - ०त्तंमीकाउं - ज.क.ह. । 5. वलिओ - क. ।

गोवालेहिं [१]निसिद्धो, एत्थच्छइ [२]दिट्ठिविसहरो भुयगो ।
तप्पडिबोहणहेउं, गंतुं [३]तेणेव **कणगखले** ॥९६३॥

[४]**आसमपय**म्मि पत्तो, [५]मंडवियाए य जक्खभवणस्स ।
पडिमाए ठिओ, दिट्ठीविसस्स सप्पस्स आसन्ने ॥९६४॥ ॥ जुम्मं ॥

सो य पुव्वभवे को आसी ?

एगम्मि संनिवेसे, मुणिगच्छे आसि [६]खमरिसी एगो ।
[1]भिक्खट्ठा य पविट्ठो, पारणए [७]खुड्डएण समं ॥९६५॥

खमरिसिणा [८]अक्कंता, एगा [९]मंडुक्किया मया तत्थ ।
खुड्डेण तस्स कहिया, सो भणइ इमा न मे [१०]वहिया ॥९६६॥

किं [११]दुट्ठसेह ! [१२]झंखसि ?, जणेण एयाउ पेच्छ वहियाओ ।
खुड्डो [१३]छुहिओ [१४]चिंतइ चोयणेऽसमओ ॥९६७॥

पुण पडिकमणे [१५]सारइ, खुड्डो मंडुक्कियं खमरिसिस्स ।
सो रुट्ठो आहंतुं, पहाविओ [१६]खुड्डयस्सुवरिं ॥९६८॥

खंभम्मि समावडिओ, पडिओ य मओ य रोसमावन्नो ।
जोइसियसुरो जाओ, तओ चुओ **कणयखलय**म्मि ॥९६९॥

कुलवइणो संजाओ, पुत्तो पंचण्हतावससयाणं ।
अहिवइणो तस्स तहिं, नामं पुण **कोसिओ** त्ति कयं ॥९७०॥ ॥ जुम्मं ॥

सो पुव्वसहावेणं, चंडो तो **चंडकोसिओ** जाओ ।
पियरम्मि य कालगए, सो तेसिं कुलवई जाओ ॥९७१॥

---

१. निषिद्धः । २. दृष्टिविषधरः । ३. तेनैव मार्गेण गत्वा । ४. आश्रमपदे = तापसो के आश्रम से उपलक्षित स्थान । ५. मण्डपिका = छोटा मण्डप, रंगमंडप । ६. क्षमक-ऋषिः = तपस्वी साधु । ७. क्षुल्लकः = छोटा साधु । ८. आक्रान्ताः = आक्रमण, दबाना । ९. मण्डूकिका = मेंढक, भेकी । १०. वधिता = हता । ११. दुष्टशैक्ष ! = शिष्य । १२. विलपसि = बकबक करना । १३. क्षुधितः = बुभुक्षितः । १४. चोदनः = कहना, प्रेरणा । १५. स्मारयति । १६. क्षुल्लकस्य पश्चात् ।

1. भिक्खट्ठाए प० - क. ।

न य देइ तावसाण[1] वि, वणसंडे मुच्छिओ फले घेत्तुं ।
तेऽवि य अन्नत्थ गया, अलहंता सो य एगागी ॥९७२॥

हिंडइ वणं समंता, गोवाईयं[2] पि तत्थ पविसंतं ।
धाडेइ[1] फरसुहत्थो, कोहंधो निद्दयसहावो[2] ॥९७३॥ ॥ जुम्मं ॥

आसन्नपुरवरीए, कयाइ आगंतुरायपुत्तेहिं ।
तस्स परोक्खं भग्गो, उडवो[3] मोडेवि[4] वणसंडं ॥९७४॥

गोवेहिं तस्स कहियं, कंटियहेउं[5] गयस्स जहवत्तं ।
सोउं च आसुरुत्तो[6], वहणत्थं धाविओ ताणं ॥९७५॥

घेत्तूण तिक्खफरूसं[7], अक्खुडिओ[3] खाणुयम्मि[8] सो पडिओ ।
चंडेण[4] फरसुणा[9], सो दुहजायसिरो[10] मओ तुरियं ॥९७६॥

रोसवसेणुववन्नो, तम्मि वणे चेव मोहमूढमणो ।
दिट्ठीविसो भुयंगो, मसिवन्नो[11] भीसणायारो ॥९७७॥

मुच्छाए वणसंडं रक्खइ, जे तत्थ तावसा आसि ।
ते दड्ढा[12], केई पुण नट्ठा वेगेण भयभीया ॥९७८॥

परियंचइ[13] वणसंडं सोऽवि, तिसंज्झं पि तत्थ जं नियइ ।
सउणं[14] पि तं सरोसो, दिट्ठिविसेणं दहइ सहसा ॥९७९॥

(दिट्ठिविसेण चंडकोसिएण दट्ठो वीरजिणो)

दिट्ठो य तेण सामी, चिंतइ य अहो ! उ एस धिट्ठो[15] त्ति ।
वीसत्थो इह चिट्ठइ, अमुणंतो मज्झ सामत्थं ॥९८०॥

---

१. निस्सारयति = बाहर निकालना । २. निर्दयस्वभावः । ३. उटजः = झोंपडी । ४. मोटयति = भांगना । ५. बब्बूल वि. कण्टकयुक्त वनस्पति । ६. आशुरुष्टः = जिस को जल्दी क्रोध आया है, अति कुपित । ७. (दे.) आस्फालितः । ८. स्थाणु = ठूठा वृक्ष । ९. परशु = कुठार, कुल्हाड़ा । १०. द्विधाजातशिरः । ११. मसि० = काजल । १२. दग्धाः । १३. परिभ्राम्यति । १४. शकुनम् = पक्षी । १५. धृष्टः = निर्लज्ज ।

1. ०साणं वण० – ज. । 2. मूडेवि – ज. । 3. अक्कु० – प. । अक्ख० – ज. । 4. अ – अड्डेणं – प.क. ।

तो आसुरत्त[1]चित्तो, सूरं निज्झाइऊण भयवंतं ।
जोय[1]इ पुणो पुणो, सो तवतेएणं न पहव[2]इ ॥९८१॥

सुट्ठुयरं आरुट्ठो, डसिउं ओसर[3]इ झत्ति दूरम्मि ।
पडिही ममोवरिं चिय इय चिंतिय, न य विसं कम[4]इ ॥९८२॥

सामिसरीरे सोऽवि हु, पुणो पुणो डसइ नियइ भयवंतं ।
जिणकंति[5]सोमयाए, दिट्ठी वि हु तस्स विज्झाया[6] ॥९८३॥ ॥ जुम्मं ॥

तथा हि - (**चंडकोसिअं पइ उवएसो वीरजिणस्स**)

णाउं बोहावसरं भणिओ, सो भयवयाणुकंपाए ।
उवसमसु **चंडकोसिय** !, **कोवो जं दारुणसहावो** ॥९८४॥

न मुणंति परं अप्पं, हियमहियं, सुंदरं च इयरं वा ।
धणमित्तणासमरणं, वेरं न गणंति[7] कोहंधा ॥९८५॥

तं चिय जंतुं पढमं, कोवो निद्दहइ जत्थ उववन्नो ।
जत्थुप्पन्नो तं चेव, इंधणं धूमकेउ[7] व्व ॥९८६॥

सुहसंपयाण विग्घो, अणत्थमूलं विवेयपडिवक्खो ।
कोहो दुग्ग[3]इहेऊ[4], तवसंजमनेहखयकारी ॥९८७॥

सुमरसु तं खमगभवे, कोवफलं **चंडकोसिय**भवे य ।
इय एवमाइ सोउं, ईहापोहं करेंत[5]स्स ॥९८८॥

जायं जाईसरणं, संवेगं आगओ य सो परमं ।
तिक्खुत्तो[8] भत्तीए, पयाहिणं भगवओ कुणइ ॥९८९॥ ॥ जुम्मं ॥

---

१. पश्यति । २. प्रभवति = समर्थ होना । ३. अपसरति । ४. क्रमते = असर होना । ५. ०सौम्यतया । ६. विध्याता = उपशान्त । ७. धूमकेतुः = अग्नि । ८. त्रिः = तीन बार ।

1. अ - ०रूत्त० - ज.क. । 2. मुणंति - ज. । 3. दोग्गइ० - ज.क. । 4. ब - ०इकेऊ । 5. ब - करिं० - ज. ।

पच्चक्खिऊण भत्तं, सुहपरिणामो बिले मुहं [१]छोढुं ।
नवकारपरो चिट्ठइ, जिणो[२]णुकंपाए तत्थ ठिओ ॥९९०॥

सामिं दट्ठुं [३]गोवाइ[1]या वि, तत्थागया [४]सुविम्हइया ।
[५]पाहाणखिवण[६]कट्ठाइघट्टणेहिं परिक्खंति ॥९९१॥

जाहे कह वि न [७]फंदइ, ताहे लोगस्स कहियमे[८]एहिं ।
[९]सो आगंतुं सामिं वंदइ, सप्पं च पूएइ ॥९९२॥

भणइ य –

पेच्छ रिसिणो पहावो इमस्स, जं एरिसो फणी दुट्ठो ।
उवसमिओ **नत्थि तवस्स, अहव इह [2]किंचि वि असज्झं** ॥९९३॥

[१०]मक्खिंति [११]घयाईहिं, बहुमाणेणं [3]च [१२]गोउलित्थीओ ।
तग्गंधेण य [१३]घेप्पइ, नियरेण पिपीलियाणं सो ॥९९४॥

तं वेयण[4]महियासिय सम्मं, मासद्धमणसणं काउं ।
सहसारे उववन्नो, मरिऊण महिड्ढिओ देवो ॥९९५॥

(गंगानईपारगमणे सुदाढकयोवसग्गो)

संपत्थिओ य भयवं, **सुरहिपुरं** तत्थ अंतरे **गंगा** ।
तो **सिद्धदत्त**नावं, आरूढो लोगमज्झम्मि ॥९९६॥

[१४]रविए य [१५]कोसिएण, **खेमिलओ** सउणजाणओ भणइ ।
पाणंतियमुवसग्गं कहइ, इमो अम्ह जलमज्झे ॥९९७॥

---

१. क्षिप्त्वा । २. जिनः अनुकम्पया । ३. गोप-आदिकाः । ४. सुविस्मिताः । ५. पाषाण-क्षेपण० । ६. काष्ठादिघट्टन० = लकड़ी से हिलाना । ७. स्पन्दते = हिलना । ८. पाषाणक्षेपकादिभिः । ९. लोकः । १०. म्रक्षन्ति = विलेपन करना । ११. घृतादिभिः । १२. गोकुलस्त्रियः । १३. गृह्यते । १४. रूते = आवाज़ करना । १५. कौशिक = उल्लू, घूक ।

1. गोइया वि तत्थ गया – ज. । 2. ब – किं पि वि – ज.क. । 3. अ – व । 4. अ – ०णअहि० ।

तस्सोवसमं च पुणो, इमस्स रिसिणो महापभावेणं ।
इय कहिए संचलिया, नावा पत्ता अगाहजले ॥९९८॥

दिट्ठो य तत्थ भयवं, **सुदाढ**नामेण नागकुमरेणं ।
पुव्वं [1]**तिविट्ठु**मारियकेसरिजीवेण सो कुविओ ॥९९९॥

कय[१]संवट्टगवाओ, [२]उब्बोलइ नावमुदगमज्झम्मि ।
एत्थंतरे य **कंबलसंबला**णं आसणं चलियं ॥१०००॥

(कंबलसंबलाणं पुव्वभवो)

तेसिं पुण उप्पत्ती भण्णइ, **महुरा**ए सावओ आसि ।
जिणदासो नामेणं, **जिणदासी** [2]भारिया तस्स ॥१००१॥

जीवाइपयत्थविऊ, जिणपवयणरागरत्तमिंज[३]ट्ठी ।
[3]धम्माओ न चालिज्जइ, देवासुरजक्खरक्खेहिं ॥१००२॥

पंचहिं अणुव्वएहिं, गुणव्वए[४]हिं च तिहिं वि परिसुद्धो ।
बहुबीयणंतकाइयकम्मा[4]दाणेण विणियत्तो ॥१००३॥

सामइयमुभयसंज्झं, [५]चीवंदणपूयणं च तिक्कालं ।
अट्ठमिचउद्दसीसु य, चउव्विहं पोसहं कुणइ ॥१००४॥

असणं पाणं [६]पत्तं, [७]उवस्सयं सयणमासणं वत्थं ।
ओसहमाई वियरइ, [८]अइही[5]णं संविभागम्मि ॥१००५॥

पढइ गुणेइ सुणेइ य, एगग्गो झायए नमोक्कारं ।
तवनियमभावणाइसु, सावगकिच्चेसु उवउत्तो ॥१००६॥

---

१. ०संवर्तकवायुः = वायु विशेष । २. उद्ब्रूडयति = अत्यन्त डूबाना । ३. ०मज्जाऽस्थि । ४. विनिवृत्तः । ५. चैत्यवन्दन० । ६. पात्रम् । ७. उपाश्रयम् । ८. अतिथिभ्यः = साधु ।

1. तिविट्ठु० - ज.क. । 2. ब - सावित्रा - ह. । 3. धम्माउ - प. । 4. ब - ०दाणाण - ज.क. । 5. अतिहीणं - ज.क. ।

तेहिं य पच्चक्खायं, जाजीवं[१] चउप्पयस्स सव्वस्स ।
गिण्हंति दहियमाई, निच्चं गो[२]उलियहत्थाओ ॥१००७॥

जाया सिणेहवुड्ढी, परोप्परं तेसिमिंत[३]जंताणं ।
गोउलियविवाहम्मि य, कयाइ सोहा कया तेहिं ॥१००८॥

वत्थाहरणाईहिं, तेहि य तुट्ठेहिं तस्स सड्ढ[४]स्स ।
उवणीया सियवन्ना, गोण[५]जुवाणा दुवे पवरा ॥१००९॥ ॥ जुम्मं ॥

सो भणइ मज्झनियमो, परिग्गहे चउप्पयस्स काउं[६] जे ।
ताणि पुणो तस्स गिहे, बंधे[७]त्तु गया[२] नियट्ठाणं ॥१०१०॥

सोऽवि य सड्ढो चिंतइ, बाहिं मुक्का इमे हु लोगेहिं ।
वाहिज्जंति चरंति य, अफा[३]सुयं हरियमाईयं ॥१०११॥

ताहे गिहट्ठियाणं, फासुयचारीए गलि[८]यमुदएणं ।
खाणेण य सो तेसिं, करेइ सव्वं पि अक्ख[९]ूणं ॥१०१२॥

अट्ठमिचउद्दसीसु य, उववासं करिय धम्मसत्थाइं ।
वाए[१०]इ तेसि पुरओ, ते सन्नी ताणि सु[४]णिऊणं ॥१०१३॥

भद्दयचित्ता जाया, जद्दिवसं सावगो[५] न जीमेइ ।
तद्दिवसं सुहभावा, आहारं तेऽवि वज्जंति ॥१०१४॥ ॥ जुम्मं ॥

सड्ढस्स तेसु जाओ, बहुमाणो समहिओ सिणे[६]हो य ।
एए उवसंतप्पा, भावियचित्त त्ति नाऊणं ॥१०१५॥

---

१. यावज्जीवम् । २. गोकुलिक० = ग्वाल । ३. आयत्-याताम् = आने जाने से । ४. श्राद्धाय० = श्रावक । ५. गोयुवानौ = युवा बैल । ६. पादपूर्तौ । ७. बद्धवा । ८. गलित० = प्रक्षालित, गालित । ९. अक्षुण्ण = परिपूर्ण, अन्यून । १०. वाचयति ।

1. गोयलि० - क. । 2. गयाणि सट्ठाणं । 3. अ - ०सुयह० । 4. सोऊण - ह. । 5. सावओ - क. । 6. अ - अनन्नेहिं ।

(सङ्गमित्तेण कया बलीवद्दाऽवदसा)

[१]भंडीरमणे जत्ता जाया, नीया य [३][२]ते[१] अपुच्छाए ।
सावगमित्तेण तहिं, जोएत्ता नियफिरिक्काए ॥१०१६॥

अन्नस्स एरिसा णत्थि, [४]एव [५]सिंगारमुव्वहंतेणं ।
अन्नन्नेहिं य सद्धिं, [६]धवाडिया [२]तेण वसहेहिं ॥१०१७॥

[३]ते [७]मिलाणा [८]छिन्ना, सङ्गिहे तेण आणिउं बद्धा ।
[९]न चरंति नेय उदगं [४]पिबंति, अइविहुरसव्वंगा ॥१०१८॥

विन्नायवइयरेणं, सङ्घेण य [१०]खिज्जियं [५]बहुपयारं ।
भत्तं पच्चक्खाविय, दिन्नो तेसिं नमोक्कारो ॥१०१९॥

[६]तो मरिउं सुहभावा, नागकुमारा [११]महिड्ढिया जाया ।
पेच्छंति य ओहीए, उवसग्गं **वद्धमाण**स्स ॥१०२०॥

तुरियं तत्थागंतुं, जिणवरभत्तीए गिण्हए नावं ।
बीओ य तं **सुदाढं**, निज्जिणइ महिड्ढियत्तेणं ॥१०२१॥

जं तस्स चवणकालो, नवजाया ते य सो तओ नट्ठो ।
पणमंति [७]ते य [१२]चलणे, महिमं च [८]करिंति **वीर**स्स ॥१०२२॥

लोगोऽवि तह करेई, सुरेहिं वुट्ठं च कुसुमजलवरिसं ।
नावाए उत्तिन्नो **वीरो**, असुरा [९]पडिगया य ॥१०२३॥

---

१. भण्डीरमणनामकयक्षमहोत्सवे गन्त्रीयात्रा = रेस । २. योजयित्वा । ३. ०फिरक्का० (दे.) = भार ढोने वाली खाली गाड़ी । ४. एवमित्यर्थे 'एव' अपि प्राकृते प्रयुज्यते । ५. शृङ्गार० = भूषण आदि की शोभा, अभिमान । ६. धाविताः = दौडाया । ७. म्लानौ = निस्तेजौ । ८. छिन्नौ = त्रुटितौ । ९. विधुर० = व्याकुल, क्षीण । १०. (दे.) उपालम्भ देना । ११. महर्द्धिकौ । १२. चरणौ ।

1. जोत्तित्ता० - क. । 2. ब - ते य - ज.क. । 3. ब - मिम० । 4. ब - पियंति - ज. । 5. अ - खिज्जिए, खिज्जिउं - ज.क. । 6. ते - क. । 7. ब - य ते - ज.क. । 8. ब - करेंति - ज.क. । 9. ०परिगया - क. ।

(गंगानईपुलिणे पायलक्खणदंसणं पुस्सस्स)

[1]दगतीरे पडिकमिउं, इरियावहिया य पत्थिओ भयवं ।
[2]नइपुलिणे तत्थ [3]पया, दीसंति सुलक्खणा पवरा ॥१०२४॥

ते दट्ठूणं चिंतइ, **पुस्सो** [5]सामुद्दलक्खणफलण्णू [3]।
पयचारेणं गच्छइ, भविस्सचक्की फुडं एसो ॥१०२५॥

तो [6]ओलग्गामि इमं, साहेमि भविस्सलक्खणफलं [4] च ।
जेणाहं लच्छीए, आजम्मं भायणं होमि ॥१०२६॥

[5]थूणागसन्निवेसे, बाहिं पडिमं ठियं च सो **वीरं** ।
दट्ठुं विसन्नचित्तो, चिंतइ मे निप्फलमहीयं ॥१०२७॥

जं चक्किलक्खणजुओ, हिंडइ [6]अप्पत्तनिवसणाहारो ।
एसो हु समणरूवो, ता लक्खणसत्थमुज्झामि ॥१०२८॥

एत्थंतरम्मि **सक्को**, [9]आभोइय ओहिणा तहिं एइ ।
वंदइ नमंसइ जिणं, पभणइ सामुद्दियं तं च ॥१०२९॥

भो **पूस** ! किं विसन्नो, अमुणंतो लक्खणाण परमत्थं ? ।
एसो तिहुयणमहिओ, [6]अट्ठुत्तर[10]लक्खणसहस्सो ॥१०३०॥

अब्भितरलक्खणं पुण तुमं न [7]याणासि –
रुहिरं [11]गोखीराभं, मंसं [12]संखुज्जलं च [13]निव्विस्सं ।
देहं [14]आमयम[8]लसेयवज्जियं, सुरहिनीसासं ॥१०३१॥ इच्चाइ ।

---

१. दकतीरे = नदी किनारे। २. नदीपुलिने = नदी की रेत में। ३. पदानि। ४. पुष्यः = नाम विशेष। ५. सामुद्रलक्षणफलज्ञः = सामुद्रिक शास्त्र से शरीर पर के चिह्नो के फल को जानने वाला। ६. अवलगामि = सेवा करना। ७. विषण्ण० = खिन्न, विषादयुक्त। ८. अप्राप्तनिवसनाऽऽहारः = वस्त्र एवं आहार जिस को नहीं मिलता है। ९. आ + भोगय् = आभोगयित्वा = देखना, जानना। १०. अष्टोत्तरलक्षणसहस्रः = १००८ लक्षणवान्। ११. गोक्षीराऽऽभम् = गाय के दूध समान। १२. शंखोज्ज्वलम्। १३. निर्विषम् = अशुचि रहित। १४. आमयमलस्वेदवर्जितम् = रोग-मल-पसीना रहित।

1. ब – ०याए – ज.क. । 2. ०सुलक्खणप्पवरा – ज.क. । 3. अ – फलं च – ज. । 4. अ – ०वरं च । 5. ब – थोणा० । 6. अ – अट्ठो० । 7. याणसि – क. । 8. आमलयमल० – ज.क. ।

धम्मवरचक्कवट्टी, असुरिंदसुरिंदवंदिओ एसो ।
तिहुयणवरकप्पतरू, अमोहवयणो[१] **महावीरो** ॥१०३२॥

संवच्छरं च दाणं, वरवरिया[२]घोसणेण दाऊणं ।
सासयसुहमोक्खट्ठा[३], तवसंजमरज्जमल्लीणो[४] ॥१०३३॥

ता सत्थमवितहं[१] चिय, मा निव्वेयं करेसु मग्गसु[५] य ।
जं ते रोयइ आसा, मा जायउ निप्फला[६] तुज्झ ॥१०३४॥

सामिं[२] उद्दिसिय कया, इय भणिउं[३] देइ **सुरवई** तस्स ।
जं मग्गियं हिरन्नं, सो तुट्ठो पणमए **वीरं** ॥१०३५॥ ॥ जुम्मं ॥

(रायगिहे गोसालगमिलणं)

पत्तो[४] य पाउस[७]म्मी, **रायगिहे** तंतुवाय[८]सालाए[९] ।
तत्थ ठिओ **णालंदा**बाहिरि[५]याए **महावीरो** ॥१०३६॥

इओ य -

मंखलिमंख[१०]स्स सुओ, **भद्दाए** उयरसंभवो अत्थि ।
गोसालाए पसूओ, तो सो **गोसाल**नामो त्ति ॥१०३७॥

अब्भसियमंखसिप्पो, जोव्वणपत्तो य चित्तफलगकरो ।
एगागी हिंडंतो, **रायगिहे** सोऽवि संपत्तो ॥१०३८॥

वासावासनिमित्तं, सामिं[६] अणुन्नविय[११] सालकोणम्मि ।
नियसिप्पदंसणपरो, पुरलोयाणं ठिओ सोऽवि ॥१०३९॥

---

१. अमोघवचनः = सफल वचन वाले । २. वरवरिकाघोषणेन = ईप्सित वस्तु मांगने के लिए की जाती घोषणा । ३. शाश्वतसुखमोक्षार्थम् । ४. ०आलीनः = प्रविष्ट, तत्पर । ५. मार्गय = मांग । ६. स्वामिनमुद्दिश्य कृता तवाऽऽशा निष्फला मा गच्छतु इति । ७. प्रावृष् = वर्षा ऋतु । ८. तन्तुवाय० = कपड़ा बुनने वाला, जुलाहा । ९. ०शाला = भित्ति रहित घर । १०. मङ्ख० = एक भिक्षुक जाति जो चित्रपट दिखाकर जीवन निर्वाह करती है । ११. अनुज्ञाप्य = परमात्मा की आज्ञा लेकर ।

1. अ - सत्थ अवि० - ज. । 2. अ - सामिय उ० । 3. अ - भणिओ । 4. पत्ते - क. । 5. ०हिरया० - क. । 6. ब - सामी - ज.क. ।

भयवं पि पढममासक्खमणस्स उ, पारणम्मि[1] भिक्खट्ठा ।
विजयस्स गिहं पविसइ, सो पासिय[2] एज्जमाणं तं ॥१०४०॥

अब्भुट्ठइ अभिगच्छइ सत्तट्ठपए, पयाहिणं कुणइ ।
हिट्ठमणो पडिलाहइ, विउलाए भोयण[1]विहीए ॥१०४१॥ ॥ जुम्मं ॥

भणियं च –

''पडिलाहिस्सामि त्ति तुट्ठे पडिलाहेमाणे तुट्ठे पडिलाहिए वि तुट्ठे ।''

एवं तिकालतुट्ठीसुद्धेणं, परम[2]पत्तदाणेणं ।
पुन्नं सुहाणुबंधं, उत्तममावज्जियं तेण ॥१०४२॥

किं च –

देवाउयं निबद्धं, भवो परित्ती[3]कओ य अन्नेसिं ।
जणियं च बोहिबीयं, पसंसणाहेउभावेणं ॥१०४३॥

जओ –

एक्कं पि सयलकल्लाणकारणं, होइ परमसद्धाए ।
दाणं मुणीण दिन्नं, जहेव **धण्णसालिभद्दा**णं ॥१०४४॥

(सयंगहीअं महावीरसिस्सत्तं गोसालस्स)

जायाणि पंच दिव्वाणि, ताणि दट्ठूण रिद्धिलोभेण ।
गोसालो भणइ जिणं, भयवमहं तुज्झ सीसो त्ति ॥१०४५॥

भयवं मोणेण ठिओ, मासक्खमणं करेइ बीयं तु ।
पारणए **आणंदो,** पडिलाहइ खज्ज[4]गविहीए ॥१०४६॥

तइयम्मि पुणो **नंदो,** पारावइ सव्वकाम[5]गुणिएण ।
गोसालोऽवि निओदरभरणपरो सेवए **वीरं** ॥१०४७॥

---

१. विविध भोज्य । २. परमपात्र० = उत्कृष्ट । ३. संक्षिप्त करना । ४. खाद्यकविधिना = विविध खाने की चीज । ५. सर्वकामगुणितेन = स्वादिष्ट, कामः = रस, सभी प्रकार के रस से युक्त भोजन द्वारा ।

1. ब – ०णं ति । 2. पासिज्ज एयमा० – क. । 3. ०गुणएण – ज. ।

कत्तियपुन्निमाए य –

नाणी एसो सुम्मइ[१], ता णाणपरिक्खणं करेमि त्ति ।
चिंतिय पुच्छइ **वीरं,** अज्जाहं किं लभिस्सामि ? ॥१०४८॥

सिद्धत्थो भणइ तुमं, कोद्दवकूरं[१] च अंबिलुम्मीसं[३] ।
कूडं[४] रूवगमेगं, दक्खिणकज्जे[२] य पाविहिसि ॥१०४९॥

सो मग्गइ हिंडंतो, भंडीसुणगो[६] व्व[३] भोयणं मिट्ठं ।
न य लहइ, तओ संज्झासमए कम्मारय[७]विइन्नो ॥१०५०॥

लद्धो कोद्दवकूरो, भुक्खियतिसिएण[८] अंबिलुम्मीसो ।
तह रूवगो य एगो, परिक्खिओ जाव सो कूडो ॥१०५१॥ ॥ जुम्मं ॥

(सिरिवीरस्स विहारचरिया)

तो आगओ विलक्खो, भयवं पि चउत्थखमणपारणए ।
नालंदाओ विहरिय, पत्तो **कोल्लाग**गामम्मि ॥१०५२॥

बहुलदिएणं घयमहुजुत्तेणं, पायसेण भत्तीए ।
पडिलाहिओ महप्पा, पंच य दिव्वाणि सव्वत्थ ॥१०५३॥

गोसालो भयवंतं, अनियंतो[९] तुंडमुंडणं[१०] काउं ।
हिंडइ विमग्गमाणो[११], **कोल्लागे** आगओ मिलिओ ॥१०५४॥

वच्चइ **सुवन्न**खलयं सामी, तत्थंतरे अरन्नम्मि ।
महईए थालीए, खीरिं[४] रंधंति गोवाला ॥१०५५॥

---

१. श्रूयते । २. कोद्रव-कूरम् = कोद्रव का भात । ३. आम्लोन्मिश्रम् = खट्टे रस से मिश्रित = 'खाटी छाश वाळा भात' । ४. कूटम् = जूठा – 'खोटो' । ५. दक्षिणाकृते । ६. भण्डिशुनकः = जङ्गल का कुत्ता अथवा 'रखडतो कूतरो' । ७. कर्मकार० = नौकर । ८. बुभुक्षिततृषितेन । ९. अपश्यन् । १०. मस्तक का मुण्डन । ११. विमार्गयन् = खोजना ।

1. ०कूरो – ज. । 2. ०कज्जेण – क. । 3. य – ज. । 4. खीरं – ज. ।

गोसालो भणइ पहू !, एत्थ [१]पडिक्खेह जेण भुंजामो ।
[२]निप्पज्जिही ण एसा खीरी, इय आह **सिद्धत्थो** ॥१०५६॥

सोऽवि तमसद्दहंतो, ते गोवे भणइ एस [३]देवज्जो ।
[४]तीयाणागयवेया, थालीए भंगमाइसइ ॥१०५७॥

ता रक्खह जत्तेणं, तेऽवि य [५]वंसविदलेहिं [1][2]बंधंति ।
रक्खंति तह वि फुट्टा, बहुतंदु[3]लखेवपब्भारा ॥१०५८॥

गोवेहिं [६]कवल्लाइं गहियाइं, तेण किं पि नो लद्धं ।
ताहे विलक्खचित्तो, धाविय मिलिओ जिणवरस्स ॥१०५९॥

(सावत्थिनयरीए गोसालगस्स दुप्परक्कमो)

सावत्थि संपत्तो कयाइ, बाहिं ठिओ य पडिमाए ।
तो **गोसालो** पभणइ, भिक्खावेल त्ति पविसामो ॥१०६०॥

नयरीए **सिद्धत्थो** जंपइ, भो ! अज्ज [७]अंतरं अम्ह ।
[4]सो भणइ ममं साहसु, अज्जाहं किं लहिस्सामि ? ॥१०६१॥ ॥ जुम्मं ॥

अज्ज तुमे भोत्तव्वं, माणुसमंसं ति आह **सिद्धत्थो** ।
तमहं अज्ज गहिस्सं, मंसस्स न संभवो जत्थ ॥१०६२॥

सो हिंडिउमाढत्तो, तत्थ य [८]गाहावई उ **पियदत्तो** ।
तब्भज्जा **सिरिदत्ता**, सा [९]निंदू पुच्छए एगं ॥१०६३॥

[5]**सिवदत्तं** नेमित्ति, [१०]किह मे जीवेज्ज पुत्तभंडाइं ? ।
सो भणइ नियं गब्भं, [११]पीसित्ता [१२]पायसं कुणह ॥१०६४॥ ॥ जुम्मं ॥

---

१. प्रतीक्षस्व = प्रतीक्षा करना । २. निष्पत्स्यते = सिद्ध, तैयार होना । ३. देवार्यः । ४. अतीत-अनागतवेत्ता । ५. वंशद्विदलाभ्याम् = वृक्ष के पत्तो से 'वाँस के अवयव से' । ६. (दे.) कवल, ग्रास । ७. अवकाश = उपवास । ८. (दे.) गृहस्थ । ९. निन्दु = मृतवत्सा = मृत बच्चे को जन्म देने वाली स्त्री । १०. कथम् । ११. पिशित्वा = पीस के । १२. खीर ।

1. अ - ०टलेहिं । 2. बंधित्तु - ज. । 3. ०लखिव० - ज. । 4. तो - ज. । 5. रिसिदत्तं - ज. । अ - सिवदेवं ।

सुतवस्सिस्स पयच्छह, नियघरदारं च[1] अन्नओहुत्तं[2] ।
कायव्वं, सो नाउं नियतवतेएण मा दहिही ॥१०६५॥

इय ते पयाथिरत्तं[3], सोउं चेमं तहाकयं तीए ।
गोसालो हिंडंतो, तीए पविट्ठो घरे कह वि ॥१०६६॥

तीए वि तस्स दिन्नो, पुव्वुत्तो पायसो महुघयड्ढो[4] ।
नत्थेत्थ[4] नूण मंसं, इय भुत्तो तुट्ठचित्तेणं ॥१०६७॥

आगंतूण य जंपइ, वट्टइ नेमित्तियत्तणं तुज्झ ।
कुणमाणस्स उ सुइरं, अज्जं चुक्कं[5] तुह निमित्तं ॥१०६८॥

विहडइ[6] मज्झ निमित्तं, न कयाइ वि एवमाह **सिद्धत्थो** ।
पत्तियसि[7] जइ न, तो वमसु, तेण वमियं तओ दिट्ठं ॥१०६९॥

विक्कुइए[8] खीरम्मि नहाइयं, लज्जिओ तओ रुट्ठो ।
मग्गइ तीए भवणं, न य जाणइ अन्नकयदारं ॥१०७०॥ ॥ जुम्मं ॥

तओ भणइ - (**सिरिवीरजिणनामपहावेण विरुद्धायारसफलो गोसालगो**)

जइ किर अत्थि पहावो, मम धम्मायरियस्स[2] तो इमा खिप्पं ।
दज्झउ पुरबाहिरिया[9], तओ अहासन्नदेवेहिं ॥१०७१॥

दट्ठा सा मा भयवं, अलियपहावो उ होउ[3] इय नाउं ।
कुम्मग्गामस्स पहे, कयाइ संपत्थिओ **वीरो** ॥१०७२॥ ॥ जुम्मं ॥

तत्थंतरा य दिट्ठो, तिलथंभो[10] पुच्छए य **गोसालो** ।
निप्पज्जिस्सइ एसो न व त्ति, भयवं जिणो आह ॥१०७३॥

---

१. अन्य दिशा सन्मुख । २. प्रजा-स्थिरत्वम् । ३. मधु-घृताऽऽढ्यः । ४. नास्ति अत्र । ५. भ्रष्टम् = भूलना, विस्मृत । ६. विघटते = खण्डित, जूठा होना । ७. प्रत्येसि । ८. ततः विकृतौ खीरे नखादिकं दृष्ट्वा = बिगड़ी हुई खीर में । ९. पुरबाहिरिका = नगर के बाहर का भाग । १०. तिलस्तम्बः = तिल का पौधा ।

1. अ - अवन्न० । 2. अ - ०इरियस्स । 3. 'होउ' पाठः नास्ति - ज. ।

निप्पज्जिस्सइ एसो, सत्त य एयस्स पुप्फजीवा उ ।.
एगाए तिलत्तेणं, [1]सुंगणियाए भविस्संति ॥१०७४॥

गोसाले[2]णुक्खणिओ, [3]सलेट्ठुहो सो असद्दहंतेणं ।
सन्निहियवंतरेहिं य, [1]मा सामी अलिय[2]वाइ त्ति ॥१०७५॥

जलवासं तत्थ कयं, गावीए खुरेण [4]चंपिओ लग्गो ।
पुप्फा तिला उ जाया, **कुम्म**ग्गामे गओ सामी ॥१०७६॥ ॥ जुम्मं ॥

(सिरिवीरमुक्कसीयलेसाए गोसालगजीवनं)

बालतवस्सी एगो, [5]तस्स बहिं **वेसियायणो** नाम ।
[6]आयावइ [3]संतप्पा, [7]छप्पइयाओ जडाहिंतो ॥१०७७॥

रवितावताविआओ, पडंति भूमीए सोऽवि य दयालू ।
घेत्तूण [8]छुहइ सीसे, तं दट्ठुं भणइ **गोसालो** ॥१०७८॥ ॥ जुम्मं ॥

किं [4]मुणसि किं पि [9]तत्तं, [10]जूयासेज्जायरो उयाहु तुमं ? ।
भिक्खू च भिक्खुणी वा, एवं दो तिन्नि वाराओ ॥१०७९॥

ताहे सो परिकुविओ, तस्स विणासाय मुयइ नियतेयं ।
सो भीओ पोक्[11]कारइ, तस्सणुकंपाए **वीरे**णं ॥१०८०॥

मुक्का य सीयलेसा, [5]तीए सा पडिहया [12]उसिणलेसा ।
सो बालरिसी दट्ठुं, [6]रिद्धिं सामिस्सिमं भणइ ॥१०८१॥ ॥ जुम्मं ॥

नाओ तुम्ह पहावो, [13]छुट्टो एसो [7]तुहाणुभावेणं ।
ता खमह [14]मज्झ भयवं !, न [15]याणिओ तुम्ह सीसो त्ति ॥१०८२॥

---

१. (दे.) सिंगा = फली, फलियाँ । २. उत्खनितः = उखाड़ना । ३. सलेष्टुकः = मिट्टी के पिंड के साथ । ४. (दे.) दबाया हुआ । ५. कूर्मग्रामस्य । ६. आतापयति = आतापना लेना । ७. शान्तात्मा । ८. क्षिपति । ९. तत्त्वम् । १०. यूकाशय्यातरः = जू का पालनहार । ११. पूत्करोति । १२. उष्णलेश्या = तेजोलेश्या । १३. मुक्तः । १४. मह्यं क्षमध्वम् । १५. ज्ञातः ।

1. ब – नो – ज.क. । 2. अ – ०वाय । 3. ब – तत्थ । 4. ब – गुणसि । 5. ब – तं एसा । 6. रिद्धी – ज. । 7. ब – तुह प्पहा० ।

गोसालो पुण पुच्छइ, किमेस जूयायरो[१] भणइ भयवं ! ? ।
कहियं च तेउलेसासामत्थं, सामिणा तस्स[1] ॥१०८३॥

तो संभंतो पुच्छइ, किह एसा होइ ?, जो उ गोसाला ! ।
छट्ठं छट्ठेण तवं करेइ, आयावणानिरओ ॥१०८४॥

पारणए य नहंतं[२], भुंजइ कुम्मासपिंडियं[३] एगं ।
पियइ उदगस्स पसइं[४], छम्मासं जाव तस्सेसा ॥१०८५॥

जायइ एवं कहिउं, **कुम्म**ग्गामम्मि विहरिओ[२] **वीरो** ।
चलिओ तेण पहेणं, तिलथंभो[३] जत्थ दिट्ठो त्ति ॥१०८६॥ ॥ तिहिं विसेसयं ॥

(तिलथंभाइदिट्ठंतेण नियइवायगहणं गोसालगस्स)

सो मंखसुओ पभणइ, तिलथंभो सामि ! सो न निप्फन्नो ।
निप्फन्नो **गोसाला** !, पुप्फजिया तह तिला जाया ॥१०८७॥

उक्खणसि तुमं तइया, मिच्छावाइत्तणं मम कुणंतो ।
गोखुरनिहओ नवरं, सुरकयवासेण सो लग्गो ॥१०८८॥

सो य असद्दहमाणो, तत्थ गओ पेच्छए तहेव तयं ।
पक्खोडइ[५] सुंगणियं[६], करम्मि दिट्ठा य सत्त तिला ॥१०८९॥

कोद्दवियकूरभोयणपायसथालिनरमंसभोगम्मि ।
तिलनिप्फत्तीए तहा, तेणं गहिओ नियइवाओ[4] ॥१०९०॥

तो सामिसयासाओ, फिट्टेउं[७] सो गओ य[5] **सावत्थिं** ।
साहेइ तेउलेसं, कुलालसालाए पुव्वुत्तं ॥१०९१॥

---

१. यूकाऽऽकरः । २. नखाऽन्तम् = नाखून के ऊपर जितना समाएँ उतना ही । ३. कुल्माष-पिण्डकं = उड़द समूह, उड़द ग्रास । ४. प्रसृतिं = दो हस्ततल = अंजलि में समाएँ उतना । ५. प्रस्फोटयति । ६. सिंगा (दे.) = फली । ७. भ्रंशित्वा = पलायन कर के, भाग कर ।

1. ब - तत्थ । 2. विहरिउं - ज. । 3. अ - ०थुंवो - ज. । 4. अ - ०तिवाउ । 5. ब - उ ।

छहिं मासेहिं य जाया, दासीए परिक्खिया य कूवतडे ।
तो दिट्ठपच्चओ सो, गुरुहरिसो दप्पमावन्नो ॥१०९२॥

मिलिया छ सिद्धपुत्ता, अवितहनेमित्तिया तया तस्स ।
तेसि सयासेऽहीयं, निमित्तमह लोयमोहणयं[1] ॥१०९३॥

अजिणो जिणप्पलावी, अकेवली केवलिप्पलावी य ।
सो हिंडइ मयमत्तो, बहुअंतेवासिपरियरिओ ॥१०९४॥

भयवं पि विहरमाणो, **दढ**भूमिं आगओ बहिं तीए ।
पेढाले उज्जाणे, **पोलासं** चेइयं तत्थ १०९५॥

अट्ठमभत्तेण ठिओ, अइदुक्करमेगराइयं पडिमं ।
अनिमिसनयणो, एगम्मि पोग्गले[1]ऽचित्तलूहे[2]म्मि ॥१०९६॥

निच्चलनिरुद्धदिट्ठी, विसुद्धज्झाणो[2] पलंबियभुओ य ।
ईसिं ओणयकाओ[3], निक्कंपो **मंदर**गिरि व्व ॥१०९७॥ ॥ जुम्मं ॥

(देवसहामज्झे सुरणाहकयतिलोक्कगुरुगुणथवणं)

सक्को य देवराया, भगवंतं ओहिणा पलोएउं ।
संजायबहल[4]हरिसो, बहुसुरपरिसाए मज्झगओ ॥१०९८॥

सामिस्स नमोक्कारं, काउं पंचंगकयपणामो य ।
अच्चब्भुयजय[5]पहुचरियरंजिओ भणइ गुरुसद्दं ॥१०९९॥ ॥ जुम्मं ॥

सव्वं पि हु तेलोक्कं, अभिभूय[6] ठिओ अहो ! **महावीरो** ।
देवेहिं दाणवेहिं, झाणाओ ण तीरए चालेउं[3] ॥११००॥

गुरुपवणेहिं व **मेरू**, इय सोउं चिंतए अभव्वसुरो ।
पावमई **संगमओ**, सुरवइसामाणिओ[7] तत्थ ॥११०१॥ ॥ जुम्मं ॥

---

१. ०मोहनकम् = मुग्ध करना, वशीकरण । २. अचित्तरूक्षे । ३. अवनतकायः । ४. ०बहल० = अत्यन्त । ५. अत्यद्भूतजगत्प्रभुचरित्र० । ६. पराजित, पराभव कर के । ७. सुरपतिसामानिकः = शक्र का सामानिक देव ।

1. ०ले चित्त० - ज. । 2. सुद्ध० - प. । 3. चलिउं - प.ज.क. ।

सच्छंदवाई **सक्को**, अहवा रागेण एवमुल्लवइ ।
को किर मणुस्समेत्तो, चालिज्जइ नो सुरेहिं पि ? ॥११०२॥

चालेमि अहं गंतुं, **सक्को** पुण तं न वारए इंतं ।
[१]परनिस्साए भयवं कुणइ, तवं मा इमं [1]मुणउ ॥११०३॥

सीहस्सेव सियालो, [२]तुच्छप्पा वायसो व्व गरुडस्स ।
वीरस्स खोहणत्थं, **पोलासे** आगओ सोऽवि ॥११०४॥

(सिरिवीरं साहणाए चावेउं संगमयोवसग्गा)

धूलीवरिसं [2][३]बहलं, पिपीलिया[3]ओ य वज्जतुंडाओ ।
दंसा [४]घयइल्ला [4][5]विच्छुया य, नउला अइकराला ॥११०५॥

मूसा सप्पा य करी, करेणुया वग्घदुट्ठवेयाला ।
[५]खरमारुयमंडलिमारुया य, **सिद्धत्थतिसिलाण** [6]॥११०६॥

करुणं विलवंताइं [7]रूवाइं, विउव्वए रुयंताइं ।
[६]पक्कणओ जिणवरतणुविलइयबहुसउणपंजरओ ॥११०७॥

[८]जिणचलणंतरमंगालरंधओ, विरइओ य [९]सूयारो ।
एएहिं जा न खुहिओ, ताहे रुट्ठो वहनिमित्तं ॥११०८॥

[१०]अय[8]भारसहस्समयं, सिर[9]म्मि गयणाओ मुयइ सो चक्कं ।
[११]पडिहाएणं जस्स हु, चुन्निज्जइ पव्वयवरोऽवि ॥११०९॥ ॥ पंचहिं विसेसयं ॥

---

१. परनिश्रया = अन्य का सहारा, आश्रय । २. तुच्छाऽऽत्मा । ३. बहलम् = निरंतर, गाढ । ४. घृत-इलिका = घी का कीट, 'घीमेल' । ५. खरमरूत्० = आंधी । ६. (दे.) चाण्डाल । ७. (दे.) आरोपित । ८. जिनचरणस्य अन्तरे = मध्यभागे अङ्गारेण रन्धकः । ९. सूपकारः = रसोइया । १०. अयस्० = लोहा, ०भार० = नाप विशेष । ११. प्रतिघातेन ।

1. अ - सुणउ । 2. अ - बहुलं - क. । 3. ब - ०याओ वि । 4. अ - घयउल्ला थइल्ला - क. । 5. विच्छुगाइ न० - क. । 6. ०तिसलाण - क. । 7. ब - रूयाइं । 8. अ - अतिभार० । 9. ब - ०रिम्मि ।

भयवं पि जाणुमेत्तं, खुत्तो धरणीए[१] वज्जकढिणाए ।
वालग्गं पि न [1]भयवं, झाणाओ चलइ धीरप्पा ॥१११०॥

दंसइ सूरस्सुदयं, भणइ य देवज्जगा ! किं न [२]वयसि ? ।
भयवं पि मुणइ, अज्ज वि वट्टइ रयणी, इमा माया ॥१११॥

[३]वीसइमो उवसग्गो, अणुकूलो एस होइ नायव्वो ।
[४]अहवा वि इमो भण्णइ, **संगमओ** भणइ जिण**वीरं** ॥१११२॥

[२]तुट्ठो म्हि तुज्झ भयवं !, सग्गं तं नेमि अहव पाएसु ।
[५]पाडेमि तुज्झ तिजगं, अहवा जं मग्गियं देमि ॥१११३॥ ॥ तिहिं विसेसयं ॥

इय वीसं उवसग्गा, एक्क[६]निसाए कया उ पावेणं ।
छम्मासं जाव पुणो, अन्ने अणुकूलपडिकूला ॥१११४॥

जा चालिउं न सक्कइ, [७]सामी मण[3]यं पि धम्मज्झाणाओ ।
ताहे [८]निव्विन्नमणो, [4]आउट्टो[९] पडइ पाएसु ॥१११५॥

(पइन्नाभट्ठसंगमयकयखमणा)

खामेइ य अवराहं, सच्चं तं सामि ! जं भणइ **सक्को** ।
तुम्हे [१०]सच्चपइन्ना, भट्ठपइन्नो अहं जाओ ॥१११६॥

संपइ हिंडह विहरह भुंजह, न करेमि किंचि [5]उवसग्गं ।
इय [6]भणिओ भणइ पहू, हो ! **संगमया** ! ण कस्सावि ॥१११७॥

होमि अहं वत्तव्वो, नियइच्छाए अईमि चिट्ठामि ।
संगमओ य विलक्खो, कयगुरु[११]पणई गओ सग्गं ॥१११८॥ ॥ जुम्मं ॥

---

१. वज्रकठिनायाम् । २. व्रजसि । ३. विंशतितमः । ४. मतान्तरे । ५. पातयामि । ६. ०निशायाम् । ७. स्वामिनं मनागपि इत्यर्थः । प्राकृते विभक्तिलोपो भवेदिति स्मरणीयम् । ८. निर्विण्ण० = खिन्न । ९. आवृत्तः = निवृत्तः अथवा आद्दतः = आदरयुक्तः । १०. सत्यप्रतिज्ञाः । ११. ०प्रणतिः = प्रणाम ।

1. अ - तह वि हु । 2. अ - तुट्ठोमि । 3. अ - ०यंति । 4. ब - णाउट्टो । 5. ब - उस्स० । 6. भणिए - क., भणिउं - ज. ।

इओ य –

सक्काईया देवा, उव्विग्गमणा य तत्थ चिट्ठंति ।
परिचत्तहासकीला, पेच्छंता सामिउवसग्गे ॥१११९॥

संगमयमेज्जमाणं, दट्ठूण [१]परंमुहो ठिओ **सक्को** ।
जंपइ भो भो तियसा !, एसा [२]दुरप्पा अदट्ठव्वो ॥११२०॥

एएण चित्तरक्खा, ण कया अम्हाण, जं **जिणिंद**स्स ।
विहिया महोवसग्गा, तिहुयणजणवंदणिज्जस्स ॥११२१॥

ता एस असंभासो, [३]निव्विसओ होउ एव भणियम्मि ।
सो नियदेविसमेओ, **मंदर**सिहरे ठिओ गंतुं ॥११२२॥

भयवं पि बीयदिवसे [४]घोसगओ, वच्छवालथेरीए ।
पडिलाहिओ, [५]सुहरिसियमणाए [६]दोसीण [७]खीरीए ॥११२३॥

दिव्वाणि पंच भूयाणि, विहरमाणो गओ य **सावत्थिं** ।
बाहिं पडिमाए ठिओ, उज्जाणे तत्थ लोएणं ॥११२४॥

[८]जत्ताए [९]खंदपडिमा, अलंकिया पुप्फवत्थमाईहिं ।
रहआरोहनिमित्तं, [१०]आढाइ न कोइ **वीर**स्स ॥११२५॥

णाऊण ओहिणा तो, **सक्को** [११]अणुपविसिऊण तं पडिमं ।
चलिओ **वीरा**भिमुहो, लोगो तुट्ठो इमं भणइ ॥११२६॥ ॥ तिहिं विसेसयं ॥

सयमेव रहे देवो विलग्गिही, सोऽवि पणमए गंतुं ।
[1]**वीरं** ताहे लोगो, [१२]आउट्टो एस देवो त्ति ॥११२७॥

---

१. पराङ्मुखः । २. दुरात्मा । ३. निर्विषयः = देशनिकाल । ४. घोषः = आभीरपल्ली, महल्ला । ५. सुहर्षितमनसा = अत्यन्त खुश मन से, खुशी से । ६. सूर्योदय से पहले बनी हुई । ७. क्षैरेयी = खीर । ८. रथयात्रायै । ९. स्कन्द० = कार्तिकेय, महादेव का पुत्र । १०. आद्रियते = आदर करना । ११. अनुप्रविश्य । १२. आद्दतः = आदरयुक्त ।

1. ब – सामिं ताहे – ज.क. ।

पूएइ **महावीरं, सक्को**ऽवि हु होइऊण [१]पच्चक्खो ।
वंदइ नमंसइ जिणं, सरीरखेमं च पुच्छेइ ॥११२८॥

निद्दय**संगमया**मरदुस्सहविविहोवसग्ग[२]कसवट्टे ।
निव्वडियं जयपहुणो, [1]वीरत्तं थोउमाढत्तो ॥११२९॥

(संगमोवस्सगपच्छा इंदकयजिणथयणं)

[३]जय **संगमय**सुरेण, देव ! दारुणपरिणामिण;
विरइयघोरुवसग्ग-विविहतुहखोहणकामिण ।
नवरि न झाणह चलिउ चित्तु, तुह **वीर** ! उदारह;
गुरुवाओविलिहि चलइ, सिहरु किं कुलगिरिसारह ? ॥११३०॥

तणु संछाइउ बहलधूलिसंभारनिवाइण;
खंडिउ तेण पयंडतुंडउ[2]डुंसन्निका[3]इण ।
पीवरनउलुंदुरेहिं दीहदाढुग्गेहिं वियलिउ;
तह वि समाहिहि बद्धलक्खु !, तुह चित्तु न तरलिउ ॥११३१॥

---

१. प्रत्यक्षः । २. कषपट्टः = कसौटी का पत्थर ।

३. जय **सङ्गम**सुरेण, देव ! दारुणपरिणामिना;
विरचितघोर-उपसर्ग-विविध-युष्मद्-क्षोभकामिना ।
नवरं न ध्यानात् चलितं चित्तं, तव **वीर** ! उदारम्;
[१]गुरुवाताऽऽवलिभिः चलति, शिखरं किं [२]कुलगिरिसारम् ? ॥११३०॥

तनूः संछादिता, [३]बहलधूलिसंभारनिपातेन;
खण्डिता तेन प्रचण्डतुण्ड-[४]उद्दंशनिकायेन ।
[५]पीवरनकुल-[६]उन्दुरैः दीर्घदंष्ट्रा-उग्रैः [७]विगलितः;
तथाऽपि समाधौ बद्धलक्ष !, तव चित्तं न [८]तरलितम् ॥११३१॥

---

१. झंझावात । २. मेरु० । ३. बहुत । ४. मधुमक्षिका, मत्कुण । ५. तगड़ा नेवला । ६. चूहा । ७. विगलितः = नष्ट करना । ८. चञ्चल करना ।

1. ब - धीरत्तं । 2. ०उद्दंस० - ज.क. । 3. ब - निक्कारण ।

दुट्ठपिपीलिय-कुलिसतुंड-घेइल्ल-महिल्लिय-
केसरिकंधररोमवन्न-वि[1]च्चुयगणपेल्लिय ।
छिंदिउ भिंदिउ डसिउ, तेहिं तुह देहु करालिउ;
सुहज्झाणह सोडीर !, **वीर** ! मणु तुज्झ न चालिउ ॥११३२॥

सुंडाडंडेण लेवि, गयणि तुह तणु उल्लालिउ;
पहणिउ दंतग्गेहिं [2]गएण, महियलि अप्फालिउ ।
घोरघुरु[3]क्का[4]रावि-वग्घरूवेहिं विहंडिउ;
धम्मज्झाणु पहाणु, तोऽवि तुह णाह ! ण खंडिउ ॥११३३॥

खुहियकयंतसमाणु, फुरियभासुरकत्तियकरु;
दीहरदसणकरालवयणु, तिहुयणह भयंकरु ।
विरइउ गुरुवेयालु, तेण तणु तुज्झ कयत्थिउ;
तुह मणु तोऽवि न **वीर** !, धीर ! उम्मग्गि पत्थिउ ॥११३४॥

दुष्टपिपीलिका-कुलिशतुण्ड[1]-घेइल्ल-महेल्लिय-
केशरिकन्धरारोमवर्ण-वृश्चिकगणपेल्लि[2]य ।
छिद्यते भिद्यते दश्यते, तैः तव देहः [3]करालितः;
शुभध्याने शौण्डीर !, **वीर** ! मनः तव न चालितम् ॥११३२॥
शुण्डादण्डेन [4]लाति, गगने तव तनूः [5]उन्नामिता;
प्रहतः दन्ताऽग्रैः गजेन, महितले आस्[6]फालिता ।
घोर[7]घुरुक्काऽऽरावि-व्याघ्ररूपैः विखण्डितः;
धर्मध्यानं प्रधानं, तथाऽपि तव नाथ ! न [8]खण्डितम् ॥११३३॥
क्षुधितकृतान्तसमानः, [9]स्फुरितभासुरकर्तिकाकरः;
दीर्घदशन-करालवदनः, त्रिभुवने भयङ्करः ।
विरचितः गुरुवेतालः, तेन तनूः तव कदर्थिता;
तव मनः तथाऽपि न **वीर** !, धीर ! उन्मार्गं प्रस्थितम् ॥११३४॥

---

१. वज्र जैसे तीक्ष्ण मुखवाली घृत की इल्लि, 'घीमेल' एवं बड़ी इल्लि द्वारा...। २. (दे०) पीड़ित प्रेरित वा । ३. भयङ्कर बनाना, छिन्न-भिन्न करना । ४. ग्रहण करना । ५. ऊपर फेंकना । ६. फेंकना, ताड़न करना । ७. (दे०) गर्जना, घुरकने की आवाज वाले । ८. ध्यानं न खण्डितम् इति शेषः । ९. प्रगट-चमकती-कैची = शस्त्र युक्त हाथवाला ।

1. अ - वेब्भु० । 2. अ - गयणि । 3. ०रुक्कारोवि० - ज.क. । 4. ब - ०राव० ।

सक्कररेणुहिं निविडिघाउ, खरमारुइं ताडिउ;
मंडलिवाइं कुलालचक्के जिह अंगु भमाडिउ ।
तेहिं न खोहिउ **वीर** !, तीहि[1] न य दुट्ठभुयंगिहिं[2];
खोहिज्जइ केसरिकिसोरु, किं कहिं[3] वि कुरंगिहिं[4] ? ॥११३५॥

पुणु[5] गयणग्गह, कालचक्कु सिरि मुक्कु;
सुरुट्ठेण[6] गिरिगुरु तेण, सुतिक्खधारु सुरनरह[7] अणिट्ठेण[8] ।
तसु घाएण तुह जाणु जाव, तणु धरणिहिं[9] खुत्तउ;
चलिउ न चित्तु, समाहिमग्गि पसरंतु निरुत्तउं[10] ॥११३६॥

विहरिउ तयणु छम्मासु जाव, बहुविहउवसग्गेहिं;
झाणभंगु पारद्धु **वीर** !, तुह णेगेहिं मग्गेहिं[11] ।

शर्करारेणुभिः[1] निबिडघातः[2], खरमरुद्भिः ताडितः;
मण्डलिवातैः कुलालचक्रे, यथा अङ्गं भ्रामितम् ।
तैः न क्षोभितः **वीर** !, ताभिः न च दुष्टभुजङ्गीभिः[3];
क्षोभ्यते केसरिकिशोरः, किं कुत्राऽपि कुरङ्गीभिः[4] ? ॥११३५॥

पुनः गगनाऽग्रात्, कालचक्रं शिरसि मुक्तः;
सुरुष्टेन गिरिगुरुं तेन, सुतीक्ष्णधारं सुरनराणां अनिष्टेन ।
तस्य घातेन तव जानु यावत्, तनूः धरणौ खुत्ता[5];
चलितं न चित्तं, समाधिमार्गे प्रसरतु निरुत्तम्[6] ॥११३६॥

विहृतः तदनु षण्मासः यावत्, बहुविधोपसर्गैः;
ध्यानभङ्गः प्रारब्धः **वीर** !, तवाऽनेकैः मार्गैः ।

---

१. पथ्थर एवं धूलि । २. निबिड़घातः कृतः इति शेषः । ३. सर्पिणी । ४. हरिणी । ५. (दे०) निमग्न । ६. (दे०) (क्रि.वि.) निश्चितम् ।

1. तं सि - ज.प.क.ह. । 2. ०भुयंगेहिं - ज. । 3. अ - कहि, कहवि - ज. । 4. कुरंगेहिं - ज. । 5. पुण - क. । 6. ब - ०ट्ठिण - ज. । 7. सुतिक्खधार - ज. । 8. ब - ०ट्ठिण - क. । 9. ब - ०णिहि खुत्तउं - ज. । 10. निरुवओ - क., निरुत्तउं - ज. । 11. भंगेहिं - क. ।

विहडिउ तोऽवि न देव !, चित्तु सुविसुद्धह भावह;
विहडइ किं कत्थइ, सुवन्नु उत्तिन्नु सुतावह ? ॥११३७॥

[1]पहु ! सो सुरु पाविट्ठु, दुट्ठ परिभट्ठु पइन्नहि;
तिहुयणि भायणु विगयपुन्नु, [2]संपन्नु अवन्नहि ।
[3]तुहं पुणु तिन्नपइन्नभारु, तइं [4]जसु [5]वित्थरिउ;
कुंदसमुज्जलु भुवणमज्झि, पसरइ अनिवारिउ ॥११३८॥

गरुयपरक्कमसत्तसारभत्तिब्भरभारिउ तइं;
उवसग्गपडिक्खलंतु[6], हउं देव ! निवारिउ ।
किं खरनहरपहारु, घोरदाढालिविराइउ[7];
करिवर[8]रणसंघट्टि, करइ हरि अवरु सहाइउ ? ॥११३९॥

विघटितः तथाऽपि न देव !, चित्तं सुविशुद्धात् भावात्;
[1]विघटेत् किं कुत्राऽपि, सुवर्णं उत्तप्तात् सुतापात् ॥११३७॥

प्रभो ! स सुरः पापिष्ठः, दुष्टः परिभ्रष्टः प्रतिज्ञायाः;
त्रिभुवने भाजनं विगतपुण्यः, सम्पन्नः अवज्ञानाम् ।
तव पुनः तीर्णप्रतिज्ञाभारस्य, तदा यशः विस्तृतम्;
कुन्दसमोज्वलं भुवनमध्ये, प्रसरति अनिवारितम् ॥११३८॥

गुरुकपराक्रमसत्त्वसारभक्तिभरभृतः तदा;
उपसर्गप्रतिस्खलितुं, हन्त देव ! [2]निवारितः ।
किं खरनखप्रहारः, घोरदंष्ट्राऽऽलीविराजितः;
करिवररणसंघट्टे, करोति हरिः अपरं सहायम् ? ॥११३९॥

---

१. पिघल जाना, नष्ट होना । २. आगतः देवः त्वया निवारितः इति भावः ।

1. ब - बहुसो । 2. ब- संपुन्न । 3. अ - तुहु । 4. जगु - क. । 5. वित्थारिओ - ज.क. । 6. ०लं तुहं उ - क. । 7. ०विरालिउ - क. । 8. ब - ०रणि० ।

तइं [1]बहुघोरुवसग्गसोढ ! बारस संवच्छर;
सामि ! अकारणरुट्ठदुट्ठजणजणियअमच्छर ! ।
धीरत्तणु तुह किं पि, अन्नु निरुवमु अंगुट्ठिउ;
[2]वीर नाउं पइ लोयमज्झि, पायडिउ जहट्ठिउ ॥११४०॥

तुहु अतुलियबलु, विमलनाणु गंभीरथिरासउ;
सारय[3]ससहरकंति, खंतिकारुन्नह आसउ ।
निरुवमसत्तु प[4]संतचित्तु, तइं जगु आणंदिउ;
[5]तुहु पयजुयलु, नरिंदचंददे[6]विंदिहिं वंदिउ ॥११४१॥

(भावणाधम्मपहाणजिन्नसेट्ठिस्स वत्ता)

[7]इय थोऊणं **सक्को,** काऊण पयाहिणं गओ सग्गं ।
भयवं **वेसाली**ए, संपत्तो विहरमाणो उ ॥११४२॥

समरे उज्जाणम्मी, **बलदेव**गिहम्मि संठिओ [8]पडिमं ।
चाउम्मासियखमणं, उवसंपज्जित्तु वासासु ॥११४३॥

तदा बहु घोरोपसर्गसोढ ! [१]द्वादशसंवत्सरम्;
स्वामिन् ! अकारणरुष्टदुष्टजन[२]जनित-अमात्सर्य ! ।
धीरत्वं तव किमपि, अन्यद् निरुपमं अङ्गोत्थितम्;
वीरं ज्ञात्वा प्रति लोकमध्ये, प्रकटितः यथावस्थितः ॥११४०॥

तव अतुलितबलं, विमलज्ञानं गम्भीरस्थिराऽऽशयः;
[३]शारदशशधरकान्तिः क्षान्तिकारुण्यानां आश्रयः ।
निरुपमसत्त्वः प्रशान्तचित्तः, त्वयि जगत् आनन्दितः;
तव पदयुगलं नरेन्द्रचन्द्रदेवेन्द्रवृन्दैः वन्दितम् ॥११४१॥

---

१. द्वादशसंवत्सरं यावत् बहुघोरो० इति भावः । २. अवस्थितसमभावः इति भावार्थः । ३. अथवा निरुपमशत्रुप्रशान्तचित्तः = निरुपम ऐसे संगमादि शत्रु उपर भी प्रशान्तचित्त वाले ।

1. अ - पहु । 2. ब - वीरु - ज. । 3. सिसिहर० - ज.क. । 4. पसन्न० - ज.क. । 5. तुह - ज.क. । 6. ब - देवेहिं । 7. एवं थोउं - ज. । 8. अ - भयवं - ज.क. ।

तत्थत्थि परमसड्ढो **जिणदत्तो**, जो जणम्मि विक्खाओ ।
विहवक्खएण सेट्ठिपयचाइओ[१] **जिन्नसेट्ठि** त्ति ॥११४४॥

[1]जो य –

जीवाइपयत्थविऊ, चीवंदणमाइधम्मकिच्चेसुं ।
निच्चं चिय उज्जुत्तो, उदारयाईगुणजुओ य ॥११४५॥

किं च –

जह भिक्खूणं बारस, मासाईया हवंति पडिमाओ ।
तह सावयाण दंसणमाई, एक्कारस[२]प्पडिमा ॥११४६॥

[२]दंसण वय सामाइय, पोसह पडिमा अबंभ सच्चित्ते ।
आरंभ पेस[३] उद्दिट्ठवज्जए समणभूए य ॥११४७॥

एमाई परिभाविय, जहसत्तीए य फासिय[३]प्पडिमो ।
सत्ताइसु[४] मेत्ताई[५]गुणेहिं, पवरेहिं उववेओ ॥११४८॥

(जिणवरभत्तजिणदत्तस्स जिणवरवीरवरभत्ती)

दिट्ठो य तेण भयवं, णाओ अरिहा इमो उ[४] चरिमो त्ति ।
वंदइ य पज्जुवासइ, पइदियहं परमभत्तीए ॥११४९॥

नाओ अविहरणेणं[६], मासक्खमणेण संठिओ भयवं ।
कत्तिगि[५]दिवसे चिंतइ, नूणं पारिस्सई अज्ज ॥११५०॥

[६]ता जइ कहमवि गेहे, आगच्छइ मज्झ पुन्नजोगेणं ।
ता पडिलाहेमि अहं, इय चिंतिय अच्छए पउणो[७] ॥११५१॥

पउणियवरभोज्जविही, भिक्खासमए य गोयरं[८] पविसे ।
मत्तवरवारणगई **वीरो**, चउमासखवणंते ॥११५२॥ ॥ जुम्मं ॥

---

१. त्याजितः । २. ग्यारह प्रतिमा के नाम । ३. स्पृष्टप्रतिमः । ४. सत्त्वादिषु । ५. मैत्र्यादि० । ६. कार्तिकशुक्लपूर्णिमा । ७. प्रगुणः = तैयार । ८. गोचरचर्यां प्रविशति = गोचरी हेतु निकले ।

1. ज. प्रतौ नास्ति । 2. ०रस उ पडिमा – क. । 3. ब – ०पेसि० । 4. ब – य । 5. कत्तिय० – क. । 6. ब – तो ।

अडमाणं दट्ठूणं, हरिसियहियओ य कुणइ सो चिंतं ।
सत्तट्ठपयाइं अहं, गंतुं सम्मुहं जिणवरस्स ॥११५३॥

तिपयाहिणं करिस्सं, पणमिस्सं भूमिनिहियभालयलो ।
पडिलाभिस्सामि तओ, नियकरेहिं सुभत्तीए ॥११५४॥ ॥ जुम्मं ॥

सफलं मज्झ भविस्सइ, जम्मं जीयं च माणुसत्तं च ।
आगच्छिस्सइ भयवं, मज्झ गिहे अज्ज जइ कह वि ॥११५५॥

इय जिणवरभत्तीए, पइसमयसमुल्लसंतपरिणामो ।
अर्ज्जितो सुहपुन्नं, खवयंतो पावकम्माइं ॥११५६॥

जा चिट्ठइ ता भयवं, **अहिणव**सेट्ठिस्स मंदिरं पत्तो ।
तेण य उदास[1]भावा, भणियं रिसिणो दल[2]ह भिक्खं ॥११५७॥ ॥ जुम्मं ॥

दिन्ना तो कुम्मासा, गिहकम्मयरीए सेट्ठिवयणेणं ।
जाया य पंचदिव्वा, पारिय **वीरो** गओ तत्थ[3] ॥११५८॥

दुंदुहिसद्दं सोउं, दट्ठुं देवागमं च सो चिंते[4] ।
पडिलाभिओ जिणिंदो, केणइ इह पुन्नमंतेण ॥११५९॥

अवि य - (**दुंदुहिसरसवणेण वरभावणाणिवत्तणं**)

चिंतामणी उ एसो, कप्पतरू जंगमो तिहुयणम्मि ।
अम्हारिसाण गेहे, नागच्छइ पुन्नरहियाण ॥११६०॥

एवं विसन्नहियओ, दाणुल्लासपरिवड्ढणनियत्तो ।
बंधइ **अच्चुय**कप्पे, आउं उक्कोसयं अह सो ॥११६१॥

खणमेत्तं न सुणंतो, दुंदुहिसद्दं तु जइ सुपरिणामो ।
आरुहिय खवग[2]सेढिं, [3]ता केवलमे[4]स पाविंतो ॥११६२॥

---

१. उदासीनभावात् । २. ददत । ३. तत्र पञ्च दिव्याः जाताः । अथवा वीरः तत्र = समरोद्याने गतः । ४. चिन्तयति ।

1. ०भावं - ज. । 2. ०सेढी - ज.क. । 3. तो - क. । 4. ०मेव - ज. ।

अहिणवसेट्ठी [१]एत्थं, [२]कयउन्नो जस्स एरिसी जाया ।
रिसिदाणेणं रिद्धी, [३]एव पसिद्धी जणो कुणइ ॥११६३॥

दाणुज्जयस्स वि इमा, न **जिन्नसेट्ठिस्स** ता इमं सव्वं ।
[४]अच्छी पसारिय च्चिय, कज्जलयं वाउणा नीयं ॥११६४॥

पासजिणस्स[1] केवली, तत्थुज्जाणे समोसढो तइया ।
तं वंदिउं पुरजणो, [२]हिट्ठमणो पज्जुवासेइ ॥११६५॥

केवलिणा भणियं - (**धम्माधम्मकयविचित्तसंसारो**)

धम्मे उज्जमियव्वं, लद्धुं माणुस्समाइसामग्गिं ।
धम्माधम्माण फलं, पयडं चिय दीसए जेणं ॥११६६॥

उत्तमकुलेसु धन्ना, एगे जायंति खत्तियाईसुं ।
चंडालभिल्लमाइसु, अन्ने जायंति कयपावा ॥११६७॥

[५]चित्तियधवलहरेसुं, [६]गवक्खसारेसु केइ निवसंति ।
अन्ने उ [७]तणकुडीरे, [८]नीए [९]बिलधूलिकलियम्मि ॥११६८॥

वरभोज्जखज्जगविही, सव्वरसं केइ एत्थ भुंजंति ।
अन्ने [१०]कुलत्थकोद्दवकूरं[११]बिलमाइ न लहंति ॥११६९॥

[१२]पट्टंसुयाइपवरे, महग्घवत्थे य केइ परिहंति ।
अन्ने उ [१३]जिन्नकंबलिडंडियखंडाइं निवसंति ॥११७०॥

---

१. अत्र । २. कृतपुण्यः । ३. एवमित्यर्थः । ४. अक्षिणी प्रसारिते चैव कज्जलं वायुना नीतम् । आँखों में काजल लगाने के लिए तैयार हो गए और हवा के झोंके से काजल उड़ गया । ये कहावत जैसा है । ५. चित्रितधवलगृहेषु = सुन्दर महल वि. । ६. गवाक्षसारेषु = विशिष्ट झरोखेवाले । ७. तृणकुटीरे = झोपड़ी में । ८. नीचे = तुच्छ । ९. बिलधूलिकलिते = चूहे आदि के घर एवं धूल युक्त । १०. कुलत्थकोद्दवकूर० = तुच्छ धान्य एवं भात । ११. ०आम्लम् = खट्टी छाश वि. अथवा तुच्छ धान्य के खट्टे चावल भी । १२. पट्टांशुक० = रेशमी वस्त्र । १३. जीर्णकम्बलडंडिकखण्डानि = जीर्ण सिले हुए वस्त्र के टुकड़े, 'फाटेला तूटेला वस्त्र' ।

1. ब - ०स्स य केवलि - ज.क. । 2. अ - हेट्ठ० । 3. ब - ०कुद्द० ।

मणिकंचणछुरियासु[१] य, सेज्जासुं पवरतूलिकलियासुं[२] ।
एगे सुयंति अन्ने, खडसत्थरयं[३] पि न लहंति ॥११७१॥

करितुरयरहाईसुं, एगे गच्छंति पवरजाणेसुं ।
अन्ने अणुवाणह[४] च्चिय, ढणक्कयं[1] देंति[2] फुट्टपया ॥११७२॥

पाहाउयसद्देहिं[५] केइ वि, बुज्झंति[3] गीयसद्देहिं ।
अन्ने अरन्नवासी, सियालसद्देहिं[4] जग्गंति ॥११७३॥

अंतेउरमेगेसिं, रूवाइजुयं वियक्खणविणीयं ।
अन्ने निम्महिल च्चिय, दुम्महिला अहव जायंति ॥११७४॥

तथा हि –

आलत्ता[६] वि न भासइ, भिउडिं काउं[5] व देइ उल्लावं ।
अज्जाघरघंटा[७] इव, छिक्का[८] सुइरं कणकणेइ[९] ॥११७५॥

एगे चाई भोगी[6], अन्ने देहि त्ति जंपिणो रंका ।
नग्गुग्घाडा अवरे, करेंति कम्माइं परगेहे ॥११७६॥

सिसिरे गमंति रयणिं, वरपाउरणेहिं पाउया[१०] एगे[7] ।
अन्ने देसउडीए[११], वायंति उ दंतवीणाओ ॥११७७॥

केसिंचि कुलुद्धरणा, धम्मत्थपरा हवंति वरपुत्ता ।
अन्नेसिं बहुयाओ, दुत्थरहंडाओ[८][१२] धूयाओ ॥११७८॥

---

१. छुर् = छुरित = व्याप्त । २. गद्दा 'गद्दी' । ३. खड़ (दे.) = तृण-स्रस्तरम् = तृण की शय्या, बिछौना । ४. अनुपानहाः = नंगे पैर चलने के कारण फटे पाँव वाले कुछ लोग ढक्का बजाने का काम करते हैं । ५. पाहाइय० = प्राभातिक । ६. आलपिता = संभाषिता । ७. आर्यागृहघण्टा = पार्वती के मंदिर के घण्ट की तरह । ८. स्पृष्टा = किमपि कथिता । ९. 'कण्' ऐसा आवाज़ करना = बड़ बड़ करना । १०. प्रावृताः = आच्छादिताः । ११. देशउटजे = बहुत छोटी झोंपड़ी में । १२. दुत्थुरुहंडा = (दे.) कलहशील ।

1. ढणक्कए – ज., ०क्कया – क. । 2. ब – दिंति । 3. उज्झंति – प.क. । 4. ब – सीयालरवेहि, ०रावेहिं – ज. । 5. अ – काउं व्व । 6. ब – भोइ । 7. ब – अन्ने । 8. दुच्छर० – क ।

निसुणंति केइ निच्चं, जिउ[१] देव ! महापहु ! त्ति वयणाइं ।
अन्ने मदिट्ठ[२] ! पाविट्ठ[३] !, फिट्ट ! इय घरिणिमाईणं[४] ॥११७९॥

केइ विलेवणमंगे, कुंकुम[1]कप्पूरमाइ लायंति[५] ।
अन्ने धूलीमलकद्दमाविला[६] एत्थ हिंडंति ॥११८०॥

केइ वि नीरोयतणू, केइ वि कुट्ठाइदुट्ठगयविहुरा[७] ।
केइ चिराऊ अन्ने, बालावत्थाइसु[2] मरंति ॥११८१॥

एवं च नाऊण –

सयणे धणे असारे, मोहं मोत्तूण कुणह जिणधम्मं ।
जं परभवाणुगामी, सो च्चिय जोहारमित्तो[८] व्व ॥११८२॥

किं च –

माणुस्सं मूलधणं पाविय, लाभो बुहेण कायव्वो ।
न उ छेयमाइ[९] तिन्नि उ, वणियसुया एत्थुदाहरणं ॥११८३॥

एमाई सोऊणं, पडिबुद्धा पाणिणो तहिं बहवे ।
पुच्छइ य पुरजणो तो, भयवं ! को एत्थ पुन्नो[१०] त्ति ? ॥११८४॥

जिन्नेयरसेट्ठीणं, भयवं पि हु आह **जिन्नसेट्ठि** त्ति ।
जं दाणुल्लासेणं तेण, बहू अज्जिओ लाभो ॥११८५॥ ॥ जुम्मं ॥

---

१. जीवतु । २. मदिष्ठ ! । ३. भ्रष्ट ! 'हट्' । ४. गृहिणी-आदिनाम् । ५. विलिम्पन्ति । ६. ०आविलाः = व्याप्त । ७. ०गदविधुराः = रोगैः व्याप्ताः = दुःखिताः । ८. (दे.) प्रणाममित्रं इव = नित्यमित्र, पर्वमित्र और प्रणाममित्र की कथानुसार समजना । ९. छेदमादि = नाश वि० । मनुष्य भव रूपी मूलधन प्राप्त करके हुशियार व्यक्ति को उस धन से लाभ प्राप्त करना चाहिए । उस मूलधन का नाश वि० नहीं करना चाहिए । तीन वणिक्पुत्र का यहाँ उदाहरण हैं । जैसे कि एक वणिक्पुत्र ने मूलपूँजी से बहुत धन कमाया । दूसरे वणिक्पुत्र ने मूलपूँजी ही संभाल कर रखी । तीसरे वणिक्पुत्र ने मूलपूँजी भी गँवाइ । १०. पुण्यवान् ।

1. ब – ०कप्पुरियाइ ला० । ०कत्थुरिया य ला० – क० । 2. अ – ०यसु ।

अच्चुयकप्पुप्पत्ती, अइरेण[1] य सिवसुहं च[2] सो लहिहि ।
तप्परिणामो य तहिं, पुव्वुत्तो तेसि परिकहिओ ॥११८६॥

इयरस्स एगभविया हिरन्नवुट्ठी, न पेच्चसुहहेऊ ।
सा वि य जिणभत्तीए खित्ता, नो तस्स बहुमाणा[3] ॥११८७॥

सद्धारहियमविहिणा, दाणं पि न होइ सुहफलं जम्हा ।
दाणासंपत्तीय[1] वि, विसिट्ठसद्धा महाफलया ॥११८८॥

(चरमजिणकाले चंचलचमरचलनं सोहम्मपइं पइ)

वीरोऽवि **सुंसुमारे** गंतुं, बाहिं ठिओ महापडिमं ।
तत्थ य **चमरु**प्पाओ जाओ, सो भन्नए इण्हिं ॥११८९॥

एत्थेव **भरह**वासे, **वेभेलो**[4] नाम सन्निवेसो त्ति ।
तत्थत्थि अइसमिद्धो, गेहवई[5] **पूरणो** नाम ॥११९०॥

मज्झिमवयपत्तो[6] सो, धम्मत्थी[2] पुच्छिउं सयणवग्गं ।
दारुमयं चउपुडगं[3], पडिग्गहं कारवेऊणं ॥११९१॥

पडिवन्नो पव्वज्जं, पाणायामं[4] अभिग्गहं गेण्हे[7] ।
जावज्जीवं छट्ठं छट्ठेण, तवं करिस्सामि ॥११९२॥ ॥ जुम्मं ॥

पारणए पुण पढमे पुडए, जं पडइ भिक्खचरियाए ।
तं पहियाणं, दोच्चे वायससुणगाइयाणं[5] च ॥११९३॥

तच्चे य जलयराणं, दायव्वं मच्छकच्छभाईणं ।
जं पुण चउत्थपुडए, तं भुंजिस्सामि सयमेव ॥११९४॥ ॥ जुम्मं ॥

---

१. दानाऽसम्प्राप्त्याऽपि = दान न करने के बावजुद भी...। २. धर्मार्थी । ३. चतुर्पुटकम् = चार पुट वाला = चार खाने वाली पेटी, पात्र । ४. प्राणामीनाम्नी प्रव्रज्या = जीवन शुद्ध करने वाला विशिष्ट तापसव्रत । ५. कौआ और कुत्ते आदि को ।

1. ०रेणं सिव० - क. । 2. ब - च होहीओ - ज.क. । 3. ब - पहु० । 4. वेभिल्लो - क. । 5. अ - गाहवई । 6. ब - ०वयम्मि पत्तो - क. । 7. अ - गेण्ह ।

कुणमाणस्स य एवं, बारसवासा उ तस्स वोलीणा[१] ।
अंते तवसुसियंगो, पच्चक्खियभत्तपाणो उ ॥११९५॥

पाओवगमनिवन्नो[१], दिट्ठा[३] रुट्ठे[२] जणे य खामेत्ता[३] ।
अच्छइ समाहिचित्तो, मासियसंलेहणाज्झुसिओ[४] ॥११९६॥

कालं काऊण तओ, उववन्नो **चमरचंच**नामाए ।
असुराण पुरवरीए, **चमरो** नामेण असुरिंदो ॥११९७॥ ॥ तिहिं विसेसयं ॥

(स-मत्थयोवरि विरायमाणसुरायोवरि असुरायामरिसो)

सीहासणे निसन्नो, सोहाभावेण[५] ओहिणा उड्ढं ।
सोहम्मगयं **सक्कं**, पासइ सुरभडसहा[६]मज्झे ॥११९८॥

तं दट्ठुमासुरुत्तो[७], अप्पत्थियपत्थियाइ[८]गुणजुत्तो ।
को एस सुहं चिट्ठइ[४], अवमन्नंतो तिण्णि[५] व जगं ? ॥११९९॥

पुच्छइ य निए[६] देवे, उड्ढं को एस रिद्धिमयमत्तो ।
चिट्ठइ मम सीसोवरि ?, तेऽवि य साहेंति[७] पंजलिया[९] ॥१२००॥

एसो[८] हु देवराया, सामी **सोहम्म**वासिदेवाणं ।
पडिवक्खमहणपच्चलवज्जधरो[१०] अतुलबलरिद्धी ॥१२०१॥

तं सोउं सुट्ठुयरं परिकुविओ, भणइ अज्ज टालेमि[११] ।
नियभुयपरक्कमेणं, विलसंतो सुरवराण सिरिं ॥१२०२॥

---

१. गताः । २. पादोपगमनिषण्णः = अनशनस्थित । ३. दिष्ट्या (अ.) खुशी से अथवा द्विष्टान् रुष्टान् । ४. ०जुष्टः = सेवित, आराधित अथवा प्रसन्न, तुष्ट । ५. स्वाभाविकेन । ६. सुर-भट-सभामध्ये = शूरवीर देवो की सभा के बिच अथवा देव समूह की सभा में । ७. आशुरुष्टः = जल्दि से क्रोध युक्त । ८. अप्रार्थितप्रार्थक० = मृत्यु की प्रार्थना करने वाला । ९. प्राञ्जलिताः = संयुक्त कर द्वय । १०. (दे.) समर्थ । ११. (दे.) निवृत्त करना, निकालना ।

1. ब - निवत्तो । 2. अ - भट्ठे - ज.क. । 3. ब - ०मेत्तो, ०मेइ - क. । 4. ब - चेट्ठइ । 5. ब - तिण व्व । 6. ब - नियदेवे । 7. ब - साहिंति । 8. ब - एसोऽवि ।

असुराण वि एस पहू हवेज्ज, अहवा अहं सुराणं पि ।
एक्कम्मि न मायंति य[1], पडियारे[1] दोन्नि खग्गाइं ॥१२०३॥

असुरमहल्लएहिं[2] भणियं –

पुव्वज्जियपुन्नेहिं सामि !, सुरिंदत्तणं इमो पत्तो ।
तं असुरिंदो जाओ, नियसुहकम्माणुसारेणं[2] ॥१२०४॥

ता नत्थि इह विरोहो, परोप्परं तुम्ह[3] पुव्ववइरं[3] वा ।
नियठाणठिया दोऽवि हु, उवभुंजह सुरसिरिं पत्तं ॥१२०५॥

अन्नं च न टालेउं[4] सक्कइ, तुम्हेहिं नियबलेणेसो ।
एरावणं निहंतुं, किं सक्कइ कोइ इयरकरी ? ॥१२०६॥

नियसामत्थणुरूवो, होइ विरोहोऽवि बुद्धिमंताणं ।
अहियबले कीरंतो, जसत्थतणुमाणनिम्महणो[5] ॥१२०७॥

न य माहप्पं **सक्क**स्स, तुम्ह लहुयत्तणं च कुणमाणा ।
एवं भणेमो अम्हे, किं तु सरूवं इमं भणियं ॥१२०८॥

(संकडसमये सासयसुहासायसहाइसामिण सरणं)

चमरो पभणइ चिट्ठह[4], तुम्हे वीसत्थमाणसा एत्थ ।
एगोऽवि अहं गंतुं, हयमहियं[6] तं करिस्सामि ॥१२०९॥

जं एक्को च्चिय सीहो, निहणइ[5] मयमत्तकुंजरसमूहं ।
एक्को विहंगराया, विद्दवइ[6] य उग्गनायकुलं ॥१२१०॥

---

१. प्रत्याकारे = तलवार की म्यान । २. (दे.) ०महद्भिः = वडील जन । ३. पूर्ववैरम् । ४. निवर्तयितुम् । ५. यशः-अर्थ-तनु-मान-निर्मथनः = ये सब को विनाश करने वाला । ६. ०मथितम् = विलोडित ।

1. उ - ज. । 2. ०भावेणं - क. । 3. ब - तुज्झ । 4. ब - चेट्ठह । 5. ब - विह० । 6. विद्दवेइ - ज. ।

गुरुभिउडिभासुरमुहो, एवं भणिऊण सो [१]समुप्पइओ ।
दप्पंधाणं अहवा, गुणदोसवियारणा नत्थि ॥१२११॥

कुंडलकिरीडकेऊरहारवरकडयमंडियसरीरो ।
दट्ठूण **महावीरं,** संपत्तो **सुंसुमार**म्मि ॥१२१२॥

कयतिपयाहिणकम्मो, पणमित्ता भूमिनिहियभालयलो ।
रइयकर[1]जुयलमउलो, **वीरं** विन्नवइ सो एवं ॥१२१३॥

सामिय ! तुह पयजुयलं, चिंतामणिकप्पपायवसमाणं ।
सुहसंपयाण मूलं, दुहआवइणासणं परमं ॥१२१४॥

तुम्ह पभावेणाहं देविंदं, [२]निज्जि[2]णेज्ज [3]जयनाह ! ।
वसणावडियस्स वि मज्झ, सामि ! सरणं तुमं चेव ॥१२१५॥

तओ य -

[३]असिमसिकज्जलवन्नं, विगरालं सुरनराण [४]तासणयं ।
जोयणसयसाहस्सं, विउव्वए भीसणं रूवं ॥१२१६॥

घेत्तूण महा[५]फरिहं, गज्जइ [६]उल्ललइ कुणइ [७]हक्काओ ।
दलइ य भूमिचवेडं, करेइ पय[८]दद्दरं घोरं ॥१२१७॥

(सोहम्मसमत्थसुरसमूहसमत्थसक्कसामत्थसंहारायासुरेंदसरणं)

सीहो व [९]नदइ, तुरओ व हेसए, [१०]गुलुगुलेइ हत्थि व्व ।
अंगुट्ठअंगुलीए, मुहं तिरिच्छं विडंबे[4]इ ॥१२१८॥

---

१. समुत्पतितः । २. निर्जयामि निर्जेष्यामि वा । ३. एक नरकपाल देव जो कृष्णवर्ण का होता है तद्वत् काला । ४. त्रासनकम् । ५. (दे.) शस्त्र विशेष । ६. उल्ललति = चंचल होना, उछलना । ७. (दे.) आह्वान । ८. (दे.) दर्दर = आघात, प्रहार । ९. नदति = गर्जना करना । १०. गुलगुलायति = हाथी की तरह चिंघाड़ना ।

1. ०कमलम० - ज. । 2. णिज्जणेज्ज - ज.क. । 3. जइ नाह - ज. । 4. विडंबंतो - क. ।

खोहंतो[१] अह लोगं, कंपेमाणो य मेइणीपीढं ।
फोडेमाणो व्व नहं, पकरेंतो[१] घणरवुग्घायं[२] ॥१२१९॥

तमुकायगज्जि[३]विज्जूवुट्ठिं च, कुणंतओ समुप्पइओ ।
तासंतो वणचरए[४], जोइसिए दुह[५] वि भयमाणो[४] ॥१२२०॥

पत्तो सहं **सुहम्मं**, एगं पायं सहाए मज्झम्मि ।
बीयं च वेइयाए[६] काउं, इय भणिउमाढत्तो ॥१२२१॥ ॥ चउहिं विसेसयं ॥

भो भो **सक्का** ! सामाणिया ! य, भो आयरक्खदेवा ! य ।
सुमरह सा सुररिद्धी, भुत्ता जा एत्तियं कालं ॥१२२२॥

अज्जं महेमि[७], अज्जं वहेमि[८], सग्गाओ अज्ज टालेमि ।
अहवा वि भिच्चभावं[९], पडिवज्जह मज्झ सव्वेऽवि ॥१२२३॥

चमरम्मि वि प्परोक्खे[१०], तुम्हं पि पहुत्तणं इहं[५] आसि ।
रविविरहे ससिणोऽवि हु, फुरइ पयावो नहयलम्मि ॥१२२४॥

संपइ **सक्कं** मोत्तुं, सुररिद्धी संकमेउ[११] **चमर**म्मि ।
अमरवहू तो[६] य इमा, तस्सेवाराहगा होंतु[७] ॥१२२५॥

सुरजोहा[१२] वि हु **चमरं**, समागयं पेच्छिऊण संभंता ।
दुव्वयणभासणेण य, अमरिसिया भणिउमाढत्ता ॥१२२६॥

---

१. क्षोभयन् । २. घनरवोद्घातम् = बादलो के समूह की आवाज़ । घनरजोद्घातम् वा । ३. तमुक्काय० = अन्धकार, गर्जना, बिजली एवं वृष्टि... । ४. व्यन्तरान् । ५. द्विविधान् = दो प्रकार के, चर एवं स्थिर । ६. वेदिकायाम् = आसन, परिष्कृत भूमि विशेष, पद्मवरवेदिका । ७. मथामि = नाश करना, हैरान करना । ८. वधामि = वध करना । ९. भृत्यभावम् = दासभाव । १०. अविद्यमाने = अप्रत्यक्षे । ११. संक्रामतु । १२. सुरयोधाः अपि = सैनिक देवता ।

1. ब - ०करंतो० - क. । 2. ब - ०रयग्घायं । 3. ०विज्जं वु०- क. तणुजायगज्जिविज्जूपुरिउ - ज. । 4. हय० - ज. । 5. अ - इमं । 6. ब - ता । 7. अ - होसु ।

(दप्पिट्ठदाणवेंदं दट्ठुं दयाए देवेहिं दिट्ठिदाणं)

भो **चमरा** ! कोऽसि तुमं ?, भुल्लो[१] भमिओ य किं च उम्मत्तो ? ।
किं तं वाउत्तरिओ[२][1] ?, जं पलवसि इय विरुद्धाइं ॥१२२७॥

केसरिगुहं सियालो एइ, जहा तस्स टालणनिमित्तं[३] ।
तह तं पत्तो इह, सुरवइस्स दंभोलिपाणिस्स[४] ॥१२२८॥

अहवा तुज्झ विणासो उवट्ठिओ, जं मइभूमिमायाओ[२][५] ।
पंखा पिपीलियाणं, मच्चूसमए च्चिय हवंति ॥१२२९॥

ता नत्थि तुज्झ मोक्खो, सुमरसु जो कोइ अत्थि तुह सरणं ।
सुरभडपहारपहओ, लहसि फुडं दुन्नयस्स फलं ॥१२३०॥

इय भणिऊणं **चमरं**[३], समकालं पहरिउं समाढत्ता ।
तेएण[६] ज्झत्ति महिया[७], पयंडपवणेण[४] जलय व्व[८] ॥१२३१॥

ते वित्तासिय[५][९], समुहं अक्कोसंतो य एइ **सक्क**स्स ।
रोसावेसपरद्धो[१०], देविंदो चिंतए एवं ॥१२३२॥

नोवसमइ दप्पंधो, एसो हियकहणसामुवाएण[६][७][११] ।
जलइ च्चिय जलसित्तं, घयं सुतत्तं हुयवहेणं ॥१२३३॥

इय मुणिय तस्स मुंचइ, वज्जं जालासहस्सपज्जलंतं ।
अंगारसहस्साइं, विक्खिरमाणं[१२] फुलिंगड्ढं[१३][८] ॥१२३४॥

---

१. भ्रष्टः = भूला हुआ । २. (दे.) वातूल = वायु प्रकोप के कारण जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो, पागल । ३. (दे.) निवारणनिमित्तम् । ४. वज्र० । ५. यत् अतिभूमिमागतः = ऊपर की भूमि = वैमानिक देवलोक में । ६. चमरेण स्वतेजसा । ७. मथिताः = हैरान करना । ८. जलदः । ९. तान् सुरान् वित्रास्य आक्रोशयन् शक्रस्य सन्मुखं एति । १०. (दे.) पीड़ित, व्याप्त । ११. हितकथन-साम्योपायेन । १२. विक्रियमाणम् = फैलाता हुआ । १३. स्फुलिङ्गाऽऽढ्यम् = अग्निकण से युक्त ।

1. ब - वायंत० । 2. अ - ०मय० । 3. इइ - क. । 4. पयंडं पव० - ज.क. । 5. अ - वित्रासिय । 6. ०कहणुसा० - क. । 7. अ - ०मवा० - क. । 8. ब - पुल्लिगत्थं, फुलिंगड्ढ - प. ।

(वज्जपाणिणिवाडियवज्जवावत्तिभयवाउलचमरस्स वीरचरणे वासो)

सो तं दट्ठुं भीओ, अहोसिरो उड्ढपयजुओ नट्ठो ।
कंपंतसव्वगत्तो, हा ! निहओ मंदभग्गो त्ति ॥१२३५॥

परिगलियहारमउडो, वेगेण णुगच्छमाण[1]सयधारो ।
वीरस्स पविट्ठो कमजुयस्स, मज्झम्मि अइतुरिओ ॥१२३६॥

इओ य **सक्को** –

नो जिणवराइनिस्सं मोत्तुं, **चमरो** पहू इहागंतुं ।
ता कस्स कया निस्सा, इय चिंतिय ओहिणा नियइ ॥१२३७॥

पासइ य **वीर**नाहं, तओ य हा हा ! अजुत्तमावडियं ।
जिणआसायणहेउं, [2]खडहडिओ अकयपुन्नोऽहं ॥१२३८॥

[3]वेगेण य आगंतुं, वज्जं [4]पडिसाहरेइ [5]अप्पत्तं ।
चउरंगुलेहिं जिणवरचलणेसुं लज्जियमणो उ ॥१२३९॥

तिपयाहिणं च काउं, वंदइ खामइ पुणो पुणो **वीरं** ।
कहिऊण **चमर**परिहववइयरमाबद्धकरजुयलो ॥१२४०॥ ॥ जुम्मं ॥

मुक्कोऽसि **चमर** !, चिट्ठसु वीसत्थो भगवओ पभावेणं ।
इहरा [6]चुक्को होंतो, वज्जहओ असुररिद्धीए ॥१२४१॥

चमर ! तए साहुकयं, सामीसरणं पवज्जमाणेणं ।
जं सव्वस्स वि सरणं, एसो च्चिय वसणपत्तस्स ॥१२४२॥

---

१. ०शतधारः = वज्र । २. निर्मापितः उद्युक्तः वा । ३. लज्जियमणो उ जिणवरचलणेसुं वेगेण य आगंतुं चउरंगुलेहिं अप्पत्तं वज्जं पडिसाहरेइ । इति अन्वयः । ४. प्रतिसंहरति = निवृत्त करना, रोकना । ५. अप्राप्तम् । ६. भ्रष्टः ।

जा वि[1] तुमे गलगज्जी[१], सुराण पुरओ कया विगयसंका[2] ।
निव्वडिया[२] सा वि, तुहं सामीसरणं पवन्नस्स ॥१२४३॥

इय जंपिऊण **सक्को**, गओ सट्ठाणं जिणं पणमिऊणं ।
चमरोऽवि पायवडिओ, थुणइ जिणिंदं भयविमुक्को ॥१२४४॥

नाहु[१] अणाहह **वीर** !, तं सि अप्पडिहयसासण;
दुट्ठोवद्दव-दुट्ठरिट्ठ[3]-कम्मट्ठ-विणासण ।
सरणु अन्नु भवरन्नि, देव ! दुक्खियहं न विज्जइ;
तुम्ह चेव ओलग्ग[४], तेण इह विउसेहि किज्जइ ॥१२४५॥

धन्नु सलक्खणु, सो कयत्थु जो पइं आराहइ;
वयणु करेविणु तुम्ह, सग्गु अपवग्गु पसाहइ ।
पइं सामिउ को लहइ, एत्थु पडिहयसव्वावइ[3][4] ?;
फलइ पुन्नु जसु, सो जि[५] देव ! चिंतामणि पावइ ॥१२४६॥

---

१. नाथः अनाथानां **वीर** !, त्वमसि अप्रतिहतशासनः;
दुष्टोपद्रव-दुष्टारिष्ट-कर्माष्ट-विनाशकः ।
शरणं अन्यद् भवारण्ये देव ! दुःखितानां न विद्यते;
तव चैव ओलग्गं तेन इह विद्वद्भिः क्रियते ॥१२४५॥

धन्यः सलक्षणः, स कृतार्थः यः पदं आराधते;
वचनं करोति तव, स्वर्गमपवर्गं प्रसाध्नोति ।
पदं स्वामिनः को लभते, अत्र प्रतिहतसर्वापद् ?;
फलति पुण्यं यस्य, स एव देव ! चिन्तामणिं प्राप्नोति ॥१२४६॥

---

१. गलगर्जि = गले से गर्जना = जोर जोर से चिल्लाना । २. निष्पन्ना = सिद्धा = स्वामी के शरण वाले को वह सब कुछ सिद्ध हो सकता है, जो देवो के सामने तु बोला था । ३. ०दुरित । ४. सेवा । ५. जि = एव ।

1. ब - य - क० । 2. ०संकं - क. । 3. अ - प्पडि० । 4. अ - ०ब्भावइ ।

[१]बलिकिज्जउ नरजम्मु, तासु बलिकिज्जउ[1] देवत्तणु;
भत्तिभरिण करेइ देव !, जो तुह भिच्चत्तणु ।
मह लीणह पयकमलि, एक्कपत्थण णिसुणिज्जउ;
जह तुह दंसणु लहमि सामि[2] !, भवि भवि तह किज्जउ ॥१२४७॥ ॥ रोलावृत्तत्रयकम् ॥

(कासवगोत्तकुलकित्तिकर-करुणासायरस्स कोसंबिपुरिपवेसो)

इय थोउं असुरिंदो, विलक्खवयणो गओ नियं ठाणं ।
भयवं पि विहरमाणो, **कोसंबि**पुरीए संपत्तो ॥१२४८॥

तत्थ **सयाणिय**नामो राया, भज्जा **मिगावई**[3] तस्स ।
तम्मंती य **सुगुत्तो, नंदा** पुण पणइणी तस्स ॥१२४९॥

नंदा-मियावईओ, परोप्परसहीओ परमसड्ढीओ[2] ।
तत्थ य भयवं गिण्हइ, अभिग्गहं किण्हपक्खम्मि ॥१२५०॥

[३]**पोस**स्स पडिवयाए, दव्वाइचउव्विहं पि दुरणुचरं ।
[४]सुप्पट्ठियकुम्मासे, कप्पंति [4]उ दव्वओ मज्झ ॥१२५१॥

खेत्तम्मि [५]एलुगाए, अंतो बाहिं च [६]कमजुयं काउं ।
कालम्मि नियत्तेसुं, [७]भिक्खाचारेसु[5] भावे य ॥१२५२॥

---

१. बलीक्रियते नरजन्मा, तेषां बलीक्रियते देवत्वम्;
भक्तिभरेण करोति देव !, यः तव भृत्यत्वम् ।
मम लीनस्य पदकमले, एकप्रार्थना निश्रूयताम्;
यथा तव दर्शनं लभे स्वामिन् !, भवे भवे तथा क्रियताम् ॥१२४७॥

भावार्थ - जो भक्ति से आपके दास बनता है । उसका मनुष्य एवं देवजन्म पुष्ट होता है । अर्थात् दुर्गति के द्वार बन्द होते है ।

२. परमश्राद्ध्यौ = श्रेष्ठ श्राविकाए । ३. पोष सुदि एकम । ४. सूर्प० = 'सूपडुं' । ५. एलुक = देहली, 'उंबरो' । ६. क्रमयुगलम् । ७. भिक्षाचारेषु = भिक्षा आचारः येषां = भिक्षाचाराः = भिक्षुकाः, नियत्तेसु = निवृत्तेषु ।

1. ०किउ - क. । 2. ब - दुलहु - ज.क. । 3. नाम - ज. । 4. अ - य । 5. ०चारीसु - ज. ।

निवधूया दासत्तं पत्ता, मुंडियसिरा नियलबद्धा ।
रुयमाणी अट्ठमपारणम्मि, जइ देइ तो कप्पे ॥१२५३॥ ॥ चउहिं समेयं ॥

कुणइ[1] य भिक्खायरियं, पुरीए[1] नीउच्चमज्झिमकुलेसु ।
तीए[2] सव्वपरीसहउदओ, तो तेसि सहणत्थं ॥१२५४॥

हिंडिय[3] चउरो मासे, अन्नम्मि दिणे गिहम्मि **नंदा**ए ।
भिक्खट्ठमणुपविट्ठो, विन्नाओ[2] तीए **वीर**जिणो ॥१२५५॥ ॥ जुम्मं ॥

परमायरेण भिक्खा आणीया, निग्गओ य सो[3] भयवं ।
ताहे अहो ! अधन्ना, इय **नंदा** खेयमावन्ना ॥१२५६॥

दासीहि य सा भणिया, एस रिसी पइदिणं इहागच्छे ।
ताए[4] नायं नूणं, अभिग्गहो सामिणो कोइ[4] ॥१२५७॥

(पडुपन्नपहुपारणं पंडुच्च परोप्परपणयिससपइं पइ पहुपइण्णपडिवायणं)

सुट्ठुयरं उव्विग्गा, पुच्छइ उव्वेयकारणममच्चो ।
सा भणइ, अम्ह मंतित्तणेण किं पावमूलेणं ? ॥१२५८॥

किं वा तुह बुद्धीए, अभिग्गहं जं न मुणसि जयगुरुणो ? ।
अज्ज चउत्थो मासो, न लहइ मणचिंतियं भिक्खं ॥१२५९॥

सो भणइ पिए ! चिट्ठसु वीसत्था, ता करेमि कल्लदिणे ।
जह लहइ जिणो भिक्खं, कप्पे[5] य इमम्मि वट्टंते ॥१२६०॥

तत्थागया **मिगावइ**पडिहारी, **विजय**नामिया कह वि ।
साहइ **मिगावई**ए, सा गंतुं तं समुल्लावं ॥१२६१॥

सा वि महादुक्खत्ता जाया, रन्ना य पुच्छिया भणइ ।
किं रज्जेण मए वा तुह[6], जं सामी विहरमाणं ॥१२६२॥

---

१. नीचोच्चमध्यमकुलेषु । २. तस्यां भिक्षाचर्यायाम् । ३. भ्रान्त्वा । ४. तया । ५. कल्प० = अनुष्ठान, अभिग्रह । ६. तव राज्येन मया वा किम् ? ।

1. अ - स । 2. ०णो - क. । 3. ब - तो । 4. ब - कुणइ । 5. ब - जप्पे य - ज.क. ।

णियनयरीए न याणसि, अभिग्गहं वावि तस्स न मुणेसि ? ।
एत्तियकालो वट्टइ, अलद्धभिक्खो भमइ सामी ॥१२६३॥ ॥ जुम्मं ॥

मा कुणसु देवि ! अधिइं, एत्तियकालं न किं पि मे नायं ।
संपइ सामिअभिग्गहपूरणकज्जे जइस्सामि ॥१२६४॥

[१]अंबाडिओ अमच्चो, अम्हं चिंतेसि सयलकज्जाइं ।
जयगुरुपारणकज्जे, कीस पमत्तोऽसि इय भणिउं ॥१२६५॥

अमच्चेण भणियं –

सामि ! न नायं, संपइ [२]करेमुवायं तओ य वाहरइ ।
[३]तच्चा[1]वाई नामं [४]ओज्झायं, धम्मस[2]त्थविउं ॥१२६६॥

भणिओ य –

तुह सत्थे आयारो, वन्निज्जइ चेव सव्वधम्मीणं ।
ता मुणसु जिणाभिग्गहरूवं, होऊण [५]अभिउत्तो ॥१२६७॥

सो भणइ नि[3]यविवक्खा, संभूयाभिग्गहा बहुपयारा ।
दव्वाइएहिं भणिया, सत्त य पिंडेसणा चेव ॥१२६८॥

असंसट्ठा [4]उ संसट्ठा, [६]उद्धडा अप्पलेविया ।
उग्गहिया पग्गहिया, सत्तमुज्झियधम्मिया ॥१२६९॥

(रायरिसिदाणरुइराइणा रायभत्तरायलोयो आइट्ठो)

ता सामि ! परविवक्खा, न मुणिज्जइ राइणा तओ लोगो ।
सव्वोऽवि समाइट्ठो, जत्तेणं [७]सामपुव्वं तु ॥१२७०॥

---

१. उपालब्धः । २. करोमि उपायम् । ३. तथ्यवादी । ४. उपाध्यायम् । ५. अभियुक्तः = अत्यन्त उपयुक्त । ६. उद्धृता । ७. सामपूर्वम् = प्रियवाक्य युक्त ।

1. ब – ०वायं । 2. ब – ०त्थवियं । 3. ब – ०याविक्खा । 4. ब – संसट्ठा य ।

वीरजिणोऽभिग्गहिओ[१], गोयरचरियं करेइ[१] ता तुब्भे ।
सामिस्स देह भिक्खं, इमिणा इमिणा पयारेण ॥१२७१॥

सो धम्मत्थी वियरइ, बहुयपयारेहिं सत्थभणिएहिं ।
सामी न चेव गिण्हइ, जणो य सव्वोऽवि[२] उव्विग्गो[२] ॥१२७२॥

इओ य पुव्वं -

दहिवाहणगहणत्थं, **चंपं** वेढइ **सयाणिओ** राया ।
एगाए रत्तीए, नावाकडगेण[३] गंतूणं ॥१२७३॥

दहिवाहणोऽवि नट्ठो, **चंपा**ए जग्गहो[४] नरिंदेण ।
घोसाविओ य, सेणालोगेण[३] य लूसिया[५] नयरी ॥१२७४॥

दहिवाहणस्स रन्नो, **वसुमइ**धूयाए संजुया गहिया ।
भयभीया एगेणं, वंठेणं[६] **धारिणी** देवी ॥१२७५॥

वलिओ **सयाणिय**निवो, सो वंठो भणइ एस मे भज्जा ।
होही इमाए धूयं, एयं पुण विक्किणिस्सामि[७] ॥१२७६॥

तो **धारिणी** विचिंतइ, एसा बाला अणज्जहत्थगया ।
कमवत्थं पाविस्सइ, **न नज्जए[४] हा ! विहिविलासो** ॥१२७७॥

मज्झं पि सीलखलियं[८] होही, तं तु जसधम्मनासणयं[९] ।
सुद्धस्स वरं मरणं, मा जीयं सीलखलियस्स ॥१२७८॥

(दहिवाहणदढदेवीए दुक्कडिदरिद्दासदमणदुस्सहदुहेण दुरिअ दिवं दवणं)

हा[१०] हियय ! किन्न फुट्टसि, बंधुविउत्ताए वसणपडियाए[५] ।
मज्झ तुमं इय, दुस्सहदुक्खेणं[६] सा उ कालगया ॥१२७९॥

---

१. आभिग्रहिकः = अभिग्रहयुक्तः । २. उद्विग्नः । ३. नौकटकेन = जल सेना । ४. यद्ग्रहः = जो चाहो वह ग्रहण करने की राजाज्ञा । ५. लुण्टिता । ६. अविवाहित, 'वांढो' । धूर्त, दास । ७. विक्रेष्यामि = बेच दूंगा । ८. ०स्खलितम् । ९. यशः एवं धर्म को नाश करने वाला । १०. बन्धुवियुक्तायाः व्यसनपतितायाः मम हे हृदय ! त्वं किं न स्फुटसि इति... ? इति अन्वयः ।

1. ब - करेउ । 2. अ - य । 3. अ - ०न्ने लोगेणं लू० - क. । 4. ब - नज्जई - ज. । 5. अ - ०वडियाए । 6. अ - सा हु ।

[1]अव्वत्तसरं रोयइ, जणणीमरणेण **वसुमई** दीणा ।
तो सो वंठो चिंतइ, मरिही एसा वि जइ किंचि ॥१२८०॥

जंपामि अजुत्तमहं, तो [2]मोल्लं वि हु न होइ इय नाउं ।
[3]अणुयत्तंतेण दढं, **कोसंबि**पुरीए आणीया ॥१२८१॥ ॥ जुम्मं ॥

वीहीए [1]ओडिया[4] सा, दिट्ठा य **धणावहेण** इब्भेण ।
अणलंकिया वि लावन्नपुन्नसव्वंगसोहिल्ला ॥१२८२॥

चिंतियं [2]च तेण –

आगीए चेव नज्जइ, ईसरधूया नरिंदधूया [3]वा ।
एसा विसमं पत्ता, हंत ! अवत्थं विहिवसेणं ॥१२८३॥

ता मा [5]वसणं दीहं, पावउ करुणापवन्नचित्तेणं ।
जं मग्गियमोल्लेणं, गहिया सा सेट्ठिणा तेणं ॥१२८४॥

नीया य नियघरम्मी, का सि तुमं पुच्छिया न साहेइ ।
रुयइ परं [6]पव्वालियगंडुयला अंसुधाराहिं ॥१२८५॥

पियवयणेहिं सनेहं संठविया, [4]बेट्टिय[7] त्ति पडिवन्ना ।
ण्हावणभोयणवत्थाइएहिं, सम्माणिया [8]धणियं ॥१२८६॥

मूला य नियय्भज्जा भणिया, धूया तुहेस ता सम्मं ।
तह कायव्वं जह सरइ नेव, नियजणणिजणयाणं ॥१२८७॥

चिट्ठइ य [9]कुल[5]घरम्मि व, सा [10]निव्वुयमाणसा गिहे तम्मि ।
विणएणं सीलेण य, सव्वोऽवि य रंजिओ लोगो ॥१२८८॥

---

१. अव्यक्तस्वरम् । २. मूल्यम् । ३. अनुवर्तनेन । ४. अवतारिता अवस्थापिता वा । ५. व्यसनम् = दुःख । ६. प्लावित० । ७. 'बेटी, दीकरी' । ८. (दे.) अत्यन्त । ९. कुलगृह = पिता का घर । १०. निवृत्त० = शान्त, निश्चिन्त ।

1. ब – ओड्डीया दि० । ओड्डविया – क. । 2. ब – च णेण – ह. । 3. ब – य – ह. । 4. ब – बिट्टिय । 5. कुलहरम्मि – क. ।

गिहवासी पुरवासी भणइ, अहो ! सीलचंदणा एसा ।
तो तीए बीयनामं, संजायं **चंदण** त्ति फुडं ॥१२८९॥

(मइलमणेण मच्छरिमूलामहिला मंजुलगुणमंडियचंदणाए मंदादरा मंगुल-मग्गणमुइया य)

एवं वच्चइ कालो, **मूला** पुण [1]मच्छरिज्जए हियए ।
तीए उवरि, **धणावह**बहुमाणं पेच्छमाणी [2]य ॥१२९०॥

चिंतइ य -

सव्वोऽवि जणो पायं, अहिणववत्थुम्मि कुणइ अणुरायं ।
चिरपरिचियमवधीरइ, ता जइ एसो इमं भज्जं ॥१२९१॥

कुणइ गुरुरायरत्तो, ता गेहअसामिणी अहं होमि ।
इय सा पावा तीए, चिट्ठइ छिड्डाइं जोयंती ॥१२९२॥ ॥ जुम्मं ॥

सो सेट्ठी मज्झण्हे, [1]वीहीओ आगओ गिहे विजणे ।
एगम्मि दिणे नत्थि उ, जो कोइ [2]विसोयए चलणे ॥१२९३॥

ताहे **चंदणबाला**, उवट्ठिया तत्थ पाणियं घेत्तुं ।
वारंतस्स वि य [3]बला, [4]आढत्ता [5]सोइउं चलणे ॥१२९४॥

एत्थंतरम्मि तीए, छुट्टा केसा [6]सहावसोहिल्ला ।
पडिहिंति कद्दमे, इय चिंतेउं सेट्ठिणा झत्ति ॥१२९५॥

हत्थट्ठिय[7]लीलाजट्ठियाए, धरिया तहेव बद्धा य ।
[8]ओलोवणोवविट्ठा, **मूला** चिंतेइ तं दट्ठुं ॥१२९६॥ ॥ जुम्मं ॥

---

१. वीथितः = बाजार से । २. विशोचते = साफ करना । ३. बलात् । ४. आरब्धा । ५. शोचयितुं = साफ, पवित्र करने के लिए । ६. स्वभावतः शोभावन्तः । ७. ०शोभामात्र के लिए रखी यष्टि । ८. गवाक्षस्था ।

1. मच्छि० - ह. । 2. ब - उ - क. ।

(वग्गुवसुमईविसये वणिअवत्तवच्छल्लविलोअणवइरिवणियावियारणा)

नूण विणट्ठं कज्जं, ता **तरुणो चेव छिज्जए[1] वाही** ।
जइ पुण परिणेइ इमं, ता मज्झ मुहे हवइ छारो[१] ॥१२९७॥

अन्नं च –

वरि[२] हउं[2] मुय, वरि हउं अजाय[3], वरि विसहरि खद्धी;
वरि उब्भीसूलियहिं[4] भिन्न, वरि हुयवहिं[5] दद्धी ।
वरि उब्बंधिय[6] रुक्खडालि, वरि खड्डुहिं घल्लिय;
मं मइ[7] दिट्ठु सवत्तिजुत्तु, पिउ हियडासल्लिय[8] ॥१२९८॥ ॥ रोलावृत्तम् ॥

इय एवमाइ चिंतिय, सेट्ठिम्मि विणिग्गए[३] गरुयरोसा ।
निद्दयचित्ता पहणइ[9], सिरं च मुंडावए[४] तीसे ॥१२९९॥

नियलेहि[५] य बंधावइ चलणेसुं, ओयरम्मि[10][६] पक्खिवइ ।
भणइ य जो सेट्ठिस्स, साहिस्सइ सो ममं वइरी[७] ॥१३००॥

गिहमागओ य पुच्छइ सेट्ठी, भो ! **चंदणा** कहिं[11] चिट्ठे ? ।
मूलाए य भएणं, न परियणो साहए कोइ ॥१३०१॥

सो मुणइ रमइ कत्थ[12] वि, रत्तिं जाणेइ नवरि सा सुत्ता ।
बीयदिवसे न दिट्ठा, पुट्ठा य ण केणइ सिट्ठा ॥१३०२॥

---

१. क्षारः = नमक, भस्म । मतलब कि मेरा नाम, अधिकार सब चला जाएगा ।

२. वरं भवतु मृता, वरं भवतु अजाता, वरं विषधरेण भुक्ता ।
वरं ऊर्द्धिर्वत-शूलिकाभिः भिन्ना, वरं हुतवहे दग्धा ।
वरं उद्बन्धिता वृक्षशाखायां, वरं खड्डायां क्षिप्ता ।
मा मया दृष्टः सपत्नीयुक्तः प्रियः हृदयशल्यितः ॥१३९८॥

३. विनिर्गते । ४. मुण्डापयति = मुण्डन कराना । ५. निगडैः = बेड़ी । ६. अपवरके = कमरा । ७. वैरी ।

1. ब – छिज्जए य जह । 2. वरिहं मुय वरिहं मजाय – क., वरि हय वरि मय वरि मजाय – ज. । 3. मजाय – ज.क. । 4. ब – उब्भासू० – क. । 5. ०वहि – क. । 6. अ – ओलंबिय । 7. ब – मइं । 8. ब – ०उ । 9. पहरइ – क. । 10. ब – उव्व० । 11. ब – चेट्ठे । 12. ब – ०त्थइ – ज.क. ।

तइयदिणे परिकुविओ, भणइ य मारेमि जइ न साहेह ।
ताहे एगा थेरी, चिंतइ किं मज्झ [1]जीएणं ? ॥१३०३॥

सा जियउ महाभागा, [2]मज्झ वि जीएण पाविया एसा ।
मूला जं [3]सियबीयाससिलेहानिक्कलंकाए ॥१३०४॥

एयाए इमं ववसइ [4]नरयनिमित्तं, तओ य थेरीए ।
सेट्ठिस्स जहावत्तं, **मूला**ए चेट्ठियं कहियं ॥१३०५॥ ॥ जुम्मं ॥

सेट्ठी वि अहो ! पावा, **मूला** निद्धम्मनिद्दयसहावा ।
इय चिंतंतो ओ[1]यरगदारमुग्घाडए खिप्पं ॥१३०६॥

[2]तं दट्ठुं [5]सुसि[3]यंगीं, [6]तिसभुक्खकिलामियं सुदीणमुहं ।
रे जीव ! सहसु दुक्कयकम्मफलं [4]एव भावंती ॥१३०७॥

बाहजलभरियनयणो, गुरु[5]दुक्खो पायए जलं थो[6]वं ।
नियइ य भोयणजायं, णत्थि य भवियव्वयवसेणं ॥१३०८॥

[7]कुम्मास च्चिय दिट्ठा, न य दिट्ठुं [7]तत्थ भायणं किं पि ।
[8]उस्सुगभावेणं चिय, सुप्पे काऊण कुम्मासा ॥१३०९॥

[9]पासेसु पुत्ति ! एए, तुह भंजावेमि जाव नियलेऽहं ।
इय भणिय ते [10]पणामिय, लोहा[11]रघरं गओ सेट्ठी ॥१३१०॥ ॥ जुम्मं ॥

(केवलं कढोरकिलिट्ठकडकम्मकंदलीकड्ढियकोमलचंदणकन्नगाए कूअणं)

सा तयवत्था सुमरिय पिउगेहं, हत्थिणि व्व नियजूहं ।
मुत्ताहलसरिसाइं, रोयइ [8]अंसूइं मुयमाणी ॥१३११॥

---

१. जीवनेन । २. मम जीवनेन जीवितं प्रापिता = प्राप्ता एसा जीवतु । ३. सितद्वितीयाशशिलेखा इव निष्कलङ्कायाम् = सुदि बीज के चन्द्र जैसी अकलङ्कित । ४. नरकनिमित्तम् = नरक के कारण स्वरूप । ५. शुष्काङ्गीं । ६. तृषाबुभुक्षाक्लान्ताम् । ७. कुल्माषाः = उड़द । ८. उत्सुक-उत्कण्ठित । ९. पश्य = देख और खा । १०. अर्पयित्वा । ११. लोहकारः ।

1. ओवरग० - ज. । 2. ब - दट्ठुं तं - ज.क. । 3. अ ०यंगिं । 4. ब - एस । 5. ब - ०क्खं पावए । 6. ब - थोयं - ज. । 7. भोयणं किमवि अन्नं - ज. । 8. ब - अंसूणि ।

जणयविओगं पत्ता, जणणीमरणं च बंधुविरहं च ।
परदेसमिममवत्थं, **हा हा ! देव्वस्स परिणामो** ॥१३१२॥

[1]तारिसकुलजायाए, [2]तारिसलीलाए एरिसं वसणं ।
ता नत्थि सा अवत्था, कम्मवसा जा न संपडइ ॥१३१३॥

एवं चिंतेमाणी, उद्धट्ठिया गरुयदुक्खपब्भारा ।
पुरओ कयसुप्पा, सा चिट्ठइ [1]दारं पलोयंती ॥१३१४॥

जइ कोइ एज्ज अतिही, ता अट्ठमपारणं करेमि अहं ।
एए च्चिय कुम्मासे, दाउमवत्थोचिए[2] तस्स ॥१३१५॥

एत्थंतरम्मि सामी, पत्तो पुन्नाणुभावओ तीए ।
सा दट्ठुं भयवंतं, खणेण जाया विगयदुक्खा ॥१३१६॥

गुरुहरिसभरा चिंतइ, दरिद्दगेहे हिरन्नवुट्ठि व्व ।
संपत्तो [3]मम भयवं, [3]कयपुन्नाए इहावसरे ॥१३१७॥

तो सुप्पं दरिसित्ता, पयमेगं काउमे[4]लुया[4]बाहिं ।
बीयं [5]अंतो पभणइ, भयवमणुग्गहह कुम्मासे ॥१३१८॥

पुन्नो अभिग्गहो मे, दव्वाइचउव्विहोऽवि इय नाउं ।
कुम्मासग्गहणत्थं, पसारिओ सामिणा पाणी ॥१३१९॥

(पगरिसपाविअपइण्णापारंगयपरक्कमिपरमेट्ठिपरमपावणपारणपहावेण पंचदिव्व-पयडणं)

दिन्ना य **चंदणाए**, पंच य दिव्वाणि पाउब्भूयाणि ।
जिणपारणगं जायं, पंचदि[6]णेणूण[7]छम्मासे ॥१३२०॥ ॥ जुम्मं ॥

---

१. तादृशकुलजातायाः । २. तादृशविलासवत्याः = विलासयुक्तायाः । ३. कृतपुण्यायाः । ४. एलुकस्य बहिः ।

1. ब - पुरओ । 2. अ - ०च्चिए । 3. ममं - क. । 4. ब - ०लुगा - ज.क. । 5. ब - चंतो । 6. ०दिणोनू० - ज.क. । 7. ०सो - ज.क. ।

देवा य [१]सन्निवइया, केसा तीए य वरतरा जाया ।
तुट्टा [1]तड त्ति नियला, [२]सुवन्नमणिनेउरा भूया ॥१३२१॥

अमरेहिं य सा विहिया, सव्वालंकारभूसियावयवा ।
[३]पहयमहिरेणु उदगं, वुट्ठं हरिचंदणुम्मीसं ॥१३२२॥

मुक्काइं [2]अमरेहिं, दसद्धवन्नाइं सुरहिकुसुमाइं ।
पहयाओ दुंदुहीओ, [४]चेलुक्खेवो कओ परमो ॥१३२३॥

घुट्ठं च अहो ! दाणं गयणे, **सक्को** समागओ तुट्ठो ।
कोडीओ अद्धतेरस, तत्थ हिरन्नस्स वुट्ठाओ ॥१३२४॥

गायंति य नच्चंति य, वायंति पढंति तह विमुच्चंति ।
उक्किट्ठिनाययमरा, पारणए तम्मि **वीरस्स** ॥१३२५॥

जाओ पुरे पघोसो, **चंदणबाला**ए पुन्नकलियाए ।
पाराविओ [३]मुणिंदो, **धणावहो** तो [५]समावन्नो ॥१३२६॥

राया **मिगावई** वि य, [६]**नंदा**मच्चो य आगया तत्थ ।
दट्ठुं पारणमहिमं, परमपमोयं गया सव्वे ॥१३२७॥

(णिद्रुणियइणिअंटियणरेहिं णिबद्धणेहा णलिणणयणा णियणंदणेव णंदणा ण णाया)

दहिवाहणस्स रन्नो, **संपुलओ** नाम कंचुई जो उ ।
बंदित्तणाणीओ, सो [४]पिच्छि य **चंदण**कुमारिं ॥१३२८॥

चलणेसु पडिय [५]रोयइ, रन्ना पुट्ठो य का इमा कन्ना ? ।
दहिवाहणस्स रन्नो, एसा धूय त्ति सो आह ॥१३२९॥

---

१. सन्निपतिताः । २. सुवर्णमणिनूपुरे । ३. प्रहत० = शान्त करना, दबाना । ४. वस्त्रवृष्टि । ५. सम्प्राप्तः । ६. नन्दा-अमात्यौ ।

1. तडि त्ति - क. । 2. ब - अइभरेहिं, अइभरेणं - ज.क. । 3. जिणिंदो - क. । 4. पेच्छि वि - क. । 5. ब - रोवइ - ज. ।

तं आलिंगिय पभणइ, **मिगावई** एस भइणिधूया मे ।
राया हिरन्नवुट्ठिं, गेण्हंतो वारिओ **हरिणा** ॥१३३०॥

जस्सेसा भो ! वियरइ, तस्स इमा होइ पुच्छिया सा[1] य ।
तायस्स मए दिन्नं, हिरन्नमेयं ति पडिभणइ ॥१३३१॥

सक्केण[2] निवो भणिओ, एसा **वीर**स्स सिस्सिणी पढमा ।
होही चरिमसरीरा, केवलनाणम्मि उप्पन्ने ॥१३३२॥

ता[1] संगोवाहि तुमं, परिवालसु आयरेण परमेणं ।
रन्ना तह त्ति भणिउं, कन्नंतेउरगिहे नीया ॥१३३३॥

मूला धणावहेणं निच्छूढा, धाडिआ[3] तह जणेणं ।
निंदित्ता खिंसित्ता, विगोइया नयरमज्झम्मि ॥१३३४॥

(मणुइंदत्तणे मयमत्तमहावीरजीवेण मारियमणुअमूलयमसुहमुइण्णं)

भयवं पि विहरमाणो, **छम्माणी**गाममागओ तस्स ।
बाहिं पडिमाए ठिओ, तत्थ वि **कुम्मारगामे**[4] व्व ॥१३३५॥

गोवो सामिसमीवे, गोणे मुंचइ गया य ते अडविं ।
सो आगओ चिरेणं, पुच्छइ देवज्जगा ! कत्थ[5] ॥१३३६॥

मज्झ बइल्ला ?, सामी मोणेणं चिट्ठए, तओ कुविओ ।
कन्नेसु कडसलागा, दोसु वि पक्खिवइ, जा मिलिया ॥१३३७॥

दोन्नि वि मज्झे, मूलाओ[6] भंजए, उक्खणेउ मा कोइ ।
कम्मं **तिविट्ठु**काले, जमज्जियं तं उइन्नमिणं[3] ॥११३८॥ ॥ चउहिं विसेसयं ॥

---

१. सं + गोपय् = रक्षण करना । २. पीछे के भाग से तोड़ देता है ताकि कोई बाहर न निकाल दे । ३. उदीर्णम् इदम् ।

1. उ - क. । 2. इमं - क. । 3. अ- ताडिया । 4. ०गामि व्व - ज. । 5. अ - तत्थ । 6. मिलिया तो भं० - क. ।

भणियं च –

कन्नेसु तउयतत्तं, गोवस्स कयं **तिविट्ठु**णा रन्ना ।
कन्नेसु **वद्धमाण**स्स, तेण छूढा[१] कडसलागा[२] ॥१३३९॥

तित्थयरस्स वि एवं, कडाण कम्माण नत्थि मोक्खो त्ति ।
इय मुणिय बंधहेऊ, बुहेहिं[1] सइ वज्जियव्वो त्ति ॥१३४०॥

भावेइ य भयवं –

सयमेव कडं[2] एयं, इहइं पि अकज्जयारिणो दंडो[3] ।
अकयं कोइ न पावइ, **भगीरही**[३] नागदहणं[4] व्व ॥१३४१॥

सम्ममहियासमाणो, सामी तं वेयणं विसुद्धमणो ।
मज्झिमपुरम्मि पत्तो, **सिद्धत्थो** तत्थ अत्थि वणी[४] ॥१३४२॥

तस्स गिहम्मि पविट्ठो सामी, दिट्ठो य तस्स मित्तेणं ।
सल्लवियणाकिलंतो[५], तत्थ ठिओ **खरग**वेज्जेणं ॥१३४३॥

सिद्धत्थोऽवि य वंदइ, भयवंतं थुणइ देइ वरभिक्खं ।
खरगोऽवि य भणइ अहो !, समत्थलक्खणजुओ भयवं ॥१३४४॥

किं तु ससल्लसरीरो, संभंतमणो[६] य भणइ **सिद्धत्थो** ।
जोयहि[5] कहिं[७] सल्लो, पलोइओ तेण दिट्ठा[6] य ॥१३४५॥

कन्नेसु कडसलागा, सिट्ठासु य तासु भणइ **सिद्धत्थो** ।
अवणेसु इमा सिग्घं, पुन्नं होही तुह महंतं ॥१३४६॥ ॥ तिहिं विसेसयं ॥

निप्पडिकम्मो[७] भयवं, नेच्छइ किरियं[९], तओ य पडियरिउं[१०] ।
उज्जाणठियस्स गया, पडिमावत्थस्स **वीर**स्स ॥१३४७॥

---

१. क्षिप्ते । २. कटशलाके = लकड़ी की सली । ३. भगीरथिः = सगर चक्रवर्ती का पुत्र । ४. = वणिज् । ५. शल्यवेदनाक्लान्तः । ६. संभ्रान्त० = त्रस्त, वेदनायुक्त । ७. पश्य । ८. निष्प्रतिकर्मा = परिष्कार रहित, शारीरिकचिन्तारहितः । ९. चिकित्साम् । १०. प्रतिचरितुम् = उपचार करने के लिए ।

1. ब – सय । 2. ब – कयं । 3. ब – डंडो – ज.क. । 4. अ – ०दवणं व । 5. ब – जोएह । 6. दिट्ठो – ज.क. । 7. ब – अप्प० ।

सिद्धत्थो खरओ तह, बहुपुरिस[१]जुया य ओसहजुया य ।
अब्भंगिय सव्वंगं, [२]सम्मद्दिय [३]मउयहत्थेणं ॥१३४८॥

बहुपुरिसधरियतणुणो, दोहिं उ [४]संडासएहिं समकालं ।
[५]उक्कड्ढिया सलागा, [1]सुदक्खबलवंतपुरिसेहिं ॥१३४९॥ ॥ तिहिं विसेसयं ॥

तासु य [2]ससोणिय[६]यासुं, कड्ढिज्जंतासु वेयणवसेणं ।
मुक्को महंतनाओ, तत्थ [७]महाभइरवं जायं ॥१३५०॥

[८]संरोहणोसहेणं, संरोहित्ता [९]वणे मणे तुट्ठा ।
वंदित्ता खामित्ता, गया गिहं सेट्ठि[3]वेज्जा य ॥१३५१॥

सव्वुक्कोसुवसग्गा, सीयं **कडपूयणा** कयं पढमो ।
बीओ य कालचक्कं, सल्लुद्धरणं इमं तइओ ॥१३५२॥

सत्तमपुहवीए गओ गोवो, मरिऊण सेट्ठिवेज्जा य ।
सुरलोयं सुहभावा, महंतवियणं कुणंता वि ॥१३५३॥

अओ चेव भणियं –

सुहपरिणामो निच्चं, कायव्वो जेण बंधमोक्खाणं ।
सो च्चिय परमं अंगं, [१०]नायं **पुंडरियकंडरिया** ॥१३५४॥

[११]दिव्वा[4]दी उवसग्गा, सम्मं अहियासिया इय जिणेणं ।
पडिकूला अणुकूला, [१२]छउमत्थावत्थकालम्मि ॥१३५५॥

---

१. ०युताः = सहित । २. सम्मृद्य । ३. मृदु० । ४. संदंशकाभ्याम् = संड़सी 'साणसी' । ५. उत्कर्षितौ = बाहर निकालना । ६. सशोणितयोः । ७. महाभैरवम् = अत्यन्त भयंकर । ८. घाव को रुझाने वाली औषधि । ९. व्रणौ = घाव । १०. ज्ञातम् = उदाहरणम् । ११. दिव्याऽऽदीन् । १२. छद्मस्थाऽवस्थाकाले ।

1. अ – सुलक्ख० । 2. अ – सुसो० । 3. विज्जा उ – क. । 4. ०ई – क. ।

छउमत्थकालमाणं पुण इमं -

[1]बारस चेव य वासा, मासा छच्चेव अद्धमासो य ।
वीरवरस्स भगवओ, एसो छउमत्थपरियाओ ॥१३५६॥

(तइआ तवस्सितवोधणतइलोक्कतित्थयर-तत्ततंबतणूतिसिलातरूणतणएण तिक्खतवो तविओ । तम्माणं तु...)

एयम्मि य परियाए, जो [1]अणुचिन्नो तवो जिणवरेणं ।
वीरेण भगवया, तं कहिज्जमाणं निसामेह ॥१३५७॥

नव चउमासियखमणे, छप्पुण[2] दोमासिए अकासी य ।
बारस य मासियाइं, बावत्तरि[3] अद्धमासाइं ॥१३५८॥

एगं पुण छम्मासं, दोन्नि य[4] तेमासियाइं खमणाइं ।
अड्ढाइयमासाइं[5] दो, दोन्नि दिवड्ढमासाइं ॥१३५९॥

दोहिं अहोरत्तेहिं, भद्दप्पडिमं अकासि **वीर**जिणो ।
चउहिं च महाभद्दं, दसहिं पुणो सव्वओभद्दं ॥१३६०॥

पढमाए [6]उस्सग्गो, चउजामा चउदिसिं पि पत्तेयं ।
बीयाए अहोरत्तं, तं चिय [2]तइयाए दिसिदसगे ॥१३६१॥

पंचदिवसेहिं ऊणं, खमणं छम्मासियं च [3]कासी य ।
गोयरचरियसमेयं, घोराभिग्गहजुयं **वीरो** ॥१३६२॥

बारस य एगराइयपडिमाओ अट्ठमेण भत्तेणं ।
चरिमाए रयणीए, काउस्सग्गोववेयाओ ॥१३६३॥

---

१. अनुचीर्णः = आचरितः । २. पुनः । ३. द्वासप्ततिः । ४. अर्धतृतीय० = ढ़ाई । ५. द्वि-अपार्ध० = देढ़ । ६. कायोत्सर्गः ।

1. बारसवासा सड्ढा पक्खो, तवपारणदिणेहि इमो ।
वीरस्स दिक्खदिणसंजुओ य, छउमत्थपरियाओ ॥ - क.

2. ब - तइए दिसा० । 3. काउण - क. ।

दो चेव उ छट्ठ सए, अउणत्तीसे अकासि जिणवसभो ।
[1]कासी य [१]निच्चभत्तं, चउत्थभत्तं च न कयाइ ॥१३६४॥

[२]अउणापन्नं तिन्नि य सयाणि, **वीर**स्स पारणेणं दि[2]णाइं ।
बहुयसयाणि य आसी, [३]उक्कुडुयनिसेज्जपडिमाणं ॥१३६५॥

(कढिणकम्मकयंबकयत्थणकुसलो कोमलकणयकमलकांतिकम्मवीरो केवलणाणेण करग्गहं कारिओ)

एवं तवो गुणरओ, छउ[3]मत्थो विहरिउं अपडिबद्धं ।
घोरं परीसह[४]चमुं, अहियासिंतो **महावीरो** ॥१३६६॥

जंभियगा[4]मम्मि गओ भयवं, **[5]उजुवालिया** नई तत्थ ।
तीए उत्तरकूले, **सामाग**कुडुंबिणो खेत्ते ॥१३६७॥

सालदुमस्स य हेट्ठा, अपाणएणं च छट्ठभत्तेणं ।
उक्कुडुयनिसेज्जाए, ठियस्स [५]आयावमाणस्स ॥१३६८॥

करणमपुव्वं पाविय, सुक्कज्झाणेण मोहपयडीओ ।
अणमिच्छमीससम्मं, [६]अट्ठ नपुंसित्थिवेयं च ॥१३६९॥

हासाइछक्क पुंवेयमह य, कोहाइए य संजलणे ।
खविऊण खीणमोहस्स, [७]गुत्तमणवयणकायस्स ॥१३७०॥

[6]हत्थुत्तरजोगेणं, **वइसाहे सुद्धदसमि**अवरण्हे ।
वीरवरस्स भगवओ, उप्पन्नं केवलं नाणं ॥१३७१॥ ॥ छहिं विसेसयं ॥

---

१. 'एकासणु' । २. एकोनपञ्चाशत् = उनपचास । ३. उत्कटुकनिषद्या० = आसन विशेष में बैठना । ४. ०चमूम् = सैन्य । ५. आतापमानस्य । ६. अप्रत्याख्यानावरण-प्रत्याख्यानावरणाष्टकम् । ७. मनवचनकाया से गुप्त ।

1. ब - आसी - ज.क. । 2. अ - ०ण दिणाणं - क. । 3. ब - ०मत्थं - ज. । 4. ब - ०ममभिगओ । 5. ब - उज्जालि० । 6. ब - हत्थो० ।

अवि य -

घणघाइकम्मरयणीखयम्मि, तमतिमिरनासणो सुहओ ।
कयभवियकमलबोहो, कुतित्थिगहपहविणासयरो[१] ॥१३७२॥

केवलसहस्सकिरणो, उइओ **वीर**स्स भुयणपणयस्स ।
लोयालोयपयासी[१], अत्थमणविवज्जिओ[२] विमलो ॥१३७३॥ ॥ जुम्मं ॥

उप्पन्ने य अणंते नाणे, **वीर**स्स सुरवरा सव्वे ।
चलियासणा सपरिसा, समागया चउनिकाया वि ॥१३७४॥

आणंदनिब्भरमणा सव्वे, ते[२] बहलपुलइयसरीरा ।
वीरस्स कुणंति तहिं, केवलनाणुप्पयामहिमं[३] ॥१३७५॥

(चंदप्पहचित्तचरिय-चरमधम्मचक्कवट्टिचंपयमालाचंचलचंचरीएहिं चउरचउणि-कायेहिं चउत्थोत्तरचरमनाणनाणिचरणम्मि चित्तचेट्ठा चरिया)

तहा हि -

वरिसिउ[४] गंधोदगपुप्फपूरु, अप्फालिउ विविहपयारु तूरु ।
तहिं ताडिय दुंदुहि सुरगणेहिं, जिणनाणमहिमहरिसियमणेहिं ॥१३७६॥

सुरगायण[५] गायहिं गेउ[३] तारु, के वि य पढंति[४] **वीरु** तिहुयणह[५] सारु ।
उक्कुट्ठनाउ[६] केइ वि कुणंति, जय जयहि देव ! केइ वि भणंति ॥१३७७॥

---

१. ०प्रभा० । २. अस्तमयनविवर्जितः । ३. केवलज्ञानोत्पत्तिमहिमानम् ।

४. वर्षितः गन्धोदकपुष्पपूरः, आस्फालितः विविधप्रकारः तूर्यः ।
तत्र ताडिता दुन्दुभिः सुरगणैः, जिनज्ञानमहिमाहर्षितमनोभिः ॥१३७६॥

५. सुरगायना[१]ः गायन्ति गेयं[२] तारं[३], केऽपि च पठन्ति **वीर**ः त्रिभुवने सारः ।
उत्कृष्टनादं केऽपि कुर्वन्ति, जय जय देव ! केऽपि भणन्ति ॥१३७७॥

---

१. गायकः = गवैया । २. गीत । ३. अति ऊँचा स्वर ।

1. ०यासो - क. । 2. सव्वे वि य - क. । 3. किवि पढहिं - क., । 4. अ - ०ढेहि । 5. ०ण सहारु - ज. । 6. उक्किट्ठि० - क. । उक्किट्ठनाओ - ज. ।

गज्जंति[१] केइ[1] नहि उल्ललंति, किंवि[2] मयगलु नावइ[२] गुलुगुलेंति ।
महिवट्टि केइ पुणु पुणु रुलंति, मयमत्त जेम[3] केइ वि घुलंति[३] ॥१३७८॥

अट्टट्टहास[4]सद्दिहिं हसंति, रोमंचु सव्व[5]गत्तेहिं वहंति ।
इय हरिसचेट्ठ बहुविह करेंति, खणि[४] अन्नुणाहिं तहिं संभरंति ॥१३७९॥

नच्चंति पवरकरणंग[५]हार, सुररमणिहिअय[6]घोलंतहार ।
किउ अमरिहिं चारु समोसरणु, तहिं जिणु निविट्ठु गयजरमरणु ॥१३८०॥

॥ प्रज्झटिकावृत्तपञ्चकम् ॥

सक्कोऽवि हट्ठतुट्ठो, काऊण पयाहिणं च तिक्खुत्तो ।
पणमित्तु **महावीरं**, संथुणइ सुगहि[७]रनिग्घोसो ॥१३८१॥

जय जिणेसर ! जय जयाणंद !, जय जीवरक्खणपरम !;
जय समत्थतिहुयणदिवा[6]यर ! जय भीसणभवमहण !, जय अपारकारुन्नसायर !, ।
जय सिवकारण ! सिवनिलय !, **वद्धमाण** ![7]जिणइंद !;
तिहुयणपत्थियकप्पतरु !, जय जय पणयसुरिंद ! ॥१३८२॥

---

१. गर्जन्ति केऽपि नभसि उल्ललन्ति[१], केऽपि मदकलाः[२] इव गुलगुलयन्ति[३] ।
महीपृष्ठे केऽपि पुनः पुनः लुठन्ति, मदमत्ताः इव केऽपि घूर्णन्ते ॥१३७८॥
अट्टहासशब्दैः हसन्ति, रोमाञ्चं सर्वगात्रैः वहन्ति ।
इति हर्षचेष्टाः बहुविधाः कुर्वन्ति, क्षणं अन्यूनाभिः[४] तत्र संभरन्ति ॥१३७९॥
नृत्यन्ति प्रवरकरण-अङ्गहाराः[५], सुररमणीहृदयघोलयद्धाराः ।
कारितं अमरैः चारु समवसरणं, तत्र जिनो निविष्टो गतजरामरणः ॥१३८०॥

२. इव । ३. घूमना, भटकना । ४. केवलज्ञान प्राप्ति के समय पर । ५. शरीर के अवयवो के विक्षेप, हावभाव । ६. रगड़ना, घिसना । ७. सुगंभीरनिर्घोषः ।

---

१. कुदना । २. हाथी । ३. हाथी की आवाज़ । ४. पूर्ण भक्ति से उस क्षण को = महोत्सव को भर देते हैं । ५. अथवा 'अङ्गहारं' क्रिया वि. करके अर्थ करें ।

1. केवि - ज. । 2. के वि - ज. । 3. ब - जेम्व । 4. ०सद्दं - प. । 5. सव्वअंगेहिं - ज.क. । 6. अ - ०कर । 7. जिणयंद - ज., जिणचंद - क. ।

सरयससहरसरिसमुहसोह !, **सिद्धत्थ**निवकुलतिलय !;
वरविसिट्ठकंदुट्टलोयण !, चंदद्धसमभालयल ! परमरूवभुवणप्पमोयण ! ।
तुह दंसण मिच्छत्तहर, पावगंठिसुपयंडु !;
भवसयसंचिउ मज्झु गउ, गुणसायर ! सयखंडु ॥१३८३॥

करणतक्करपसरनिट्ठवण !, मणमल्लवग्गणमहण !;
चउकसायवणगहणमोडण ! कंदप्पकुंजरदमण ! मोहमूलभववल्लितोडण ! ।
निकल ! निरंजण ! अजरमर ! कयकम्मिंधणदाह !;
सरणु असरणह मज्झु तुहुं, **वद्धमाण**जिणनाह ! ॥१३८४॥

बहुपरीसहसमरसंघट्टसोडीर !, दुद्धरधरियबंभचेरगुरुभर !;
सुलक्खण ! अइदुक्करतवियतव !, खंतिसूर ! तियलोक्करक्खण ! ।
जगबंधव ! पइ विन्नवइं, करि महु एक्कु पसाउ;
भवसायरि निवडंतु, मइं लहु उद्धरहि वराउ ॥१३८५॥ ॥ वस्तु खञ्जा वा वृत्तचतुष्कम् ॥

---

१. शरदशशधरसदृशमुखशोभ ! । २. (दे.) नीलकमल । ३. पापग्रन्थिसुप्रचण्डं तव दर्शनम् । ४. मम पापं गतम् । ५. शतखण्डम् ।

६. करणतस्करप्रसरनिष्ठापक !, मनोमल्लवल्गनमथक !;
चतुःकषायवनगहनमोटक ! कन्दर्पकुञ्जरदमक ! मोहमूलभववेल्लीत्रोटक ! ।
निष्कल ! निरञ्जन ! अजरामर ! कृतकर्मेन्धनदाह !;
शरणः अशरणस्य मम त्वं, **वर्धमान**जिननाथ ! ॥१३८४॥

७. बहुपरीषहसमरसंघट्टशौण्डीर !, दुर्धरधृतब्रह्मचर्यगुरुभार !;
सुलक्षण ! अतिदुष्करतपिततपः ! क्षान्तिशूर ! त्रिलोकरक्षक ! ।
जगद्बान्धव ! पदे विज्ञप्तिं, कुरु मह्यं एकं प्रसादम्;
भवसागरे निपतन्तं, मां शीघ्रं उद्धर वराकम् ॥१३८५॥

---

१. इन्द्रियरूपी चौर । २. ०निष्ठापक ! = समाप्त करने वाले । ३. मनोरूपी मल्ल के तुफान को नाश करने वाले । ४. ०मोड़ने वाले । ५. पापरहित ।

1. ०ससिहर० - ज.क. । 2. ब - ०सट्टकंदोट्ट० - ज.क. । 3. ब - ०रूय० । 4. दंसणि - ज.क. । 5. ब - मज्झ - ज.क. । 6. ब - ०वेल्लि० । 7. अ - ०दाहु । 8. ब - मज्झ । 9. ब - ०दुत्तर० । 10. तेलो० - ज.क. । 11. ब - जय० । 12. विन्नवउं - ज.क. । 13. मुहु - ज. ।

एत्थंतरम्मि य -

(संसारसायरसमुत्तारणसमत्थ-सव्वसत्तसमाणपासि-समयासायरसमीवे केसिमवि सत्ताण समत्ताइलाहो ण समुप्पन्नो)

पव्वज्जाइ[1]गुणाणं पडिवत्तिखमो, न कोइ इह अत्थि ।
इय नाउं खणमेगं, [2]केवलमहिमं सुरेहिं कयं ॥१३८६॥

[1]जीयं ति अणु[3]भवेउं, सुरकयवरकणयकमलनवगम्मि ।
चरणे विनिक्खिवंतो, चउविहसुरसंघपरियरिओ ॥१३८७॥

गंतूण जोयणाइं बारस, रयणीए संठिओ **वीरो** ।
नयरीए **अपावा**ए, **महसेण**वणम्मि उज्जाणे ॥१३८८॥ ॥ तिहिं विसेसयं ॥

तत्थ त्थि **सोमिलज्जो** त्ति, माहणो [4]जस्स [२]जागकालम्मि ।
बहवे [३]दियाइलोया, समागया जन्नवाडम्मि ॥१३८९॥

एगंते य [5]विवित्ते, उत्तरपासम्मि [४]जन्नवाडस्स ।
तो देवदाणविंदा, करिंति महिमं जिणिंदस्स ॥१३९०॥

(सक्खा समयासमूह-समुत्तिण्णसंसारसायर-समाहिसमिद्ध-संसिज्झसयल-समिद्धिसिद्धत्थसुअसक्कारकए सुरेहिं संरइयं सुंदरसमोसरणं)

देवेहिं समोसरणं, पुणोऽवि रइयं [५]समंतओ [६]रम्मं ।
तं चिय संखेवेणं, वन्निज्जंतं निसामेह ॥१३९१॥

तणकट्ठसक्कराई, केइ सुरा [७]आहुणित्तु [6]वाएणं ।
जोयणमेत्तं भूमिं, [7]सोहेंति समंतओ पढमं ॥१३९२॥

---

१. जीतम् = आचार । २. यज्ञ० । ३. द्विजादि० । ४. यज्ञशालायाः उत्तरदिग्भागे । ५. समन्ततः । ६. रम्यम् । ७. आ+धू = आधूय = दूर करना ।

1. ०गुणेणं - क. । 2. केवलि० - ज.क. । 3. अणुभावेउं - ज.क. । 4. तस्स - क. । 5. विचित्ते - ज.क. । 6. आहणित्तु - ज. । 7. ब - सोहिंति ।

काऊणमब्भवद्दलमन्ने[१] गंधोदगं तु वासंति ।
वरसुरहिपरिमलुग्गारमणहरं महियमहिरेणुं[२] ॥१३९३॥

अन्ने उ जच्चकंचणसिलबद्धतलं कुणंति धरणियलं ।
आयंसतलं[३] व समं, भासुरमणिरयणविच्छुरियं[४] ॥१३९४॥

कप्पसुरा[५] पायारं, पढमं विरयंति जच्चरयणमयं ।
वरमणिकविसीसजुयं, कमतणुयं[६] मणहरुत्तुंगं[१] ॥१३९५॥

उत्तत्तकणयघडियं, **जोइसवासी** कुणंति बीयं तु ।
रयणकविसीसयट्ठं[२], किरणेहिं निबद्धसुरचावं[३] ॥१३९६॥

उज्जलकलहोयसिलाविणिम्मियं, पवरकणयकविसीसं ।
तइयं बहिपायारं, **भवणवइ**सुरा उ विरयंति ॥१३९७॥

उत्तुंगरयणतोरणरेहिल्ला[४], वरपडायसोहिल्ला[४] ।
उभओ पासे पउमप्पिहाणवरकलसपरिकलिया ॥१३९८॥

वररूवसालिभंजियसयकलिया[९] मयरमुहविराइल्ला[४] ।
सरयब्भखंडपंडुर-हारावलिसारछत्तजुया ॥१३९९॥

विप्फुरियकिरणबहुभेयरयणरइया मणोहरायारा ।
एक्केक्के पायारे, चउरो चउरो कया दारा ॥१४००॥ ॥ तिहिं विसेसयं ॥

कालागरु[१०][५] हरियंदणकप्पूरतुरुक्ककुंदुरुक्केहिं[११][१२] ।
महमहमहंतगंधा, विरयंति[६] य धूयघडियाओ[७] ॥१४०१॥

---

१. (दे.) बादल । २. शान्त की गई है...। ३. आदर्श० = दर्पण । ४. ०विच्छुरित० = खचित, व्याप्त । ५. वैमानिकाः । ६. क्रमतनुकम् = ऊपर ऊपर पतला । ७. इन्द्रधनुष । ८. ०शोभिता । ९. ०शालिभञ्जिका० = पुत्तलिका । १०. कालागरु = सुगन्धि द्रव्य विशेष, जो धूप वि. में होता हैं । ११. ०तुरुष्क० = लोबान । १२. ०कुन्दुरुक० = सुगन्धि द्रव्य । १३. महमहंत० = अति विशिष्ट अथवा प्रसरत्० ।

1. ०हरं तुंगं - क. । 2. ब - ०यन्नुं । 3. अ - ०वरचावं । 4. ब - कणयथंभविच्छिन्ना । 5. अ - ०गुरु० । 6. वियरंति - ज. । 7. धूव० - क. ।

चउसोयाणपरंपरकलिया[१], वरकमलविमलजलपुन्ना ।
विरयंति सुरा वावी, पुव्वाइदिसासु चत्तारि ॥१४०२॥

तो पढमबीयसालंतरम्मि, पुव्वुत्तरम्मि[२] दिसिभाए ।
विरयंति देवछंदं, विस्सामत्थं[३] जिणवरस्स ॥१४०३॥

सीहासणं सपीढं, चीरुक्खं[४] देवछंदयं चमरे ।
छत्तत्तयमिच्चाई, **वंतर**देवा विउव्वंति ॥१४०४॥

रइयम्मि समोसरणे, एवं सूरोदए[५] जिणो एइ ।
दोहिं पउमेहिं पाए, ठवयंतो मग्गओ[६] सत्त ॥१४०५॥

आगच्छंति य पउमा, तेसिं जं जं अपच्छिमं होइ ।
तं तं अग्गे गंतुं, पयठाणे ठाइ **वीर**स्स ॥१४०६॥ ॥ जुम्मं ॥

अह पुव्वद्दारेणं पविसिय, काउं पयाहिणं **वीरो** ।
[1]पणमिय तित्थं, उवविसइ आसणे, पुव्वदिसिसमुहो ॥१४०७॥

सेसदिसासुं अमरा, जिणपडिरूवाइं तिन्नि उ कुणंति ।
तेसिं पि तयणुरूवं, जिणप्पभावा हवइ रूवं ॥१४०८॥

उवविट्ठस्स भगवओ, अट्ठ वि रायंति पाडिहेराइं[७] ।
कहमाणाइं तिहुयणसामित्तं, जिणवरिंदस्स ॥१४०९॥

(पडिहयपापपब्भार-पच्छाइयपरपहाव-पताडियपबलपउरपच्चवायपडल-पजंपिअपुण्णपघोसपहुस्स पाडिहेरपयडणं)

तहा हि –

---

१. ०सोपान० = 'पगथीया' । २. ईशान दिशा । ३. विश्रामार्थम् । ४. चैत्यवृक्षम् । ५. सूर्योदये । ६. मार्गतः = पीछे । ७. प्रातिहार्याणि ।

1. नमिउं – क. ।

तुंगवट्टुलमसिणथुडनालु, वेरुलियसमबहलदलु, घणविसालसमसालसालिउ;
मयरंदलालसभसलपिज्जमाणकुसुमोहमालिउ ।
वीरह उयरि **असोयतरु,** रविकरपहहरु भाइ;
पवणंदोलपवालकरु, हरिसेणं नच्चइ नाइ ॥१४१०॥★

बिंटसंठियसुरहिगंधड्ढ, जलथलयतरुसंभवहं, पंचवन्नु सुरगणविमुक्कय;
आजाणुउस्सेह तहिं, गंधलुद्धभमरहं अचुक्किय ।
सहइ समंता जिणवरह, वियसिय**कुसुमहं वुट्ठि;**
जिणदंसणि उप्फुल्लमुह, नाइ पयासइ तुट्ठि ॥१४११॥

हरिसवियसियवयणणयणेहिं, हरिणेहिं सुय अइरसिण, विजियसजल-
जलवाहगज्जिय, अन्नाणतिमिरंतरियभुवणभावपायडणसज्जिय ।

---

१. तुङ्गवर्तुलमसृणस्थुडनालः, वैडूर्यसमबहलदलः, घनविशालसमशालशाली;
मकरन्दलाल-सभ्रमरपीयमानकुसुमौघमालितः ।
वीरस्योपरि **अशोकतरुः** रविकरपथहरः भाति;
पवनाऽऽन्दोलप्रवालकरः हर्षेण नृत्यति इव ॥१४१०॥

२. (दे.) स्कन्ध । ३. वैडूर्यरत्न के समान सुन्दर बहुत सारे पत्ते वाला । ४. एक समान शाखा से सुशोभित । ५. लम्पट । ६. ०मालितः = शोभित । ७. ०प्रवाल० = नूतनाङ्कुर = किसलय ।

८. वृन्तसंस्थितसुरभिगन्धाढ्यानां, जलस्थलतरुसंभवनां, पञ्चवर्णानां, सुरगणविमुक्तानां;
आजानु-उत्सेधानां तत्र, गन्धलुब्धभ्रमराणां अति-उत्कृष्टानाम् ।
शोभते समन्तात् जिनवराणां, विकसित**कुसुमानां वृष्टिः;**
जिनदर्शने उत्फुल्लमुखानां, इव प्रकाशते तुष्टिः ॥१४११॥

९. अखण्डितानाम् अथवा अत्युत्कृष्टानाम् = सर्व श्रेष्ठ । १०. विकसित ।

११. हर्षविकसितवदननयनैः, हिरणैः श्रुता अतिरसिता;
विजितसजलजलवाहगर्जिता, अज्ञानतिमिरान्तरितभुवनभावप्रकटनसज्जिता ।

१२. अतिरसित० = अत्यन्त रसवाली, शब्द । १३. व्यवहित, आक्रान्त ।

---

१. वृन्त भाग नीचे रहता है वैसे । २. कवि की कल्पना है कि परमात्मा के दर्शन करने में विकसित मुखवाले (खीले हुए) पुष्पो की तुष्टि = आनंद प्रगट होता है ।

1. ब - तुंगुवट्टुलु० । 2. ब - ०मोहु० । 3. भाइ - ज. । 4. अ - ०यरु० । 5. ०वन्न - ज. 6. ०सेण - ज. ।

जिणझुणि[1] पसरइ दसदिसिहिं[1], तिहुयणजणियपणामा;
नं गुरुतमनिद्दोवहयजणपडिबोहणकामा ॥१४१२॥

खीरसायरलहरिडिंडीरपंडुरयरसरयससिकिरणसरिसचिहुरोहसुंदरु,
माणिक्कमंडियपवरकणयडंडुरंजियपुरंदरु ।
सुरवइकरकमलट्ठिउं, **चामरजुयलु** ढलेइ;
नावइ गुणगणु मुइयमणु, पुणु पुणु जिणह नमेइ ॥१४१३॥

उच्चकंचणघडिउ मणिचित्तु, उत्तुंगु वित्थरपवरु नमियमज्झु,
पेरंतउद्धुरु बहुचित्तविच्छुरियतणु, पडिमरूववरसीहसिंधुरु ।
सीहासणु तिहुयणगुरुहु, सोहइ निरुवमकंति ।
नं रूवंतरि **मेरु**गिरि, धारइ तणु गुरुभत्ति ॥१४१४॥

---

१. **जिनध्वनिः** प्रसरति दशदिक्षु, त्रिभुवनजनितप्रणामा;
ननु गुरुतमोनिद्रा-उपहतजनप्रतिबोधनकामा ॥१४१२॥

२. महामोहनिद्रा० ।

३. क्षीरसागरलहरीडिण्डीरपाण्डुरतरशरदशशिकिरणसदृशचिकुरौघसुन्दरः;
माणिक्यमण्डितप्रवरकनकदण्डरञ्जितपुरन्दरः ।
सुरपतिकरकमलस्थितः, **चामरयुगलः** ढलति;
ज्ञायते गुणगणः मुदितमनाः पुनः पुनः जिनस्य नमति ॥१४१३॥

४. तरंग । ५. समुद्र फेन । ६. ०चिकुर० = केश, बाल । ७. ज्ञायते, इव ।

८. जात्यकाञ्चनघटितः मणिचित्रः, उत्तुङ्गः विस्तारप्रवरः नतमध्यः;
प्रेरन्तोद्धुरः बहुचित्रविच्छुरिततनुः, अप्रतिमरूपवरसिंहसिन्धुरः ।
सिंहासनः त्रिभुवनगुरोः, शोभते निरूपमकान्तिः;
ननु रूपवान् **मेरू**गिरिः धारयति तनूः गुरुभक्तिः ॥१४१४॥

९. जिसका बीच का भाग थोड़ा झुका हुआ है । १०. पर्यन्तोद्धुरः = अन्त भाग से ऊँचा । जैसे अभी खुरशी में बीच का भाग थोड़ा गहरा होता है और आसपास की सतह थोड़ी ऊँची होती है तद्वत् । ११. ०चित्र० = विलक्षण, चितकबरा ।

---

१. सोने के सिंहासन को साक्षात् मेरु की उपमा दी हैं । भक्तिवन्त मेरूपर्वत सिंहासन के नाम से शरीर को धारण करता हैं = साक्षात् हाजिर हैं ।

1. ०सिहु - ज.क. । 2. ०सरिसबहुकेससुंदरु - ज. । 3. अ - ०दंड । 4. ब - ०ट्ठियं - ज, ठियउं - क. । 5. ब - ०गण । 6. अ - ०मणु । 7. अ - ०रूय० - क. ।

अब्भवज्जियगयणि[1] रविकिरणनियरो व्व परिभासुरह;
विप्फुरंततणुकिरणरइयह[2], नहविवर[3]परिसक्किरह[2] ।
तिमिरनियरमहिवलयमइयह[3], पसरंतह[4] **भामंडलह, वीरह** निरुवमसोह ।
जं[5] जिणसेवहिं पट्ठविय, दिणयरिनियकिरणोह ॥१४१५॥

पउरपडिरवभरियनहविवरबहिरीकयजणसवणगुरुचमक्कउ[6]क्कन्नवयणेहिं;
आयन्निय पसुगणेहिं, कंपमाणतणुतरलनयणेहिं ।
सुरदुंदुहि[7] वज्जंत, तहिं गुरुनिग्घोस महंत;
हक्कारइ[4] जिणपासि, किर सुरनर दूरि चरंत ॥१४१६॥

थूलनितू[5]लविमलविलुलंत[8]मुत्तावलिमालियह[9], सरयसोममंडलरव[10]न्नह[6];
मणिखंडपरिमंडियह, हरतु सारगिरिसरिसवन्नह[7][11] ।

अभ्रवर्जितगगने रविकिरणनिकरः इव परिभासुरः;
विस्फुरत्तनुकिरणरचितः, नभोविवरपरिसर्पी ।
तिमिरनिकरमहीवलयमतिगतः, प्रसरन् **भामण्डलः वीरस्य** निरूपमशोभः;
यद् जिनसेवायां प्रस्थापितः दिनकरनिजकिरणौघः ॥१४१५॥

प्रचुरप्रतिरवभृतनभोविवरबधिरीकृतजनश्रवणगुरुचमत्कृतकर्णवदनैः;
आकर्णिता पशुगणैः, कम्पमानतनुतरलनयनैः ।
सुरदुन्दुभिः वाद्यमाना, तत्र गुरुनिर्घोषा महन्ती;
आकारयति जिनपार्श्वे, किल सुरनरान् दूरे चरन्तान् ॥१४१६॥

स्थूलनिस्तुलविमलविलुलन्मुक्तावलिमालितः शरदसौम्यमण्डलरम्यः;
मणिखण्डपरिमण्डितः, हरतु सारगिरिसदृशवर्णः ।

---

१. स्फूरायमान सुकुमार = कोमल किरणो से निर्मित एवं संपूर्ण आकाश में फैला हुआ । २. ०परिसर्पी अथवा = परिष्वष्किंत० = आकाशस्थित । ३. ०अतिगतः = दूर होना । ४. आ + कारय् = बुलाना । ५. निरूपम, असाधारण । ६. (दे.) रम्य । ७. मेरू पर्वत ।

1. ०गयणरवि० – ज. । 2. ब – ०यहं । 3. ०विविरपरिसज्जिरह – क. । 4. अ – ०पह, ०महियह – ज. । 5. अ – नं जिकसेरूहिं । 6. अ – ०कन्न० । 7. ब – वज्जंति । 8. अ – ०नेत्तुल०, ०नित्तल० – ज. । 9. अ – ०विललुंत० । 10. अ – ०लुर० । 11. ब – ०न्नहं – क. ।

तिहुयणपहु**छत्तत्तयह** सोहइ उज्जलकंति;
नं सुरसिंधुपवाहनियफेणह संठिय पंति ॥१४१७॥

अन्नं च –

रुइरं च **धम्मचक्कं,** [१]णवहरियविरायमाणकरपसरं ।
नीलमणिरयणमइयं, रेहइ पुरओ जिणिंदस्स ॥१४१८॥

माणिक्क[२]जडियकंचणडंडो, [३]सिंजंतकिंकिणिकलावो ।
[४]छज्जइ य **महिंदझओ,** [1]पुरट्ठिओ भुवणनाहस्स ॥१४१९॥

(बुद्धपहुणा बुज्झवियाओ बंधुरबारसपरिसाओ)

[५]सीहासणोवविट्ठे जिणम्मि, परिसाउ ठंति सट्ठाणे ।
बारस उ मज्झयारे, पढमे पायारवलयस्स ॥१४२०॥

भणियं च –

[६]संजयवेमाणित्थीसंजइ, पुव्वेण पविसिउं **वीरं** ।
काउं पयाहिणं [७]पुव्वदक्खिणे, ठंति दिसिभाए ॥१४२१॥

जोइसियभवणवंतरदेवीओ, दक्खिणेण [९]पविसित्तु ।
चिट्ठंति [८]दक्खिणावरदिसिम्मि, तिगुणं जिणं काउं ॥१४२२॥

अवरेण भवणवासी, वंतरजोइससुरा य अइगंतुं ।
[१०]अवरो[2]त्तरदिसिभागे, ठंति जिणं ते नमंसित्ता ॥१४२३॥

त्रिभुवनप्रभु**छत्रत्रयः** शोभते उज्ज्वलकान्तिः;
ननु सुरसिन्धुप्रवाहनिजफेनस्य संस्थिता पङ्क्तिः ॥१४१७॥

१. नवहरित० = नूतन हरे रंग के कारण शोभायमान किरणो का समूह वाला । २. ०जटित० = जड़ित, संलग्न । ३. अस्पष्ट आवाज़ करती । ४. राजते । ५. सींहासने उपविष्टे जिने प्राकारवलयस्य प्रथमे मध्यभागे = अन्तराले द्वादश पर्षदः स्वस्थाने तिष्ठन्ति, इति अन्वयः । ६. संयताः, वैमानिकस्त्रियः, संयत्यः । ७. अग्नि दिशा । ८. नैऋत्य दिशा । ९. त्रिप्रदक्षिणाम् । १०. वायव्य दिशा ।

1. अ – ०धओ ज. । 2. ब – ०वरुत्त०, अविरुत्त – ज. ।

समहिंदा कप्पसुरा, राया नरनारिओ [1]उइन्नेणं ।
पविसंति पणमिऊणं, ठंति य [2]पुव्वुत्तरदिसाए ॥१४२४॥

अवि य -

इंतं महिड्ढियं पणिवयंति, ठियमवि वयंति [1]पणमंता ।
न वि [3]जंतणा ण विकहा, न परोप्परमच्छरो न भयं ॥१४२५॥★

बीयम्मि होंति तिरिया, तइए [2]पायारमंतरे जाणा ।
पायारबहिं तिरिया वि, केवला मणुयमिस्सा वा ॥१४२६॥★

[4]सच्चवइसमणुगाए, जुगवं [6]चिय सव्वसंसयहराए ।
[5]अमयरससाविणीए, जोयणनीहारिणीए य ॥१४२७॥

वाणीए मणहराए, कयकिच्चोऽवि हु कहेइ भव्वाणं ।
तित्थयरनामकम्मोदएण, धम्मं **महावीरो** ॥१४२८॥ ॥ जुम्मं ॥

(धम्मधुराधारणधुरंधर-धीइधीर-धीरिमधारण-धंसियाधम्मांधयार-धम्मधूत्त-धरिसणधणंजय-धम्मपुरिसस्स धम्मकहा)

धम्मत्थकाममोक्खा, पुरिसत्था एत्थ होंति चत्तारि ।
धम्माओ जेण सेसा हवंति, ता तम्मि जइयव्वं ॥१४२९॥

पुरिसेणं बुद्धिमया, सो पुण दुविहो भवे समासेणं ।
पढमो [3]य समणधम्मो, सावगधम्मो भवे बीओ ॥१४३०॥ ॥ जुम्मं ॥

पव्वज्जापडिवत्ती, आरंभपरिग्गहाण चाएण ।
विहियाणुट्ठाण[4]पवित्तिओ य, धम्मो जईणेसो ॥१४३१॥

---

१. उत्तर दिशा । २. इशान दिशा । ३. यन्त्रणा = पीड़ा । ४. 'पोत पोतानी भाषाने अनुसरती' अथवा सत्यवाणी का अनुसरण करने वाली । ५. अमृतरसस्रावि‌णी = अमृत रस को झराने वाली । ६. ०निर्हारिण्या = फैलने वाली ।

1. पणमित्ता - क. । 2. ब - पागा० - क. । 3. ब - उ - ज.क. । 4. अ - ०परिग्गहो य, पडिवत्तिओ य - क. ।

[1]सो पुण [१]दुप्परियल्लो[2], काउरिसाणं विवेगरहियाणं ।
दुद्धरपंचमहव्वयधारणमित्थं[3] जओ [4]भणियं ॥१४३२॥

राईभोयणविरई, असन्निहीसंचओ अकिंचत्तं ।
पिंडो उग्गमउप्पायणेसणाए सया सुद्धो ॥१४३३॥

पंचसु तहा [5]समिईसु, गुत्तीसुं तीसु तवविहाणे य ।
उज्जमियव्वं निच्चं, ममत्तभावो य न [6]कहिं पि ॥१४३४॥

[२]असिणाणं जाजीवं, भूमीसयणं च तं पि जामदुगं ।
केसुद्धरणं [३]परजायणं च, अवमाणसहणं च ॥१४३५॥

गुरुकुलवासो सययं, खुहापिवासाइ[7]या य जेयव्वा ।
बावीसं च परीसहसत्तू, दिव्वाइउव[8]सग्गा ॥१४३६॥

सीलंगसहस्साणं भारो, अट्ठारसण्ह वोढव्वो ।
[४]लद्धावलद्धभिक्खावित्ती, तह उत्तमा खंती ॥१४३७॥

जओ –

खंती गुणाण मूलं, विराहए कोहणो अहिंसाई ।
दहइ तवसंजमं पि य, जहेव [५]मंडुक्किकयाखमओ ॥१४३८॥

बंभाईवयधरणं, तवकरणमरन्नवासवसणं च ।
[६]सज्झाओ सज्झाणं, [७]अहलं चिय खंतिरहियस्स ॥१४३९॥

[८]मद्दवमज्जवनिल्लोभया य, विणओ य अपडिकम्मत्तं ।
मासाइया य पडिमा, पव्वज्जा दुक्करा एवं ॥१४४०॥

---

१. दुष्प्रतिपाल्यः । २. अस्नानम् । ३. परपार्श्वे याचनम् । ४. लब्ध = आदर से प्राप्त, अपलब्ध = अनादर से मिली हुई । ५. चंडकौशिकपूर्वभवसाधुः । ६. स्वाध्यायम्, सद्ध्यानम् । ७. अफलम् = विफलम् । ८. मार्दवम्, आर्जव ।

1. ब – सा – क. । 2. ब – दुपरियल्ला – क. । 3. ब – ०मेत्थं । 4. अवस्सं – क. । 5. समीसुं – क. । 6. कहिंचि – क. । 7. ब – ०याइ जे० । 8. अ – ०सग्गो ।

[१]निसिउग्गखग्गधारा[1]चंकमणं, दुक्करं जहा होइ ।
लोहमयचणय[२]चावणमग्गिसिहाजालपाणं वा ॥१४४१॥

सायरबाहुत्तरणं, **मंदर**गिरितोलणं तुलाए य ।
चक्कट्ठगमज्झेणं, [३]धीउल्लियविंधणं चेव ॥१४४२॥

अहवाऽवि जहा [४]गयणे, **गंगा**पडिसोयगमणं[५]मइकट्ठं ।
तह साहसरहिएणं, पव्वज्जा दुक्करा काउं ॥१४४३॥ ॥ तिहिं विसेसयं ॥

भणियं च -

[६]वुब्भंति नाम भारा, ते च्चिय वुब्भंति वीसमंतेहिं ।
सीलभरो वोढव्वो, जावज्जीवं अविस्सामो ॥१४४४॥

अओ य -

विसयसुहपिवासाए, अहवा बंधवजणाणुरागेणं ।
[७]अचइं[2]तो बावीसं, परीसहे दुस्सहे सहिउं ॥१४४५॥

[८]जइ न तरेज्ज, विसुद्धं काउं अइदुक्करं समणधम्मं ।
[९]समणोवासगधम्मं, तो कुज्जा सत्तिओ मइमं ॥१४४६॥ ॥ जुम्मं ॥

(सहसा सिद्धसरूवसिरिसमप्पणसहाइया-साहुसाहणासाहणासमत्थसत्तस्स समणोवासगसरूवसावयत्तसाहणं साहियं समणवरवीरेण)

पढइ पढमं च [१०]ताइं, सुणेइ जाणेइ गुरुसमीवम्मि ।
तत्तो गिण्हइ पालइ, उवओगपरो सया कालं ॥१४४७॥

---

१. निशित० = तीक्ष्ण । २. ०चर्वणम् = चबाना । ३. (दे.) पुतली । ४. गमने = तरणे । ५. ०अतिकष्टम् । ६. उह्यन्ते = संसार में जो भार को वहन करना होता है, वह भार तो विश्राम करते करते वहन किया जा सकता है । ७. अशक्नुवन् । ८. यदि न शक्नुयात् । ९. श्रावकधर्मम् । १०. तानि व्रतानि भङ्गानि वा ।

1. संक० - क. । 2. अचयंतो - ज. ।

[1]दुविहं तिविहेण पढमो, दुविहं दुविहेण बीयओ होइ ।
दुविहं एगविहेणं, एगविहं [2]चेव तिविहेणं ॥१४४८॥

एगविहं दुविहेणं, एक्केक्कविहेण छट्ठओ होइ ।
उत्तरगुणसत्तमओ, अविरओ चेव अट्ठमओ ॥१४४९॥

सो य इमो –

पंच य अणुव्वयाइं, गुणव्वयाइं च होंति तिन्नेव ।
सिक्खावयाइं चउरो, सावगधम्मो दुवालसहा ॥१४५०॥

[1]थूल[2]पणाविरई[3], दिसिवयभोगवयणत्थदंडो य ।
[3]समइयदे[4]सावगासियपोसहतिहिसंविभागो य ॥१४५१॥

वोसिरइ जहासत्तिं, थूलं संक[5]प्पओ निरवराहं ।
जीवं पडुच्च हिंसं, जयणं च करेइ [6]सुहुमेसु ॥१४५२॥

थूलमुसावायवए, कन्नालियमाइपंचभेयं च ।
गुरुसंकिलेसहेऊ, असच्चववयणं विवज्जेइ ॥१४५३॥

थूलमदत्तादाणं, सचित्ताच्चित्तमीसविसयं च ।
जं इह [7]अणत्थहेऊ, तं वज्जे जावजीवाए ॥१४५४॥

[8]वज्जइ थूलमबंभं, परनारितिरिक्खिदेविविसयं च ।
होइ व [1]सदारनिरओ, अहव सदारं पि वज्जेइ ॥१४५५॥

धणधन्नखेत्तवत्थू, रुप्पसुवन्ने तहेव कुवियम्मि ।
दुपए चउप्पयम्मि य, अपरिमियपरिग्गहं वज्जे ॥१४५६॥

---

१. स्थूलपञ्चाऽऽश्रवविरतिः = पांच अणुव्रत । २. ०अनर्थदण्डः । ३. सामायिक० । ४. अतिथिसंविभागः । ५. स्वदारानिरतः ।

1. दुविह तिविहेण पढमओ – क. । 2. ब – चेय । 3. ०पणासवावि० ज.क. । 4. ब – ०सवगा० । 5. अ – ०प्पए, संकप्पियं – क. । 6. सुहमे – ज.क. । 7. पण० – क., पिडण० – ज. । 8. वज्जे – क. ।

गणिमं[१] धरिमं[२] मेज्जं[३,१], पारिच्छिज्जं[४] धणं चउद्धा उ ।
एयम्मि य पत्तेयं, परिमाणं होइ कायव्वं ॥१४५७॥★

धन्ने सालिजवाई, खेत्तं सेक्काइ[५], वत्थु घरहट्टा[६] ।
रुप्पसुवन्नं दुविहं, घडियमघडियं च विन्नेयं ॥१४५८॥

कुवियं कडाहिमाई[७], विविहं गिहवक्खरं[८] वियाणाहि ।
दासससगडाइ[२,९] दुपयं, गोमाइ चउप्पयं नेयं ॥१४५९॥

उड्ढमहे तिरियम्मि य[३], दिसिपरिमाणं तु[४] सावओ[१०] कुज्जा ।
परओ सव्वजियाणं, अभओ दिन्नो भवइ एवं ॥१४६०॥

उवभोगे परिभोगे, भोयणओ कम्मओ य वयगहणं ।
भोयणओ मंसाई, कम्मओ[५] पन्नरसकम्मा ॥१४६१॥

मंसमहुमज्जमक्खणपंचुंबरिणंतकायबहुबीयं ।
वज्जेइ राइभत्तं, अमुणियफलकरगमाईयं[११] ॥१४६२॥

सच्चित्तदव्वविगईवत्थविलेवणविभूसणं मल्लं ।
तंबोलण्हाणमब्भंगणं च, असणाइ नियमेइ ॥१४६३॥

इंगालीवणसाडीभाडीफोडीसु, कम्मलक्खाए ।
दंते रसविसकेसे, वाणिज्जं जंतपीलणयं ॥१४६४॥★

णिल्लंछणकम्मदवग्गिदाणसरदहतलायसोसणया[६] ।
असईपोसं च तहा, जहसत्तीए य नियमेज्जा ॥१४६५॥★

---

१. गणिमम् = गिना जा सके वह, जायफल वि. । २. धरिमम् = तोला जा सके वह, कंकु वि. । ३. जिसका नाप किया जाता है, तेल वि. । ४. परिच्छेद्यम् = निर्णय, परीक्षा = जिसका क्रय विक्रय परिच्छेद पर निर्भर होता है । रत्न, वस्त्र आदि । ५. सेकाऽऽदयः = 'सेतु-केतु' । ६. गृहहट्टाः । ७. कटाह० = लोहे का पात्र । ८. गृहोपस्करं = गृहसामग्री । ९. शकटाऽऽदयः । १०. श्रावकः । ११. ०करकः = करा, ओले ।

1. मेयं - क. । 2. एतत् श्लोकपश्चिमार्धमनन्तरलोकस्य च पूर्वार्धं नास्ति -ज.क. । 3. ०यं पि य - ज. । 4. च - ज. । 5. कम्मयओ - क. । 6. ०छणं कम्मं - क. ।

इंगालविक्कयं, इट्ठवायकुंभारलोहगाराणं ।
ठट्ठारभाडिभुंजाइयाण, वित्तिं विवज्जेइ ॥१४६६॥

वणच्छेयाओ वणविक्कएण, फलफुल्लपन्नपणिएण ।
आरामविक्कएण य, जा वित्ती तं विवज्जेज्जा ॥१४६७॥

सगडाणं घडणघडावणेण, तव्विक्कएण जा वित्ती ।
तं नियमे सगडाई, भाडयकम्मं च वज्जेइ ॥१४६८॥

नियमेइ उड्डुसिलकुट्टयत्तहलखडणमाइणा वित्ती ।
सव्वेसिमागराणं, ववहारे वोसिरेइ सया ॥१४६९॥

नहदंतचमरचम्मं, कच्छूरियपूइए ससुत्तीणं ।
मुत्ताहलसंखवराडयाण, जहसत्तिओ नियमे ॥१४७०॥

वोसिरइ लक्खजउलोहमाइमहुमज्जलोणियाईणं ।
विससत्थमुसलजंत-णिउक्खलपभिईण य वणिज्जं ॥१४७१॥

मणुयाण तिरिक्खाण य, केसवणिज्जम्मि विक्कयं नियमे ।
जंताण वाहणं, घंचियत्ततिलतेल्लियं वज्जे ॥१४७२॥

---

१. इष्टकापाकः = ईटो को पकाना । २. (दे.) ताम्र-पित्तल आदि के बर्तन बनाने वाला । ३. ०भाटीभुञ्जकादीनाम् = किराये पर गाड़ी देने का कार्य, चने वि. भुंजने का कार्य । ४. वनच्छेदात् । ५. फलपुष्पपर्णपण्येन = इन सब का व्यापार । ६. नियमयेत् । ७. (दे.) कुँआ आदि को खोदने वाला । ८. ०शिलाकुट्टकम्० । ९. हलखडनम् = हल से खेती करना । १०. आकराणाम् । ११. पशु के बाल, चमड़ी । १२. कच्छुरित० = दुर्गन्ध से व्याप्त, जीवो से व्याप्त । १३. लाक्षाजतुलोहमादिमधुमद्यलवणमादिकानाम् । १४. विषशस्त्रमुशलयन्त्र-उदूखल-प्रभृतीनाम् । १५. (दे.) गोलाकार पदार्थ । १६. (दे.) तेली, घंचियत्व = 'घांची' १७. तिलतैलिकं = तिल आदि के तेल को बेचनेवाला ।

1. ०पत्त० - क. । 2. ०इ - क. । 3. अ - भाडिय० । 4. उन्न० - ज. । 5. अ - ०तवह० । 6. ०खणण० - ज. । 7. ससत्तीणं - ज. । 8. ब - ०डइयाइ, ०वराडयाय - क. । 9. ०जंतूणि - क. । 10. अ - ०पभीण ।

णिल्लंछणं च वसभाइयाण, दाणं च पावकम्माणं ।
दवदाणं सरदहसोसणं च, वज्जे असइपोसं ॥१४७३॥

चउहा अणत्थदंडो, अवझाणपमायहिंसदाणे य ।
पावुवएसम्मि तहा, तत्थावज्झाणविसयम्मि ॥१४७४॥

अजरामरत्तदेसाइघाइविज्जाहरिंदकिड्डाइ ।
धाउव्वायाइ, असंबद्धज्झाणं विवज्जेइ ॥१४७५॥

वज्जइ पमायचेट्ठं, परेसि खग्गाइहिंसगप्पिणणं ।
करिसणनिवसेवाई, पावुवएसं च नो देइ ॥१४७६॥

सावज्जजोगवज्जणरूवं, सामाइयं उभयकालं ।
बहुसो वा वि करेज्जा, समभावावट्ठिओ सड्ढो ॥१४७७॥

भणियं च –

जो समो सव्वभूएसु, तसेसुं थावरेसु य ।
तस्स सामाइयं होइ, इइ केवलिभासियं ॥१४७८॥

सामाइयम्मि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा ।
एएण कारणेणं, बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥१४७९॥

देसावगासियं पुण, दिसापमाणस्स जावकहियस्स ।
पइदिणमाइसमासो, सव्ववयाणं च संखिवणं ॥१४८०॥

आहारपोसहो तह, सरीरसक्कारबंभवावारे ।
अट्ठमिचउद्दसीसुं, चउभेयं पोसहं कुज्जा ॥१४८१॥

---

१. अपध्यान, दुर्ध्यान । २. मैं अजरामर कैसे बनुं ?, पूरे देश को मार डालो, विद्याधर-इन्द्र वि. की क्रीड़ा की सोच एवं सुवर्णरस वि. धातुवाद की सोच यह सब असंबद्ध ध्यान हैं । ३. अप्पिणण = अर्पणम् = हिंसोपयोगिसाधनार्पणम् । ४. प्रतिदिनमात्रासमासः = रोज प्रमाण का संक्षेप करना ।

1. अ – ०या य, ०इघाय – ज.क. । 2. ०कीडा य – क. । 3. ०हिंसणप्पि० – क. । 4. आव० – क. । 5. निक्खवणं – क. । 6. अ – चउहेमं – ज. ।

चरमवए असणाई, साहूणं देज्ज निज्जरट्ठाए ।
देसद्धसद्धसक्कारकमजुयं[१], मोक्खहेउ त्ति ॥१४८२॥

भणियं च –

निव्वाणं खलु कज्जं, नाणाइतिगं तु कारणं तस्स ।
निव्वाणकारणाणं तु, कारणं होइ आहारो ॥१४८३॥

पुव्वोइयधम्मस्स य, संमत्तं मूलकारणमिमस्स ।
मूलाईउवमाए, जं एयं वन्नियं समए ॥१४८४॥

तहा हि –

मूलं व दुमस्स इमं, सुप्पायारनगरस्स[२] दारं[1] व ।
पासायस्स व पीढं, निहि व्व रयणाणमिच्चाइ ॥१४८५॥

देवत्तणपडिवत्ती जिणम्मि, साहुसु गुरुत्तपडिवत्ती ।
तत्तत्थसद्दहाणं[३] च, होइ संमत्तमेयं तु ॥१४८६॥

एगविह दुविह तिविहं, चउहा पंचविह दसविहं सम्मं ।
मोक्खतरुबीयभूयं, तत्तत्था पुण इमे होंति ॥१४८७॥

जीवाजीवा पुन्नं, पावासवसंवरो य निज्जरणा ।
बंधो मोक्खो य तहा, नव तत्ता होंति नायव्वा ॥१४८८॥

जीवा दुविहा, संसारिणो य मुत्ता य, णवविहा[४] भविणो ।
पुढविदगागणिवाऊवणस्सइ, चउव्विहा य तसा ॥१४८९॥

अहवा दुविहा तिविहा, चउहा पंचविह छव्विहा चेव ।
नवविह चउदस भेया, बत्तीसविहा उ ते भणिया ॥१४९०॥

---

१. देश-अद्धा-श्रद्धा-सत्कार-क्रमयुतम् = देशोचित, कालोचित, श्रद्धा और सत्कार सहित यथाक्रम से दान देना चाहिए । यह आचार मोक्ष का कारण बनता है । २. सुप्राकारस्य । ३. तत्त्वार्थश्रद्धानम् । ४. नवविधाः भविनः = संसारिणः नवविधाः भवन्ति इत्यर्थः ।

1. ब – ०र व्व ।

पाणा पज्जत्तीओ, तणुमाणं आउयं च कायठिई ।
लेसा जोगुवओगा, एएसिं[1] जाणियव्वाइं ॥१४९१॥

तित्थअतित्थे सिद्धा, तित्थयरा तह अतित्थकरसिद्धा ।
सयपत्तेयविबुद्धा[2], बुहबोहियसन्नगिहिलिंगे[3] ॥१४९२॥

इत्थीपुरिसनपुंसा, एगाणेगसिद्धाइभेएणं ।
मुत्ता अणेगभेया, असरीरा परमसुहजुत्ता ॥१४९३॥

धम्माधम्मागासा, गइठिइअवगाहलक्खणा होंति ।
तह पुग्गलत्थिकाओ, कालो अ इमे **अजीवा** उ ॥१४९४॥

सायं उच्चागोयं, सत्ततीसा य नामपगडीओ ।
तिन्नि य आऊणि, तहा बायालं **पुन्न**पगडीओ ॥१४९५॥

णाणंतरायदसगं, दंसण[4] नव, मोहपयडिछव्वीसं ।
णामस्स चउत्तीसं, तिण्हं एक्केक्क **पावाओ** ॥१४९६॥

अव्वयकसायइंदियकिरियाजोगा य **आसवा**[1] होइ ।
एएसि निरोहो पुण, बोधव्वो **संवरो** चेव ॥१४९७॥

अणसणभेयाइ तवो बारसहा, तेण **निज्जरा** होइ ।
भद्दमहाभद्दाई[2] अहव, तवोऽणेगहा भणिओ ॥१४९८॥

पयइठिईअणुभागप्पएसभेया, चउव्विहो **बंधो** ।
नीसेसकम्मविगमो, **मोक्खो** इय नव उ तत्ताणि ॥१४९९॥

चउसद्दहण-तिलिंगं, अट्ठविहायारसुपरिसुद्धं च ।
पंचविहलक्खणजुयं, संमत्तं छव्विहागारं ॥१५००॥

---

१. एतैः भङ्गैः जीवानां भेदाः ज्ञातव्याः । २. स्वयंबुद्धाः, प्रत्येकबुद्धाः । ३. स्वलिङ्ग-अन्यलिङ्ग-गृहिलिङ्ग । ४. त्रयाणामेकैका पापप्रकृतिः = वेदनीय, आयुष्य, एवं गोत्र में एक एक पाप प्रकृति है ।

1. आसवो - ज.क. । 2. कणगावलीभेयाई - ज. ।

परमत्थसंथवो वा, सुदिट्ठपरमत्थसेवणा वा वि ।
वावन्नकुदंसणवज्जणा य, संमत्तसद्दहणा ॥१५०१॥

सुस्सूस धम्मराओ, गुरुदेवाणं जहासमाहीए ।
वेयावच्चे नियमो, सम्मद्दिट्ठिस्स लिंगाइं ॥१५०२॥

निस्संकिय निक्कंखिय, निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी य ।
उववूह थिरीकरणे, वच्छल्ल पभावणे अट्ठ ॥१५०३॥★

उवसमसंवेगोऽवि य, निव्वेगोऽवि य तहाणुकंप त्ति ।
[1]अत्थिक्कं चेव तहा, संमत्ते लक्खणा पंच ॥१५०४॥

[2]छिंडी रायभियोगो, गणाभियोगो बलाभियोगो य ।
देवाभियोग गुरुनिग्गहो य, कंतारवित्ती य ॥१५०५॥

[3]खीणेसुवसंतेसु य, खीणुवसंतेसु अहव [4]णंतेसु ।
मिच्छत्तम्मि य जीवो, सम्मत्तं लहइ न उ इहरा ॥१५०६॥

जह चउरंगं सेन्नं, नायगरहियं न साहए कज्जं ।
तह नाणाइगुणजुओ, अदंसणो साहइ न मोक्खं ॥१५०७॥

जओ भणियं –

[5]कुसमयसुईण महणं, सम्मत्तं जस्स सुट्ठियं हियए ।
तस्स जगुज्जोयगरं, नाणं चरणं च भवमहणं ॥१५०८॥

सम्मत्तम्मि उ लद्धे, ठइयाइं णरयतिरियदाराइं ।
दिव्वाणि माणुसाणि य, मोक्खसुहाइं [6]सहीणाइं ॥१५०९॥

वंदणमाइ न कप्पइ, इह [7]लोइयदेवलोइयगुरूणं ।
लोइयतवो य, लोइयतित्थेसुं ण्हाणदाणाइं ॥१५१०॥

---

१. आस्तिक्यम् । २. (दे.) छिद्र, अपवाद । ३. अनन्तानुबन्धी एवं मिथ्यात्व के क्षयोपशम, उपशम या क्षय से जीव सम्यक्त्व को प्राप्त करता है । ४. अनन्तानुबन्धिषु । ५. कुसमयश्रुतीनां मथनम् । ६. स्वाधीनानि । ७. लौकिकदेव-लौकिकगुरूभ्यः ।

सम्मत्तमूलमेयं धम्मं, नाउं समत्थसुहहेउं[१] ।
भो भव्वा ! जहसत्ती, इमम्मि चेवुज्जमं कुणह ॥१५११॥

एत्थंतरम्मि जागो, वित्थरओ **सोमिलेण** पारद्धो ।
उवज्झाया एगारस, वेयाइविऊ[२] तहिं पत्ता ॥१५१२॥

भणियं च –

पढमेत्थ **इंदभूई**, बीओ[१] पुण होइ **अग्गिभूइ** त्ति ।
तइए य **वाउभूई**, तओ **वियत्ते सुहम्मे** य ॥१५१३॥

मंडिय-मोरियपुत्ते, अकंपिए चेव **अयलभाया**[२] य ।
मेयज्जे य **पभासे** य, गणहरा होंति **वीरस्स** ॥१५१४॥

एत्थाइल्ला[३] तिन्नि त्रि, सहोयरा अन्नमन्नमणुरत्ता ।
मंडियमोरियपुत्ता य, दोऽवि एक्कोयरसमुत्था ॥१५१५॥

सव्वे पंडियमन्नू, सव्वे चिय[३] जच्चमाहणा[४] एए ।
पढमेल्लुयसंघयणा[५], समचउरंसा य संठाणा ॥१५१६॥

उक्किट्ठिनायमुहले[६], अप्फालियदुंदुही[४] नहाउ सुरे ।
आगच्छंते दट्ठुं, परितुट्ठो भणइ जन्नजणो ॥१५१७॥

जन्ने अहो ! सुजट्ठं[७], सक्खं चिय जं सुरा इह समिंति ।
इय तेसि वयंताणं[८], देवा जन्नं[९] अइक्कमिउं ॥१५१८॥

गच्छंति जिणसगासे, ताहे जंपंति ते विलक्खमणा ।
को एस इहायाओ, कुणंति महिमं सुरा जस्स ? ॥१५१९॥ ॥ जुम्मं ॥

---

१. समस्त० । २. वेदादिविदः । ३. अत्र आदिमाः । ४. जात्यब्राह्मणाः = उत्तम, कुलीन, श्रेष्ठ ब्राह्मण । ५. (दे.) प्रथम० । ६. उत्कृष्टनादमुखरान् । ७. सुइष्टम् = अच्छी तरह से यजन किया । ८. वदताम् । ९. यज्ञमण्डपम् ।

1. अ – बीए । 2. ब – ०याए । 3. ब – च्चिय । 4. उक्कुट्ठि० – क. ।

रुप्पाइसालतियगाइया उ, रिद्धी विउव्विया एसा ।
जाणियपरमत्थेहिं, अन्नेहिं[1] य तेसि परिकहियं ॥१५२०॥

सव्वन्नुसव्वदंसी, तित्थयरो एत्थ आगओ **वीरो** ।
तिहुयणमहिओ, सव्वे सुरासुरा किंकरा जस्स ॥१५२१॥

(गहणगुरुअगव्वगहगारविअ-गोयमगोत्तगहणगव्वगव्विट्ठ-गाढगव्वगयखंधगय-गोरंगगुरूगोयमस्स गुंजणं)

तं सोऊण दियवरो, **गोतम**गोत्तो उ **इंदभूइ** त्ति ।
गुरुअमरिसगहविहुरियचित्तो[1], चिंतइ अहम्माणी[2] ॥१५२२॥

मोत्तूण ममं लोगो, किं धावइ एस तस्स पामूलं[3] ? ।
अन्नोऽवि[4] जाणइ, मए ठिअम्मि कत्तोचियं[3] एयं ? ॥१५२३॥

वच्चेज्ज व मुक्खजणो[4], देवा कहणेण[5] विम्हयं नीया ? ।
वंदंति संथुणंति य, जेणं सव्वन्नुबुद्धीए ॥१५२४॥

अहवा जारिसओ च्चिय, सो णाणी तारिसा सुरा तेऽवि ।
अणुसरिसो संजोगो, गामनडाणं[6] च मोक्खाणं ॥१५२५॥

काउं हयप्पयावं, पुरओ देवाण दाणवाणं च[5] ।
नासेहं[7] नीसेसं, खणेण सवन्नुवायं से ॥१५२६॥

इय वोत्तूणं पत्तो, दट्ठुं तियलोयपरिवुडं **वीरं** ।
चउतीसाइसयणिहिं[8], ससंकिओ सो ठिओ पुरओ ॥१५२७॥

---

१. गुरु-अमर्षग्रहविधुरितचित्तः । २. अहम्मानिन् = अभिमानी । ३. पादमूलम् । ४. मयि स्थिते अन्योऽपि जानाति = केवली भवति, कुतः उचितमेतद् ? अथवा कुतस्त्यम् = मेरी हाजरी में ये कहाँ से आया ? । ५. कथमनेन । ६. ग्रामनटानां च मूर्खाणाम् = गाँव में नृत्य करने वाले कुछ सीखे हुए नहीं होते है, बेढंग ही नृत्य करते है । देखने वाले गाँव के लोग भी मूर्ख जैसे होते है तो उनको वह नृत्य भी अच्छा ही लगता है । यह दोनों का अनुरूप संयोग है । यथा 'अहो ! रूपं, अहो ! ध्वनिः' । ७. नाशयिष्ये । ८. ०अतिशयानां निधिम् ।

1. ब - वि । 2. अहं नाणी - ज. । 3. अ - ०च्चियं, ब - ०च्चयं । 4. ब - मोक्ख० । 5. अ - वा ।

उक्तं च -

साक्षाद्दृष्ट्वेन्द्रभूतिः [१]समवसृतिभुवोभूषणस्यान्तिकस्थान्,
आयातान्नङ्गनाभिः सह वरविबुधान्[1], पञ्चवर्णैर्विमानैः ।
रूपं चाश्चर्यभूतं झगिति दशदिशो, भासयन् स्फारकान्त्या;
तस्थौ क्षोभात्सशङ्को मुनिपतिपुरतो, हा ! किमेतत् किमेतत् ? ॥१५२८॥

[2]आभासिओ जिणेणं, जाइजरामरणविप्पमुक्केणं ।
नामेण य गोत्तेण य, सवन्नू [3]सव्वदंसी य ॥१५२९॥

हे **इंदभूइ** ! गोयम !, सागयमुत्ते जिणेण चिंतेइ ।
नामं पि मे वियाणइ, अहवा को मं न [4]याणेइ ? ॥१५३०॥

जइ किर[5] हिययगयं मे, संसयमन्नेज्ज[२] अहव छिन्नेज्ज[6] ।
ता होज्ज विम्हओ मे, इय चिंतंतो पुणो भणिओ ॥१५३१॥

(जिअजम्मजीवणांत-जगुत्तमजाणगजिणवरेण जहोचियजुत्तिजुत्तजंपणेण जाणावियं जाणं जेट्ठजण्णियस्स)

किं अत्थि जिओ देहे, उयाहु नत्थि त्ति संसओ तुज्झं ।
वेयपए य भणित्ता, जीवो अत्थि त्ति तुह बुद्धी ॥१५३२॥

वेयपयं च इमं - "**स वै अयं आत्मा ज्ञानमयः ।**"

[३]पच्चक्खाइपमाणागम्मो, [४]मुत्तत्तणाइभावाओ ।
जं [५]ता नत्थि त्ति मई, ण य जुत्ता तुज्झ सा काउं ॥१५३३॥

चेयन्नमणुहविज्जइ जीवंततणुम्मि, तं च जीवगुणो ।
देहस्स गुणो णेयं, [६]भूयाणमचेयणत्तणओ ॥१५३४॥

---

१. समवसरण भूमि के भूषण = तीर्थंकर । २. मनुते = मन्वीत = जानना । ३. प्रत्यक्षादि-प्रमाणाऽगम्यः । ४. अमूर्तत्वादिभावतः अथवा मूर्तत्व-अतिभावात् । ५. तद् (अ.) उस कारण से आत्मा अथवा तावत् । ६. भूतानामचेतनत्वतः = पाँच भूत अचेतन है ।

1. ०धानां - ज. । 2. आभट्ठो - ज.क. । 3. सव्वदरिसीणं - ज.क. । 4. ब - याणाइ - ज. । 5. ब - जइ वा हि० । 6. अ - ०ज्जा वा ।

सुहदुहचेयणधारणमरणाणुस्सरणमाइ[१] न घडेइ ।
अणुहवसिद्धं जीवाभावे[1], ता अत्थि सो नियमा ॥१५३५॥

एवं जिणेण कहिए, सव्वन्नू चेव एस इय मुणिउं ।
हिट्ठमणो संविग्गो, पडिबुद्धो वंदए **वीरं** ॥१५३६॥

किं च -

छिन्नम्मि संसयम्मी, जिणेण जरमरणविप्पमुक्केणं ।
सो समणो पव्वइओ, पंचहिं सह[२] खंडियसएहिं[2] ॥१५३७॥

तं पव्वइयं सोउं, **अग्गिभूई** वि अमरिसावन्नो ।
चिंतइ भायरमाणेमि[३], तं पराजित्तु समणमहं ॥१५३८॥

सो छलवाई अहविंदजालिओ[४], छलइ सत्थचित्तजणं[५] ।
इहरा उ[3] **इंदभूइं**, वाए को तरइ जेउं जे[६] ? ॥१५३९॥

ता सो जइ मम पक्खं, जाणिस्सइ अह निरागरिस्सइ[७] य ।
ताहं[८] पि तस्स सीसो, इय भणिय गओ जिणसयासे ॥१५४०॥

णामेण य गोत्तेण य, जिणेण आभासिओ ससंकमणो[4] ।
भणिओ य विम्हिओ सो, कम्मे तुह संसओ अत्थि ॥१५४१॥

पच्चक्खाइअगम्मं कम्मं, मुत्तं च कह इमं जीवे ।
बज्झइ अमुत्तरूवे, उवघायाणुग्गहा य कहं ? ॥१५४२॥

मुत्तेण अमुत्तस्स उ, कम्मेण जियस्स सो य नो जुत्तो ।
पच्चक्खं चिय कम्मं, अइसयनाणीण मज्झं व्व[5] ॥१५४३॥ ॥ जुम्मं ॥

---

१. ०परलोकगमने अनुसरणम् इति भावः । २. खण्डिक० = छात्र । ३. ०आनयामि । ४. अथवा इन्द्रजालिकः । ५. स्वस्थचित्तजनम् । ६. पादपूर्ति में प्रयुक्त अव्यय । ७. निराकरिष्यति । ८. ततः अहम् ।

1. अ - ०वो भा० । 2. ब - सय - ज.क. । 3. ब - हु । 4. असं० - ज. । 5. च - क. ।

तुज्झाणुमाणगम्मं, इह जियवइचित्तदंसणाओ[1] उ ।
कम्माओ च्चिय, सुहदुहविकलेयरमाइभावाओ ॥१५४४॥

दीसइ य मुत्तघडमाइणा[2] उ, जोगो अमुत्तगयणस्स ।
नाणे[1] सुरोसहेहिं[3] य, उवघायाणुग्गहामुत्ते ॥१५४५ ॥

वेदेऽप्युक्तम् – "**पुण्यः पुण्येन कर्मणा पापः पापेन कर्मणा ।**"

छिन्नम्मि संसयम्मी, जिणेण जरमरणविप्पमुक्केणं ।
सो समणो पव्वइओ, पंचहिं सह खंडियसएहिं ॥१५४६॥

ते पव्वइए सोउं, **वाउब्भूई** वि चिंतए एवं ।
सव्वन्नू चेव इमो, भयवं ता वंदिमो गंतुं ॥१५४७॥

सीसत्तं पडिवन्ना, संपइ **इंदग्गिभूइणो** जस्स ।
तिहुयणकयप्पणामो, स महाभागोऽभिगमणिज्जो[4] ॥१५४८॥

ता तस्स वंदणनमंसणाइणा, होमि गयपावो[2]ऽहं ।
वोच्छिन्नसंसओ[5] सो[3], वोत्तुं[6][4] पत्तो जिणसयासं ॥१५४९॥

तो रूवरिद्धिदंसणपरितुट्ठो, सो जिणेण आभट्ठो[7] ।
तज्जीवतस्सरीरं ति, संसओ तुज्झ हिययम्मि ॥१५५०॥

पच्चक्खाइअगहणा, जीवो नत्थेत्थ देहवइरित्तो ।
जलबुब्बुओ[5] व्व सलिले, देहे संमुच्छई एसो ॥१५५१॥

इमं च न जुत्तं –

देसेण स पच्चक्खो, जीवगुणाणं अवग्गहाईणं ।
पच्चक्खत्तणओ च्चिय, तहाणुमाणेण वि स गम्मो ॥१५५२॥

---

१. जीववैचित्र्यदर्शनतः । २. मूर्तघटमादिना । ३. सुरौषधिभिः । ४. आदर करने योग्य । ५. व्युच्छिन्न० = वीरस्य सर्वज्ञत्वे विनष्टसंशयः । ६. उक्त्वा = स्वशिष्यान् इति कथयित्वा । ७. आभाषितः ।

1. नाणा – क. । 2. पूय० – ज. । 3. वा – क. । 4. घेत्तुं – ज. । 5. ०ब्बुउ – क. ।

देहिंदियाइरित्तो आया, जं इंदियाण विगमेऽवि ।
इंदियदिट्ठे अत्थे, सुमरइ मरणं च पावेइ ॥१५५३॥

वेदेऽप्युक्तम् – "**सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष ब्रह्मचर्येण ।**
नित्यं ज्योतिर्मयो हि शुद्धोऽयं पश्यन्ति [1]धीरा यतयः संयतात्मानः ॥"

छिन्नम्मि संसयम्मी, जिणेण जरमरणविप्पमुक्केणं ।
सो समणो [1]पव्वइओ, पंचहिं सह खंडियसएहिं ॥१५५४॥

तयणंतरं **वियत्तो,** आगच्छइ [2]भगवओ सयासम्मि ।
आभासिओ जिणेणं, भूएसुं संसओ तुज्झ ॥१५५५॥

भूयाणि ण विज्जंति उ, तप्पडिवत्ती [2]दुचंदरूवं ति ।
तो [3]सव्वसुन्नया इह जुत्ता, वेए जओ भणियं ॥१५५६॥

"**स्वप्नोपमं वै सकलं**" [4]इमं च अजुत्तं, [3]जओ –

[4]सुमिणासुमिणविभागो, गंधव्वपुरेयराइभेओ य ।
सव्वपसिद्धो जुज्जइ न, सव्वसुन्नत्तपक्खम्मि ॥१५५७॥

[5]अधुवत्तमसारत्तणकहणेणं, वेयवयणमेयं तु ।
संसारियवत्थूसुं, पडिबंधनिवारणपहाणं ॥१५५८॥

न उ सव्वसुन्नभावस्स, साहगं [5]किंचि अत्थि अन्नं पि ।
वेयपयं भूयाणं, सत्तासंसूयगं तं च ॥१५५९॥

"**पृथिवी वै देवता, आपो वै देवता, तेजो वै देवता, वायुर्वै देवता**" इत्यादि ।

---

१. प्रव्रजितः । २. द्विचन्द्ररूपम् = जैसे पानी वाले बर्तन में दो चन्द्र दिखाई पड़ते हैं । मगर वस्तुतः द्विचन्द्र हैं हीं नहीं । तद्वत् इस दुनिया में भूत = जीव नहीं हैं । ३. सर्वशून्यता । ४. पूर्वश्लोकोक्तम् । ५. अध्रुवत्वमसारत्वकथनेन ।

1. वीरा० – ज.क. । 2. ब – भय० । 3. अ – मओ । 4. सुविणेसु वि न विभागो – क., सुविणविभागो – ज. । 5. अ – किं च ।

छिन्नम्मि संसयम्मी, जिणेण जरमरणविप्पमुक्केणं ।
सो समणो पव्वइओ, पंचहिं सह खंडियसएहिं ॥१५६०॥

(सव्वण्णूसव्वदंसि-सव्वसत्तसमभावसमहिट्ठिअसरीरस्स सोहम्मसुरिंदसक्कसेवा-सुणिरवेक्खस्स साभाविअसोमसुवण्णसमसुसरीरस्स सुहम्मसामिसामिस्स सुप-रूवणा)

तो एइ **सुहम्म**दिओ, विम्हियचित्तो उ जिणसयासम्मि ।
आभासिओ[1] जिणेणं, आमंतेऊण नामेणं ॥१५६१॥

जो जारिसो इह भवे, सो तारिसो[2] उ परभवे होइ ।
इय संसओ तुह मणे, वेयपयाणत्थभंतीए[1] ॥१५६२॥

वेयपयं च - "**पुरुषो वै पुरुषत्वमश्नुते पशवः पशुत्वमश्नुवन्ति** ।" इत्यादि ।

अन्नं च तुज्झ बुद्धी, कज्जं किर कारणस्स अणुरूवं ।
ण जणेइ सालिबीयं[3] जं, कइय[4] वि गोहुमंकूरं ॥१५६३॥

इमं च न जुत्तं, जओ -

कारणरूवं कज्जं, णेगंतो सिंगओ[2]ऽवि होइ सरो ।
जायइ तह गोलोमा[5], विलोमओ एत्थ दुव्व त्ति ॥१५६४॥★

जं पुरिसो पुरिसत्तं पावइ, इच्चाइ भासियं वेए[6] ।
तं मद्दवज्जवाईगुणजुत्तो, सो तयं लहइ ॥१५६५॥

मायाईगुणजुत्ता पुणो, पसुत्तं लहंति पसुणोऽवि ।
न उ नियमेणं, जं इह कम्मा[3]वेक्खा भवुप्पत्ती ॥१५६६॥

---

१. ०अनर्थभ्रान्त्या । २. शृङ्गात् सिंगाया: अपि शरम् = सिंग में से = तृण विशेष अथवा शृङ्ग से तीर बनता है । ३. **कर्मा**पेक्षया ।

1. ब - ०हासि० । 2. तारिसओ य - ज.क. । 3. ब - ०बीजं । 4. अ - कयाइ यवि । 5. गोलोमंतो एत्थ दुव्वारि - ज. । 6. अ - चेवं ।

कम्मं [1]च चित्तरूवं, **ता कारणरूवमेव कज्जं** ति ।
एयं पि जुज्जइ च्चिय, [1]किंचन्नं वेयवयणं ति ॥१५६७॥

''**शृगालो वै एष जायते यः सपुरीषो दह्यते ।**'' इत्यादि ।

छिन्नम्मि संसयम्मी, जिणेण जरमरणविप्पमुक्केणं ।
सो समणो पव्वइओ, पंचहिं सह खंडियसएहिं ॥१५६८॥

तयणंतरमागच्छइ, **मंडियपुत्तो** जिणस्स पासम्मि ।
भणिओ जिणेण भो !, तुह संदेहो बंधमोक्खेसु ॥१५६९॥

विरुद्धवेदपदनिबन्धनश्चायं, [2]तानि चामूनि -

''**स एष विगुणो विभुर्न बध्यते संसरति[2] वा मुच्यते मोचयति वा ॥**'' इत्यादि ।

[3]मुत्ते[3] पडुच्च एयं वेयपयं, भासियं न उ भवत्थे ।
बंधाइअ[4]भावम्मि य, दिक्खाइ निरत्थयं सव्वं ॥१५७०॥

किं च -

> ''[5]**न हि वै सशरीरस्य प्रियाप्रिययोरपहतिरस्ति,**
> **अशरीरं वा वसन्तं प्रियाप्रिये न स्पृशतः ॥**''

इच्चाइवेयवक्काओ, बंधमोक्खा[6]इ होंति विन्नेया ।
इय छिन्नसंसओ सो, [4]अद्धुट्ठसएहिं पव्वइओ ॥१५७१॥

वीरजिणस्स सयासे, **मोरियपुत्तो** य तो समागच्छे ।
भणिओ य भगवया सो, देवेसुं संसओ तुज्झ ॥१५७२॥

''**को जानाति मायोपमान् गीर्वाणानिन्द्रयमवरुणकुबेरान्**'' ।

---

१. किञ्चाऽन्यद् । २. संशयः । ३. मुक्तान् । ४. ३५० शिष्य ।

1. विचित्त० - क. । 2. संसरंति - क. । 3. अ - मन्ने । 4. ०अभवंमि - ज. । 5. तहवि ससरीरस्य - ज.क. । 6. ब - ०मोक्खा उ होइ विन्नेयो ।

इच्चाइ वेयवक्का, तुज्झ सुराभावपच्चओ जाओ ।
सो य ण जुत्तो जम्हा, अणिच्चयावेयगं[1] चेव ॥१५७३॥

मायोवमत्तमेयं[2], देवाणं न उ अभावसंकहगं ।
पच्चक्खं पेच्छ इमे देवा, मम पासमल्लीणा ॥१५७४॥

किं च – "**स एष यज्ञायुधी[2] यजमानोऽञ्जसा स्वर्गं लोकं गच्छति ।**"

एयम्मि य वेयपए, सुरसत्ता सूइया तुह मयम्मि[3] ।
इय छिन्नसंसओ सो, अद्धट्ठसएहिं[4] पव्वइओ ॥१५७५॥

आगच्छइ जिणपासे, **अकंपिओ** सो जिणेण आलत्तो ।
तुह नारएसु जाओ, संदेहो वेयवयणाओ ॥१५७६॥

तं च इमं – "**न हि वै प्रेत्य नरके नारकाः सन्ति ।**"

एयं च वेयवयणं, सुहकम्माणो न नारया होंति ।
एयत्थसाहगं चिय, न य तदभावं पसाहेइ ॥१५७७॥

केवलिणो पच्चक्खा, जुत्तीगम्मा भवारिसाणमिमे[5] ।
जे वेइंति पगिट्ठं पावफलं, ते उ नेरइया[3] ॥१५७८॥

किं च – "**नारको वै एष जायते यः शूद्रान्नमश्नाति ।**"

वेउत्तीए[6] इमाए, विज्जंते नारय त्ति बोधव्वं[4] ।
वोच्छिन्नसंसओ सो, पव्वइओ तिहिं सएहिं समं ॥१५७९॥

संपइ य **अयलभाया,** आगच्छइ भयवओ समीवम्मि ।
भो ! तुज्झ पुन्नपावेसु संसओ, इय जिणो आह ॥१५८०॥

---

१. अनित्यताऽऽवेदकं एतद् वेदवाक्यम् । २. मायोपमत्वमेतद् । ३. मते = इष्ट, दर्शन । ४. अर्धचतुर्थ० = साढ़े तीन । ५. भवादृशानाम् । ६. वेदोक्त्या ।

1. ब – चेय । 2. स एव जज्ञासुधी यजमानो क्षणसा – ज. । 3. ब – नारइया । 4. अ – वेउव्वं ।

सो य न जुत्तो जम्हा, पच्चक्खं चेव दीसए पयडं ।
पुन्नस्स य पावस्स य, फलमिह लोगागमपसिद्धं ॥१५८१॥

सुकुलुप्पत्ती रूवं विहवो, भोगा पहुत्तमारोग्गं ।
एमाई पुन्नफलं, विवरीयं होइ पावस्स ॥१५८२॥

सुइवयणं[1] एत्थत्थे, जह **ग्गिभूइ**म्मि तह उ दट्ठव्वं ।
इय छिन्नसंसओ सो, पव्वइओ तिहिं सएहिं समं ॥१५८३॥

मेयज्जो आगच्छइ जिणपामूलम्मि, तं जिणो भणइ ।
मेअज्ज ! संसओ तुह, परलोग[2]त्थित्त[3]णे अत्थि ॥१५८४॥

सो य ण जुत्तो जम्हा, आया चेयन्नलिंगओ सिद्धो ।
सो परलोगं वच्चइ, सोवज्जियकम्म[3]जोएणं[3] ॥१५८५॥

परलोगस्साभावे, दिक्खातवदाणजन्नपूयाई ।
सव्वं निरत्थयमिहं, इमे सुरा पेच्छ परलोगो ॥१५८६॥

किं च –

शूद्रान्नेनोदरस्थेन, यो वा इह म्रियते द्विजः ।
श्वानयोनिशतं गत्वा, चाण्डालेषु प्रजायते ॥१५८७॥

परलोगो मन्निज्जइ, एयाओ चेव समय[4]वक्काओ ।
इय छिन्नसंसओ सो, पव्वइओ तिहिं सएहिं समं ॥१५८८॥

तयणंतरं **पहासो**, सव्व[5]जयपहासयस्स पासम्मि ।
आगच्छइ कुसलमणो, जिणेण आभासिओ सोऽवि ॥१५८९॥

निव्वाणे संदेहो तुह हियए, सो य होइ नो जुत्तो ।
जं निव्वाणं मोक्खो, सो पुण नी[4]सेसकम्माणं ॥१५९०॥

---

१. श्रुतिवचनम् । २. परलोक-अस्तित्वे । ३. स्वोपार्जितकर्मयोगेन । ४. शास्त्रवचसा । ५. सर्वजगत्प्रभासकस्य ।

1. अ – सुति० । 2. ०लोगत्थिणो – क. । 3. ०दोसेणं – क. । 4. निस्सेस० – क. ।

विगमो भन्नइ एत्थं, कम्मं पुण वेयसिद्धमन्नं च ।
हीणुत्त[1]माइजीवावत्थावइचित्तदंसणओ ॥१५९१॥ ॥ जुम्मं ॥

नाणतवदंसणेहिं य, सुद्धेहिं होइ कम्मविगमो उ ।
इय छिन्नसंसओ सो, पव्वइओ तिहिं सएहिं समं ॥१५९२॥

उत्तमसंवेगपरा ते, उत्तमचरणकरणसंपन्ना ।
सव्वे उत्तम[2]वन्ना, जयपहुणो गणहरा जाया ॥१५९३॥

उप्पत्तिविगमधुव[3]पयतियम्मि, कहिए जिणेण तो तेहिं ।
सव्वेहिं [4]विणियबुद्धीहिं, बारस अंगाइं रइयाइं ॥१५९४॥

आयारो सूयगडो ठाणं, समवाय भगवई चेव ।
णायाधम्मकहाओ, सत्तमयमुवासगदसाओ ॥१५९५॥

तह अंतगडदसाओ, अणुत्तरोवाइयाण य दसाओ ।
पण्हावागरणं तह, एक्कारसमं विवागसुयं ॥१५९६॥ ॥ जुम्मं ॥

एक्कारस अंगाइं, दुगुणादुगुणाइं गंथमाणेणं ।
बारसमं पुण अंगं, चउदसपुव्वेहिं नायव्वं ॥१५९७॥

ताणि य इमाणि –

उप्पायपुव्वमग्गेणियं च, तइयं च वीरियं पुव्वं ।
अत्थीनत्थिपवायं, तत्तो नाणप्पवायं च ॥१५९८॥

सच्चप्पवायपुव्वं, तत्तो आयप्पवायपुव्वं च ।
कम्मप्पवायपुव्वं, पच्चक्खाणं भवे नवमं ॥१५९९॥

विज्जाअणुप्पवायं, अवज्झ[5]या उ बारसं पुव्वं ।
तत्तो किरि[6]याविसालं पुव्वं, तह बिंदुसारं च ॥१६००॥

---

१. हीन-उत्तमादिजीव-अवस्थावैचित्र्यदर्शनतः ।

1. ०माइं जी० – ज. । 2. वैह – ज.क. । 3. ब – ०पत्ता । 4. विय बु० – क. । 5. ०ज्झाया उ – ज. । ०पाणा उ – क. । 6. ०रियाविसाणं – ज., ०रियविलासं – क. ।

गणहरपयम्मि ठविया, तें[1] तित्थयरेण सुहमुहुत्तम्मि ।
गंधे निक्खिविय सिरे, सुरोवणीए सुगंधड्ढे ॥१६०१॥

जाओ य तत्थ संघो, चउव्विहो जिणवरस्स पढमिल्लो ।
सीसो **गोयम**सामी, **चंदणबाला** य[2] सिस्सिणिया ॥१६०२॥

भवियारविंदपडिबोहदिणयरो, विहरए महीवीढं ।
चउतीसअइसयजुओ, **वीरो** बहुगामनयरड्ढं ॥१६०३॥

(चारित्तचंगिमाचउणिकायदेवचच्चियचरणग्ग-चरणग्गचंपणचलियाचला-चलचोज्जचरियाचुण्णियचउरचरित्तमोहचोर-चरमतित्थयरस्स चउतीसअइसयाइं)

ते य इमे -

वररूवसुरहिरयमल[1]आमयपासेयवज्जियं देहं ।
गोखीरसंखधवलं, निव्विस्सं[2] मंसरुहिरं च ॥१६०४॥★

आहारो नीहारो दीसइ न, जिणस्स मंसचक्खूहिं ।
वरफुल्लुप्पलसुरही[3], निस्सासो दसदिसामोओ[4] ॥१६०५॥

जोयणमेत्ते खेत्ते, मायंति सुराइयाण कोडिसया ।
सव्वसभासाणुगया[5], जोयणनीहारिणी वाणी ॥१६०६॥

पणवीसजोयणाइं[4], चउद्दिसिं भगवओ उवसमंति ।
पुव्वुप्पन्ना रोगा[5], पसमेइ वइरमारी[6] य ॥१६०७॥

अइवुट्ठिअणावुट्ठी, दुब्भिक्खं तह न होइ डमरं च ।
भामंडलं रविसमं, विरायए पट्ठिभायम्मि ॥१६०८॥

---

१. ०रजोमलाऽऽमयप्रस्वेद० । २. निर्मल । ३. वरविकसित-उत्पलसुरभिः । ४. ०आमोदः = सुगन्ध, सर्वत्र खुश्बु फैलाने वाला । ५. सर्वेषां जीवानां स्वस्वभाषानुगता ।

1. ति - क. । 2. उ - क. । 3. निविस्सं - ज., निव्वीसं - क. । 4. पणु० - ज.क. । 5. सव्वु० - ज. । 6. वेरं समारी य - क. ।

आगासगयं चक्कं, छत्तं इंदज्झओ चमरजुयलं ।
सीहासणं विचित्तं, सपायपीढं सहविहारि ॥१६०९॥

कणगमया णवपउमा, पायारतियं च चउमुहुत्तं[1] च ।
वरदुंदुही असोगो, नहरोमममवट्ठियं[१] चेव ॥१६१०॥

मग्गम्मि कंटया किर, अहोमुहा ट्ठंति अवनमंति दुमा ।
होंति मणुन्ना पंच उ, सद्दाई-इंदियत्था य ॥१६११॥

वणराइसु[२] छप्पि[३] रिऊ, मणोरमा अवयरंति समकालं ।
अणुकूलो भूभागं, विसोहए सुरहिपवणो य ॥१६१२॥

विहगा पयाहिणगई[४], गंधोदयपंचवन्नकुसुमस्स ।
वुट्ठी होइ समंता, सुरेहिं विहिया जिणिंदस्स ॥१६१३॥

कप्पसुरा जोइसिया, भवणवई वाणमंतरसुरा य ।
चिट्ठंति समोसरणे, कोडिपमाणा जहन्नेणं ॥१६१४॥

इय चउतीसमइसया, चउरो जम्मप्पभीइ[2] जिणिंदस्स ।
एक्कारस कम्मक्खयसंभूया, सुरकया सेसा ॥१६१५॥

(णगिंदणंदिसरवण्णणं)

केवलिमहिमं काउं, **वीर**स्स सुरेसरा सपरिवारा ।
अट्ठाहियानिमित्तं, दीवे **नंदीसर**म्मि गया ॥१६१६॥

बहुनंदिरुक्खवणसंडमंडिए, सुरवरच्छरनिवासे[५] ।
तत्थ य चउद्दिसासुं[3], नीलुप्पलमणिमया चउरो ॥१६१७॥

---

१. ०अवस्थितम् । २. वनराजिषु = वृक्ष समूह । ३. षडपि ऋतवः । ४. प्रदक्षिणा सदृशी गतिः । ५. ०वराऽप्सरा० ।

1. ०मुहुत्तं - ज. । 2. ०पाभीइ - ज. । 3. चउसुं दि० - क. ।

अंजणगिरिणो तुंगा, बहुविहवणराइरेहिरा[1] वेट्टा ।
वित्थिन्नोवरिमतला[1], तेसिं[2] पुण चउसु पासेसु ॥१६१८॥

चउरो पुक्खरिणीओ, पत्तेयं विमलवारिभरियाओ[3] ।
गहिरपरिमंडलाओ, **जंबूद्दीव**प्पमाणाओ ॥१६१९॥ ॥ तिहिं विसेसयं ॥

तासि बहुमज्झदेसे, धवलुज्जलमणिमया सुरम्मतला[2] ।
परिवट्टुलोत्तुरंगा[4], दहिवन्ना **दहिमुहा** गिरिणो ॥१६२०॥

इय **अंजणे**सु चउसुं[3], सोलससुं **दहिमुहे**सु उवरितले ।
सासयजिणभवणाइं, चउरदुवाराइं रेहंति ॥१६२१॥

जोयणसयदीहाइं, पन्नासं वित्थडाइं रम्माइं ।
बावत्तरूसियाइं[5], मणिरयणसुवन्नमइयाइं ॥१६२२॥

उत्तुंगतोरणाइं **मंदर**चूल[4] व्व उच्चसिहराइं ।
मणिरयणकिंकिणीगण[6]पडागपंतीसणाहाइं[5] ॥१६२३॥

हयगयरहविज्जाहरपडिरूवयपवरपंतिजुत्ताइं ।
सव्वंगमणोहरसाल[7]भंजियावलयकलियाइं ॥१६२४॥

गब्भहरमज्झभागे[8] तेसिं, मणिपीढिया य एगेगा ।
पवरा तासु य[7] चिट्ठइ, विसिट्ठसंठाणसाराणं ॥१६२५॥

पणवन्नमणिमयाणं[10], अट्ठमहापाडिहेर[11]जुत्ताणं ।
वरलोमहत्थ[12]घंटिय[13]धूयकडुच्छुय[8]समेयाणं ॥१६२६॥

---

१. वृत्ताः । २. विशाल । ३. ०भृताः । ४. गोल और उत्तुङ्ग । ५. द्विसप्तति-उच्छ्रितानि । ६. ०पताका० = ध्वजा । ७. ०पुत्तलिका - समूह० । ८. गर्भगृह० । ९. तेषां जिनभवनानाम् । १०. पंचवर्ण० । ११. ०प्रातिहार्य० । १२. ०लोमहस्त० = मोरपींछी । १३. धूपकडच्छु० = 'धूपीयुं' ।

1. अ - विच्छिन्नो० । 2. सुवण्ण० - क. । 3. अ - चउसु वि । 4. ०सिहरं - क. । 5. कणिरकल० - क. । 6. ०सालिभं० - क. । 7. वि - क. । 8. ०करच्छु० - ज. ।

[१]**उसभ**जिणपमाणाणं, उक्कोसेणं जिणिंदपडिमाणं ।
वीरजिणिंद[1]समाणं, जहन्नओ अट्ठसयमेगं ॥१६२७॥

जिणभवणदुवाराणं पुरओ, मुहमंडवा चउण्हं पि ।
वरथंभपंतिरम्मा, विचित्तचित्ता उ तिदुवारा ॥१६२८॥

तप्पुरओ [२]पेच्छामंडवा उ, [३]सुरपेच्छणाण ते जोगा ।
मुहमंडवसारिच्छा, तेसिं पुरओ य [४]वरथूभा ॥१६२९॥

चउरो जिणपडिमाओ, थूभाभिमुहाउ चउदिसिं होंति ।
[५]मणिपेढियाट्ठियाओ, पसंतमुहनयणसोहाओ ॥१६३०॥

सिरि**उसभवद्धमाणचंदाणणवारिसेण**णामाओ ।
थूभाण तेसि पुरओ, चेइयरुक्खा परमरम्मा ॥१६३१॥

तेसिं पुरओ मणिपेढि[2]यासु, इंदज्झया य अइउच्चा ।
तेसिं पुरओ होंति उ, पुक्खरणीओ सुरम्माओ ॥१६३२॥ ॥ बारसहिं समेयं ॥

इय एवंविहरूवा, सिद्धाययणा जिणेहिं पन्नत्ता ।
णंदीसरम्मि [3]दीवे, संपत्ता तेसु सुरवसभा ॥१६३३॥

मुत्तावलिकणगावलिदिव्वंसुयरइयरुइर[६]उल्लोयं ।
सुरतरुवि[७]कोसकुसमोहविहिय[८]फुल्लहरयसमिद्धं ॥१६३४॥

जिण[९]ण्हवणच्चणसारं, तूररवुद्दामनट्टगीयड्ढं ।
सव्वजिणायणेसुं, कुणंति अट्ठाहियामहिमं ॥१६३५॥ ॥ जुम्मं ॥

---

१. उत्कृष्ट से ऋषभदेवादि जिनप्रतिमा - ५०० धनुष नाप वाली एवं जघन्य से महावीर स्वामिकी - ७ हाथ प्रमाण वाली कुल १०८ प्रतिमाए । २. प्रेक्षामण्डपाः = नाट्य गृह । ३. सुरप्रेक्षकानाम् = निरीक्षक-दर्शक देवो अथवा 'देवोने नृत्यादि करवा माटे योग्य एवा नाट्यगृहो' । ४. ०स्तूपाः । ५. मणिपीठिकायाः उपरि स्थिताः । ६. (दे.) चन्द्रातप, 'चंदखो' । ७. ०विकसित० । ८. ०फुल्लगृह० । ९. ०स्नपनार्चन० ।

1. ब - ०पमाणं । 2. ब - ०या य । 3. वीसं - ज. ।

सोलसपुक्खरणीसुं, उभओ पासेसु केइ **रइकरगा** ।
दो दो **हेममय**गिरी, [1]भवंति सव्वे य बत्तीसं ॥१६३६॥

तेसु वि जिणभवणाइं, [1]अमहंततराइं [2]केइ साहंति ।
इय **नंदीसर**दीवो, बावन्नजिणालओ होइ ॥१६३७॥

(महामाहणमहामानवमहावीरस्स रायगिहे आगमणं)

भयवं पि **महावीरो,** विहरंतो पुरवरम्मि **रायगिहे** ।
गुणसियलचेइयम्मी, समोसढो सुद्धदेसम्मि ॥१६३८॥

रइयम्मि समोसरणे, सुरेहिं सीहासणम्मि उवविट्ठो ।
तो जाणियवुत्तंतो, **सेणिय**राया सपरिवारो ॥१६३९॥

[२]निट्ठुरखुरुक्खयक्खमहे[3]सारव[4]मुहलतुरयबहुथड्ढो ।
कयमत्तमयगलुद्दामगज्जियाकालघणसंको ॥१६४०॥

[४]चामीयर[5]छुरियरहोरुघणघणारावबहिरियदियंतो ।
दिप्पंतखग्गकुंतीत[५]डिच्छडाडोवभीम[६]भडो ॥१६४१॥

ताडियभेरी[७]भाणयभंभापडुपडहकाहलानियरो ।
सामंतनिरंतरधवलछत्तनह[6]रइय[८]सरयघणो ॥१६४२॥

[९]उद्दंडपुंडरीओ उभओ, [7]कयचारुचामरु[8]क्खेवो ।
पढमाण[१०]भट्टथड्ढो, वाउद्धुयधयवडसमूहो ॥१६४३॥

---

१. पास-पास में । २. निष्ठुरक्षुरोत्खातक्षम० = निष्ठुर = तीक्ष्ण पाँव के नख से भूमि को उखाड़ने में समर्थ । ३. हेषारवमुखरतुरगबहुथडः = हेषारव वाले घोड़े का बड़ा समूह । ४. चामीकरछुरितरथोरु० = सोने से व्याप्त रथ का मध्य भाग । ५. बिजली का समूह । ६. भटः । ७. वाजित्र नाम विशेष । ८. शरदऋतु के बादल । ९. विकसित पुंडरीक कमल जैसा । १०. ०भट्टस्तब्धः = स्तुति पाठक की स्तुति से गर्वित ।

1. भणंति - ज. । 2. ब - ते उ । 3. ब - ०त्थमहिंसा० । 4. ब - ०हर० क. । 5. अ - ०छुहिय० । 6. ०राइ० - ज. । ७. पासेसु चामरु० - क. । 8. ब - ०क्खेत्तो ।

आबद्ध[1]वीरवलओ, केऊरकिरीडहारसोहिल्लो ।
सेयणयगयारूढो, **सक्को** अइरावणगओ व्व ॥१६४४॥

आरूढेहिं समंता, हयगयरहकरहजाणसिवियासु ।
अणुगम्ममाणमग्गो, अन्नेहिं वि पायचारीहिं ॥१६४५॥

[2]नियपुत्तेण चउव्विहबुद्धिसमिद्धेण सुपियधम्मेणं ।
अभयकुमारेण समं, नाणाविहपुरजणसमग्गो ॥१६४६॥

आगंतूणुज्जाणं, तिपयाहिणपुव्वयं जिणं नमिउं ।
उवविट्ठो नियठाणे, जिणदंसणहिट्ठमणनयणो ॥१६४७॥ ॥ अट्ठहिं कलावं ॥

(देविंददाणविंददंसणिज्जदिव्वंगस्स दारुणदंसणमोहदाहदुहदमणदेसिअदेसणस्स दुल्लहदिव्वनाणदिवायरदिप्पमाणदेहस्स दंतिंदियदिट्ठदट्ठव्वस्स देसणादिट्ठिदाणं)

भयवं पि कहइ धम्मं, असेसदुरिओहवारणसमत्थं ।
भवजलहिजाणवत्तं, भव्वाण विबोहणट्ठाए ॥१६४८॥

लद्धूण माणुसत्तं, सुदुल्लहं जलहिपडियरयणं [3]व्व ।
बुद्धिमया पुरिसेणं, जत्तो धम्मम्मि कायव्वो ॥१६४९॥

(दुक्खोहदारयदाणधम्मो)

सो पुण दाणं सीलं, तवो य तह भावणा चउविगप्पो ।
दाणं तिविहं [2]नाणाभयधम्मोवग्गहकराणं ॥१६५०॥

दिन्नेण जेण जीवो, विन्नाया होइ बंधमोक्खाणं ।
तं होइ नाणदाणं, सिवसुहसंपत्तिसंजणगं ॥१६५१॥

एयं [4]तु नाणदाणं, जं सुयदाणं [3]तयत्थकहणं च ।
भव्वाणमहव, सुयणाणकारणं [4]सुयलिहावणयं ॥१६५२॥

---

१. वीरोचित श्रेष्ठ 'बाजुबंध' । २. ज्ञान-अभय-धर्मोपग्रह दान । ३. तद्-अर्थकथनम् । ४. श्रुतलेखापनकम् = श्रुतलेखनम् - प्रे.कृ. ।

1. ब - आविद्ध० - ज. । 2. ब - पिय० । 3. व - क. । 4. ब - उ ।

नाणाओ भवविरागो, संवेगो इंदियाण य निरोहो ।
कोहाइयाण जायइ, खउवसमो भावसत्तूणं ॥१६५३॥

सयलपयत्थपईवं, निरुवहयं निम्मलं इमं चक्खुं ।
नाणविहीणो मणुओ, पसु व्व [1]अंधो व्व बहिरो वा ॥१६५४॥

जिणवयणं च लिहावइ, जो सो अन्नाण अप्पणो हणइ ।
अन्नाण य भव्वाणं, उम्मग्गं तह पणासेई ॥१६५५॥

पयडेइ मोक्खमग्गं, [2]कमेण तो घाइकम्मखवणेणं ।
पावइ केवलनाणं, लोयालोयप्पयासयरं ॥१६५६॥

(अभयदाणसरूवं)

सव्वेसिं जीवाणं, हिंसापरिवज्जणं जमिह सम्मं ।
तं होइ अभयदाणं, इट्ठं तं चेव सव्वेसिं ॥१६५७॥

देसं चयंति रज्जं [1]मुयंति, उज्झंति बंधुवग्गं [3]पि ।
वियरंति य सव्वस्सं, [4]पडिंति पाएसु रिउणोऽवि ॥१६५८॥

जीवियकज्जे मणुया, नत्थि तयं किं पि जं न कुव्वंति ।
ता सव्वपियं तं चिय, दायव्वं सोक्खकामेण ॥१६५९॥ ॥ जुम्मं ॥

दीहाऊ [2]वरमुत्ती निरुजो, जणवल्लहो परमविहवो ।
जीवो उ सुलहबोही, संजायइ अभयदाणेणं ॥१६६०॥

धम्मोवग्गहदाणं, असणं पाणं च वत्थु पत्तं च ।
ओसहमासण सयणं, वसहिं च पडुच्च जं दाणं ॥१६६१॥

जो देइ असणमाई, साहूण ससत्तिओ सुविहियाणं ।
नाणाइगुणोवग्गहहेउं, सो पुन्नफलभागी ॥१६६२॥

---

१. मुञ्चन्ति । २. वरमूर्तिः = श्रेष्ठ रूप ।

1. बहिरो व्व मूओ व्व - ज. । 2. ब - कम्माणं घा० । 3. च - क. । 4. पडति - क. ।

सो पावइ सुररिद्धिं, सुकुलं रूवं च उत्तमे भोगे ।
सोहग्गं वरकित्ती, धम्मपवित्तिं तओ मुत्तिं[1][2] ॥१६६३॥

सद्धाजलेण रहियं, बीयं च न होइ बहुफलं दाणं ।
सुक्खेत्तवावियं[1][3] पि हु, ता सद्धापुव्वगं देयं ॥१६६४॥

मोक्खो नाणाईहिं, ताणि पुणो देहजावणाए[2] उ ।
असणाइएहिं सा वि हु, सिवहेऊ तेण तद्दाणं ॥१६६५॥

वसहिदाणफलं पुण –

गई तेण दिन्ना मई तेण दिन्ना, ठिई तेण दिन्ना सुहं तेण दिन्नं ।
गुणस्सिसमालिंगियाणं वराणं, मुणीणं वरो जेण दिन्नो निवासो ॥१६६६॥

तहा –

संजमतवुज्जयाणं[3][4], वसहिं साहूण देइ जो मइमं[4] ।
वत्थन्नपाणसयणासणाइं[5] तेणं विइन्नाइं ॥१६६७॥

तवसंजमसज्झाओ, नाणब्भासो जणोवयारो य ।
जो साहूणमुवग्गहकारी[5], सेज्जायरो तस्स ॥१६६८॥

दाऊण वसहिदाणं, पमुइयचित्तो चरित्तजुत्ताणं ।
साहूण गिही पुन्नं, सुहाणुबंधं समज्जेइ ॥१६६९॥

वररयणरासिपुन्ने, अच्छरगणसंकुले[6] सुरविमाणे ।
उववज्जइ तियसवरो, सुहकलिए वसहिदाणेणं ॥१६७०॥

उत्तमकुले विसाले, विभवाइजुए नरत्तणं लहइ ।
तत्तो चुओ सुदुलहं, पावइ तह बोहिलाभं च ॥१६७१॥

---

१. सुक्षेत्र-उप्तम् = अच्छे खेत में बोया हुआ । २. ०यापना = निर्वाह । ३. ०उद्यतानाम् । ४. मतिमान् । ५. ०उपग्रह० = उपकार, पोषण । ६. अप्सरा० ।

1. अ – ०वित्ती । 2. अ – मुत्ती । 3. सुखित्त० – ज. । 4. अ – ०वज्जु० । 5. ०णाइयाइं – क. ।

पारंपरेण पावइ परमपयं, नरयतिरियगइमुक्को[1] ।
जत्थ न जरा न मच्चू, न वाहिणो नेय वसणाइं ॥१६७२॥

सेज्जावसही[1] तीए, सुदुत्तरं तरइ जेण भवजलही ।
सेज्जायरो त्ति तेणं, भणंति जं परमनाणी वि ॥१६७३॥

अन्नं च -

जह जह सज्झायझुणी[2], निसुणिज्जइ मुणिवराण[2] दुहदलणी ।
तह तह पावमलोहो, गलइ जहा अंजलीसलिलं ॥१६७४॥

इय साहुवसहिदाणं, कल्लाणपरंपरासुहनिहाणं ।
जिणवयणाओ नाउं, जहसत्तीए उ दायव्वं ॥१६७५॥

(सुहंकरसीलसरूवं)

मूलुत्तरगुणरूवं सीलं, समणाण सावयाणं च ।
कम्मासवाण पिहणं, महव्वयाणुव्वयाईणं[3] ॥१६७६॥

सव्वगुणालंकारो, कुगइदुवारम्मि अग्गला सीलं ।
सोवाणपंतिया[4] इव, सीलं सग्गापवग्गाणं ॥१६७७॥ ॥ जुम्मं ॥

सीलं कुलुन्नइकरं[3], लोयपियत्तजणगं[4][5][6] जसकरं च ।
सीलं सुइत्तणकरं[5], सीलं चिय संपयामूलं ॥१६७८॥

सीलस्स पहावेणं, कुव्वंति सुरासुरा वि सन्नेज्झं[6][7] ।
सीयारेवइभद्दामणोरमा[7]साविया‌णं च ॥१६७९॥

---

१. शय्या = वसति । २. ०ध्वनिः । ३. कुल-उन्नतिकरम् । ४. लोकप्रियत्वजनकम् । ५. शुचित्तण० = शुचित्वकरम् । ६. सांनिध्यम् । ७. सीतारेवतीभद्रामनोरमाश्राविकाणां च ।

1. ब - ०चुक्को - ज.क. । 2. ब - जिणवराण । 3. ०णीयं - ज.क. । 4. सोयाण० - ज.क. । 5. ०पयत्तजणगं - ज. । 6. ०करं - क. । 7. सन्निज्झं - प. ।

(तरसा ताडियकम्मतामसो ताइतवो)

अणसणमूणोयरिया, वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ ।
कायकिलेसो संलीणया य, बज्झो तवो होइ ॥१६८०॥★

पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ ।
झाणं [1]उस्सग्गोऽवि य, अब्भिंतरओ तवो होइ ॥१६८१॥★

सिद्धिपुर[1]मग्गजाणं, संसारसमुद्द[2]रुंदबोहित्थो ।
कम्मिंधणस्स जलणो, पत्थियवत्थूण कप्पतरू ॥१६८२॥

[3]वायायवेण सुस्सइ, तलायसलिलं व पावकम्मं पि ।
तवसा हेममलो विव, डज्झइ [4]जलणो[3]हतावेणं ॥१६८३॥

जं नेरइओ कम्मं खवेइ, बहुयाहिं वासकोडीहिं ।
णाणी [4]पसन्नचित्तो, तं थेवतवेण नासेइ ॥१६८४॥

सव्वं तवस्स सज्झं, [5]तवो [6]य सव्वेसि [5]पूयणिज्जयरो ।
[6]हरिकेसि[7]रिसिं तुट्ठा, सुरा वि जं पज्जुवासंति ॥१६८५॥

(बंधुराओ बारसभावणाओ)

सव्वमणिच्चयमाईभावणाजालमेगचित्तेणं ।
भववेरग्गनिमित्तं, [7]अट्ठमयट्ठाणछेयकरं ॥१६८६॥

धणसयणरूवजोव्वणजीवाईयं, अणिच्चमिह सव्वं ।
धम्मं मोत्तूणन्नं[8], न य सरणं किं पि संसारे ॥१६८७॥

---

१. ०मार्गयानम् । २. विशाल । ३. वात-आतापेन । ४. ज्वलनौघतापेन = अग्नि की भयंकर गर्मी से । ५. पूजनीयतरः । ६. हरिकेशीऋषिम् । ७. अष्टमदस्थानछेदकरम् । ८. ०अन्यद् ।

1. उवसग्गो - ज. । 2. ०भंड० - ज.क. । 3. अ - सिद्ध०, जलणाहि० - ज.क. । 4. पसंत० - क. । 5. तवाओ - क. । 6. उ - क. । 7. ०केसरिसिं - क. ।

विविहाओ अवत्थाओ, पावइ जीवो नडो व्व भवरंगे ।
रोगजरमरणजम्मणदुक्खं, पि[1] य[2] वेयए एगो ॥१६८८॥

अन्नो य एस जीवो, अन्नं धणसयणदेहमाईयं ।
वसासोणियाइ[3]निम्मियमसुइनिहाणं इमं देहं ॥१६८९॥

आसवइ[1] जिओ कम्मं, मिच्छत्ताईहिं असुहपरिणामो[4] ।
तस्सेव य संवरणं, करेइ तेसिं निरोहेणं ॥१६९०॥

बारसविहेण तवसा, कम्मं निज्जरइ पुव्वबद्धं पि ।
सो नत्थि लोयदेसो, जत्थ न जाओ जिओ न मओ ॥१६९१॥

बोही वि तत्थ[5] दुलहा, पुढवाइजिएसु संसरंतस्स ।
मणुयत्तेऽवि हु दुलहो, धम्मगुरू अकयपुन्नस्स ॥१६९२॥

एमाइभावणाओ, भाविंतो सुक्कलेसपरिणामो ।
भरह-इलापुत्तो इव, उप्पाडइ केवलं नाणं ॥१६९३॥

एमाई धम्मकहं, सोउं[6] **सेणिय**निवाइया भव्वा ।
संमत्तं पडिवन्ना, केई पुण देसविरयाई ॥१६९४॥

एवं च पइदिणं, सो **सेणिय**राया सुणेइ जिणपासे ।
निच्चलसम्मद्दिट्ठी, धम्मं अच्चंतजिणभत्तो ॥१६९५॥

(बलिविहाणं)

पुव्वण्हे पहरंते, आणावइ[2] उज्जलक्खयबलिं[3] च ।
मंगलतूररवेणं, जिणपूयत्थं जओ भणियं ॥१६९६॥

राया व[7] रायमच्चो[4], तस्सासइ[5] पउरजणवओ वा वि ।
दुब्बलिखंडियवलिछडियतंदुलाणाढगं[6] कलमा[7] ॥१६९७॥★

---

१. आश्रवति । २. आ + नाययू = मंगवाना । ३. ०अक्षत० । ४. महामंत्री । ५. असति = अविद्यामाने = न होने पर । ६. ०आढक० = चार प्रस्थ का एक नाप विशेष । ७. उत्तम प्रकार का चावल ।

1. चिय - ज.क. । 2. ब - वि वेय० । ३. ०निमियं - ज.क. । 4. ०णामं - प. । 5. अ - एत्थ । 6. अ - सोऊणं सेणियाइया - ज.क. । 7. य - क. ।

भाविय पुणानियाणं, अखंडफुडियाण फलगसरियाणं[1] ।
कीरइ बली सुरा वि य, तत्थेव छुहंति गंधाइं ॥१६९८॥★

बलिपविसणसमकालं, पुव्वद्वारेण ठाइ परिकहणा[1] ।
तिगुणं पुरओ पाडण, तस्सद्धं अवडियं देवा ॥१६९९॥★

अद्धद्धं अहिवइणो, अवसेसं होइ पागयजणस्स ।
सव्वामयप्पसमणी, कुप्पइ नें[2] नो य छम्मासं ॥१७००॥★

तयणंतरं च भयवं, देवच्छंदम्मि कुणइ विस्सामं ।
बीयाए पोरिसीए[2], गणहारी कहइ परिसाए ॥१७०१॥

भणियं च - (**गुरुगुणहारिगणहारिदेसणागुंफणं**)

राओवणीयसीहासणम्मि[3], विट्ठो[4] य पायपीढम्मि ।
जेट्ठो अण्णयरो वां, गणहारी कहइ बीयाए ॥१७०२॥★

संखाईए उ भवे साहइ, जं वा परो उ पुच्छेज्जा ।
न य णं अणईसेसी[5,3], वियाणई[6] एस छउमत्थो ॥१७०३॥★

खेयविणोओ[7] सीसगुणदीवणा, पच्चओ उभयओऽवि ।
सीसायरियकमोऽवि य, गणहरकहणे गुणा होंति ॥१७०४॥★

---

१. देशना । २. वाक्याऽलङ्कारे । ३. राजा द्वारा लाया गया सिंहासन या परमात्मा की पादपीठ के ऊपर बैठकर ज्येष्ठ गणधर या अन्य कोई भी गणधर द्वितीय पोरसी में देशना देते है । ४. उपविष्टः । ५. अनतिशयी = सामान्य व्यक्ति । ६. विजानाति । ७. खेदविनोदः शिष्यगुणदीपना, प्रत्ययः उभयतोऽपि । शिष्याऽऽचार्यक्रमोऽपि च, गणधरकथने गुणाः भवन्ति ॥ गणधर देशना देते है तो... (१) परमात्मा के शरीर को श्रम कम होता है । (२) परमात्मा के शिष्य के गुणो का भी प्रकाश होता है = लोग उनको भी जानते है । (३) परमात्मा ने जैसा कहा, वैसा ही गणधर भगवंत कहते है, तो दोनों के प्रति श्रद्धा होती है कि दोनों की बात एक जैसी ही है, अलग अलग नहीं है । (४) पहले आचार्य भगवंत, बाद में शिष्य, ऐसे गुरु शिष्य की परंपरा भी चलती है । यह सब गुण गणधर भगवंत की देशना से होते है ।

1. ०सरिमाणं - ज.क. । 2. पोरसिए - ज. । 3. ब - अणाइ० क. ।

अभयकुमारो संवेगसंगओ, परमधम्मसद्धालू ।
पुच्छइ विहारसमए, किं किच्चं सावगाण पहू ? ॥१७०५॥

भगवया [1]भणियं –

[1]चीवंदणमावस्सयं, सज्झायं चेव अपुव्वपढणं च ।
कायव्वं निच्चं चिय, [2]धीरेहिं भवविरत्तेहिं ॥१७०६॥

अत्थं परिभावेंतो, गुणरागं विम्हयं भवभयं च ।
हियए समुव्वहंतो, करेज्ज चीवंदणं [2]सड्ढो ॥१७०७॥

(चारूचेइवंदणचरिया)

अरिहंतो अरहंतो, अरुहंतो अहव तह य भयवंतो ।
एमाई चीवंदणसुत्तपयत्थं विभावेइ ॥१७०८॥

रागद्दोसकसाया, पंचेव य इंदियाणि दुदम्माणि ।
एए अरिणो तेसिं, हंतारो होंति अरिहंता ॥१७०९॥

अट्ठविहं पि य कम्मं, अरिभूयं होइ सव्वजीवाणं ।
तं कम्ममरिं हंता, अरिहंता तेण वुच्चंति ॥१७१०॥

[3]अरहंति वंदणनमंसणाणि, अरहंति पूयसक्कारं ।
अरहंति सिद्धिगमणं, अरहंता तेण वुच्चंति ॥१७११॥

[4]दड्ढम्मि जहा बीए, [5]वुत्तेऽवि न होइ अंकुरुप्पत्ती ।
तह दड्ढकम्मबीया, रोहंति भवंकुरे न जिणा ॥१७१२॥

एसो सुहस्स हेऊ, सव्वन्नू [6]परहिएक्कनिरओ य ।
सब्भूयवत्थुवाई, वंदेयव्वो जिणो भयवं ॥१७१३॥

---

१. चैत्यवन्दन । २. श्राद्धः । ३. अर्हन्ति = योग्य होना । ४. दग्धे । ५. उप्त० = बोना । ६. परहित-एकनिरतः = सिर्फ परोपकार करने में ही तत्पर ।

1. ब – कहियं – ज. । 2. अ – वीरेहिं० – ज. ।

कप्पदुमो [१]सुक्कमहीहरे व्व, [1]दरिद्दगामे व्व महानिहाणं ।
[२]सरोयसंडो [2]य मरुप्पहम्मि, दिट्ठो जिणो एत्थ [३]मए[४]ज्ज चित्तं ॥१७१४॥

जम्मजरामरणजलो, [५]अणाइमं [६]वसणसावयाइन्नो ।
जीवाण दुक्खहेऊ, कट्ठं रुद्दो भवसमुद्दो ॥१७१५॥

णिच्चं अणोरपारे, एयम्मि [७]निबुड्डुणाइं पकरेंतो ।
जिण[3]वयणजाणवत्तं, जइ एत्थ अहं [4]अपाविंतो ॥१७१६॥

नवकारेण जहन्ना, दंडयथुइजुयलमज्झिमा नेया ।
संपुन्ना उक्कोसा, विहिणा खलु वंदणा तिविहा ॥१७१७॥★

दव्वे[5]ण य भावेण य, सुद्धा एसा य बहुफला होइ ।
जह [८]टंकदव्वसुद्धो, सफलो [९]काहावणो होइ ॥१७१८॥

चीवंदणाउ सम्मं जायइ, भावस्स जो समुल्लासो ।
तत्तो कम्मस्स खओ, तओ य कल्लाणसंपत्ती ॥१७१९॥

ता तिपयाहिणतिपणइमुद्दातियसंजुयं तिपणिहाणं ।
पूयातियपुव्वं चिय, कुणइ तिसंज्झं इमं पयओ ॥१७२०॥

(अविगलछआवस्सगस्स आयरणं)

सामइयं चउवीसत्थओ य, वंदणयमह पडिक्कमणं ।
काउसग्गो पच्चक्खाणं, आवस्सया छच्च ॥१७२१॥

समभावो सामइयं, तम्मि कए समण[१०]सन्निहो[6] होइ ।
ता तं **जिणदत्तो** विव, निच्चलचित्तो करेज्जाहि ॥१७२२॥

---

१. सूखे पर्वत के ऊपर । २. सरोजसण्डः = कमल समूह । ३. मया अद्य । ४. चित्रम् = आश्चर्य । ५. अनादिमान् । ६. व्यसनश्वापदाकीर्णः । ७. निमज्जनानि । ८. टङ्क० = सिक्के पर का चित्र । 'सिक्का परनी छाप' । ९. कार्षापणः = सिक्का । १०. ०सन्निभः = समान ।

1. दारि० - ज.क. । 2. अ - व्व । 3. ब - ०चरण० । 4. न - ज.क. । 5. अ - दव्वेणं - ज.क. । 6. सन्निभो - क. ।

अन्नहा –

सामाइयं पि काउं, घरचिंतं जो य चिंतए सड्ढो ।
अट्टवसट्टोवगओ, निरत्थयं[१] तस्स सामईयं ॥१७२३॥

दव्वत्थयभावत्थए, **उसभा**इजिणाण सावओ[२] कुणइ ।
ण्हवणाई[३] दव्वथए, संतगुणुक्कित्तणा[४] भावे ॥१७२४॥

दारिद्दं दोहग्गं, परपत्थणमिंदियाण विगलत्तं ।
दीणत्तरोगसोगा, जिणथयकारीण[५] नो होंति ॥१७२५॥

जो वंदणयं सम्मं, साहूण करेज्ज सीलकलियाणं ।
सो लहइ सग्गमोक्खे, **हरि**[६] व्व गुणलाभमज्जिणइ ॥१७२६॥

खवइ य निच्चागोयं, उच्चागोयं च बंधए कम्मं ।
सोहग्गं निव्वत्तइ, आणासारं जणपियत्तं ॥१७२७॥

(पावप्पबंधपडिरोहिपडिक्कमणपरूवणं)

मिच्छाउक्कडविय[७][८]डणनिंदणगरिहानियत्तणं[९] सोही[१०] ।
पायच्छित्तविहीए, नियदुच्चरियस्स पडिक्कमणं ॥१७२८॥

कयपावोऽवि मणुस्सो, आलोइयनिंदिओ गुरुसगासे ।
होइ अइरेगलहुओ[११], ओहरियभरो[१२] व्व भारवहो ॥१७२९॥

मिच्छत्तपडिक्कमणं, तहेव अस्संजमे पडिक्कमणं ।
कसायाण पडिक्कमणं, जोगाण य अप्पसत्थाणं[१३] ॥१७३०॥★

काउस्सग्गे जह सुट्ठियस्स, भज्जंति अंगमंगाइं ।
इय भिंदंति मुणिवरा, अट्ठविहं कम्मसंघायं ॥१७३१॥★

---

१. निरर्थकम् । २. श्रावकः । ३. स्नपन० । ४. सद्भूतगुण-उत्कीर्तनम् । ५. ०स्तव० = स्तुति । ६. नवमवासुदेवः कृष्णः इव । ७. ०दुष्कृत० । ८. ०विकटन० = अतिचारो की आलोचना । ९. ०निवर्तनम् । १०. शुद्धिः । ११. अतिरेक० = अत्यन्त । १२. (दे.) उत्तारितभारः । १३. अप्रशस्तानाम् ।

जह [1]करवत्तओ [2]णिकिंतइ, दारुं इंतो पुणोऽवि वच्चंतो ।
इय [2]कत्तंति सुविहिया, काउसग्गेण कम्माइं ॥१७३२॥★

अन्नं इमं सरीरं, अन्नो जीवो त्ति एव कयबुद्धी ।
छिंदिय देहममत्तं, काउस्सग्गं कुणइ साहू ॥१७३३॥★

(पावघणपडिहणणपडुपवणं पच्चक्खाणं)

गेण्हइ पच्चक्खाणं कालम्मि, [3]विऊ विउस्स पासम्मि ।
उवउत्तमणो सम्मं, तं पि य [4]इणमो दसविहं [3]तु ॥१७३४॥

णवकारपोरिसीए, पुरिमड्ढेक्कासणेगठाणे य ।
आयंबिल[5]भत्तट्ठे, चरिमे य अभिग्गहे विगई ॥१७३५॥★

दो चेव णमोक्कारे, आगारा छच्च पोरिसीए उ ।
सत्तेव य पुरिमड्ढे, एक्कासणगम्मि अट्ठेव ॥१७३६॥★

सत्तेगट्ठाणस्स उ, अट्ठेव य अंबिलम्मि आगारा ।
पंचेव अब्भत्तट्ठे, छप्पाणे चरिमे चत्तारि ॥१७३७॥★

पंच चउरो अभिग्गहे, निव्वीए अट्ठ नव य आगारा ।
[6]अप्पाउरणे पंच [4]उ, हवंति सेसेसु चत्तारि ॥१७३८॥★

णवणीतो[7]गाहिमए, [8]अद्दव[5]रूवे [9]गुले दहिघए य ।
नव आगारा तेसिं, सेसदव्वाणं तु अट्ठेव ॥१७३९॥★

---

१. (दे.) आरी = 'करवत' । २. नि + कृत् = काटना । ३. विद्वान् । ४. इमं । ५. ०अभक्तार्थ० = उपवास । ६. अप्रावरणे = वस्त्र नहीं पहनने में - पूर्व के काल में उपाश्रय में चोलपट्टा नहीं पहना जाता था । जब कोई गृहस्थ आए तब पहना जाता था, तो उसका भी आगार प्रत्याख्यान में आता था । 'चोलपट्टागारेणं' । ७. ०अवगाहिम = पकवान । ८. अद्रव० = न गला हुआ = कठिन । ९. गुडे ।

1. करकओ - क. । 2. कर्त्तिति - क. । 3. पि - क. । 4. य - क. । 5. अ - ०दहिपिसियघयगुडे चेव ।

विगईओ पुण -

गोमहिसुट्ठिपसूणं[१], एलगखीराणि पंच चत्तारि ।
दहिघयनवणीयाइं, उट्टीणं ताणि नो होंति ॥१७४०॥★

चत्तारि होंति तेल्ला, तिलअयसिकुसुंभसरिसवाणं[२] च ।
दो गुलपिंडदवगुडा, चलचलपक्कं[३] च पक्कन्नं ॥१७४१॥

कुत्तिय मच्छिय भामर, तिहा महुं कट्ठपिट्ठयं मज्झं ।
चम्मं सोणिय पिसियं, मंसतियं जलयमाई वा ॥१७४२॥

दहिमत्थू[४] घयघट्टो[५], विगई वीसंदणं[६] च केसिंचि[२] ।
एयासिं परिमाणं कुणइ, अब्भक्खाणं[७] नियमं च ॥१७४३॥★

दक्खाखंडाईणं, निव्वीयाणं[८] पि कारणावेक्खो ।
उक्कोसगदव्वाणं, परिभोगो नाविसेसेणं ॥१७४४॥

(पडुपच्चक्खाणस्स पउरलाहपावणपरिण्णा)

फासियं पालियं चेव, सोहियं तीरियं तहा ।
किट्टियमाराहियं चेव, एरिसयम्मि पयइयव्वं[५] ॥१७४५॥★

आगारेहिं विसुद्धं, जं गहियं फासियं तयं नेयं ।
तह पालियं तु असइं[९], सम्मं उवओगपडियरियं ॥१७४६॥★

गुरुदत्तसेसभोयणसेवणयाए उ सोहियं जाण ।
पुन्नेऽवि थेवकालावत्थाणा तीरियं होइ ॥१७४७॥★

भोयणकाले अमुगं, पच्चक्खायं ति भुंजे कित्तीयं[६] ।
एएहिं पगारेहिं, सम्मं आराहियं होइ ॥१७४८॥★

---

१. ०उष्ट्री० । २. बीज विशेष । ३. जिसको पकाते है तब चल् चल् आवाज आती है । ४. (दे.) मथा हुआ दहीं, 'मठो' । ५. जाड़ा घी या घी का जमाव । ६. विस्पन्दन० = दही की तर और आटे से बनता एक प्रकार का खाद्य । ७. अभक्ष्यानाम् । ८. निर्विकृतिकानाम् । ९. असकृत् = वारंवार ।

1. ०मंथू - क. । 2. विसुदणं - क. । 3. केसिं च - ज. । 4. अभ० - ज., अभिक्खाण - क. । 5. यइयव्वं - ज. । 6. अ - भुंज कित्तियं ।

पच्चक्खाणस्स फलं, इह परलोगे य होइ दुविहं तु ।
इह लोए **धम्मिलाई, दामन्नग**माइ परलोए ॥१७४९॥★

(सुइयसज्झायसामत्थं)

बारसविहम्मि वि तवे, सब्भिंतरबाहिरे कुसलदिट्ठे ।
नवि अत्थि णवि य होही, सज्झायसमं तवोकम्मं ॥१७५०॥

सज्झाएण पसत्थं झाणं, जाणइ य सव्वपरमत्थं ।
सज्झाए वट्टंतो, खणे खणे जाइ वेरग्गं ॥१७५१॥

णाणावरणस्स खओ, संवेगो सुयरसो नवनवो य ।
तित्थयरत्तनिबंधो, अपुव्वपढणं कुणंतस्स ॥१७५२॥

एवं सोउं **अभओ**, परितुट्ठो वंदिउं **महावीरं** ।
नियए भवणम्मि गओ, सुसावगो एरिसो जाओ ॥१७५३॥

अड्ढे[१] दित्ते[२] वित्थिन्नविउलसयणासणजाणवाहणाइन्ने[३] बहुधणबहुजायरूवरयए[४] आओगपओगसंपउत्ते[५] विच्छड्डियपउरभत्तपाणे[६] बहुदासीदासगोमहिसगवेलगपभूए[७], बहुजणस्स अपरिभूए[८], अहिगयजीवाजीवे उवलद्धपुन्नपावे आसवसंवरनिज्जराबंधमोक्खकिरियाहिगरणकुसले[९], असहेज्जदेवासुरनागसुवन्नजक्खरक्खसकिन्नरकिं-

---

१. आढ्यः दीप्तः[२] विस्तीर्णविपुलशयनासनयानवाहनाकीर्णः[३] बहुधनबहुजातरूपरजतः[४] आयोगप्रयोगसंप्रयुक्तः[५] विच्छर्दितप्रचुरभक्तपानः[६] बहुदासीदासगोमहिषगवेलकप्रभूतः[७], बहुजनस्य अपरिभूतः[८], अधिगतजीवाजीवः उपलब्धपुण्यपापः आश्रवसंवरनिर्जराबन्धमोक्षक्रियाधिकरणकुशलः[९], असहमानदेवासुरनागसुवर्णयक्षराक्षसकिन्नरकिंपुरुषमहोरगादिभिः

---

१. वैभवशाली । २. तेजस्वी । ३. रथादि । ४. नौका आदि । ५. ०जातरुप० = सुवर्ण । ६. अर्थोपाय । ७. शास्त्रार्थ । ८. विशेष प्रकार के, विस्तार । ९. मेष, भेड़ । १०. सन्मान्य । ११. जाना हुआ । १२. असंयम को जानने में ।

1. विच्छिन्न० - ज.क. । 2. ब - ०सढेज्ज० ।

पुरिसमहोरगाईएहिं देवगणेहिं निगंथाओ पावयणाओ [1]अणइक्कमणिज्जे, निग्गंथे पावयणे निस्संकिए निक्कंखिए निव्वितिगिच्छे लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे [2]विणिच्छियट्ठे अट्ठिमिंज[3]पेम्माणुरायरत्ते अयमाउसो निग्गंथे पावयणे अट्ठे य अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे, ऊसियफलिहे अवंगुयदुवारे चियत्तंतेउरपरघरप्पवेसे बहूहिं सीलव्वयगुणव्वयवेरमण-पच्चक्खाणपोसहोववासेहिं [4]अप्पाणं भावेमाणे, चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णिमासीसु[5] तिहीसु पडिपुन्नं पोसहं पडिवालेमाणे, फासु[6]यएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थपडिग्गहकंबलपाय[7]पुच्छणेणं पाडिहेरेण य पीढफलगसेज्जासंथारएणं ओसह-भेसज्जेण य समणे निग्गंथे पडिलाभेमाणे, तवसा संजमेण य अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।★

(विणासिअविपक्खवक्खेवस्स विस्सविस्सुअस्स विहरणमाणवीरस्स वत्ता)

पिट्ठीचंपं पत्तो **वीर**जिणो, तत्थ रायजुवराया ।
सालो य **महासालो,** वंदिय [8]**वीरं** उवासंति ॥१७५४॥

देवगणैः निर्ग्रन्थात् प्रवचनात् अनतिक्रमणीयः, निर्ग्रन्थे प्रवचने निश्शंकितः निष्काङ्क्षितः निर्विचिकित्सः लब्धार्थः गृहीतार्थः पृष्टार्थः विनिश्चितार्थः अस्थिमज्जाप्रेमानुरागरक्तः अयमायुष्मान् निर्ग्रन्थः प्रवचनः अर्थः च अयं परमार्थः शेषः अनर्थः, उच्छ्रितस्फटिकः [1]अप्रावृत्तद्वारः चियत्तान्तःपुरपरगृहप्रवेशः बहुभिः शीलव्रतगुणव्रतविरमणप्रत्याख्यानपौषधोप-वासैः आत्मानं भावयन्, चतुर्दशी-अष्टमी-[3]उद्दिष्टा-पूर्णिमासु तिथिषु प्रतिपूर्णं पौषधं प्रतिपालयन्, प्रासुकैषणीयेन अशनपानखादिमस्वादिमेन वस्त्रप्रतिग्रहकम्बल[4]पादप्रोञ्छनेन [5]प्रातिहारिकेन च पीठफलकशय्यासंस्तारकेण औषधभैषज्येन च श्रमणान् निर्ग्रन्थान् [6]प्रतिलाभयन्, तपसा संयमेन च आत्मानं भावयन् विहरति ।

---

१. (दे.) खुला । २. (दे.) सम्मत, सुन्दर । ३. (दे.) अमावस्या । ४. रजोहरण । ५. वापस देने योग्य वस्तु । ६. साधु आदि को दान देना ।

1. अणाइ० - ज.क. । 2. अहिगयट्ठे वि० - क. । 3. ब - ०पेमा० - ज.क. । 4. अप्पाणं - क. । 5. ब - ०सं, ०सुं णं ति० - ज.क. । 6. ०सुए० - क. । 7. ब - ०पुंच्छ० । 8. तं पज्जुवासंति - ज. ।

भयवं पि कहइ धम्मं, दोग्गइ[१]गमवारणं सुगइमूलं ।
[२]अणुवकयपरहियरओ, तेसिं पडिबोहणनिमित्तं ॥१७५५॥

तं जहा –

भूएसु संसरंतस्स, जंगमत्तं पि दुल्लहं ।
तम्मि पंचिंदियत्तं च, तत्तो वि मणुयत्त[1]णं ॥१७५६॥

नरत्ते आरियं खेत्तं, खेत्तेऽवि विमलं कुलं ।
कुलेऽवि उत्तमा जाई, जाईए रूवसंपया ॥१७५७॥

रूवेऽवि बलसंपत्ती, बलेऽवि चिरजीवियं ।
हियाहियाइविन्नाणं, जीविए खलु दुल्लहं ॥१७५८॥

संमत्त[३]ममलं तम्मि, संमत्ते सी[2]लमुत्तमं ।
सीलेऽवि [४]खाइओ भावो, सव्वकम्मखयंकरो ॥१७५९॥

णाणं च केवलं तत्थ, लोयालोयपयासयं ।
परमं तम्मि नेव्वाणं, [५]जम्ममच्चुविवज्जियं ॥१७६०॥

इय संयोगा [3]इत्थ दुलहा, जीवाण कुणह ता धम्मं ।
इय सोउं पडिबुद्धा, **सालमहासाल**रायाणो ॥१७६१॥

रज्जम्मि भाइणेज्जं, **पिढर**सुयं **जसमई**ए अंगरुहं ।
संठाविय पव्वइया, संविग्गा सामिपासम्मि ॥१७६२॥

कालंतरेण केणइ, **चंपा**नयरीए विहरिओ भयवं ।
सालमहासाला वि य, **गोयम**गणहारिणा सहिया ॥१७६३॥

पिट्ठीचंपाए गया, तत्थ य वंदंति परमभत्तीए ।
जसमइगग्गलिपिढरा, सपरिय[4]रा **गोयम**गणिंदं ॥१७६४॥ ॥ जुम्मं ॥

---

१. गमन, प्रवेश । २. अनुपकृतपरहितनिरतः = सहज ही परोपकार में मग्न । ३. निर्मलम् । ४. क्षायिकः । ५. जन्ममृत्युरहितम् ।

1. ०यं – क. । 2. ०लसंपया – क. । 3. एत्थं – क. । 4. ०यरं – क. ।

(धम्मधुराधारणधीर-धम्मायरियस्स धम्मकहा)

सुररइयकणयकमले, उवविट्ठो **गोयमो** चउन्नाणी ।
उवइसइ इमं भव्वा !, **धम्मो च्चिय एत्थ सुहमूलं** ॥१७६५॥

कसच्छेयतावसुद्धं, जहा सुवन्नं [१]सुवन्नयमुवेइ ।
तह एएहिं सुद्धो, धम्मो धम्मत्तणमुवेइ ॥१७६६॥

ते य इमे –

पाणवहाईयाणं पावट्ठाणाण जत्थ पडिसेहो ।
झाणज्झयणाईणं, [२]जोयविही एस धम्मकसो ॥१७६७॥

बज्झाणुट्ठाणेणं जेण, न बाहिज्जए [३]दुगं पि तयं ।
संभवइ य परिसुद्धं, सो पुण धम्मम्मि [1]च्छेओ त्ति ॥१७६८॥

जीवाइ[४]भाववाओ, बंधाइपसाहगो इहं तावो ।
एएहिं अपरिसुद्धो, [५]कारिमकणगोवमो धम्मो ॥१७६९॥

अवि य –

एएहिं जो न सुद्धो, [६]अन्नयरम्मि वि न [७]सुट्ठु निव्वडिओ ।
सो तारिसओ धम्मो, नियमेण फले विसंवयइ ॥१७७०॥

एमाई धम्मकहं, सोउं संठाविउं सुयं रज्जे ।
अम्मापिईसमेओ, पव्वइओ **गग्गलि**नरिंदो ॥१७७१॥

आगच्छंताण पहे तेसिं, सामिस्स वंदणनिमित्तं ।
सुहपरिणामविसेसा, केवलणाणं समुप्पन्नं ॥१७७२॥

चंपाउरीए पत्ता ते, पंच वि केवली जिणसयासे ।
गोयमसहिया काउं, पयाहिणं **वीर**नाहस्स ॥१७७३॥

तित्थपणामं काउं, केवलिपरिसाए पत्थिया तेऽवि ।
गोयमसामी पभणइ, मा वच्चह वंदह जिणिंदं ॥१७७४॥ ॥ जुम्मं ॥

---

१. सुवर्णत्वम् । २. योगविधिः । ३. विधि एवं प्रतिषेध । ४. ०भाववादः । ५. (दे.) कुत्रिम, बनावटी । ६. कष, छेद और ताप में से कोई भी । ७. सुष्ठु निष्पन्नः ।

1. अ – छेउ, छेओ – क. ।

(गणहारिगोयमो गदिओ गोयमगुरूणा)

भयवं पि भणइ **गोयम** !, [1]मा आसाएहि केवली एए ।
तो सो विम्हियचित्तो, संविग्गो खामए ते उ ॥१७७५॥

मिच्छाउक्कडपुव्वं, कुणइ य खेयं मणम्मि हा ! मज्झं ।
नो उप्पज्जइ नाणं, किमिह भवे हं न सिज्झेज्जा ? ॥१७७६॥

सुणइ य अमरुल्लावं, [1]वागरियं अज्ज भो ! भुवणपहुणा ।
जो नियसत्तीए नरो, वंदइ **अट्ठावयं** तित्थं ॥१७७७॥

सो तेणेव भवेणं सिज्झइ, [2]विद्धुणियसव्वकम्मंसो ।
तो **गोयमो** वि सोउं, **अट्ठावय**वंदणं महइ ॥१७७८॥ ॥ जुम्मं ॥

तस्स [3]अधिइविगमत्थं, तावससंबोहणं च नाऊणं ।
पभणइ **वीरो गोयम** !, वंदसु **अट्ठावय**जिणिंदे ॥१७७९॥

इय सोउं परितुट्ठो, वंदिय **वीरं** गओ य सो तम्मि ।
सासयसुहेक्करसिओ, **चारण**लद्धीए संपन्नो ॥१७८०॥

इओ य –

अट्ठावयं विलग्गा, लोगसुईए [4]सुणेत्तु जिणकहियं ।
कोडिन्नदिन्नसेवालनामया तावसा तिन्नि ॥१७८१॥

पढमो कुणइ चउत्थं, पारइ कंदफलाइयं सो य ।
पंचसयतावसजुओ, आरूढो [5]मेहलं पढमं ॥१७८२॥

बीओ य कुणइ छट्ठं, [6]सुक्कफलाई य भुंजइ निरीहो ।
सो मेहलं विलग्गो बीयं, पंचहिं सएहिं जुओ ॥१७८३॥

सेवाली अट्ठमयं करेइ, भुंजइ य सुक्कसे[7]वालं ।
सो पंचसओ तइयं, आरूढो मेहलं जाव ॥१७८४॥

---

१. व्याकृतम् = उक्तम् । २. विधूत० = उन्मूलित । ३. अधृति० । ४. श्रुत्वा । ५. मेखलाम् । ६. शुष्क० । ७. काई, 'लील' ।

1. मासा० – ज. ।

परतो ते अचयंता, आरोढुं [1]उम्मुहा[1] विसन्ना य ।
चिट्ठंति ताव पत्तो, **गोयम**सामी [2]सुतवतेओ[2] ॥१७८५॥

उत्तत्तकणयवन्नो, सुंदरलावन्नरूवसंपन्नो ।
तं दट्ठुं ते सव्वे, परोप्परं भणिउमाढत्ता ॥१७८६॥ ॥ जुम्मं ॥

(गयवइगमणगइगणेसरगोयमं दट्ठुं तावसवियारणा)

अम्हे सुक्का [3]भुक्खा[3], इमं न [4]सत्ता[4] गिरिं विलग्गेउं ।
[5]एयस्स थूलरिसिणो[5], एत्थारुहणम्मि का सत्ती ? ॥१७८७॥

इय तेसि भणंताणं, पेच्छंताणं च विम्हियमणाणं ।
तुरियं समारुहंतो, खणेण [6]अद्दंसणीहूतो[6] ॥१७८८॥

ते [7]आउट्टियचित्ता[7] भणंति, [1]अहो ! [8]पेच्छिमस्स[8] सामत्थं ।
एस महप्पा कोइ वि, परमरिसी पयडतवतेओ ॥१७८९॥

ता जइ एसो एही, सीसा अम्हे इमस्स होहामो ।
इय ते निच्छियचित्ता, **गोयम**मिंतं [9]पडिच्छंति[9] ॥१७९०॥

अट्ठावयसिहरट्ठिय[10]मायय[10]णं, **गोयमो** वि संपत्तो ।
नंदीसररसिद्धालय[11]पडिच्छंदो[11] जं विणिम्मवियं ॥१७९१॥

अवि य - **(अणण्णअण्णअपराइयअट्ठावयवण्णणं)**

[12]आयामु[12] जासु जोयणपमाणु, जहिं **रिसह**पहू मोक्खपयाणु ।
गाउयइं तिन्नि उच्चत्तु कहिउ, तं पवरु तित्थु अमरेहि महिउ ॥१७९२॥

---

१. उन्मुखाः = उर्ध्वमुखाः । २. सुतपस्तेजः । ३. बुभुक्षिताः । ४. शक्ताः । ५. स्थूल० = मोटा, 'जाड़ा' । ६. अदर्शनीभूतः । ७. आदत० = आदरयुक्त । ८. पश्यत अस्य । ९. आगच्छन्तम् । १०. जिनमन्दिरम् । ११. प्रतिच्छन्द० = प्रतिबिम्ब, सदृश ।
१२. आयामं यस्य योजनप्रमाणं, यत्र **ऋषभ**प्रभुः मोक्षप्रयातः ।
[1]गव्यूतानि त्रिणि उच्चत्वं कथितं, तद् प्रवरं तीर्थं अमरैः महितम् ॥१७९२॥

---

१. गाउ = दो हजार धनुष्य प्रमाण जमीन ।

1. ते - ज. ।

[१]रयणुज्जलमणिमयचउदुवारु, निम्मवियविविहचित्तप्पयारु ।
मंदरचूला विव सिहरु जासु, को वन्निउ सक्कइ सोह तासु ? ॥१७९३॥

तहिं घडियपवरपुत्तलियपंति, अवयरियवरच्छर नं सुकंति ।
पणवन्नरयणकर विच्छरंति, नं इंदचावसय विप्फुरंति ॥१७९४॥

उत्तत्तकणयवरकलसु भाइ, रविबिंबु उदयगिरिसिहरि नाइ ।
धयदंडु [1]रुइरमाणिक्कजडिउ, माणवयखंभु [2]विहरे विव घडिउ ॥१७९५॥

तुंगत्तणि सो नहसिहरि लग्गु, नं भवियहं दरिसइ मोक्खमग्गु ।
जोइज्जइ जं जं तासु अंगु, उप्पायइ तं तं मणहरंगु ॥१७९६॥

गब्भहरमज्झि मणिपेढियाए, **उसहा**इयाण समसेढियाए ।
पडिमाओ जिणाण पसन्नियाओ, नियवन्नपमाणसमन्नियाओ ॥१७९७॥

---

१. रत्नोज्वलमणिमयचतुर्द्वारः, निर्मापितविविधचित्रप्रकारः ।
मन्दरचूला इव शिखरः यस्य, को वर्णयितुं शक्नोति शोभां तस्य ? ॥१७९३॥

तत्र घटितप्रवरपुत्तलिकापङ्क्तः, अवतीर्णवराप्सराः इव सुकान्तिः ।
पंचवर्णरत्नकिरणानि विस्तृणन्ति, इव [१]इन्द्रचापशतानि विस्फुरन्ति ॥१७९४॥

उत्तप्तकनकवरकलशः भाति, रविबिम्बः उदयगिरिशिखरे इव ।
ध्वजदण्डः रुचिरमाणिक्यजटितः, [२][३]माणवकस्तम्भः [४]प्रतीक्षायामिव घटितः ॥१७९५॥

तुङ्गत्वे सः नभोशिरसि लग्नः, इव भविकान् दर्शयति मोक्षमार्गम् ।
[५]योज्यते यद् यद् तासु अङ्गं, उत्पाद्यते तद् तद् मनोहराङ्गम् ॥१७९६॥

गर्भगृहमध्ये मणिपीठिकायां, **ऋषभा**दीनां समश्रेणिकायाम् ।
प्रतिमाः जिनानां [६]प्रसन्नाः, निजनिजवर्णप्रमाणसमन्विताः ॥१७९७॥

---

१. इन्द्र धनुष्य । २. खचित, संलग्न । ३. सौधर्मदेवलोक का एक चैत्यस्तम्भ । ४. अथवा वज्रात् इव घटितः । ५. यदि आप अष्टापद के साथ अपने अङ्ग को जोड़ते हो = दर्शन करते हो तो वह अष्टापद आपके अङ्ग को निर्मल बना देता है । वैसा भावार्थ है । ६. अथवा प्रसंज्ञिकाः = लांछन युक्ता ।

1. अ – ०इरु । 2. ब – ०हरि० – ज.क. ।

जहिं मुहमंडव सोहहिं चउदिसि मणहरण, पुरओ पेच्छामंडव वरथंभाहरण ।
[1]पडिमथूभचीरुक्खमहिंदज्झयपवर, एवमाइ **नंदीसर**जिणहरसरिसपवर [2]॥१७९८॥

काउं पयाहिणाओ तिन्निउ, हरिसुल्लसंतरोमंचो ।
उसभाइजिणे वंदिय, थुणइ तओ **गोयमो** [3]एवं ॥१७९९॥

उसभाई जयगुरुणो, इमाए ओ[4]सप्पिणीए उप्पन्ने ।
[5]पढमपवत्तियतित्थे, थो[1]सामि जिणेसरे पयओ ॥१८००॥

(भावसिद्धं पडुच्च दव्वसिद्धस्स थुई)

जय **उस[6]ह**जिणेसर ! पढमदेव !, जय **अजिय** ! सुरासुरविहियसेव ! ।
जय **संभव** ! भवभयभीयसरण !, **अभिनंदण** ! जय सुरपणयचलण ! ॥१८०१॥

जय **सुमइ** ! कु[7]मयसारंगसीह !, **[8]पउमप्पह** ! जय [9]जसप[२]त्तलीह ! ।
जय जय **सुपास** ! ससिसोमवयण !, **चंदप्पह** ! जय [३]कंदोट्टनयण ! ॥१८०२॥

जय **सुविहि** ! विहियसंसारभंग !, जय **सीयल** ! ववगयसयलसंग ! ।
सेज्जंस ! जयहि जयजंतुरक्ख !, जय **वासुपुज्ज** ! सिवबद्धलक्ख ! ॥१८०३॥

जय **विमल** ! दलिय[10]गुरुकम्मकंद !, जय जय **अणंत** ! महिवलयचंद ! ।
जय **धम्म** ! धम्मधुरधरणधीर !, जय **संति** ! [४]वसणघणरयसमीर ! ॥१८०४॥

जय **कुंथु**देव ! भुवणप्पयास !, जय **अर**जिण ! सिव[11]पुरकयनिवास ! ।
जय **मल्लि** ! मल्लसममोहमहण !, **मुणिसुव्वय** ! जय [५]भवरन्नदहण ! १८०५॥

यत्र मुखमण्डप शोभाभिः चतुर्दिक्षु मनोहरः, पुरतः प्रेक्षामण्डपः वरस्तम्भाभरणः ।
प्रतिमास्तूपचैत्यवृक्षमहेन्द्रध्वजप्रवरः, एवमादिः **नन्दीश्वर**जिनगृहसदृशप्रवरः ॥१७९८॥

१. स्तौमि । २. लब्धयशःपत्रं इव । ३. (दे.) नीलकमल । ४. व्यसनघनरजस्समीर ! = व्यसन रूपी घनरज = 'गाढ धूल' । उसको दूर करने में पवन समान । ५. भवाऽरण्यदहनः ।

1. पडिमा० – क. । 2. अ – ०सुपर – ज., ०सपर – क । 3. भयवं – क. । 4. अवस० – ज. । 5. परम० – क. । 6. उसभ० – क. । 7. ०मइ० – क. । 8. ब – परम० । 9. ब – जग० – ज.क. । 10. अ – ०मुरु । 11. ०पुरि० – ज. ।

जय **नमि**जिण ! चिंतामणिपकप्प !, जय **नेमि** ! भग्गकंदप्पदप्प[1] ! ।
जय **पास** ! पणासियसयलदुक्ख !, जय **वीर**नाह ! जय कप्परुक्ख ! ॥१८०६॥

सन्नाणपयासियवत्थुजाय !, बत्तीससुरेसरनमियपाय ! ।
रागाइसत्तुनिम्महणसूर !, भव्वारविंदपडिबोहसूर ! ॥१८०७॥

चउवीस वि करुणारसनिहाण, चउवीस वि पावियसिद्धिट्ठाण[2] ।
चउवीस वि भुवणुद्धरणखंभ, चउवीस वि दुद्धरधरियबंभ ॥१८०८॥

चउवीस वि अट्ठावयमंडण, चउवीस वि मायामयखंडण[3] ।
चउवीस वि **भरहेसर**कारिय[4], वंदह नियनियनामुच्चारिय ॥१८०९॥

एवं थोऊण जिणे, निग्गंतुं[1] जिणहरस्स मज्झाओ ।
उवविट्ठो सिलपट्टे[5], **असोग**रुक्खस्स हेट्ठम्मि ॥१८१०॥

(अट्ठावयोप्पत्तिकहणं)

सुरदाणवखयरेहिं य, गणहारी वंदिओ सबहुमाणं ।
धम्मकहाअवसाणे य, पुच्छिओ तेहिं सो भयवं ॥१८११॥

केणेमं जिणभवणं, कारवियं सुकयकम्मुणा रम्मं ? ।
कहइ य **गोयम**सामी, आसी इह पढमतित्थयरो ॥१८१२॥

उसभो नाम महप्पा, तस्स सुओ आसि[2] पढमचक्कि त्ति ।
भरहो तेण य निसुया, **उसभ**समीवे जिणाइया ॥१८१३॥

भरहम्मि जे भविस्सा, सत्तसु ठाणेसु दविणविणिओगो ।
होइ य गिहीण सम्मं, सद्धाजोगेण कीरंतो ॥१८१४॥

बीयस्स व निक्खेवो, सुक्खेत्तेसुं बहुफलो चेव ।
एमाइओ य निसुओ, धम्मुवएसो तया तेण ॥१८१५॥ ॥ चउहिं विसेसयं ॥

---

१. निर्गत्य । २. जिनादिकाः = तीर्थंकर, चक्रवर्ती, वासुदेव वि. ।

1. ब - ०सप्प । 2. ०द्धठा० - क. । 3. ब - ०मइ० । 4. ०सरिका० - ज.क. । 5. ०पट्टे - क. ।

सत्तट्ठाणाणि पुण - (**सत्तट्ठाणसमायरणसाहल्लं**)

जिणभवणं जिणबिंबं, जिणागमो चउव्विहो य सिरिसंघो ।
संजयसंजयिसावयसावियरूवो गुणनिहाणं ॥१८१६॥

जो अहिगारी विहिणा, जिणभवणं कारवेइ जहसत्ती ।
सो सुरनरसिवसोक्खं, अइरेणं लहइ कयपुन्नो ॥१८१७॥

एवं च बिंबकारी, जिणागमुद्दीवणं च कुणमाणो ।
सुहफलभागी जायइ, तित्थयरत्ताइ अज्जेइ ॥१८१८॥

सत्तीए संघपूया, अविसेसेणं गिहीहिं कायव्वा ।
जं एस सुए भणिओ, तित्थयराणंतरो संघो ॥१८१९॥

पत्तं सिवतरुबीयं, भववल्ली दुहफलाउला छिन्ना ।
सायत्ताइं कयाइं, सुहाइं इह तेण सव्वाइं ॥१८२०॥

दारिद्दं चोवहयं, बद्धं तित्थयरनामकम्मं ति ।
सद्धासंवेगपरं, संघो परिपूइओ जेण ॥१८२१॥ ॥ जुम्मं ॥

एसा उ महादाणं, एस च्चिय होइ भावजन्नो त्ति ।
एसा गिहत्थसारो, एस च्चिय संपयामूलं ॥१८२२॥

एयाए फलं नेयं, परमं निव्वाणमेव नियमेणं ।
नरसुरसुहाइं अणुसंगियाइं, इह किसि पलालं व ॥१८२३॥ ॥ जुम्मं ॥

भरहेण इमं सोउं, **अट्ठावय**पव्वयम्मि एयम्मि ।
मोक्खगए **उसभ**जिणे, एयं कारावियं तित्थं ॥१८२४॥

---

१. तीर्थकर-अनन्तरः । २. स्वायत्तानि । ३. संघपूजा । ४. भावयज्ञः । ५. संघपूजायाः । ६. आनुषङ्गिकानि । ७. कृषौ पलालमिव = अनाज की खेती करने पर घास तो स्वयं ही उग जाता है।

1. ०समणि० - क. । 2. गिहीण - क. । 3. अ - ०णंतरं । 4. ब - भो व० । 5. अ - ०वेयेणं - क. । 6. अ - ०सन्नो । 7. अ - एयं । 8. ब - नेव्वा० ।

[1]जिणपडिमाचउवीसं, [2]भाउयपडिमासयं च एगूणं ।
[3]नियमुत्ती य जिणिंदे, कारविया पज्जुवासंती ॥१८२५॥

थूभसयं भाईणं, [4]परिपेरंतेसु रक्खणनिमित्तं ।
चीभवणस्सुत्तुंगं, वड्ढइरयणेण निम्मवियं ॥१८२६॥

लोहमया पडिहारा, जंतमया कारिया दुवारम्मि ।
अट्ठेव मेहलाओ, ते छिन्ना दंडरयणेणं ॥१८२७॥

इगजोयणंतराओ, एग[1]पए अट्ठजोयणुस्सेहे ।
एयम्मि रक्खणत्थं, तो पच्छा **सगर**पुत्तेहिं ॥१८२८॥

[5]फरिहा कया अगाहा, भरिया **गंगा**जलस्स आणेउं ।
[2]दंडमहारयणेणं, समंतओऽलंघणिज्जस्स ॥१८२९॥ ॥ जुम्मं ॥

इय कहिऊण **गोयमो**, रयणिं गमिउं पहायसमयम्मि ।
उत्तिन्नो तो दिट्ठो, [3][6]तेहिं सहरिसं तावसेहिं ॥१८३०॥

(तत्थ तत्थतत्ततिपयारतावसतप्पणं)

पणमिय भणंति, अम्हे सीसा तुम्हाण, अम्ह तं सि गुरू ।
अम्हं तुम्हं च गुरू, **वीरो** इय **गोयमो** आह ॥१८३१॥

---

१. भरतराजा ने वर्धकिरत्न द्वारा २४ तीर्थंकर की तथा ९९ भाईओ की एवं परमात्मा की उपासना करती हुई खुद की प्रतिमा बनवाई । तथा जिनभवन की रक्षा हेतु बहार चारो और बड़े बड़े १०० स्तूप बनवाए । (१ आदिनाथ भगवान का + ९९ भाईओ का) फिर वर्धकिरत्न द्वारा ही द्वार प्रदेश में लोहे के यंत्र युक्त द्वारपाल की रचना करवाई । एवं दण्डरत्न द्वारा तीर्थ की रक्षा हेतु एक एक योजन के अंतर से पर्वत की आठ मेखलाए काट दी । (इस तरह आठ चढावे बनने के कारण अष्टापद तीर्थ कहलाया ।) उसके बाद सगर चक्रवर्ती के पुत्रोने दण्डरत्न द्वारा तीर्थ की चारो और गहरी खाई बनाई और अनुल्लङ्घ्य गङ्गा जल से भर दी ॥ श्लो. १८२५ से १८२९ ॥ २. भातृ० । ३. जिनेन्द्रान् पर्युपासन्ती निजमूर्तिः कारापिता । ४. परिपर्यन्त० = प्रान्तभाग । ५. परिखा = खाई । ६. तत्र ।

1. ब - ०पहे - क. । 2. ब - ड्डंड० । 3. तावसवग्गेहिं गुरुहरिसं - क. ।

सो केरिसो त्ति पुट्ठे, **वीर**गुणुक्कित्तणं तओ कुणइ ।
सुहुमे खेत्तंतरिए[१], कालंतरिए मुणइ सव्वे ॥१८३२॥

सो भावे सन्नाणी[२], उम्मुक्को[1] रागदोसमोहेहिं ।
बत्तीसं पि सुरिंदा, किंकरभावं गया जस्स ॥१८३३॥ ॥ जुम्मं ॥

बहुअइयसंपन्नो, **वीरो** भवियारविंददिणणाहो ।
सव्वंगियरूवेणं, कंतीए तिहुयणब्भहिओ ॥१८३४॥

भणियं च –

सव्वसुरा जइ रूवं, अंगुट्ठपमाणयं[२] विउवेज्जा ।
जिणपायंगुट्ठं पइ[३], न सोहए तं जहिंगालो[४] ॥१८३५॥

इय सोउं ते तुट्ठा, पव्वइया **गोयम**स्स पासम्मि ।
देवयविइन्नलिंगा, **गोयम**सहिया पहे चलिया ॥१८३६॥

एगम्मि सन्निवेसे, भिक्खावेलाए पुच्छिया ते उ ।
किं आणिज्जइ तुम्हं पारणए, ते वि जंपंति ॥१८३७॥

आणेह पायसं णे[५], **गोयम**सामी वि लद्धिसंपन्नो ।
आणइ सोदरमेत्तं[६][३], खीरिं सपडिग्गहे काउं ॥१८३८॥

उवविसह त्ति भणिए, इमेण किं एत्तियाण होहि त्ति ? ।
किं तु गुरु च्चिय जाणइ, जुत्ताजुत्तं ति चिंतेउं ॥१८३९॥

उवविट्ठा तिप्पविया[७], अक्खीणमहाणसीए सव्वेऽवि ।
पच्छा सयं पभुत्तो, गणहारी विम्हिया तेऽवि[4] ॥१८४०॥ ॥ तिहिं विसेसयं ॥

---

१. क्षेत्रान्तरान् कालान्तरान् = क्षेत्रातीत = उर्ध्व-अधो-तिर्यग् लोक ज्ञाता, कालातीत = भूत-भविष्य के ज्ञाता । २. सत् पदार्थों के ज्ञाता । ३. अग्रे । ४. यथा इङ्गालः । ५. अस्मभ्यम् । ६. स्वोदरमात्रम् । ७. तर्पिताः = तोषिताः ।

1. तं मुक्को – ज. । 2. ब – यंगुट्ठं प० । 3. ब – ०रपूरणमेत्तं स० – क. । 4. ते णं – क. ।

(केवलगुरुबहुमाणकयंबकारणेन केवलनाणुप्पत्ती कोडिन्नाइणं)

भवकूयकरालंबो पत्तो, सामी सुदुल्लहो [1]**वीरो** ।
धम्म[2]गुरू जणयसमो, अणब्भवुट्ठि व्व एसो य ॥१८४१॥

बोही सुहावहा तह, [3]पत्ता भवसयसहस्सदुल्लंभा ।
ता कयपुन्ना अम्हे, एमाई भावयंताणं ॥१८४२॥

सुहपरिणामवसेणं, भुंजंताणं तु केवलं जायं ।
सेवालभक्खगाणं, [4]मग्गे पुण **दिन्न**माईणं ॥१८४३॥ ॥ जुम्मं ॥

पिच्छंताण य **वीरं, कोडिन्ना**ईण तक्खणं चेव ।
छत्ताइछत्तकलियं, उप्पन्नं केवलं नाणं ॥१८४४॥

काउं पयाहिणं ते, केवलिपरिसं पहाविया सव्वे ।
वंदह एह जिणिंदं, भवमहणं **गोयमो** भणइ ॥१८४५॥

[5]भणइ जिणिंदो **गोयम** !, मा आसाएहि केवली एए ।
तो खामइ संविग्गो, [6]मिच्छामीदुक्कडं देइ ॥१८४६॥

कुणइ महंतमधीइं, नाहं सिज्झामि नूण गुरुकम्मो ।
सिग्घमिमे लहुकम्मा, कयपुन्ना केवली जाया ॥१८४७॥

भयवं पि तं [१]सखेयं नाऊणं, भणइ **गोयमा** ! कहसु ।
तित्थयराणं वयणं, [२]गज्झमुयाहो तुहागेज्झं ? ॥१८४८॥

एगंतओ उ गज्झं, ता खिज्जसि कीस ?, जं तुममहं च ।
दोण्णि वि अम्हे **गोयम** !, अंते तुल्ला भविस्सामो ॥१८४९॥

---

१. सखेदम् । २. ग्राह्यम् ।

1. ब - वीरं । 2. अ - ०गुरुजणयसम्मो । 3. अ - ०ता जा भवसह० - ज.क. । 4. ब - मज्झे । 5. आह - क. । 6. मिच्छाती दु. - ज. ।

अन्नं च - (**सिरिसिद्धत्थसुयेणं सखेयगोयमं संसियं**)

गोयम ! चत्तारि [१]कंडा, सुंठकडो वि दलचम्मकडगा य ।
कंबलकडो ममोवरि, कंबलकडउ व्व तुह [२]नेहो ॥१८५०॥

[1]चिरसंसट्ठो चिरपरिचिओ य, जं मज्झ तं सि ता मोहो ।
आवरइ केवलं तुह, विगए य इमम्मि [2]तुह होही ॥१८५१॥

तम्मि य समए **गोयम**निस्साए, पन्नवेइ अज्झयणं ।
दुमपत्तं **वीर**जिणो, [३]दितो सिस्साणमणुसट्ठिं ॥१८५२॥

दुमपत्तए पंडुयए जहा, निवडइ [3]राइगणाण अच्चए ।
एवं मणुयाण जीवियं, समयं **गोयम** ! मा पमायए ॥१८५३॥★

कुस्सग्गे जह ओसबिंदुए, थोवं चिट्ठइ लंबमाणए ।
एवं मणुयाण [4]जीवियं, समयं **गोयम** ! मा पमायए ॥१८५४॥★

तहा -

मणुयत्तमारियत्तं, अहीणपंचिंदियत्तधम्मसुई ।
सद्दहणं धम्मचरणं, जहुत्तरं एयमइदुलहं ॥१८५५॥

इय नाऊणं **गोयम** !, समयं पि हु मा करेज्जसु पमायं ।
एमाइ तमणुसासिय, [5]**चंपा**ओ [6]विहरिउं भयवं ॥१८५६॥

सावत्थि संपत्तो, समोसढो **कोट्ठग**म्मि उज्जाणे ।
[7]भत्तीए वंदणत्थं च, आगया तत्थ [8]पुरिपरिसा ॥१८५७॥ ॥ जुम्मं ॥

---

१. चटाइ । २. तृणद्विदलचर्मोर्णाकटतुल्या भवन्ति हि । स्नेहा गुरुषु शिष्याणां तवोर्णाकट-सन्निभः ॥ त्रिष. १०.९.२५९॥ तृणं च द्विदलं च चर्म च उर्णाकटः = उर्णानिर्मितकटस्तैस्तुल्याः समानाः । ३. यच्छन् ।

1. अ - ०संसिद्धो । 2. तं - ज.क. । 3. रागग० - क. । 4. ०विए - ज. । 5. चंपाए - क. । 6. ब - विहरिओ - क. । 7. अ - कइया वि - ज.क. । 8. पुरिओ प० - ज. ।

कहिओ धम्मो भयवया –

बज्झंति जहा जीवा, मुच्चंति जहा भवे य [1]जह दुक्खं ।
[2]जह सिद्धाणं सोक्खं, कम्मविवागं च सुहमसुहं ॥१८५८॥

गोसालो तत्थ[1]च्छइ, **हालाहल**कुंभयारसालाए ।
मत्तो निमित्ततेऊलेसाहिं, ससीसपरियरिओ ॥१८५९॥

छट्ठं छट्ठेण तवं कुणमाणो, **गोयमो** [2]अनिक्खित्तं ।
सावत्थीनयरीए, भिक्खनिमित्तं अणुपविट्ठो ॥१८६०॥

सुणइ य बहुजणसद्दं, जिण[3]प्पलावी जिणो य **गोसालो** ।
तं सोउं संसइओ, विहरित्ता आगओ **वीरं** ॥१८६१॥

वंदित्ता परिपुच्छइ, एत्थ जिणत्तेण [3]घोसए भयवं ! ।
गोसालो लोए णं, ता को सो कहह परमत्थं ॥१८६२॥

मम सीसो एस आसि त्ति भणिऊणं –

मंखलिपुत्तत्ताईवुत्तंतं, तस्स तेउलेसंतं ।
कहइ जिणो परिसाए मज्झे, गणहारिणा पुट्ठो ॥१८६३॥

जणपासाओ य इमं, **गोसालो** सोउमासुरुत्तो [4]य ।
आणंदं अणगारं, गोयरचरियागयं दट्ठुं ॥१८६४॥

पभणइ भो **आणंदा** !, तव धम्मायरिओ[5] मए समं अज्ज ।
[4]खवलइ सुरकयपूओ, नियइड्ढीगारववसेणं ॥१८६५॥ ॥ जुम्मं ॥

ता आगच्छामि अहं, तस्स सयासम्मि एस जइ किंचि ।
सो पडिकूलं [6]भासइ, तं तेएणं दहेमि तओ ॥१८६७॥

---

१. अच्छइ = तिष्ठति । २. अनिक्षिप्तम् = अपरित्यक्त, सतत् । ३. ०प्रलपिता = बकवाद करने वाला । ४. (दे.) झगड़ा करना ।

1. बहु० – क. । 2. तह – क. । 3. घुस्सए – ज. । 4. ब – उ – ज.क. । 5. ब – ०रिए – ज. । 6. ब – सासइ ।

तं सोउं भयभीओ, **आणंदो** गंतु वंदिउं **वीरं** ।
साहइ **गोसालु**त्तं तं, भंते ! सो [1]पहू दहिउं ? ॥१८६८॥

भयवं भणइ पहू सो, **आणंदा** ! किं परं न अरिहंते ।
[2]परियावणे समत्थो, तेसिं पि हु ता तुमं कहसु ॥१८६९॥

गोयममाइमुणीणं, **गोसालं** किं पि कोइ मा भणउ ।
सो कुद्धो आगमिही, भणिओ तेएण य दहेइ ॥१८७०॥ ॥ जुम्मं ॥

(गणहरगुरुपासे गोसालगागमणं)

आणंदेण य कहियं मुणीण [3]तं, सो य आगओ तुरियं ।
गोसालो बहुसीसो, उद्धट्ठिओ भणइ भयवंतं ॥१८७१॥

किं भणसि [4]कासवा ! [5]तं, **गोसालो** आसि एस मम सीसो ? ।
अन्नो सो तुह सीसो, अहं [1]तु तन्नामओ अन्नो ॥१८७२॥

[6]जह तेणो पारद्धो, नगरारक्खियभडेहिं **गोसाला** ! ।
पुरओ देइ तणाइं, आवरणत्थं सरीरस्स ॥१८७३॥

छाइज्जइ तेण [2]न [7]तं, गोवे[3]सि तुमं पि एवमप्पाणं ।
न य अन्नो होसि त्ति य, भणिओ **वीरे**ण अइरुट्ठो ॥१८७४॥

[8]उच्चावयमक्कोसइ, [9]बेइ विणट्ठो सि मम सयासाओ ।
सव्वाणुभूइसाहू, तं सोउं सामिभत्तीए ॥१८७५॥

जंपइ [4]सो **गोसाला** !, एक्कं पि हु अक्खराइ जो जत्तो ।
सिक्खइ सो तं वंदइ, गुरु त्ति काउं [5]कुणइ भत्तिं ॥१८७६॥ ॥ चउहिं विसेसयं ॥

---

१. प्रभुः = समर्थ । २. परितापने = जलाने के लिए । ३. जिनोक्तम् । ४. प्रभु काश्यप गोत्र के थे, तो अनादर से गोत्र के नाम से पुकारता है । ५. त्वम् । ६. जैसे नगर के रक्षक सैनिको द्वारा पकड़ में आनेवाला कोई चोर उनके सामने अपने आपको छिपाने के लिये घास के तिनके मुँह के आगे रखता है, तो क्यां वो छिप सकता है ? । ७. स चौरः । ८. उच्चावचम् = असमञ्जस, जैसे तैसे । ९. बोलना ।

1. ब - च । 2. अ - तयं । 3. गोवेसु - ज., गोविसं - क. । 4. तो - क., हा - प., सो गोसाले - ज. । 5. करइ भत्ती - क. ।

तं पुण सीसत्तेणं पडिवन्नो, भगवया य[1] सिक्खविओ ।
तेऊलेसावसणाउ मोइओ, बहुसुओ य कओ ॥१८७७॥

पडणीयत्तं[1] संपइ किं, पडिवन्नो सि दुट्ठु तुज्झ मई ।
इय भणिओ सो रुट्ठो, तं साहुं भासस[2]ा कुणइ ॥१८७८॥ ॥ जुम्मं ॥

पुणरवि जिणमक्कोसइ, तओ **सुनक्खत्त**महरिसी तत्थ ।
धम्मगुरुपरमभत्तो, चिंतइ नियजीवनिरवेक्खो ॥१८७९॥

मा जम्मउ सो पुरिसो, जाओऽवि हु जियउ मा चिरं कालं ।
जो पेच्छंतो वि सहइ, धम्मगुरुपराभवं मूढो ॥१८८०॥

(तवस्सितिसिलातणयस्य तज्जणं तत्ततेउलेसमोयणं य)

इय चिंतिय पडिचोयइ, **गोसालं** सो[3] तहेव तेएणं ।
सोऽवि[4] तं परितावइ, बाढं[2] तो **वीर**पासम्मि ॥१८८१॥

आलोइयपडिक्कंतो, उच्चरियमहव्वओ समाहिजुओ ।
खामियसंजयसाहुणिवग्गो, सव्वत्थ समभावो ॥१८८२॥

कालगओ सो वीरो[5], पुणो य अक्कोसए[6] जिणं सो य ।
पडिचोइओ जिणेणं, तहेव तेयं तओ मुयइ ॥१८८३॥ ॥ तिहिं विसेसयं ॥

जह वातोली[7] सेले, पक्कमइ[8] न चेव तह जिणसरीरे ।
सा वि न पहवइ काउं, अड्ढिवियड्ढिं[9] तओ उड्ढं ॥१८८४॥

उप्पइया[4] पडिनिहया, **गोसाल**सरीरगं अणुपविट्ठा ।
तीए अंताइट्ठो[10], सो विमणो जंपए एवं ॥१८८५॥ ॥ जुम्मं ॥

---

१. प्रत्यनीकत्वम् । २. भष्मसात् । ३. सुनक्षत्रमुनिः । ४. गोशालः । ५. सुनक्षत्रऋषिः । ६. तेजोलेश्याम् । ७. वातोली = पवन समूह, झंझावात । ८. (हिलाने के लिए) समर्थ होना । ९. अर्दवितर्दम् = घायल करने के लिए = दुःख देने के लिए । १०. तया अन्तःआविष्टः = तेजोलेश्या द्वारा आविष्ट हृदय वाला ।

1. वि – क. । 2. पाढंतो – ज.क. । 3. ब – अंचिवियंचिं – ज.क. । 4. उपाइ० – क. । 5. ब – अन्ना० – ज.क. ।

मम तेएणं अंतो, छण्हं मासाण कासवा ! तं सि ।
दाहत्तो[1] छउमत्थो, करेसि कालं जिणो आह ॥१८८६॥

सोलसवासाइं अहं अन्नाइं वि, विहरिऊण **गोसाला** ! ।
केवलिपरियाएणं, पच्छा मोक्खं गमिस्सामि ॥१८८७॥

तं पुण नियतेएणं, अंताविट्ठो[2] य दाहजरघत्थो[3] ।
कालं करेसि अंतो, सत्तण्ह दिणाण छउम्मत्थो ॥१८८८॥

भणिया जिणेण मुणिणो, धम्मियपडिचोयणाए[3] चोएह ।
गोसालं हयनिहओ, विज्झायग्गि व्व जं एसो ॥१८८९॥

पडिचोयंति य ते तं, कुणंति निप्पट्ठपसिणवागरणं[4] ।
कोवग्गिजलंतोऽवि हु सो, न तरइ किं पि काऊणं ॥१८९०॥

उद्धियदाढो व्व फणी, सीसा वि हु तस्स[4] तं निएऊणं[5] ।
वीरजिणं अल्लीणा[5] केइ वि, अन्नेऽवि तं चेव ॥१८९१॥

गोसालोऽवि - (**गुणगुरुगंभीरगुरुआसायणगरुयफलं**)

दीहुण्हे[6] नीसासे मुंचंतो, दाढियाउ[7] लुंचंतो ।
पाएहिं[6] कुट्टंतो[7] भूमिं[8], रोसेण कंपंतो ॥१८९२॥

निग्गंतूण य तत्तो, नियट्ठाणम्मि सो गओ तुरियं ।
तत्थ वि दाहजरेणं, चिट्ठइ वुन्नो[8] विगयपुन्नो ॥१८९३॥ ॥ जुम्मं ॥

---

१. दाहाऽऽर्तः । २. दाहज्वरग्रस्तः । ३. धार्मिकप्रतिचोदना = धर्म सम्बन्धी प्रेरणा । ४. निस्पृष्ट-प्रश्नव्याकरणम् = निरुत्तर किया हुआ । ५. दृष्ट्वा । ६. दीर्घोष्णनिःश्वासान् । ७. 'दाढी' के बाल को तोड़ता हुआ । ८. (दे.) भीत, त्रस्त ।

1. ब - एत्तो । 2. ब - अन्नाइट्ठो - ज.क. । 3. ०जरग्घत्थो - ज. । 4. ब - तत्थ । 5. आलीणा - क. । 6. ब - ०एहि य । 7. कुट्टिंतो - क. । 8. धरणिं - ज. ।

भगवयाऽवि समणाण साहियं -

जो मुक्को नियतेओ, **गोसालेणं** वहाय मह समणा ! ।
सो [1]**अंगवंगमाई**, सोलसदेसे अलं दहिउं ॥१८९४॥

इओ य -

[1]अंबंबिलियापाणगमाई, दाहस्स पसमणनिमित्तं ।
गोसालो पियइ बहू, करेइ सीओवयारे य ॥१८९५॥

मज्जं पिएइ गायइ, नच्चइ [2]**हालाहलाए** पकरेइ ।
अंजलिकम्मं मूढो, सिंचइ [3]मट्टियजलेण तणुं ॥१८९६॥

सत्तमअहरत्तंते, नियमरणं जाणिउं भणइ सीसे ।
मं कालगयं तुब्भे, [4]सिणाणमाईहिं पूएउं ॥१८९७॥

सिबियारूढं काउं, घोसिज्जह एत्थ सव्वनयरीए ।
चउवीसमतित्थयरो, **गोसालो भरह**वासम्मि ॥१८९८॥

केवलणाणी सिद्धो, देवाणुपिया ! [5]इहज्ज इय महया ।
इड्ढीसक्कारेणं, [6]नीहरणं मम करेज्जाह ॥१८९९॥ ॥ तिहिं विसेसयं ॥

(मोहमहामल्लमयमोटक-महारिसिमहावीरमारक-मंखलिपुत्तस्स मोहनासो)

खणमेत्तेण पुणो सो, [4]कहंचि मिच्छत्त[5]खयउवसमेणं ।
संमत्त[6]परिणयमणो, चिंतइ नाहं जिणो होमि ॥१९००॥

मंखलिपुत्तो उ अहं, समणाणं घायगो अणत्थ[7]खणी ।
गुरुपडणीओ धम्मस्स, अयसकारी महापावो ॥१९०१॥

---

१. दाह की उपशान्ति के लिए आम एवं इमली आदि के पानी का सेवन । २. मत्ततया मूढः गोशालः हालाहलाकुम्भकारीं प्रणतिं करोति । ३. मृत्तिकाजलेन = माटी और जल से, कर्दम से । ४. स्नान० । ५. इह अद्य । ६. निर्हरणम् = निर्गमन, परित्याग । ७. ०खनिः = खान ।

1. अंगुवंगुमा० - ज. । 2. ब - ०लाइ । 3. ब - ०हं जइ य । 4. कहिंचि - क. । 5. अ - ०गय०, ०गह० - ज. । 6. ०त्तभावियम० - क. ।

नियतेएणं दड्ढो, करोमि कालं सकम्मदोसेणं ।
भयवं पि **महावीरो,** तित्थयरो केवली एत्थ ॥१९०२॥

एवं परिभावेंतो, नियसीसाणं कहेइ सो सव्वं ।
पुवुत्तं ते भणिया, तुब्भे मं मुणियकालगयं ॥१९०३॥

सुंबेणं[१] बंधेत्ता वामे पायम्मि, थोक्कह[२][1] मुहम्मि ।
तिक्खुत्तो पुण[२] पच्छा, कड्ढविकड्ढिं[३] करेमाणा ॥१९०४॥

घोसिज्जह नयरीए, दुच्चरियं मज्झ तुम्ह जं कहियं ।
वीरस्स जिणत्ताईगुणकित्तणयं करेज्जाह ॥१९०५॥ ॥ तिहिं विसेसयं ॥

महईए अवन्नाए, कड्ढेत्ता मह कलेयरमणज्जं ।
पेयवणे[४] छड्डेज्जह, इय ते सवहेहिं[५] सावेत्ता[६] ॥१९०६॥

गोसालो कालगओ, सीसेहिं सवहमोक्खणनिमित्तं ।
दारं पिहित्तु[७] मज्झे, रेहमया सा कया नयरी ॥१९०७॥ ॥ जुम्मं ॥

तब्भणियं तेहिं कयं, बंधणठोकणयघोसणाईयं[८] ।
तो महया नीहरणं, सक्कारेणं कयं तस्स ॥१९०८॥

भयवं **सावत्थी**[3]ओ, निक्खमिऊणं बहिजणवयविहारं ।
कुणइ पडिबोहयंतो भविए, सूरो व्व कमलवणं ॥१९०९॥

विहरंतो य कमेणं, **मिंढियगामे** पुरम्मि संपत्तो ।
फासुयदेसम्मि ठिओ, उज्जाणे **साणकोट्ठ**म्मि ॥१९१०॥

---

१. तृण विशेष की बनी हुई डोरी, रस्सी । २. थूंकना, मुँह ऊपर लात मारना । ३. कर्ष-विकर्षी = 'खेंचाखेंची' । ४. प्रेतवने = श्मशान । ५. शपथैः = सोगंध द्वारा । ६. शापयित्वा = प्रतिज्ञा से बाँधकर । ७. रेखामया = चित्रित । ८. (दे.) तर्जन, ताडन ।

1. ब - तो०, ठो० - ज. । 2. तो - ज. । 3. ब - ०त्थीए ।

(महुरभासिमहावीरस्स मिंढियग्गामे महइधम्मकहा)

पंचभिगमेण सड्ढा, समागया तत्थ कोउगेणण्णे[१] ।
संसयछेयट्ठण्णे[२], भयवं पुण कहइ सव्वेसिं[1] ॥१९११॥

देवाणुपिया ! धम्मो, कायव्वो भवविरत्तचित्तेहिं ।
तस्स पसाहणकज्जे[३], जं कायव्वं तयं सुणह ॥१९१२॥

गुणरागो कायव्वो, नो कायव्वा कुसीलसंसग्गी ।
वज्जेयव्वा कोहादओ य, सययं पमाओ य ॥१९१३॥

जम्मंतरेऽवि जीवो, पावइ बोही गुणाणुरागाओ[२] ।
सुहपरिणामवसेणं[४], तेणगणायं इहं नेयं ॥१९१४॥

दुट्ठेयरजोगाओ[५], दोसाण[3] गुणाण भायणं होंति ।
गिरिसुयपुप्फसुया[६] इव, ता कायव्वा सुसंसग्गी[4] ॥१९१५॥

पढमकसाया[७] सम्मं[८] हणंति, बीया य देसविरइं ति ।
तइया य सव्वविरइं, चउत्थया पुण अहक्खायं[९] ॥१९१६॥

केरिसा य ते ?

जलरेणुपुढविपव्वयराईसरिसो चउव्विहो **कोहो** ।
तिणिसलयाकट्ठट्ठियसेलत्थंभोवमो[5] **माणो**[6] ॥१९१७॥

मायावलेहिगोमुत्तमिंढसिंगघणवंसमूलसरिसा[7] उ ।
लोहो हलिद्दकद्दमखंजणकिमिरागसमाणो[8] ॥१९१८॥

---

१. ०अन्ये । २. ०छेदनार्थं अन्ये । ३. प्रसाधन० = सिद्ध करने । ४. स्तेनकज्ञातम् । ५. दुर्जन-सज्जनयोगात् जीवाः० । ६. एक माता के दो तोते - एक चोर की पल्ली में गया । दूसरा आश्रम में । संसर्ग से एक मारो-मारो बोलने लगा और दूसरा राम-राम । ७. अनन्तानुबन्धी । ८. सम्यक्त्वम् । ९. यथाख्यात चारित्र को ।

1. अ - सव्वे वि । 2. ०रागेणं - क. । 3. दोसागुणाण० - ज. । 4. सुसंग्गी - ज. । 5. अ - तिण० । 6. ०कट्ठे० - ज. । 7. ०मूलिसमा - ज. । 8. अ ०सम्माणो ।

पक्खचउमासवच्छरजावज्जीवाणुगामिणो[१] कमसो ।
देवनरतिरियनारयगइसाहणहेयवो भणिया ॥१९१९॥

पमाओ पुण –

वरं महाविसं भुत्तं, वरं अग्गीपवेसणं ।
वरं सत्तूहिं संवासो, वरं सप्पेहिं कीलियं ॥१९२०॥

मा धम्मम्मि पमाओ, जमेगमच्चू विसाइणो ।
पमाएणं अणंताणि, जम्माणि मरणाणि य ॥१९२१॥ ॥ जुम्मं ॥

(जमालिजामाउजगदुत्तमजिणिंदंगस्स जज्जरणं)

एवं हिओवएसा[1], पडिबुद्धा तत्थ पाणिणो बहवे ।
सामिस्स तदा जाओ, रोगायंको सकम्माओ ॥१९२२॥

तिव्वो उ दुरहियासो, जिणस्स **वीर**स्स पित्तजरजुत्तो[२] ।
लोहियवच्चाइं[३][2] पि य करेइ, जायइ य अबलतणू ॥१९२३॥ ॥ जुम्मं ॥

रोगकिलंतं दट्ठुं सामी, सव्वो चउव्विहो संघो ।
तह देवदेविवग्गो, महंतमुव्वेयमावन्नो ॥१९२४॥

चाउवन्नो[४] य जणो जंपइ, **गोसाल**तेउलेसाए ।
छण्हं मासाणंतो[3], करिही कालं **महावीरो** ॥१९२५॥

तं सोउं **सीहमुणी,** एगागी विसिय मालुयाकच्छे[५] ।
रोयइ कहकहसद्देण[६], गरुयदुक्खं समावन्नो ॥१९२६॥

सामी साहुं[4] पेसइ, मुणिय इमं तस्स वाहरणकज्जे ।
भणिओ य तेहिं गंतुं, **सीहा** ! सद्दाइ[७] तं **वीरो** ॥१९२७॥

---

१. वत्सरः = वर्ष । २. पित्तज्वरयुक्तः रोगातङ्कः । ३. लोहित-वर्चस् = खून के दस्ते । ४. चातुर्वर्ण्यः = ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र ये चार मनुष्य जाति । ५. मालुकाकच्छ० = वल्ली, लता के पार्श्ववर्ती प्रदेश, एकान्त जङ्गल में । ६. रोते हुए जो आवाज होती है वह । ७. शब्दयति = बुलाना ।

1. ०एसं – ज.क., ०एसं सोउं प० – क. । 2. अ – ०यं पि य । 3. ब – ०णंते – ज.क. । 4. साहू – ज., साहूण – क. ।

सीहोऽवि समागंतुं, वंदित्ता पज्जुवासए भयवं ।
भणिओ जिणेण **सीहा** !, कीस अधिइं तुमं कुणसि ?॥१९२८॥

छण्हं मासाणंतो, नाहं कालं जओ करिस्सामि ।
अन्नाइं अद्धसोलसवासाइं, एत्थ विहरिस्सं ॥१९२९॥

(संसारसंतारकसासणसंठावयसामिणा ससरीरसत्थकए संविग्गसाहुसेहरसिंह-समणो संपेसिओ)

ता गच्छ तुमं **मिंढिय**गामं, मग्गाहि **रेवई** मज्झ ।
गाहा[1]वईण कज्जे, पज्जुसियं ओसहं [2]कप्पं ॥१९३०॥

सीहो य गओ तीए गेहं, अब्भुट्ठिओ [3]पहिट्ठाए ।
सत्तट्ठपए अहिगम्म, वंदिओ परमभत्तीए ॥१९३१॥

भणिओ साहेहि तुमं, देवाणुप्पिया ! इहागमणकज्जं ।
तेण य भणियं अमुगं, पज्जुसियं ओसहं अत्थि ॥१९३२॥

तुज्झ गिहे तं [4]वियरसु, सा भणइ इमं रहस्सनिम्मवियं ।
कह मुणसि तुमं ?, कहियं केवलिणा **वीर**नाहेण ॥१९३३॥ ॥ जुम्मं ॥

तं सोउं सा तुट्ठा, वियरइ [5]**सीह**स्स ओसहं तं तु ।
दव्वाइविसुद्धेणं, ओसहदाणेण सा तेण ॥१९३४॥

देवाउयं निबंधइ, [२]परित्तसं[6]सारियत्तणं कुणइ ।
दिव्वाणि तत्थ पंच य, पाउब्भूयाणि [३]सयराहं ॥१९३५॥ ॥ जुम्मं ॥

सीहो वि य पडिगंतुं, आलोइय दंसिऊण **वीर**स्स ।
[४]णिसिरइ पाणिम्मि तयं, भुत्तममुच्छेण य जिणेण ॥१९३६॥

---

१. गाहावईण कज्जे पज्जुसियं ओसहं मज्झ कप्पं । इति अन्वयः । २. परीत० = परिमित । ३. (दे.) एकसाथ । ४. नि + सृज् = बाहर निकालना, रखना ।

1. अ - ०इ नं, ०इणिं - ज.क. । 2. कप्पे - ज. । 3. ब - य हि० । 4. वियरेसु - ज. । 5. साहुस्स - क. । 6. ब - ०सारिणं तहा ।

खिप्पं चिय उवसंतो, रोगायंको य तम्मि भुत्तम्मि ।
निरुओ बलियसरीरो, जाओ समणो **महावीरो** ॥१९३७॥

तुट्ठा समणा समणी य, सावगा साविगा य तुट्ठाओ ।
देवा देवी य तहा, सदेवमणुयं जगं तुट्ठं ॥१९३८॥

वंदित्तु **इंदभूई** पुच्छइ, **वीरं** कहिं समुववन्नो ।
सव्वाणुभूइसाहू, तहा **सुनक्खत्त**[1]अणगारो ? ॥१९३९॥

पढमो उ **सहस्सारे गोयम** !, बीओ उ **अच्चुए** कप्पे ।
उक्कोसठिई जाया, सिज्झिस्संती **विदेह**म्मि ॥१९४०॥

(पयडपुण्णपब्भारपारंगयपरमपहुस्स पुट्ठा पढमगणहारिणा पकुविअपढमिल्ल-सिस्सस्स पारत्तियपरिहाणिपरंपरा)

भंते ! तुम्ह कुसीसो, **गोसालो** समणघायगो कत्थ ।
उववन्नो इय पुट्ठे, कहिओ पज्जंतवुत्तंतो ॥१९४१॥

गोसालस्स जिणेणं, सुहपरिणामा[2]उ तेण सम्मत्तं ।
पत्तं तस्स पभावा, **अच्चुय**कप्पे गओ सो वि ॥१९४२॥ ॥ जुम्मं ॥

सम्मद्दिट्ठी मणुओ, विमाणवज्जं न बंधए आउं ।
जइ वि न [1]संमत्तजढो, अहवा बद्धाउओ पुव्विं ॥१९४३॥

कप्पाओ चुओ संतो, किं किं सो सामि ! पाविही एत्थ ? ।
भरहम्मि **सयदुवारे,** नयरे होही महाराया ॥१९४४॥

नामेण **महापउमो,** सो समणाणं उवद्दवे बहुए ।
मिच्छत्तं पडिवन्नो, कारेही दुट्ठपरिणामो ॥१९४५॥

[2]अक्कोसणनिब्भच्छणबंधणरु[3]भणयउवहिहरणं च ।
च्छविच्छेयं कारेही, निव्वासेही य नयराओ ॥१९४६॥

---

१. त्यक्तसम्यक्त्वः । २. आक्रोशननिर्भत्सनाबन्धनरोधनोपधिहरणं च । च्छविच्छेदं कारयिष्यति निर्वासयिष्यति च नगरात् ॥११४६॥

1. ०मण० - ज.क. । 2. ०ओ - क. । 3. ०णभंडणउ० - ज. ।

विन्नत्तो य जणेणं, मिच्छाभावेण उवरमं [1]काही ।
[1]चरियाए रहारूढो, निग्गमिही अन्नया सो उ ॥१९४७॥

उज्जाणे अणगारं, [2]आयाविंतं **सुमंगलं** नाम ।
दट्ठूणमासुरुत्तो, [3]नोल्लावेही [4]रहसिरेणं ॥१९४८॥

सो सणियं उट्ठेत्ता, पुणो वि आयाविही सुधीरमणो ।
इयरो नोल्लेइ पुणो, बीयं वारं पुणो तइयं ॥१९४९॥

[5]आभोएही य तओ, ओहिन्नाणेण सो [6]अईअद्धं ।
गोसालभवे दट्ठुं, दुच्चरियं तस्स गुरुरोसा ॥१९५०॥

[7]सहयं सरहं दहिही, नियतवतेएण तं **महापउमं** ।
[8]आउखए सो जाही, **सव्वट्ठे**ऽणुत्तरविमाणे ॥१९५१॥ ॥ जुम्मं ॥

सत्तमपुढविं जाही सो राया, होईऊण य [5]सो मच्छो ।
पुण सत्तमिए जाही, एवं एगेगपुढवीए ॥१९५२॥

दो दो वारा जाही, तत्तो पंचिंदिएसु सव्वेसु ।
बहुसो उववज्जिस्सइ, सव्वत्थ वि [9]सत्थवज्झो त्ति ॥१९५३॥ ॥ जुम्मं ॥

चउरिंदियतेइंदियबिइंदिएगिंदिएसु सव्वेसु ।
छिन्नो भिन्नो दड्ढो, मरिही सव्वत्थ वियणत्तो ॥१९५४॥

एवमणंतं हिंडिय संसारं, माणुसत्तणं लहिही ।
पावियजिणिंदधम्मो, देवगइं एस गच्छिहिही ॥१९५५॥

कइ वि भवग्गहणाइं, **महाविदेहे** तओ य रायसुओ ।
नामेण **दढपइन्नो** होही, दिक्खं च पडिवन्नो ॥१९५६॥

---

१. चर्या० = गमन, विहार । २. आतापयन्तम् । ३. प्रणोदयिष्यति, क्षेप्स्यति । ४. रथाग्रेण । ५. आ + भोगय् = देखना, जानना । ६. अतीताद्धा । ७. सहयं सरथं = घोड़ा और रथ के साथ । ८. शस्त्रवध्यः । ९. वेदनाऽऽर्त्तः ।

1. काउं - क. । 2. ०एउं - ज. । 3. ब - आउक्खयंमि जा० - ज.क. । 4. अ - ०हई - क., होहिई - क. । 5. तो - क. ।

केवलमुप्पाडेही, सुचरियतवसंजमो तओ [1]समणे ।
आमंतेत्ता कहिही, नियवुत्तंतं सवित्थारं ॥१९५७॥

गोसालगमाईयं, ता अज्जा ! को उ मा हवउ [1][2]तुब्भं ।
गुरुमाइपच्चणीओ, भमिज्ज मा [2]सो वि संसारं ॥१९५८॥ ॥ चउहिं विसेसयं ॥

भणियं च –

तित्थयरपवयणसुयं, आयरियं गणहरं महिड्ढीयं ।
आसायंतो बहुसो, अणंतसंसारिओ होइ ॥१९५९॥

तं सोउं ते समणा, भीया उ तह त्ति पडिसुणेहिंति ।
मोक्खं च वच्चिही सो, **दढप्पइन्नो** महाभागो ॥१९६०॥

इय भावी वुत्तंतो, कहिओ **गोसालगस्स वीरेणं** ।
गोयममाइसभाए, [3]संवेगोवन्नचित्ताए [4]॥१९६१॥

विहरइ य **वद्धमाणो,** गामागरनगरसंकुलं पुहइं ।
परिवद्धमाणसंघो, [5]सव्वत्थ गुणेहिं सुमहग्घो ॥१९६२॥

उद्धरियकुमयकंदो, चउविहसिरिसंघकुमुयवण[6][7]चंदो ।
तिहुयणकयआणंदो, करुणामयसारनिस्संदो ॥१९६३॥

उद्दामकित्तिसद्दो, दुज्जयकम्मारिचक्कसंमद्दो ।
चोद्दससमणसहस्सो, पडिबोहइ पाणिणो बहवे ॥१९६४॥ ॥ तिहिं विसेसयं ॥

मेह-मिगावइ-सुलसा-नंदो[3]**दायण-दसन्नभद्दे** य ।
अइमुत्त-सालिभद्दे, धन्ना[4]**णंदाइ** [5]कयउन्ने ॥१९६५॥

---

१. ष.ब.व. = आप में से । २. मम इव अथवा कोऽपि । ३. अभयकुमारस्य माता अथवा कौशाम्बीनरेशशतानीकमन्त्रिसुगुप्तस्यपत्नी । ४. आनंद श्रावक । ५. कृतपुण्यान् ।

1. समणो – ज. । 2. तुब्भं – क. । 3. संवेगावन्न० – ज.क. । 4. अ – ०चित्ताइ । 5. ब – ०वड्ढ० । 6. ब – ०समणकु० । 7. ब – ०यंदो ।

तत्थ **सालिभद्द**पडिबोहणं विसेसेण भन्नइ -

सालिग्गामे आसी, **दुग्गो** कुलपुत्तओ उ ओलग्गो[1] ।
धन्ना य तस्स भज्जा, तेसिं पुत्तो य **संगमओ** ॥१९६६॥

भवियव्वयावसेणं, तीसे पंचत्तमुवगओ भत्ता ।
सा परघरकम्माइं, कुणमाणी भरइ नियपोट्टं[2] ॥१९६७॥

संगमओ पुण चारइ, सिसुभावे गामवच्छरूवाइं[3] ।
तेणन्नया वणम्मी दिट्ठो, पडिमं ट्ठिओ साहू ॥१९६८॥

निच्चलनिरुद्धकाओ, लंबिरबाहू सिलायलोवगओ ।
उग्गतवसोसियंगो, धम्मज्झाणं झियायंतो ॥१९६९॥ ॥ जुम्मं ॥

जाया य तस्स सद्धा, महारिसीए[1] सधम्मपिंडो त्ति ।
सो तं वंदइ चलणे, पमज्जिउं मलइ[4] भत्तीए ॥१९७०॥

समुहं च पलोइंतो, खणमेत्तं चिट्ठए उवासिंतो[2][3] ।
कुणमाणस्स य एवं, केइ वि[4] दिणा[5] वोलिया तस्स ॥१९७१॥

(खणे खेड्डानिरअखुहालुखुड्डगेण खीरीखादणाय खोहिया सजणणी)

जायम्मि कम्मि वि छणे[6], गिहे गिहे तत्थ रज्झए[7] खीरी ।
सो दट्ठूणं पभणइ, अंबे ! मह देसु परमन्नं ॥१९७२॥

सा रोविउं पयत्ता, सुयराहाडिं निए[8] वि मन्नुइया[9] ।
आसन्नगिहाहिंतो, तत्तो मिलियाओ[6] महिलाओ ॥१९७३॥

---

१. ओलुग्ग (दे.) = सेवक, नौकर। २. (दे.) पेट। ३. ग्रामिकाणां वत्सरूपाणि = गाँव लोक के बछड़े। ४. मृद्नाति = दबाना, मालिश करना। ५. गताः। ६. क्षणे = उत्सवे। ७. राध् = राध्यते। ८. निए वि = दृष्ट्वा अथवा खुद के बच्चे की रोने की आवाज सुनकर वह माता खुद के ऊपर कुपित हुइ कि मैं कैसी माँ हूँ जो अपने बालक की एक इच्छा भी पूर्ण न कर पाती हूँ। वैसा भावार्थ हैं। ९. मन्यविता = कुपिता, दैन्ययुक्ता।

1. ०मुणीए - ज.। 2. उपासेंतो - क., उपासंतो - प.। 3. ब - ०सम्मि। 4. ब - के वि, कइवि - ज.। 5. अ - दिणे - क.। 6. ०उ - क.।

पुट्ठं च ताहिं भद्दे !, किं रोयसि तीए तासि परिकहियं ।
न[१] मुणइ अत्थि व णत्थि[१], मम पुत्तो निअयगेहम्मि ॥१९७४॥

एसो मग्गइ[२] खीरीं, सामग्गीविरहओ य सा कत्तो ? ।
दंतेहिं विणा जम्हा, न सिंटणं[३] होइ कइया वि ॥१९७५॥

तो पायसोवगरणं, अणुकंपाए विइन्नमेयाहिं ।
चिंतिय **देसाविभागो[३], कस्सित्थ[४] न जायए विसमो ?** ॥१९७६॥

रद्धा य तीए खीरी, भरियं भाणं च भोयणट्ठाए ।
पुत्तस्स घयमहुजुयं, उवविट्ठो भुंजिउं सो वि ॥१९७७॥

एत्थंतरे मुणी सो, समागओ मासखमणपारणए ।
जुगमेत्तनिहियदिट्ठी, तस्स गिहे पुन्नजोगेणं ॥१९७८॥

(सिवंकरसंजमसंजमिअ-सुविहिअसमणसामायारिसुसंनिविट्ठ-साहुसमाग-मणसुसंतुट्ठो संगमओ)

तं दट्ठुं परितुट्ठो, धन्नो पुन्नो अहं कयत्थो त्ति ।
जमिहागओ अचिंतियहिरन्नवुट्ठीसमो एसो ॥१९७९॥

उट्ठेऊण य तत्तो, वंदित्ता भायणं च तं घेत्तुं ।
साहुस्स देइ सव्वं, परमन्नमखंडपरिणामो ॥१९८०॥

चिंतामणिम्मि पत्ते, तप्पूयाए उ होइ जा सद्धा ।
जो सयलसिद्धिकारयमंतस्सरणे[५] रसावेसो[६] ॥१९८१॥

पत्ते महानिहाणे, रोरस्स य होइ जो मणाणंदो ।
तत्तोऽहिगभावेणं, साहू पडिलाहिओ तेणं ॥१९८२॥ ॥ जुम्मं ॥

---

१. यह चीज अपने घर में हैं या नहीं है वह बात मेरा पुत्र जानता नहीं हैं । २. चर्वणम् । ३. अवस्थाभेदः । ४. कस्य अत्र संसारे । ५. मन्त्रस्मरणे । ६. रसाऽऽवेशः = अत्यन्त अनुराग ।

1. अणत्थी - क., अणत्थिं - ज. । 2. अ - खीरी । 3. ब - सिंट्टणं - ज. । 4. ब - कस्से० - ज.क. ।

दव्वाईहिं विसुद्धं, नाउं अच्चंतियं च तस्सद्धं[१] ।
धम्मंतरायभीरू, गिण्हइ साहू तयमसेसं[२] ॥१९८३॥

पत्ताइविसुद्धेणं, तिकालतुट्टीजुएण[३] दाणेणं ।
सुहभोगफलं पुन्नं, सुकुलुप्पत्तिं[१] य बंधेइ ॥१९८४॥

भुत्तो य सयं पच्छा, आकंठं पायसो य गेहीए[४] ।
रत्तिं विसूइयाए[५], सुहपरिणामो य कालगओ ॥१९८५॥

उववन्नो **रायगिहे, भद्दा**ए सुयत्तणेण कुच्छिंसि ।
सालीसुमिणसूइओ, सुइब्भ[६]**गोभद्द**भज्जाए ॥१९८६॥

वड्ढइ य सो सुहेणं गब्भो, इब्भो गओ वणिज्जेणं ।
परतीरं पोएणं, जंतस्स य पवहणं भिन्नं ॥१९८७॥

अत्थो[७] गओ अणत्थो, **गोभद्दो** वि य विसायमावन्नो ।
संपत्तो पंचत्तं, **अहो ! हु सोवक्कमं जीयं** ॥१९८८॥

तथा हि –

सत्थग्गीजलसावयसप्पविसाईहिं विविहहेऊहिं ।
सूलविसूइयसोगाइएहिं, जीयं उवक्कमइ ॥१९८९॥

अओ चेव भणियं –

ववहरह नरा ! घेत्तुं, बहुलाभं धम्मभंडमणवरयं ।
जे पुव्वण्हे दिट्ठा, अवरण्हे ते न दीसंति ॥१९९०॥

---

१. तस्य श्रद्धाम् । २. जो आधी खीर थाली में निकाली थी, वह सब ग्रहण नहीं करनी चाहिए। किन्तु संगम को धर्म अन्तराय न हो = उसकी भावधारा खंडित न हो, इस हेतु साधु भगवंतने थाली में नीकाली हुई सब खीर ग्रहण की । ३. वहेराने से पहले, वहेराते वक्त और वहेराने के बाद । ४. गृद्धि = आसक्ति । ५. अजीर्ण । ६. सुइभ्य० = श्रेष्ठ श्रेष्ठी । ७. अर्थो गतोऽनर्थम् ।

1. अ – ०प्पत्ती ।

इओ य - (**सुभद्दाससा-सड्ढिसड्ढसालिभद्दवत्ता**)

कालक्कमेण जाओ, देवकुमारोवमो सुओ तीए ।
विहियं बंधुजणेणं, वद्धावणयं अइमहंतं ॥१९९१॥

तस्स परिपालणत्थं, ठवियाओ तेण पंचधावीओ ।
धावणमज्जणमंडणकीलावणअंकधाईओ[१] ॥१९९२॥

जं सालिखेत्तसुमिणं, दिट्ठं गब्भंगयम्मि एयम्मि ।
भद्दाए कयं नामं, सुयस्स तो **सालिभद्दो** त्ति ॥१९९३॥

भद्दाए सुयं किर मे, पवहणभंगेण उवरओ भत्ता ।
मुच्छइ रोयइ कंदइ[२], विलवइ सोआउरा ताहे ॥१९९४॥

हाहा ! हयविहि ! निद्दय !, निलज्ज ! अणज्ज ! मज्झ किं विहियं ।
वसणमसज्झमयंडे, सुहिसज्जणसोयणिज्जमिणं[३] ? ॥१९९५॥

रे दइय ! जइ ममोवरि, तुज्झ घिणा[४] नत्थि कूरचित्तस्स ।
ता किं एयम्मि वि, बालयम्मि करुणा न तुह जाया ? ॥१९९६॥

एवं सा विलवंती, संठविया सयणमित्तवग्गेणं ।
कालेण विगयसोगा, जाया घरकज्जसंलग्गा ॥१९९७॥

जाओ य **सालिभद्दो**, परिवड्ढंतो कलागहणजोगो ।
गेहे च्चिय सिक्खविओ, कलाउ कलसूरिणा[५] मइमं ॥१९९८॥

लायन्नरूवमणहरसव्वंगं, जोव्वणं च संपत्तो ।
रमणीयणमणहरणो, पिओ य सव्वस्स लोयस्स ॥१९९९॥

चाई भोई दक्खिन्नसायरो, सच्चभासणो सोमो ।
पियवाणी[६] दयसारो, धम्मपिओ विणयसंपन्नो ॥२०००॥

---

१. पाँच धावमाताएँ = दूध पिलाने वाली, स्नान कराने वाली, तैयार करने वाली, खेल खेलाने वाली, गोद में लेकर बैठने वाली । २. क्रन्दति । ३. सुहृत्० । ४. घृणा = दया । ५. कलसूरिणा = कलाचार्य, शिक्षक । ६. दयासारः ।

1. ०यभासी - क. ।

उत्तमकुलुब्भवाओ, मणहरतारुन्नकंतिकलियाओ ।
सारयससिवयणाओ, कुवलयदलदीहनयणाओ ॥२००१॥

अमरकरिकुंभविब्भमपओहराओ य सुरवहुसमाओ ।
तिवलियतणुमज्झाओ, कयलीखंभोरुजुयलाओ ॥२००२॥

अलिउलसमचिहुराओ[१], सुरसरियापुलिणरम्मरमणाओ[२] ।
परिणेइ एगदिवसं, बत्तीसं इब्भकन्नाओ[३] ॥२००३॥ ॥ तिहिं विसेसयं ॥

(सपुण्णेण सुहगसालिभद्दस्स सुररिद्धिसंभोओ)

गोभद्दो वि य तइया, मरिउं जाओ सुरो भवणवासी ।
ओहिं पउंजइ तओ, सभारियं नियसुयं नियइ ॥२००४॥

मुणिदाणोवज्जियपवरपुन्नआवज्जिओ[२] इहं एइ[१] ।
विउरुव्वइ[४] सत्ततलं, पासायं **सालिभद्दस्स** ॥२००५॥

सुरपासायसमाणं सव्वोउयतरुसमिद्धवणसंडं[५] ।
विमलजलजंतवावीकलियं, अच्छेरयब्भूयं[६] ॥२००६॥

बत्तीसतूलिकलियं[७], पल्लंकं देइ **सालिभद्दस्स** ।
मणिरयणकंचणमयं, तप्पत्तीणं[८] च एगेगं ॥२००७॥

अमरविलेवणआभरणवत्थकुसुमाइसयलभोगंगं ।
अन्नन्नं पइदियहं, देइ सभज्जस्स सो तस्स ॥२००८॥

बहुविहकीलानिरओ, जणयसुराणीयभोगदुल्ललिओ[९] ।
दोगुंदुगो व्व देवो, गयं पि कालं न याणाइ ॥२००९॥

सव्वं गिहवावारं, **भद्द** च्चिय पइदिणं विचिंतेइ ।
कयविक्कयमाईयं, अन्नं पि य कुणइ ववहारं ॥२०१०॥

---

१. ०कुल० । २. ०चिहुर० = बाल । ३. जघन, नितम्ब । ४. विकुर्वति । ५. सर्व-ऋतुक० । ६. आश्चर्यभूतम् । ७. गद्दा = 'गादी' । ८. तस्य पत्नीभ्यः । ९. ०दुर्ललितः = आदत वाला, आसक्त ।

1. ०दाणावज्जि० – ज.क. । 2. अ – ०आगरिसओ ०आगरिसिओ – ज.क. ।

तत्थन्नया कयाई, कंबलरयणाण विक्कयनिमित्तं ।
देसंतराउ वणिया, समागया लक्खमोल्लाणं ॥२०११॥

जाहे कोइ न गिण्हइ ताणि, महग्घत्तणेण अन्नजणो ।
ताहे **सेणियरन्नो**, गंतुं दरिसिंति अत्थाणे ॥२०१२॥

रंजियहियओ पुच्छइ[1] मोल्लं, कहियं च लक्खमोल्लाणि ।
रायाह न मे कज्जं, एरिसमोल्लेहिं एएहिं ॥२०१३॥

तो ते विसन्नचित्ता, निग्गंतुं रायमंदिराहिंतो ।
तो **सालिभद्द**रिद्धिं, सुणिउं **भद्दा**गिहं पत्ता ॥२०१४॥

गहियाणि ताणि तीए, जहुत्तमोल्लेण हिट्ठहियय[1]याए[2] ।
ते वि परितुट्ठचित्ता, नियया[2]वासं गया सव्वे ॥२०१५॥

कंबलरयणसरूवं, सुणिऊणं[3] **चेल्लणा** भणइ रायं ।
किं मम कज्जे पिययम !, एक्कं पि न तं तुमे गहियं ? ॥२०१६॥

चिट्ठा[4] किमेरिसी तुह, कत्तणय[3]ज्जियधणस्स व महंती ? ।
अहवा सोभणवत्थुं, मम दिन्नं तुह न पडिहाइ ॥२०१७॥

किं च -

तुज्झ पसिद्धिं सोउं, जे वणिणो आगया इह नरिंद ! ।
तेसिं पुरओ तुमए, एवं लहुई[4]कओ अप्पा ॥२०१८॥

तं मोल्लं नो पुज्जइ[5] जइ तुह, रयणावलिं इमं गेण्ह ।
किणसु य कंबलरयणं, विगयासा ते वि मा होंतु ॥२०१९॥

एवं च उवालद्धो भज्जाए, **सेणिओ** तओ वणिए ।
मग्गइ कंबलरयणं, तेहिं य भद्दा[6]गहो कहिओ ॥२०२०॥

---

१. हृष्टहृदयया भद्रया । २. चेष्टा । ३. लक्कडहारे ने बहुत मेहनत से धन इकट्ठा किया होता है तो वह थोडा भी धन देने के लिए तैयार नहीं होता है वैसे । ४. लघूकृतः । ५. पूर्यते = 'पोषातु न होय' । ६. भद्रया ग्रहणं = आदानमिति = भद्राग्रहः कम्बलवृत्तान्तः ।

1. ०इ किं - क. । 2. हेट्ठ० - क. । 3. मुणि० - ज. । 4. तिट्ठा - ज.क. ।

तं सोउं सुट्ठुयरं रुट्ठा, सा **चेल्लणा** भणइ एवं ।
वाणिगिणीए[१] वि समं, सत्तं तुह नत्थि नरनाह ! ॥२०२१॥

तो नरवइणा **भद्दा** भणाविया, अज्ज जे तुमे गहिया ।
कंबलरयणा तेसिं, एगं मे देहि मोल्लेणं ॥२०२२॥

ताए[1] पडिभणियं –

ते तक्खणमेव मए, नरिंद ! नियपुत्त**सालिभद्द**स्स ।
बत्तीसभारियाणं, फालिय[२] पयलूहणा विहिया ॥२०२३॥

अत्थि य चिरंतणाइं, मज्झ गिहे ताइं गिण्हउ देवो ।
जइ कज्जं मोल्लेणं विणा वि, मेऽणुग्गहो[२] एस ॥२०२४॥

सो सुय**मभयं** पुच्छइ, चउव्विहबुद्धीसमिद्धमह राया ।
को एस **सालिभद्दो**, तेण वि कहियं जहावत्तं ॥२०२५॥

तो विम्हिओ विचिंतइ, रायाऽहो ! **सालिभद्द**सामग्गी ।
ता सुकयत्थो अहयं, जस्स पुरे एरिसा वणिणो ॥२०२६॥

भद्दा य समाइट्ठा, तस्सुयदंसणसकोउगमणेणं ।
पेसेसु नियं पुत्तं, रायउले[३] जेण पेच्छामि[3] ॥२०२७॥

तो तीए पडिभणियं, अइसुकुमालो सुओ न मह सामि ! ।
गिहबाहिं कुणइ पयं, न पेच्छए चंदसूरा[4] वि ॥२०२८॥

ता तुम्ह सयासम्मी, आगच्छउ कह इमो इय सुणेउं[5] ।
मा अम्हाणं उवरिं, अपसायपरो[४] हवउ देवो ॥२०२९॥

---

१. वणिग्-गृहिणी० = 'वाणियण' । २. फालिय = फाड के, दो टुकड़े कर के । ३. राजकुले = राजगृह, दरबार । ४. अप्रसादपरः ।

1. ब – ताहे – क. । 2. ममणुग्ग० – क. । 3. ०च्छामो – क. । 4. अ – ०सूरो वि । 5. मुणेउं – ज.क. ।

तो रन्ना आणत्तं, सयमागच्छामि तुज्झ गेहम्मि ।
तुह सुयदंसणकज्जे, इय भणिए सा इमं[1] आह ॥२०३०॥

गरुओ अणुग्गहो मे, गेहमलंकरइ जमिहमागंतुं ।
[2]सामी ! [3]नवरं कइय वि, देउ दिणे होमि [१]पउणाहं ॥२०३१॥

(सिरिसेणियसागयसमुल्लसियभद्दासज्जिओ सउहमग्गो)

पडिवन्ने नरवइणा, रायघराओ य नियघरं जाव ।
संमज्जिओवलित्तो, मंडणपउणो कओ मग्गो ॥२०३२॥

डज्झंतनिरंतरपवरअगरुकप्पूरसुरहिगंधड्ढो ।
पे[2]च्छणयगीयवाइयपे[3]च्छयजणजणियआणंदो ॥२०३३॥

[4]उल्लोओ य विरइओ, महग्घ[4]पणवन्न[5]रुइरवत्थेहिं ।
मुत्तावलि[6]मालिल्लो, मणहरफुल्लहररेहिल्लो ॥२०३४॥

गिहमवि तीए कयं कमणीयं, हारुल्लोय[८]मल्लरमणीयं ।
[९]वंदणमालाऽलंकियदारं, दारनिवेसियकलस[१०]सुतारं ॥२०३५॥

[११]जाणाविओ य तत्तो, पहाणपरिवारपरिवुडो राया ।
भद्दा गिहमागच्छइ, पए पए कोउ[5]गक्खित्तो ॥२०३६॥

रंजियचित्तो [6]उ दढं, उवविट्ठो पवरचंदणचउक्के ।
सीहासणे विसाले, तब्भवणसिरीं [१२]नियच्छंतो ॥२०३७॥

वरवत्थमोत्तियाई **भद्दा**, उवणेइ सुट्ठु परितुट्ठा ।
[7]गिण्हह तुम्ह [१३]गिहमिमं, राया न य गिण्हए किं पि ॥२०३८॥

---

१. प्रगुणा अहं = तैयार होना । २. खेल, नाटक । ३. प्रेक्षक । ४. उल्लोचः = चन्द्रातप, 'चंदरवो' । ५. ०पञ्चवर्ण० । ६. शोभित । ७. शोभित । ८. ०माल्य० । ९. वन्दनमाला० = घर के द्वार पर मंगल के लिए बंधी जाती पत्र-माला, जैसे कि 'आसोपालव' । १०. अत्यन्त निर्मल शोभित वा । ११. ज्ञापितः । १२. निरीक्षमाणः । १३. ग्राह्यं गृहमिदं वा ।

1. भणइ - क. । 2. सामीं - ज. । 3. नवरिं - ज. । 4. ०मणिबंध० - ज. । 5. ०उगाक्खि० - क. । 6. य - क. । 7. ०ण्हउ - ज. ।

भणइ सपुत्तं दंससु, [1]गंतूणं बेइ **सालिभद्दं** सा ।
[१]ओयर पासायाओ, पुत्त ! तुमं **सेणिओ** हेट्ठे ॥२०३९॥

चिट्ठइ गिहमायाओ, सो भणइ न किं पि अंब ! जाणामि ।
मोल्लं कयाणगाणं, सयमेव करेसु जं जुत्तं ॥२०४०॥ ॥ जुम्मं ॥

जाय ! कयाणगमेयं न होइ, एसो हु **सेणिओ** राया ।
सामी तुज्झं मज्झ य, सव्वजणाणं इहं देसे ॥२०४१॥

मज्झ वि अन्नो सामी, इय सुणिउं चिंतए गुरुविसाओ ।
एत्थ अहो ! अकयसुहा, परस्स सेवाकरा होंति ॥२०४२॥

भणियं च -

न करेंति जे तवं संजमं च, ते [२]तुल्लपाणिपायाणं ।
पुरिसा समपुरिसाणं, अवस्सं पेसत्तणमुवेंति ॥२०४३॥

धन्ना मुणिणो एगे, जे विसयपरंमुहा निरासंसा ।
मोत्तूणं देवगुरुं, अन्नस्स कुणंति न पणामं ॥२०४४॥

संसारिया उ रिद्धी परमा, विबुहाण नो रईं कुणइ ।
ईसाविसायभयपरवसत्तमाईहिं जमसारा ॥२०४५॥

विसयाभिलासविसं[2]धारियाण, पुरिसाण निव्विवेयाण ।
न फुरइ धम्मम्मि मई, तुच्छसिरीए [३]मयंधाणं ॥२०४६॥

एवं अहिमाणधणो, तं चिय संवेगकारणं धरिउं ।
धम्मकरणुज्जयमई, संजाओ सो महासत्तो ॥२०४७॥

इय विमणो ओयरिओ, पासायाओ गतो निवसमीवं ।
सव्वालंकारधरो, पच्चक्खो कप्परुक्खो व्व ॥२०४८॥

---

१. अवतर। २. हाथ पैर से समान ऐसे अन्य पुरुषो के...मतलब कि उनके जैसे ही अन्य पुरुष के। ३. मदान्धानाम्।

1. गंतुं जंपे० - क.। 2. ०घारि० - ज.क.।

पसरंतबहलपरिमलवासियदिसिमंडलो सलीलगई ।
नियपणइणीसमेओ, अच्छरसहिओ व्व सुरकुमारो[1] ॥२०४९॥

निवचलणेसु निवडिओ, आलिंगिय राइणा कओ अंके ।
दट्ठुं सरीरसोहं, विम्हइओ चिंतए एवं ॥२०५०॥

नूणं नत्थि असज्झं, सुचरियधम्मस्स जीवलोगम्मि ।
जं इय[1] माणुसमेत्ता, अमरविभूइं विडंबंति ॥२०५१॥

संभासिओ निवइणा, न जंपए जायए य सामुहो ।
अंसुजलपुन्ननयणो, **भद्दा**ए निवो तओ भणिओ ॥२०५२॥

सुरभोयणेहिं नव नव, सुरभोगंगेहिं लालियसरीरो ।
न सहइ मणुस्सतणुपरिमलं, इमो मुयह ता देव ! ॥२०५३॥

(भदंतभत्तसेणियभत्तुस्स भद्दाकयभद्दियभत्ती)

गच्छसु वच्छ ! सट्ठाणं[2], इय भणिओ **सेणिए**ण सो मुक्को ।
आरूढो पासायं, उट्ठिउकामो उ नरनाहो ॥२०५४॥

भद्दाए विन्नत्तो, जोडियहत्थाए[2] गरुयपणएणं ।
देव ! पसाएणऽम्हं, सागयकिच्चं[3] पडिच्छेह[4] ॥२०५५॥ ॥ जुम्मं ॥

उवरोहसीलयाए, पडिवन्ने[3] राइणा उ तव्वयणे[4] ।
अब्भंगिओ य संवाहिओ य, वरवेसविलयाहिं[5] ॥२०५६॥

उव्वट्टिओ[5] य राया, वाविजले मज्जिओ कराओ[6] तहिं ।
पडियं मुद्दारयणं, तो संभंतो पलोएइ ॥२०५७॥

किं देव ! नियह तुब्भे, संखुद्धा पुच्छियं च **भद्दा**ए ।
रन्ना कहियं तीए, मुद्दारयणस्स जलपडणं ॥२०५८॥

---

१. इमे मनुष्यमात्राः । २. योजित० । ३. स्वागतकृत्यम् । ४. प्रतीच्छत । ५. वरवेषविलयाभिः ।

1. ०कुमरो - क. । 2. सठाणं - ज. । 3. ०वन्नं - ज.क. । 4. ०यणं - ज. । 5. उव्वहिओ - क. । 6. अ - कराउ ।

भद्दाए तं सोउं, जंतपओगेण तं जलं खिप्पं ।
आइसिउं नियदासिं, संकामियमन्नवावीए ॥२०५९॥

निज्जलतलम्मि तीसे, भूसणनियरं फुरंत[१]किरणिल्लं ।
पेच्छइ तेसिं मज्झे, मुद्दारयणं तयं नियइ ॥२०६०॥

इंगालो व्व विसोहं, पुच्छइ य सकोउगो किमेयं ति ? ।
भद्दाए कहियमिमं, निम्मल्लं[२] **सालिभद्द**स्स ॥२०६१॥ ॥ जुम्मं ॥

जेण सुरो पइदियहं, आभरणमिमस्स पणइणिजुयस्स ।
देइ तयं निम्मल्लं काउं, खिप्पइ य [1]वावीसु ॥२०६२॥

अइसयविम्हियहियओ, मुद्दारयणं नियं च घेत्तूण ।
मणहरकयनेवच्छो, रम्मं **नंदण**वणं नियइ ॥२०६३॥

पासायं च समंता, गच्छइ देवालयं जिणं नमिउं ।
पूइयजिणवरबिंबो, भत्तीए संथुइं कुणइ ॥२०६४॥ ॥ जुम्मं ॥

जगचिंतामणि ! [2]जगनाह !, जगगुरु ! जगरक्खण !;
जगबंधव ! जगसत्थवाह !, जगभाववियक्खण ! ।
जय जय जिणवर**वद्धमाण** !, सरणागयवच्छल !;
जय करुणारस ! सुहनिहाण !, भवतारण[३]पच्चल ! ॥२०६५॥

जे पेच्छंति थुणंति सामि !, [3]पूएंति ण्हवंति य;
जे गायंति नमंति, पाय[4]सुमरइं तुह संतिय ।
ते नरधन्न [४]सउन्न, तेहिं सुरसिरिआवज्जिय;
सिवसुहसंपय ते लहंति, जरमरणविवज्जिय ॥२०६६॥

---

१. स्फुरत्किरणवन्तम् । २. निर्माल्यम् । ३. (दे.) समर्थ । ४. सपुण्याः ।

1. वावीए - क. । 2. जगहनाह - ज. । 3. ब - पूइंति - प. । 4. ब - ०सुमरहिं - ज.क. ।

[१]तुह सेव करंतहं निरु नरहं, पावपंकु[1] उहिज्जइ ।
तं नत्थि किं पि भुवणे वि, सुहु जं न सामि ! [2]पाविज्जइ ॥२०६७॥

भद्दाए विन्नत्तो, भोयणकज्जम्मि निग्गओ तत्तो ।
भोयण[२]सहमुवविट्ठो, नियपरियणपरिगओ राया ॥२०६८॥

भुत्तो य अहाविहिणा, तंबोलाईकयोवयारो य ।
संभासिऊण **भद्दं,** नियभवणम्मी गओ राया ॥२०६९॥

चिट्ठइ य **सालिभद्दो**, विसयविरत्तो सुधम्मगयचित्तो ।
पत्तो य तत्थ सूरी, तक्कालं **धम्मघोसो** त्ति ॥२०७०॥

[३]वंदणवडियाए गओ, राया[3]इजणो य तस्स सूरिस्स ।
जणणिं च पुच्छिऊणं, तत्थ गओ **सालिभद्दो** वि ॥२०७१॥

वंदिय [४]उवविट्ठाए, परिसाए भवविरा[4]गजणणीए ।
सो धम्मदेसणाए, पडिबोहं काउमाढत्तो ॥२०७२॥

(धम्मधुराधारणधुरंधरधम्मघोससूरिकहिओ धम्मो)

कोडिं वराडियाहेउं, जहा [5]हारेज्ज कोइ णं ।
मणिं वेरुलियं वा वि, दलेज्जा [५]सुत्तकार[6]णा ॥२०७३॥

नावं जलहिमज्झम्मि, लोहकज्जेण भिंदए ।
सारं च चंदणं [६]भासहेउं, मूढो दहेज्ज णं ॥२०७४॥

---

१. तव सेवां कुर्वद्भिः नरैः निश्चितं पापपङ्कः उज्झ्यते । २. ०सभाम् । ३. वन्दनप्रत्ययाय = वन्दन करने हेतु । ४. उपविष्टायाम् । ५. सूत्र० = धागा अथवा शुक्ति = सीप 'छीप' । ६. भष्म० = राख ।

1. पावपंकुओ हिज्जइ - ज.क. । 2. संपज्जइ - क. । 3. ब - राया य जणो य । 4. ब - ०राय० । 5. जह हारिज्ज - क. । 6. ब - ०कारणे ।

छेत्तुं कप्पूरसंडं च,[1] कोद्दवाणं[2] वइं करे ।
धंतं[3] जच्चसुवन्नं च, फुक्काए[4] हारए नरो ॥२०७५॥

एवं माणुस्सयं जम्मं, धम्मसाहणसंजुयं ।
असारविसयासत्ता, सत्ता ! नासेह मा हु णं ॥२०७६॥

इय धम्मकहं सोउं, पडिबुद्धा पाणिणो गया सगिहं ।
संविग्गो **भद्दा**ए सुओ वि, पत्तो सभवणम्मि ॥२०७७॥

तो पणमिऊण जणणिं, सो पभणइ अंब ! अज्ज मे निसुओ ।
गुरुणो पासे धम्मो, सा जंपइ पुत्त ! सुट्ठु कयं ॥२०७८॥

तो पव्वज्जामि अहं, तं[5] अणुजाणेसु, सा य तं सोउं ।
कन्नकडुयं च वयणं, धस त्ति धरणीयले पडिया ॥२०७९॥

परसुनिकित्त[6] व्व लया, मुच्छाए तो जलेण सित्तंगी ।
वीयनएणं[7] वीया,[8] लहिऊण य चेयणं दीणा ॥२०८०॥

अंसूणि य मुयमाणी, रोयंती भणइ तं सि मे एगो ।
पुत्तो उंबरपुप्फं[9] व, दुल्लहो जीवियब्भहिओ ॥२०८१॥ ॥ जुम्मं ॥

(संजमसंपडिवत्तिकए सुउमालसालिभद्दस्स समाया सह संवादो)

ता जीवंतीए मए, दिक्खं मा गेण्ह सो वि तं आह ।
अंब ! न नज्जइ एयं, को पुव्विं जाइ को पच्छा ॥२०८२॥

सा भणइ जाय ! तुज्झं, नीरोगसुलक्खणं सुरूवं च ।
देहं ता एयगुणं[10], माणेसु[11] विलासकरणेणं ॥२०८३॥

---

१. तुच्छ धान्य । २. वृत्तिम् = वाड़ । ३. ध्मातम् = अग्नि में तपाया हुआ अथवा धंत (दे.) अत्यन्त । ४. फूत्करणेन । ५. त्वम् । ६. ०निकृता = काटी हुई । ७. वीजनकेन = पंखा । ८. वीजिता । ९. उदुम्बर वृक्ष विशेष जिस को एक ही बार फूल आते है । १०. एतद्गुणं = ०स्वभावम् । ११. मानय = अनुभव करना ।

1. ०संडयं - ज. । 2. धन्नं - क. ।

सो आह असुइ एयं, बहुवसणहयं जराए घुणियं[1] च ।
आममिउं[2] भंडगसमं, विद्धंसणधम्मयं एयं ॥२०८४॥

तो को अंब ! इमम्मी, पडिबंधो कीरए विवेगीहिं ? ।
धम्मविहाणेणं चिय, सफलत्तं होइ एयस्स ॥२०८५॥

माता –

रूवाइगुणजुयाओ, अणुरत्ताओ य तुज्झ जायाओ ।
बत्तीसमिमाहिं समं, ता भोए भुंज जा तरुणो ॥२०८६॥

पुत्रः –

असुइसमुत्था परिणामदारुणा, थेवकालिया भोगा ।
नरयाइदुक्खहेऊ ता, को भोएसु कुणइ रइं ? ॥२०८७॥

माता –

मणिकणगरयणमाई अत्थो, आसत्तमं कुलं तुज्झ ।
दाउं भोत्तुं च अलं, ता तं विलसेसु जाय ! तुमं ॥२०८८॥

पुत्रः –

रायग्गिचोरदाइयमच्चुसुराईण[2] साहिओ[3] अत्थो ।
बाहिरमलो व्व अथिरो, को मुज्झइ एत्थ जाणंतो ? ॥२०८९॥

माता –

असिधारगमणअयचणयचावणा दुक्करं खु समणत्तं[4] ।
भूसयणलोयभिक्खन्नबंभचेराइ जं एत्थ ॥२०९०॥

पुत्रः –

संसारसूयराणं[5], विवेयरहियाण कायरनराणं ।
दुक्करमिह समणत्तं, न उ धम्मियवीरपुरिसाण[3] ॥२०९१॥

---

१. घूणितम् = घुणो से विद्ध, दिमक = 'उधइ' जैसे काष्ठ को नष्ट कर देती है तद्वत् जरा...।
२. कच्चा और कोमल । ३. स्वाधीनः । ४. श्रमणत्वम् । ५. ०शूकराणाम् = वराह ।

1. घच्छं – क. । मुणियं – ज. । 2. ०यमव्वसु० – ज. । 3. धीर० – क. ।

माता –

सुकुमालो वच्छ ! तुमं, [१]सुहोइओ [२]सइ अदिट्ठदुहलेसो ।
कह उवसग्गपरीसहसहणसमत्थो तुमं होसि ? ॥२०९२॥

पुत्रः –

नरयम्मि सुघोराओ, बहुसो वियणाओ मे विसहियाओ ।
[३]तयविक्खाए केत्तियमेयं उवसग्गमाइ दुहं ? ॥२०९३॥

माता –

जइ एवं ता पुत्तय !, समीहियं कुणसु किं तु कइ वि [१]दिणे ।
[४]परिकम्मसु अप्पाणं, एवं दिक्खा सुहं काउं ॥२०९४॥

जणणीउवरोहेणं, पडिवज्जिय तं गओ सपासायं ।
भज्जाओ आमंतिय, [२]पडिबोहत्थं इमो भणइ ॥२०९५॥

पुरिसेणं बुद्धिमया, परभवचिंता अवस्स कायव्वा ।
न हु विसयविमूढेणं, हारेयव्वो मणुयजम्मो ॥२०९६॥

जं विसएसु पसत्ता, **बंभसुभूमा**इया गया नरयं ।
विसयविरत्ता उ गया, **भरह**नरिंदाइया मोक्खं ॥२०९७॥

जीवस्स नत्थि तित्ती, चिरं पि [३]भुत्तेहिं विसयसोक्खेहिं ।
ता विसय[४]विरमणेणं, पव्वज्जमहं करिस्सामि ॥२०९८॥

तुम्हं जा [५]उ ससल्ला, सावच्चाओ य ता [५]हु गिहिधम्मं ।
कुव्वंतु [६]सेसियाओ, कुणंतु दिक्खं सइच्छाए ॥२०९९॥

[६]एवं [७]अणु[७]सासेउं, भज्जाओ थेवथेवभोगंगे ।
परिहरमाणो चिट्ठइ, निच्छियचित्तो य दिक्खाए ॥२१००॥

---

१. सुखोदितः सुखोचितः वा । २. सदा । ३. तदपेक्षया । ४. परि + कृ = तैयार करना । ५. शारीरिक पीडा वि. युक्त । ६. शेषाः । ७. अनुशिष्य ।

1. दिणा – क. । 2. अ – पडिबोहंतो । 3. अ – भोत्ते० । 4. ०विरत्तमणो – ज. । 5. ब – उ – ज.क. । 6. एयं – ज. । 7. ०साहेउं – ज. ।

इओ य - (**धम्मधणिअधन्नस्स वत्ता**)

धन्नेणं परिणीया भइणी, तत्थेव **सालिभद्द**स्स ।
अब्भंगंती [1]दइयं, [1]सदुक्खमंसूणि सा मुयइ ॥२१०१॥

धन्नेणं तो पुट्ठा, किं तुह उव्वेयकारणं सुयणु ! ? ।
सा आह **सालिभद्दो**, पव्वज्जं इच्छए घेत्तुं ॥२१०२॥

परिकम्मं कुणमाणो, दिणे दिणे चयइ तूलिमेगेगं ।
भज्जं च एवमाई, कहिए **धन्नो** तयं भणइ ॥२१०३॥

[2]काउरिसो सो सुंदरि !, जो वयगहणुज्जुओ वि [3]कीवत्तं ।
कुणइ न एक्कपए च्चिय, **[4]सणंकुमारो** व्व गिहचायं ॥२१०४॥

जइ सुकरो गिहचाओ, ता किं न तुमं करेसि सप्पु[2]रिस ! ? ।
इय भणिए अहिमाणी, सो तं पडिभणइ संविग्गो ॥२१०५॥

तुह वयणमवेक्खंतो, ठिओ म्हि पिच्छसु करेमि जं इण्हिं ।
तीए भणियं पिययम !, हासो विहिओ खमह मज्झं ॥२१०६॥

किं बहुणा भणिएणं, संपइ भइणीसमा तुमं मज्झ ।
ता जइ तुह उच्छाहो, तुमं पि गेण्हाहि पव्वज्जं ॥२१०७॥

अह **वीरो** संपत्तो, थुव्वंतो अमरचारणगणेहिं ।
रइयम्मि समोसरणे, धम्मकहं कहिउमाढत्तो ॥२१०८॥

सेणियनरिंदपमुहो, वंदणहेउं जणो गओ तत्थ ।
धन्नो वि धम्मकज्जे, [5]विणिजोजिय नियधणं कुणइ ॥२१०९॥

पव्वज्जासामग्गिं, तब्भज्जा तस्स निच्छयं नाउं ।
रुयमाणी गंतूणं, जहवत्तं कहइ भाउस्स ॥२११०॥ ॥ जुम्मं ॥

---

१. दयितम् = पति । २. कापुरुषः = कातर पुरुष, डरपोक । ३. क्लीबत्वम् । ४. सनत्कुमारः । ५. विनियोज्य ।

1. ब - सुदु० - ज. । 2. ब - ०रिसा, ०रिसो - ज.क. ।

(भगवंतभद्दचलणे भद्दासुयजामाउणा भागवइपवज्जागहणं)

[1]**धन्ने**णं [१]तरिओऽहं, इय चिंतिय संठवे[2]त्तु नियभइणिं ।
भद्दं तह भज्जाओ, संभासिय उस्सुयमणो सो ॥२१११॥

दाऊण विउलदाणं, महिमं कारिय जिणिंदभवणेसु ।
पूइत्तु समणसंघं, घोसाविय अभयदाणं [3]च ॥२११२॥

सिबियारूढो **भद्दा**ए संजुओ, भारियासयणसहिओ ।
तित्थं पभावयंतो, जणाभिनंदिज्जमाणो [4]य ॥२११३॥

तं रिद्धिं [२]सग्गसमं, [5]पडलग्गतणं व सव्वमुज्झित्ता ।
महया वि[3]च्छड्डेणं, समागओ जयगुरुसगासे ॥२११४॥ ॥ चउहिं विसेसयं ॥

पुरओ च्चिय संपत्तो **धन्नो**, ते दो वि तत्थ भयवंतं ।
तिपयाहिणी करेत्तां, वंदंति इमं च भासंति ॥२११५॥

भयवं ! अणुग्गहेत्ता, भवम[6]हर्णिं अम्ह देहि पव्वज्जं ।
तुम्ह पयकमललग्गा, असेसदुक्खक्खयं कुणिमो ॥२११६॥

भद्दाए वि य भणियं, भयवमिमे मज्झ पुत्त[४]जामाऊ ।
[५]इय **सालिभद्दधन्नय**नामा इच्छंति पव्वज्जं ॥२११७॥

ता [7]पव्वावह एए, तिहुयणणाहेण दिक्खिया तत्तो ।
कयपंचमुट्ठिलोया, सिक्खविया साहुकिरियं च ॥२११८॥

गुरुगच्छवसहि[8]सं[६]सग्गिभत्तउवगरणतवियारेसु ।
भावणविहार[७]जइक[9]हट्ठाणेसु य ते [८]समणुसट्ठा ॥२११९॥

---

१. त्वरितः, तारितः । २. स्वर्गसमाम् । ३. विच्छर्द० = ऋद्धि, वैभव । ४. ०जामातृ । ५. इमौ । ६. संसक्तादि । ७. दश यतिधर्म । ८. समनुशिष्टौ = शिक्षित कराए ।

1. धन्नंतरिओ हं - ज. । 2. तं भ० - क., संट्ठित्तु तं भ० - ज. । 3. तु - क. । 4. उ - ज. । 5. पडिल० - ज. । 6. ०हणी - ज.क. । 7. अ - पव्वाविह - क. । 8. ०सेसग्गि० - ज.क. । 9. ०कहगहणेसु - क. ।

विहरंति जिणेण समं, चउत्थछट्ठट्ठमाइकुव्वंता ।
सुस्समणा संजाया, अइरेण अहीयसुत्तत्था ॥२१२०॥

सुक्का[१] किडिकिडि[२]भूया, जाया दुक्करतवेण ते धीरा ।
पुण **रायगिहं** पत्ता, सहिया तेलोक्क[1]नाहेण ॥२१२१॥

(पुण्णाहे पुण्णवइपुव्वमायाए पाराविआ पुण्णपुरुषा)

परिसा मिलिया कहियं, चउरासीजोणिलक्ख[2]भवरूवं ।
पच्छा उचिए समए, भिक्खट्ठं पत्थिया दो वि ॥२१२२॥

छट्ठस्स उ पारणए, भयवंतं पुच्छिऊण कयकिच्चा ।
ते **धन्नसालिभद्दा,** भणिया य जिणेण ते जंता ॥२१२३॥

जणणी अज्ज कारिस्सइ, पारणयं **सालिभद्द** ! तुह ।
हिट्ठा तो ते **भद्दा**ए घरं, पत्ता तवसोसियसरीरा ॥२१२४॥

वीरजिणस्सागमणं नाउं, तह **सालिभद्दधन्ना**णं ।
भद्दाइओ गिहजणो, जाओ हल्ल[३]प्फलो सव्वो ॥२१२५॥

न य केणइ विन्नाया, ते मुणिणो आगया वि तो तत्थ ।
खणमेत्तं चिट्ठित्ता, अदीणचित्ता पडिनियत्ता ॥२१२६॥

भणियं च –

सुंदरसुकुमाल[३]सुहोइ[४]एहिं, विविहेहिं तवविसेसेहिं ।
तह सोसविओ अप्पा, जह नवि णाओ सभवणे वि ॥२१२७॥

आगच्छंता य पहे, गोउलथेरीए पवरदहिएणं ।
पडिलाभिया सहरिसं, पत्ता जिणवरसयासम्मि ॥२१२८॥

---

१. शुष्कौ । २. किलकिलभूतौ = सूखी हड्डी की जैसी आवाज आती है । मतलब शरीर से सब मांस, खून सूख गए । ३. (दे.) उत्सुक, आकुल । ४. ०सुखोदिताभ्यां ताभ्याम् ।

1. ब – तियलोयनाहेण । 2. अ – ०भयरू० – ज. । 3. अ – ०सुभोइ० ।

विहिणा तं आलोइय, पुच्छंति जिणं न अम्ह पारणयं ।
जणणीए [१]कयं भयवं !, ता तं कह तुम्ह आइट्ठं ? ॥२१२९॥

(परमपियापरमप्पपडिभणियपुव्वभवपडिसुणणं पारणयं पाओवगमणं य)

भयवं पि आह जीए दिन्नं, दहियं अईयजम्मम्मि ।
सा **सालिभद्द**जणणी, आसी **धन्न** त्ति नामेणं ॥२१३०॥

[२]वज्जरिओ पुव्वभवो, भोयफलं दाणपच्चयं कहियं ।
तं सुणिय **सालिभद्दो**, सुमरइ [1]पोराणयं [2]जम्मं ॥२१३१॥

तो ते संविग्गमणा, दहियं [3]पारित्तु जिणमणु[4]न्नविउं ।
खामियचउविहसंघा, [३]सुद्धप्पा अणसणं घेत्तुं ॥२१३२॥

कयआराहणकिच्चा, **वेभार**द्वियसिलायलं गंतुं ।
उल्लसियसुक्कलेसा, पाओवगमं पवज्जंति ॥२१३३॥ ॥ जुम्मं ॥

एत्थंतरे भयवओ, वंदणहेउं समागया **भद्दा** ।
वंदिय पुच्छइ **धन्नो**, कत्थ[४]च्छइ **सालिभद्दो** य ? ॥२१३४॥

[५]जहवत्तं परिकहियं, जिणेण सव्वं पि तो ससोयमणा ।
तेसि समीवम्मि गया, पेच्छइ ते निच्चलसरीरे ॥२१३५॥

वंदित्ता संभासइ पुणो पुणो, ते न किं पि जंपंति ।
गयसंगा ताहे सा, रुयइ महासोगभरभरिया ॥२१३६॥

(भद्दामायाकयसोगो)

[६]गेहगओ वि न नाओ, हा पुत्तय ! मंदभाइणी अहयं ।
संभासिओ न दिट्ठो, न वंदिओ पावकम्माए ॥२१३७॥

अमराणियमाहारं भोत्तुं, कह[७]मंतपंतयं भुत्तं ? ।
बत्तीसतूलियासुं सुविउं, कह [5]सुवसि सिलवट्टे ? ॥२१३८॥

---

१. कारापितमिति भावः । २. कथितः । ३. शुद्धात्मनौ । ४. कुत्र अच्छति । ५. यथावृत्तम् । ६. गृहे आगतः अपि । ७. तुच्छ ।

1. पोराणियं – ज.क. । 2. जाइं – क. । 3. पारेत्तु – ज. । 4. ०न्नमिउं – ज. । 5. ब – ०यसि – ज. ।

हरियंदणाणुलेवं काउं, कह सेयपंकमुव्वहसि ? ।
कागलिगीयं सोउं, सुणसि कहं घूयसिवरावे ? ॥२१३९॥

पुव्विं तुज्झ ममोवरि, भत्ती विणओ य तारिसो आसि ।
संपइ उल्लावं पि हु, न देसि किं पुत्त ! दीणाए ? ॥२१४०॥

गुरुदुक्खसल्लियमणा, एमाई बहुविहं विलवमाणी ।
तेसिं वंदणकज्जे, गएण रन्ना समणुसट्ठा ॥२१४१॥

धन्ना एए जेहिं उ, भवदुक्खाणं विमोइओ अप्पा ।
तं पि कयत्था जीसे, सुएण आराहियं एवं ॥२१४२॥

अन्नं च –

वयणचलणाइचेट्ठा, कायव्वा नेय एस कप्पो त्ति ।
पाओवगमे ता तं, मा कुणसु अकारणे खेयं ॥२१४३॥

एमाइ **सेणिए**णं, महुरगिरं संठवित्तु सवहूया ।
नीया घरम्मि **भद्दा,** अक्कंदणखीणगलसद्दा ॥२१४४॥

ते वि य मुणिवरवसभा, कालगया णुत्तरेसु उववन्ना ।
तत्तो चुया **विदेहे,** उववज्जिय उत्तमकुलम्मि ॥२१४५॥

भोगसमिद्धिं पाविय, दिक्खं घेत्तूण निम्मलचरित्ता ।
निट्ठवियसयलकम्मा, सिद्धिपुरीए गमिस्संति ॥२१४६॥ ॥ जुम्मं ॥

इय एवं दाणफलं, जणस्स विम्हयकरं मुणेऊणं ।
जइयव्वमगारीहिं, विसेसओ दाणधम्मम्मि ॥२१४७॥

---

१. स्वेदपङ्कम् । २. काकली० = सूक्ष्म गीत, मधुरध्वनि । ३. घूकशिवाऽऽरावान् । ४. मुंह हिलाना । ५. अनुत्तरे ।

1. पुत्त ! सिव० – ज. । 2. ब – सव्वहु० । 3. अक्कंदंती – ज. । 4. ब – च्चिय, चिय – क. । 5. ब – देक्खं । 6. ब – सुणेऊणं ।

भणियं च -

दाणसीलतवभावण[१] संसिउ[1], **वीरेहिं** धम्मु चउव्विहु दंसिउ ।
उत्तमतिविहधम्मअसमत्थहं[2][3], दाणधम्मु पर जियइ गिहत्थहं ॥२१४८॥

इय बोहंतो भविए, पज्जंते विहरिओ **अपावाए** ।
रइयं च समोसरणं, देवेहिं चउनिकाएहिं ॥२१४९॥

भयवं कहेइ धम्मं, सदेवमणुयासुराए परिसाए ।
पुट्ठो य गणहरेणं, भयवं ! किं कालचक्कस्स ॥२१५०॥

भरहे एत्थ सरूवं, भूयं भव्वं समासओ कहह ।
उस्सप्पिणिओस्सप्पिणिरूवस्स कहेइ तो भयवं ॥२१५१॥ ॥ जुम्मं ॥

(कयकढिणकम्मकद्दमकप्पण-करालकलिकालकल्लाणकारिकयकिच्च-कासवेण कहियं कालचक्कसरूवं)

सुसमसुसमा य सुसमा, सुसमदुसमा य दुसमसुसमा य ।
दुसम अइदूसमा वि य, उस्सस[4][२]प्पिणिए उ छच्च सम[३]ा ॥२१५२॥

चउरो कोडाकोडी, अयराणं **सुसमसूसमा** होइ ।
तीए य मिहुणयनरा, कोस[४]तिगुच्चा तिपलि[५]याऊ ॥२१५३॥

ते सुरहिगंधदेहा, निरामया निब्भ[६]या सुरूवा य ।
बत्तीसलक्खणधरा, जर[७]चिंतासोयपरिहीणा ॥२१५४॥

---

१. दानशीलतपोभावनाः शंसित्वा, **वीरैः** धर्मः चतुर्विधः दर्शितः ।
उत्तमत्रिविधधर्मेषु असमर्थानां, दानधर्मः परा[१] जयति गृहस्थानाम् ॥२१४८॥

२. उत्सर्पिण्यामपि उक्तवत् षडपि आरकाणि समानानि । ३. 'आरा' । ४. क्रोशत्रिकोच्चाः । ५. त्रिपल्योपम - आयुषः । ६. निर्भयाः । ७. जराचिन्ताशोकरहिताः ।

---

१. परा - (अ.) अत्यन्त अथवा परम् ।

1. संसिओ - ज. । 2. उत्तिम० - ज. । 3. ०त्थह - ज.क. । 4. अवस० - ज., ओसप्पि० - क. ।

पयईए तणुकसाया, अहमिंदा उत्तमा य संघयणा[1] ।
माणुम्माणपमाणोववन्नदेहा सकरुणा य ॥२१५५॥

पुढवीपुप्फफलाणं रसो, तया[1] आसि सक्कराअहिगो ।
पुक्करणीओ, घयखीरउदगइक्खुरसनीराओ ॥२१५६॥

दसविहा य कप्परुक्खा –

मज्जंगया य भिंगा, तुडियंगा दीवजोइ चित्तंगा ।
चित्तरसा मणियंगा, गेहागारा अनिगिणा य ॥२१५७॥★

मज्जंगेसु य मज्जं, उप्पज्जइ भायणाइं **भिंगे**सु ।
तुडियंगेसु य संगयतुडियाइं[2] बहुप्पयाराइं ॥२१५८॥

दीवसिहा जोइसनामया य, एए करेंति उज्जोयं ।
चित्तंगेसु य मल्लं[3], **चित्तरसा** भोयणट्ठाए ॥२१५९॥

मणियंगेसु य भूसणवराइं, भवणाइं **भवण**रुक्खेसु ।
जायंति य वत्थाइं, **अनिगिण**नामेसु रुक्खेसु ॥२१६०॥

आउयसेसे मिहुणं, पसवेत्ता[4] ते सुरालयं जंति ।
तवसंजमरहिया वि हु, अकूरपरिणामभावेण ॥२१६१॥

अयरतिकोडाकोडीपरिमाणा[2] **सुस्समा** तहिं[5] मणुया ।
कोसदुगुच्चा दोपलियजीविया सेस पुव्वसमा ॥२१६२॥

पलिओवममाईए, पज्जंते होइ पुव्वकोडीओ[3] ।
तइयाए उ **समा**ए, दोकोडाकोडिमाणाए ॥२१६३॥

आईए[6] कोसमुच्चा, अंते पुण पंचचावसयमाणा[7] ।
कालकमेणं हाणिं[4], गच्छंति य[5] कप्पतरुणो वि ॥२१६४॥

---

१. तदा । २. संगतत्रुटितानि = बाहु रक्षक । ३. माल्यम् । ४. प्र+सू = जन्म देना, 'प्रसूय' । ५. ३ कोडाकोडी सागरोपम । ६. प्रारम्भ काल में । ७. ५०० धनुष्य ।

1. ०यणे – ज. । 2. ०रिणामा – ज. । 3. ब – ०ए । 4. हाणी – क. । 5. ब – उ – ज.क. ।

पुढविजलोसहिफलफुल्लमाइवत्थू वि [१]हायमाणरसा ।
बलरूववन्न[२]खममुत्तिअज्जवाई [1]य हायंति ॥२१६५॥

तइय**समा**ए अंते, उप्पन्नो पढमजिणवरो **उसभो** ।
सत्तमकुलगरपुत्तो, मुणीण [2]घयदाइ**धण**जीवो ॥२१६६॥

सो दंसियसयलठिई, होऊणं धम्मसारही पढमो ।
[३]सिद्धो तिवास[3]सद्धट्ठमाससेसे तइयअरए ॥२१६७॥

देसूणायरकोडाकोडीमाणे, चउत्थअरयम्मि ।
तेवीसं तित्थयरा, उप्पन्ना एत्थ गण[4]नाह ! ॥२१६८॥ ॥ जुम्मं ॥

मोक्खंगयस्स मज्झं, पंचमअरगो उ **दूसमा** होही ।
[४]सद्धट्ठमासअहिएहिं, तीहिं वासेहिं [5]अइएहिं ॥२१६९॥

[५]छहिं वासाण [6]सएहिं, पंचहिं वासेहिं पंचमासेहिं ।
मम निव्वाणगयस्स, उ उप्पज्जिस्सइ **सगो** राया ॥२१७०॥

(कलंकिल्लकक्कीकहा)

[६]तेरसवास[7]सएहिं, नवुत्तरेहिं **सगा**उ **कुसुमपुरे** ।
होही **कक्की** [8]अंते, कुलम्मि केउ व्व दुट्ठप्पा ॥२१७१॥

बहुकोहमाणमायालोभय[७]घत्थस्स, तस्स जम्मम्मि ।
सहसा तत्थ पडिस्सइ, देवउलं **रामकण्हा**णं ॥२१७२॥

---

१. हीयमानरसाः । २. ०क्षमामुक्ति-आर्जवादयः । ३. तीसरे आरे के जब तीन साल और साढ़े आठ महीने बाकी थे तब आदिनाथ प्रभु का निर्वाण हुआ । ४. तीन साल और साढ़े आठ महीने के बाद = '८९ पखवाडीया' । ५. छेसो पाँच साल और पाँच महीने के बाद । ६. १३०९ वर्ष के बाद = १३०९ + ६०५ = श्री महावीरनिर्वाण के १९१४ साल के बाद । ७. ०ग्रस्तस्य ।

1. ब - ०पहा० - ज. । 2. घयदाण - क. । 3. ०अद्धट्ठमा० - क., ०अट्ठसद्धणा० - ज. । 4. ब - ०नाहा । 5. अहिए० - क. । 6. सहिएहिं - क. । 7. अ ०ससहिएहिं । 8. अ - अंते कक्कीयं ते - ज., कक्कीयं तय कु० - क., ब - पंते ।

चोरा रायविरोहो[1], रायभयं झिज्जिहिंति[१] गंधरसा ।
दुब्भिक्खमणावुट्ठी-[2] ईईबहुला[२] तया देसा ॥२१७३॥

अट्ठारस य कुमारो, वासाइं तत्तियं च डामरिओ[3] ।
अवसेसं पुण **कक्की**, राया होही अइपयंडो ॥२१७४॥

नगरं आहिंडंतो, पेच्छिस्सइ सो उ पंच थूभाइं ।
केणेमाइं कयाइं ?, इय पुट्ठा तेण पुरवुड्ढा ॥२१७५॥

कहिहिंति **नंद**राया, अत्थसमिद्धो इहं[3] जयपसिद्धो ।
तेण इमेसु हिरन्नं, अइबहुयं निक्खयं[४] चिट्ठे ॥२१७६॥ ॥ जुम्मं ॥

न तरंति इमं घेत्तुं, बहु[4] अन्ने नरवई इमं सोउं ।
सो थूभे खाणेही, ममीकरिस्सइ[५] हिरन्नं तं ॥२१७७॥

अह सव्वओ पुरं तं[5], खाणे[६] हि[6] अत्थलुद्धओ **कक्की** ।
सो दप्पंधो सेसे, तणं व गणिही[७] महीवाले ॥२१७८॥

(संजमसाहणासणाहसंयमिण संकडसमावडणं)

धरणीयल[7]ओ[८] उम्मज्जिएण, आरुट्ठगाविरूवेणं ।
तइया सिलामएणं, भेसेही[8] साहुवग्गं च ॥२१७९॥

अह **भद्दिगा** उ देवी, रायपहाइसु ते परियडंते ।
तुंडेणं[९] नोल्लेही[१०], भिक्खं भमिहिंति किच्छेणं ॥२१८०॥ ॥ जुम्मं ॥

---

१. क्षेष्यन्ति = क्षीण होना । २. ०ईति० = धान्य वगैरह को नुकसान पहुंचाने वाला चूहा आदि प्राणि-गण । ३. डामरिकः = विग्रह कारक । ४. निखातं = गाड़ा हुआ, 'दाटेलुं' । ५. स्वाधीनम् । ६. खानयिष्यति । ७. गणयिष्यति । ८. पृथ्वी से बाहर निकलकर (उम्मज्जिएण) पत्थर की बनी हुई गुस्सेवाली गाय का रूप लेकर भद्दिका नाम की देवी साधुओ को डरायेगी । राजमार्ग के ऊपर गोचरी के लिए घूमने वाले साधुओ को मुँह से प्रेरित करेगी = पीछे से धक्का लगायेगी । इस हेतु साधु लोग मुश्किल से भिक्षा भ्रमण कर पाएगे । ॥२१७९-८०॥ । ९. मुख, अग्रभाग । १०. नोदयिष्यति ।

1. ब - ०विरोहा । 2. ०अणा० - ज. । 3. इह - क. । 4. पहु अन्ने । 5. तत्तो - ज. । 6. ब - ०णाही - क. । 7. धरणीतलाउ ओम० - ज. । 8. भेसही - ज. ।

वोच्छंति[१] तत्थ थेरा, एसा सूयइ भविस्सकालम्मि ।
घोरं जलोवसग्गं, कहियमिणं **वीर**नाहेण ॥२१८१॥

ता वयह[२] अन्नदेसं, इय कहिए के वि तत्थ[३] अवक्कंता[१] ।
अन्ने वि भत्तवत्थाइएसु, गिद्धा[४] भणिस्संति ॥२१८२॥

जं कालपरिणईए कम्मवसेणं च भावि सुहमसुहं ।
तं तरइ निवारेउं को, किर इह बुद्धिमंतो वि ? ॥२१८३॥

भणियं च -

दूरं वच्चइ पुरिसो, तत्थ गओ निव्वुइं लहिस्सामि ।
तत्थ वि पुव्वकयाइं[२], पुव्वगयाइं पडिच्छंति[३] ॥२१८४॥

सव्वे वि य पासंडे[५], रुंभेउं[६] सो करे विमग्गेही ।
कक्किनिवो[७] दाहिंति य, सारंभपरिग्गहा ते वि ॥२१८५॥

रुद्धो य समणसंघो करदाणत्थं च भासिही रायं ।
भिक्खावित्ती निक्किंचणा य अम्हे अणाया[४]णा[८] ॥२१८६॥

ता अम्ह धम्मलाभं, मोत्तूणं नत्थि किं पि अन्नं[५] ति ।
इय नाऊण नराहिव !, जं रोयइ तं करेसु तुमं ॥२१८७॥

अन्नं च भणियं पुराणे -

सज्झायज्झाणनिरए, तवुज्जए बंभयारिणो दंते ।
जइणो परिरक्खंतो, छट्ठुंसं[९] लहइ धम्मस्स ॥२१८८॥

ता उवरम एयाओ, अज्झवसाणाओ होइ न य खेमं ।
जइणं उवद्दवेणं, कीरंतेणं पुरे देसे ॥२१८९॥

---

१. वदिष्यन्ति । २. व्रजत । ३. तत्स्थानादपक्रान्ताः । ४. आसक्ताः । ५. पाखण्डिनः = पाखंडी वि. । ६. रुद्ध्वा । ७. कल्कीनृपाय ते करं दास्यन्ति । ८. अनायतनाः । ९. षष्ठांशम् = छट्ठा भाग ।

1. अ - अक्कांता, ब - वक्कंता । 2. ०गयाइं - क. । 3. पडिक्खंति - क. । 4. ०णादाणा - क. । 5. अ - अन्नं पि - क. ।

एवं भणिओ जाहे, न मन्निही रोसपरवसो होही ।
तो नगरदेवया तं, भणिही किं इच्छसे मरिउं ? ॥२१९०॥

जं [१]बाहसि मुणिसंघं, इय भणिओ भीयमाणसो पडिही ।
पा[1]एसु समणसंघस्स, सो वि मे खमह इय [२]बेंतो ॥२१९१॥ ॥ जुम्मं ॥

होहिंति य उप्पाया, तइया पुरनाससूयगा बहवे ।
सत्तदस अहोरत्ता, निरंतरं [३]वासिही उदयं ॥२१९२॥

गंगादहो य [४]सोणो, [५]उव्वत्तिस्सइ य गरुयजलवेगो ।
[2]तो **कुसुमपुरं** नगरं, समंतओ [६]वुज्झिही [3]तेणं ॥२१९३॥

पाडिवओ आयरिओ, संघजणो कोइ कोइ पुरलोगो ।
कक्की राया फलगाइएहिं, तरिऊण [4]छुट्टिहिई ॥२१९४॥

बहुओ [७]जाही निहणं, तत्थ जणो उवरए य जलवसणे ।
अन्नं नयरं काही, **कक्की नंद**स्स अत्थेणं ॥२१९५॥

होहिंति य [८]आययणा, साहुविहारो य [5]सस्सवुड्ढी य ।
सस्स[९]सई पडिएणं, कुंभे[१०]ण वि को वि न किणेही ॥२१९६॥

(कलुसिअकक्कीकयमुणिकदत्थणा)

[११]पन्नासं वासाइं, सुभिक्खं[6]कालो भविस्सई धणियं ।
पुणरवि **कक्की** राया, मूढो [१२]आसन्नमरणंता ॥२१९७॥

---

१. बाधसे । २. ब्रुवन् । ३. वर्षिष्यति । ४. सिन्धु नदी । ५. उद्वर्तिष्यति = खूब बढ़ना । ६. वह् = वक्ष्यते = बह जाना । ७. यास्यति । ८. गृह, देवमन्दिर । ९. स्वयं कुंभ प्रमाण उत्पन्न हुए धान्य को भी कोइ खरीदेगा नहीं । १०. धान्य मापने का परिमाण विशेष । ११. (दे.) पञ्चाशत् । १२. आसन्नमरणत्वात् ।

1. ब - पाएसु समणसंघस्स खमह मम सामि इ०, अ - पाएसुं संघस्स उ भयवं मे, पाएसु समणसंघस्स भयवं - क. । 2. ब - ता - क. । 3. अ - उज्झि० । 4. ब - छुट्टिहिही, छुट्टेही । 5. अ - सम्मबुद्धि । 6. ब - ०माला भ० ।

पासंडिणो[१] सलिंगे, मेल्लावेही उवद्दवेही य ।
मुणिवग्गं तइया पुण, **पाडिवओ** नाम आयरिओ ॥२१९८॥

होही जुगप्पहाणो, तं सो रुंभित्तु समणसंघजुयं ।
भिक्खाए छट्ठभागं, मग्गेही दुट्ठपरिणामो ॥२१९९॥ ॥ तिहिं विसेसयं ॥

काही काउस्सग्गं, **सक्क**स्साराहणाए तो संघो ।
गोवाडम्मि[२] निरुद्धो[१], जक्खं वा वारिहंति[३] तयं ॥२२००॥

भो **कक्कि**राय ! संघं मा बाहसु सुंदरं न तुह एयं ।
एत्थंतरम्मि **सक्को**, काउस्सग्गप्पभावेणं ॥२२०१॥

चलियासणो मुणेउं, ओहीए खिप्पमेव तत्थेही[४] ।
वुड्ढदियरूवधारी[५], भणिही **कक्कि**क च अत्थाणे ॥२२०२॥

सीहासणे निविट्ठं, एए किं साहुणो तए रुद्धा ? ।
भिक्खस्स छट्ठभागं[२] पि, मग्गिया दिंति नो मज्झं ॥२२०३॥ ॥ तिहिं विसेसयं ॥

निवसंति य एत्थ पुरे, सव्वे करदायगा उ पासंडी ।
मम जाया थद्धा[६][३] पुण, एए नो किंचि वियरंति ॥२२०४॥

(विब्भमविब्भलविबाहककक्कीं विबुद्धविबुहेसरेण विबोहणं)

सक्को भणिही नत्थि उ, एएसिं किंचि भिक्खभायं[७] पि ।
दिंति न कस्स वि एए, तुमं च भिक्खं विमग्गंतो ॥२२०५॥

लज्जसि न लोयमज्झे, निप्फुट्ट[४] ! विमुंच ता इमे साहू[८] ।
इहरा तुज्झ अणिट्ठं, होही इय जंपिए रुसिउं[५] ॥२२०६॥

---

१. पाखण्डीनां लिङ्गानि त्याजयिष्यन्ति । २. गोवाटक० = गाय के वाड़े में रहा हुआ । सङ्घ को वैसी जगह पर कैद किया था । ३. वारयिष्यति । ४. तत्र आगमिष्यति । ५. वृद्धद्विज० । ६. स्तब्धाः = अभिमानी । ७. भिक्षाभागम् । ८. निस्फुट ! = मूर्ख ! ।

1. विरु० – ज. । 2. ब – ०भायं पि । 3. ब – थट्टा, वड्ढा – ज. । 4. पाविट्ठ – ज. । 5. अ – हसिउं ।

भणिही इमं [१]गलहत्थह, भट्टमसंबद्धभासगं सिग्घं ।
इय [1]भणिए [2]तं **सक्को**, [२]गल्लचवेडाए ताडेउं ॥२२०७॥

काही छारु[3]क्कुरुडं, [३][४]छासीवासाणि आउयं भो[4]त्तुं ।
नरए उववज्जिस्सइ, अणंतदुहवेयणापउरे ॥२२०८॥ ॥ चउहिं विसेसयं ॥

तस्स य **दत्तं** पुत्तं, इंदो संठाविऊण जिणधम्मे ।
वंदित्तु समणसंघं, नियए ठाणम्मि संपत्तो ॥२२०९॥

तयणंतरं च काही, **दत्तो** जिणभवणमंडियं वसुहं ।
इगुवीससहस्साइं, होही धम्मुन्नई परमा ॥२२१०॥

धणधन्नत्थसमिद्धं, **भारह**वासं जिणिंदकालम्मि ।
पुरगामागरपउरं, आसी सुरलोगसंकासं ॥२२११॥

गामा नगरब्भूया, नगराणि य देवलोगसरिसाणि ।
रायसमा य [5]कुडुंबी, वेसमणसमा य रायाणो ॥२२१२॥

चंदसमा आयरिया, अम्मापियरो य [५]देवयसमाणा ।
सासू वि य [6]मातसमा, ससुरो वि हु [7]पियसमो आसि ॥२२१३॥

धम्माधम्म[६][8]विहिन्नू, विणयपरो [७]सच्चसोयसंपन्नो ।
गुरुदेवपूयणरओ, [८]सदारनिरओ जणो तइया ॥२२१४॥

[९]अग्घइ य सविन्नाणो, अग्घइ सीलं कुलं च विज्जा य ।
परचक्कईइतक्करभयसोयविवज्जिओ लोगो [9]॥२२१५॥

---

१. क्षिपत, कण्ठे धृत्वा अपसारयत । २. गल्लचपेटया = गाल पर थप्पड़ लगाना । ३. क्षार० = भस्म, राख = भस्मराशिं करिष्यति । इति भावः । ४. षडशीति० । ५. पिता-सदृशः । ६. ०विधिज्ञः । ७. सत्यशौचसंपन्नः । ८. स्वदारानिरतः । ९. अर्घ्यते = विद्वान् लोकः पूज्यते ।

1. भणिऊणं सक्को० - क. । 2. तो - क. । 3. ०रुक्खरु० - क. । 4. भुत्तं - क. । 5. अ - कुटुंबी । 6. अ - माइ० । 7. पीसमो - क. । 8. ०विहन्नू - ज. । 9. ०अकरभयविव० - ज.क. ।

जिणभत्ता रायाणो, पाएण कुतित्थिया य अवगीया[१] ।
दससु वि वासेसु, तहा दस दस अच्छेरया जाण ॥२२१६॥

उवसग्ग गब्भहरणं, इत्थीतित्थं अभाविया[1] परिसा ।
कण्हस्स **अवरकंका,** अवयरणं चंदसूराणं ॥२२१७॥

हरिवंसकुलुप्पत्ती, **चमरु**प्पाओ य अट्ठसयसिद्धा ।
अस्संजयाण पूया, दस वि अणंतेण कालेणं ॥२२१८॥

(दुप्पडियारदुब्भगदूसमकाले दुरहियासदुरक्कमदुक्कयदुरहिपसरणं)

लोगुत्तमपुरिसेहिं, चउप्पन्नाए[२] इहं अईएहिं[2] ।
केवलिमणपज्जवओहिणाणिसुयकेवलीहिं च ॥२२१९॥

दूसमकाले लोगो, कोहाइकसायविसहयविवेगो[३] ।
अच्चोदगो व्व[४] वप्पो[३], जाओ संभिन्नमज्जाओ ॥२२२०॥ ॥ जुम्मं ॥

जह जह वच्चइ कालो, तह तह दयदाणसच्चपरिहीणो ।
अहियं[५] अहम्मसीलो, कुतित्थमोहियमई होही ॥२२२१॥

गामा मसाणभूया, णगराणि य पेयलोग[६][4]सरिसाणि ।
दाससमा य कुडुंबी[5], जमदंडसमा य रायाणो ॥२२२२॥

लुद्धा[७] य पुहइपाला भिच्चे, गिण्हंति[6] ते वि इयरजणो ।
खायंति[7] य अन्नोन्नं, मच्छा[८] इव दुब्बले बलिया ॥२२२३॥

---

१. अवगीताः = निन्दिताः । २. चतुर्पञ्चाशत् । ३. ०विषहतविवेकः । ४. अत्युदक इव वप्रः = हद से ज्यादा पानी पाल को तोड़ देता है तद्वत् । ५. अधिकम् । ६. मृतकलोक० । ७. लुब्धाः राजानः भृत्यानां धनं ग्रहीष्यन्ति, भृत्याः अन्यजनानां धनं ग्रहीष्यन्ति । ८. जैसे दुर्बल मत्स्य को बलवान् मत्स्य खा जाता है तद्वत् ।

1. अब्भविया - क., अभव्विया - ज. । 2. अइसएहिं - क. । 3. वग्घो - ज., वधो - क । 4. ०लोयस० - क. । 5. अ - कुटुंबी । 6. ब - गेण्ह० - ज. । 7. ब - उ - ज.क. ।

जे अंता ते मज्झा, जे मज्झा ते कमेण पच्चंता ।
अपडागा इव नावा, [१][1]डोलंति समंतओ देसा ॥२२२४॥

चोरा मुसंति अत्थं, नरिंदकरपीडियाइं [२]रट्ठाइं ।
भूयगह[2]पाय [३]सेणी, लंचाइपरा य [४]कारणिया ॥२२२५॥

सयणे निच्चविरोहो, सकज्जनिरओ परत्थनिरवेक्खो ।
[५]चप्फलभासी लोगो, पाएणमवो[६][3]ल्लसारो त्ति ॥२२२६॥

धणधन्ने [७]अवियण्हो, घरकज्जे चेव मोहियमईओ ।
दक्खिन्नलज्जरहिओ, धम्मसुइविवज्जिओ लोगो ॥२२२७॥

सीसा ना[4]राहिंति [5]उ, आयरिए **दूसमा**णुभावेणं ।
ते वि हु तेसिं [6]पढमं, न दिंति सुयनाणसिक्खाओ ॥२२२८॥

[८]फिट्टइ गुरुकुलवासो, मंदा य मई जणस्स धम्मम्मि ।
[९]सत्ता[7]उला य पुहई, देवा य न दरिसणं [8]देंति ॥२२२९॥

पुत्ता अम्मापियरो, अवमन्नंति कडुयाइं भासंति ।
सुण्हा भुयंगितुल्ला, सासू वि य [१०][9]कालकम्मसमा ॥२२३०॥

हसिएहिं जंपिएहिं य, अच्छिवियारेहिं विगयलज्जाओ ।
[११]सविलासनियत्थेहिं, वहुया [10]सिक्खंति वेसाणं ॥२२३१॥

---

१. डोलयन्ति = अस्थिराः भवन्ति । २. राष्ट्राणि । ३. समानव्यापारवन्तः भूतग्रहप्रायाः भविष्यन्ति = एक दूसरे को दुःख पहुंचाएंगे । ४. कारणिकाः = न्यायाधीश । ५. (दे.) मिथ्याभाषी । ६. वोल्ल् = आ + क्रम् = आक्रमण । ७. अवितृष्णः = अत्यन्त आसक्त । ८. भ्रश्यति = तूट जाना । ९. सत्त्वाऽऽकुला = जीवाकुला । १०. मृत्यु । ११. वेश्यानां उद्भटवस्त्रैः वध्वः शिक्षिष्यन्ते । अथवा विलासयुक्त वस्त्रो द्वारा वधूए वेश्याओ का अनुकरण करेगी ।

1. ब – ०ल्लंति – ज. । 2. ब – ०याय०, सूयगहये सेणी – क., भूयगहपोसणी लंचापवरा – ज. । 3. ०मतुल्लसा० – ज. । 4. ब – ०राहेंति । 5. य – ज.क. । 6. ०ढणं – क. । 7. ब – ०उरा – क. । 8. ब – दिंति – ज. । 9. अ – ०कन्नस०, ०कन्निस० – क., कण्हिस० – ज. । 10. सेक्खेंति – क. ।

सावगसाविगहाणी, भावणतवदाणसीलपरिहाणी ।
समणाणं समणीणं, [1]असंखडं थेवकज्जे वि ॥२२३२॥

कूडतुलकूडमाणं, धम्मे वि सढत्तणं [1]च पेसुन्नं ।
[2]पहवंति दुज्जणा तह, सीयंति य सज्जणा पायं ॥२२३३॥

विज्जाण मंततंतोसहीण, मणिपुप्फफलरसाणं च ।
रूवाउयरिद्धीणं, संठाणुच्चत्तधम्माणं ॥२२३४॥

दूसमकाले होही, सुहभावाण सव्वेसि परिहाणी ।
एगंतदूसमाए, [3]असुहतरागं इमं सव्वं ॥२२३५॥ ॥ जुम्मं ॥

(पंचमआरकपंतभागपरूवणा)

एवं [4]परिहायंते लोए, चंदो व्व [5]कालपक्खम्मि ।
जे धम्मिया मणुस्सा, सुजीवियं जीवियं तेसिं ॥२२३६॥

दुप्पसहो आयरिओ, **फग्गुसिरी** साहुणी णयपहाणा ।
सड्ढो [6]**नाइल**नामो, **सच्चसिरी** सावियाणं च ॥२२३७॥

तह **विमलवाहणो** वि य राया, **सुमुहो** व तस्स उ अमच्चो ।
एए उ **दूसमाए**, होहिंति अपच्छिमा **भरहे** ॥२२३८॥

[7]दोरयणि[2]पमाणतणू, [6]वीसय[3]वासाउया य होहंति ।
दुप्पसहाई चउरो, उक्कोसेणं च [9]छट्ठ[4]तवो ॥२२३९॥

दसवेयालियधारी, चोद्दस[5]पुव्वि व पुज्जिही संघो ।
दुप्प[6]सहो तित्थं पि [7]य, ता [8]वहिही जाव सो चेव ॥२२४०॥

---

१. (दे.) कलह, झगड़ा । २. प्रभवन्ति = समर्थ होना । ३. अशुभतरम् । ४. परिहीयमाने = कम होना, क्षीण होना । ५. कृष्णपक्षे । ६. नागिल । ७. द्वे रत्निः = दो हाथ प्रमाण शरीर । ८. विंशतिवर्षाऽऽयुषः । ९. श्री दुप्पसहसूरिजी का उत्कृष्ट तप अट्ठम कहा हैं । श्लो. २२४२ में छट्ठ का तप कहा है वह अन्य तीन के लिए समजना चाहिए । देखो तित्थोगाली पयन्ना श्लो. ८४६ ।

1. अ - सपे० । 2. ०णि य मा० - ज. । 3. ब - ०सइ वा० । 4. ०तवा - ज.क. । 5. ब - ०पुव्वी व । 6. ब - ०सहा । 7. व - क. । 8. ब - वहिहिइ ।

जो भणइ नत्थि धम्मो, ण य सामइयं न चेव य वयाइं ।
सो समणसंघबज्झो, कायव्वो समणसंघेणं ॥२२४१॥

बारस वासाइं गिहे, [1]वसिऊणं अट्ठ चेव सामन्ने ।
दुप्पसहो गच्छिहिही, अट्ठमभत्तेण **सोहम्मं** ॥२२४२॥

पुव्वण्हे वोच्छेओ, चरित्तधम्मस्स रायधम्मस्स ।
मज्झण्हे पुण होही, अवरण्हे [1]जायवे[2]यस्स ॥२२४३॥

(दुद्धरिसदूसमदूसमपरूवणं)

एवं **दूसम**कालो, इगवीससहस्स होइ वासाणं ।
एगंतदूसमा वि य, एवइयं चेव नायव्वा ॥२२४४॥

नट्ठे चरणाइम्मि उ, हाहाभूओ अणाहभूओ य ।
कालो [2]अमाइपुत्तो, [3]गोधम्मसमो जणो [3]तत्थ ॥२२४५॥

[4]रयबहुला खरफरुसा, अणिट्ठ[4]वाया तया य [5]वाहिंति ।
[5]धूमाहिं[6]ति दिसाओ, भयजणणीओ य सव्वेसिं ॥२२४६॥

चंदो [6]मुइही सीयं अहियं, अहियं च सूरिओ तविही ।
जेण इहं नरतिरिया, सीउण्हहया किलिस्संति ॥२२४७॥

तह अरसविरसमेहा, [7]अंबिलमेहा य खारमेहा य ।
अग्गिविसअ[8]सणिमेहा, अभिक्खणं [7]वासिहिंति तया ॥२२४८॥

जेण इहं मणुयाणं, [9]कासो सोसो जलोयरो कोढो ।
जरसूलसीसवियणा, हवंति रोगा अणेगविहा ॥२२४९॥

---

१. जातवेदस् = अग्नि । २. वह काल अनाथ पुत्र समान होगा । ३. गोधन० = गौओ का समूह अथवा पशुओ की तरह मनुष्य भी माता-पुत्र वि. व्यवस्था से रहित होगा । ४. ०वाताः । ५. धूमायिष्यन्ति । ६. मोक्ष्यति = छोड़ना । ७. वर्षिष्यन्ति । ८. खांसी ।

1. गमि० - क. । 2. जायतेय० - ज.क. । 3. ब - जत्थ - ज. । 4. रहबहला - क. । 5. वाएंति - क. । 6. अ - ०मायंति, ०माहोंति - क. । 7. अ - खारामेहा खट्टमेहा य - क., खारयमेहा य खट्टमेहा य - ज. । 8. असहि० - ज. । 9. खासो - ज.क. ।

[१]काही [1]तिरिए दुहिए, जलथलखहचारिणो उ सव्वे वि ।
आरामखे[2]त्तकाणणरु[२]क्खत[3]णाई खयं नेही ॥२२५०॥ ॥ जुम्मं ॥

वेयड्ढउसभकूडे, गंगासिंधू य [4]मोत्तुमवसेसं ।
[३]गिरिकूवनइत[5]डागा, थलाइ सव्वं समं होही ॥२२५१॥

इंगालमुम्मुरसमा, छारब्भूया भविस्सई धरणी ।
कइया वि धूलिबहुला, [४]घणचिक्कणकद्द[6]मागम्मा ॥२२५२॥

(एगंतदूसमकाले माणुसजीवणवण्णणं)

मणुया खरफरुसतणू, उब्भड[५]घोडा[7]मुहा [६]चिविडनासा ।
[७]दुव्वन्ननिट्ठुरगिरा, बहुरोगा [८]कोह[8]णसहावा ॥२२५३॥

[९]रयणीपमाणदेहा, नरित्थिओ वीससोलसाऊ य ।
बहुपुत्तनत्तुयजुया, [१०]निल्लज्जा विगयवसणा य ॥२२५४॥

छव्वरिसी गब्भधरा होही, नारी य दुक्खपसवा य ।
सोलसवासा [9]पुत्तय[११]नत्तुयए पेच्छिहिइ [10][१२]थेरा ॥२२५५॥

होहिंति य बिलवासी, बिला उ [१३]बावत्तरी य **वेयड्ढे** ।
उभयतडेसु नईणं, नव नव एक्केक्कए कूले ॥२२५६॥

सव्वे वि [१४]बीयमेत्ता, तिरिया होहिंति तत्थ मणुयाई ।
[१५]कुणिमाहारा सव्वे, [१६]निस्संसा निव्विवेगा य ॥२२५७॥

---

१. भिन्न भिन्न तरीके की अशुभ बारीश जलचर-स्थलचर एवं खेचर वि. सभी तिर्यंचो को दुःखी करेगी । २. वृक्ष । ३. छट्ठे आरे में पर्वत, कुआँ, तलाब और स्थल वि. सभी चीज सीधी जमीन हो जाएगी । ४. गाढ एवं चिकना कादव होने से चलने के लिए अयोग्य । ५. ०अश्वमुखाः । ६. चिपिट० = चिपटा । ७. खराब वर्णवाले । ८. क्रोध करने के स्वभाव वाले । ९. नराः स्त्रियश्च । १०. ०कपड़े = वस्त्ररहिताः । ११. ०नप्तृकान् = पौत्र । १२. स्थविरा । १३. द्वा-सप्ततिः । १४. बीजमात्राः = तिर्यग्-जाति विलुप्त हो जायेगी, योनि बचेगी । १५. (दे.) मांस । १६. नृशंसाः = क्रूर, निर्दय ।

1. तिरिय दु० - ज. । 2. ०छेत्त० - क. । 3. ब - ०णाइं । 4. ब - मुत्तु० - ज.क. । 5. ब - ०डागा - क. । 6. ब - ०मामग्गा - ज. । 7. अ - ०गोडामु० । 8. ०हमाण० - क. । 9. पोत्त० - ज. । 10. अ - ०ही, पेच्छिहीइ - ज. ।

[1]रहपहमेत्तं तु जलं, वहिही बहुमच्छकच्छभाइन्नं [2]।
गंगासिंधुन[1]ईणो, तासु य गंतूण ते मणुया ॥२२५८॥

रयणीए थलमज्झे, [2]काहिंति दिवा य सूरकरपक्के ।
खाहिंति य बीयाए, निसाए अन्ने य [3]कड्ढिंति ॥२२५९॥ ॥ जुम्मं ॥

दहिखीरघयाईयं सत्तरस, धन्नाइं पुप्फफलमाई ।
होही न **भरह**वासे, सयणासणवत्थमाई य ॥२२६०॥

इगवीससहस्साइं, एवं **एगंतदूसमा** होही ।
पंचसु **भरहेसु** तहा, पंचसु **एरवय**वासेसुं ॥२२६१॥

सागरकोडाकोडी एगा, [3]अरओ चउत्थओ होही ।
ऊणा इह वासाणं, बायालीसं सहस्सेहिं ॥२२६२॥

सा पंचमछट्ठेहिं अरएहिं, जुया य होइ पडिपुन्ना ।
[4]ओसप्पिणी दसायरकोडाकोडी अओ होइ ॥२२६३॥

[4]ओसप्पिणीए एवं जो, [5]अणुभावो उ वन्निओ [6]पुव्वं ।
सो च्चिय [4]पडिलोमेणं, उस्सप्पिणिए मुणेयव्वो ॥२२६४॥

(उस्सप्पिणिकालणिरूवणं)

[5]बायालीससहस्सा वासाण, नरा उ होंति बिलवासी ।
उस्सप्पिणीए **एगंतदूसमा**चरिमकालम्मि ॥२२६५॥

होहिंति पंच मेहा, [7]पुक्खलसंवट्ट खीरमेहो य ।
घयमेहअमयमेहा, रसमेहो पंचमो होइ ॥२२६६॥ ॥ जुम्मं ॥

---

१. रथपथमात्रम् । २. ०आकीर्णम् = व्याप्त । ३. आरकः = 'आरो' । ४. प्रतिलोम० = उलटा । ५. २१,००० वर्ष छट्ठे आरे के एवं २१,००० वर्ष प्रथम आरे के ।

1. ०ईणं - क. । 2. अ - कड्ढिंति । 3. कट्टेंति - क. । 4. अवस० - ज. । 5. ०णुहा० - क. । 6. पुव्विं - क. । 7. पोक्ख० - ज.क. ।

[1]एक्केक्को [१]अणुबद्धं, वासिही सत्त सत्त दिवसाइं ।
पंचत्तीसं दिवसे, [२]वद्दलिया होहिई[2] सोमा ॥२२६७॥

पढमो उ [३]निव्ववेही, धन्नं बीओ करिस्सए मेहो ।
तइओ [४]नेहं जणयइ, [५]ओसहिमाई चउत्थो उ ॥२२६८॥

पंचमओ पुण मेहो, पुढवाईयाण रसकरो होही ।
तत्तो [६]हरियदुमोसहि-[७]वेल्लिलयाई[3] परोहिंति ॥२२६९॥

तो ते बिलवासिनरा, पासित्ता तं महिं तहसमिद्धं ।
आसत्था हिट्ठमणा, [4]नीहरिय बिलाण भमिहिंति ॥२२७०॥

भणिस्संति य –

जायं खु सुहविहारं, **भरह**मिमं पुप्फफलसमिद्धं च ।
ता जो कुणिमं खाही, सो अम्हं वज्जणिज्जो उ ॥२२७१॥

जह जह वच्चइ कालो, तह तह फलकुसुमओसहीणं च ।
संघयणरूवउच्चत्तआउमाईण वुड्ढी य ॥२२७२॥

होहिंति [८]सुहा [९]रिउणो, सुहा य वाया [१०]सुहाइं उदगाइं ।
गयरोगा तो मणुया, होहिंति तहा तिरिक्खा य ॥२२७३॥

उस्सप्पिणीइमाए बीयाए, [११]समाए चरिमकालम्मि ।
[5]तत्थ बहुमज्झदेसे, होहिंति य कुलगरा सत्त ॥२२७४॥

पढमेत्थ **विमलवाहण, सुदाम संगम सुपास**नामे य ।
दत्ते सुमुहे छट्ठे, **[6]सम्मुही** चेव सत्तमए ॥२२७५॥

---

१. एक के बाद एक निरंतर । २. (दे.) वार्दलिका = बादल । ३. निर् + वापय् = ठंडा करना । ४. स्नेहम् = चिकनाहट – 'चीकास' । ५. धान्य । ६. हरा तृण, सब्जि । ७. द्रुम-औषधि-वेल्ली-लतादयः । ८. सुखाः । ९. ऋतवः । १०. सुखानि = सुखदानि शुभानि वा । ११. समा = 'आरो' ।

1. अ – एक्केक्के । 2. अ – होइही । 3. ब – ०वल्लि० – क. । 4. नीहरिया – क. । 5. ब – एत्थ – ज. । 6. अ – य सम्मुयई चे०, समुई – क., सप्पुई – ज. ।

काहिंति[1] सन्निवेसं, वासत्थं गामनगरमाईणं ।
कुलधम्मरायनीईण, कारगा कुलगरा[2] तइया ॥२२७६॥

आसा हत्थी गावो, परिग्गहिस्संति[3] रज्जकज्जम्मि ।
ववहारसिप्पकम्मा, गणियलिवाई[4] य होहिंति ॥२२७७॥

जाईसरो उ[4] पढमो, नामेणं **विमलवाहणो** राया ।
सव्वं चिय दाएही[3], पुव्वुत्तमिमं पयाण हिओ ॥२२७८॥

सस्साणं उप्पत्ती परमा, परमं च दुद्धदहिसप्पी[4] ।
उप्पन्ने अगणिम्मि य, रंधणमाई भविस्संति ॥२२७९॥

(अमरअग्घिय-आगामिअरिहंतअक्खाणं)

दूसमअरयस्संते, **संमुइ**[5]रायस्स **सयदुवार**म्मि ।
भद्दाए भारियाए, **सेणिय**जीवो उ पढमजिणो ॥२२८०॥

पुत्तत्तणेण होही, णाणत्तियसंजुओ[6] **महापउमो** ।
वीरजिणस्स व सव्वं, विन्नेयं तस्स जम्माई ॥२२८१॥ ॥ जुम्मं ॥

दूसमसुसमाए इहं, पुव्वं पिव जिणवरा भविस्संति ।
पडिलोमसभावेण य, ते य इमे होंति नायव्वा ॥२२८२॥

पढमो उ **महापउमो, सेणिय**जीवो जिणेसरो होही ।
बीओ य **सूरदेवो, सुपास**जीवो जयपईवो ॥२२८३॥★

तइओ य पुण **सुपासो, उदाइ**जीवो पणट्ठभववासो ।
होही **सयंपहो** तह, **पोट्टिल**जीवो चउत्थो उ ॥२२८४॥

सव्वाणुभूइनामो, **दढाउ**जीवो उ पंचमो होही ।
छट्ठो य **देवगुत्तो,** तित्थयरो **कत्तिओ** पुव्विं ॥२२८५॥

---

१. करिष्यन्ति । २. लिपि-आदि । ३. दर्शयिष्यति । ४. सर्पिस् ।

1. काहंति - क. । 2. ब - ०राईया । 3. ०लियाई - ज. । 4. य - ज. । 5. समुइ० - ज. । 6. अ - ०णतिए ।

उदओ य जिणो होही, सत्तमओ **संख**नामओ आसी ।
पेढालपुत्तनामा, **आणंद**जिओ य अट्ठमओ ॥२२८६॥

सयगो य जिणो णवमो, पुव्वं आसी [1]**सुनंद**णामो जो ।
मुणिसुव्वओ य दसमो, **सयगो** जो आसि पुव्वभवे ॥२२८७॥

एक्कारसमो य जिणो, **देवइ**जीवो उ सव्वभावविऊ ।
अममो बारसमजिणो, होही जो [1]**सच्चई** आसि ॥२२८८॥

तह **निक्कसाय**नामो, तेरसमो **वासुदेव**जीवो [2]उ ।
बलदेवो पुण होही, चोद्दसमो [3]**निप्पुलाय**जिणो ॥२२८९॥

निम्ममजिणो अमोहो, पनरसमो होइ **रोहिणी**जीवो ।
सुलसासावियजीवो, सोलसमो **चित्तगुत्तो** य ॥२२९०॥

सतरसमो य **समाही, रेवइ**जीवो उ विगयभववाही ।
संवरजिणो य जयहिओ, अट्ठारसमो [4]**मियालीओ** ॥२२९१॥

[3]**दीवायण**स्स जीवो, **नियट्टि**अरहा य अगुणवीसइमो ।
कण्हो [5]गयभवतण्हो, वीसइमो **देवसेण**जिणो ॥२२९२॥

तत्तो य एगवीसो, **नारय**जीवो **विवेग**जिणचंदो ।
बावीसइमो **विमलो, अमर**जिओ विगयकम्ममलो २२९३॥

देवोववायनामो, तेवीसइमो उ **अंबडो** पुव्वं ।
चरिमो य **साइबुद्धो, अणंतविजओ** जिणो होही ॥२२९४॥

ओसप्पिणीजिणाणं, पडिलोमेण होंति तित्थयरा ।
जा चरिमो जिणनाहो, विन्नेओ **उसभनाहो** व्व ॥२२९५॥

---

१. सत्यकि विद्याधर। २. द्वैपायनस्य।

1. समुद्द० - ज.क.। 2. ब - य। 3. निप्पला० - ज.। 4. ब - मिलियालि जिओ - क.। 5. अ - भवगय०।

एएसु अईएसुं, कमेण होहिंति पुव्वतुल्लगुणा ।
सुस्समदुसमा सुसमा, सुस्समसुसमा य छट्ठा उ ॥२२९६॥
वीसं कोडाकोडी, दोन्नि वि एया उ होंति अयराणं ।
[1]ओसप्पिणी य उस्सप्पिणी य परियत्तमाणीओ ॥२२९७॥

अयरपमाणं पुण –

एगाहियबेहियतेहियाणि, उक्कोससत्तरत्ताइं[2] ।
घेत्तुं सिसुलोमाइं, काउमसंखेज्जखंडाइं ॥२२९८॥
जोयणमुव्वेहेणं[2], जोयणमायामवित्थरेणं[3] च ।
पल्लं भरेज्ज निचियं, सुहुमाणं तेसि लोमाणं ॥२२९९॥ ॥ जुम्मं ॥
वाससए वाससए, वोलीणे अवहरेज्ज एक्केक्कं ।
जो तत्थ [4]भवे कालो, एगं पलिओवमं तं तु ॥२३००॥
दसकोडाकोडीओ तेसिं, अह सागरोवमं हवइ ।
पोग्गलपरियट्टो पुण, [5]ओसप्पुस्सप्पिणि अणंता ॥२३०१॥
[3]ओरालियवेउव्वियतेययमणभास[6]पाणुकम्मेहिं[4] ।
जीवस्स सव्वपोग्गल[7]गहणे तो [5]बायरपरट्टो ॥२३०२॥
एगयरेण इमेसिं, तग्गहणे सुहमओ य सो होइ ।
एवं खेत्ते काले, भावे वि य सो दुहा नेओ ॥२३०३॥
[8]अजवाडगणाएणं[6], एक्केक्कजिएण सव्वलोगो उ ।
उक्कमओ कमओ वा, असइं मरणेहिं जं पुट्ठो ॥२३०४॥

---

१. शिशुलोमानि । २. ०उद्वेध = ऊँचाइ अथवा गहराइ । ३. चौद राजलोक में स्थित सभी पुद्गलो को जीव औदारिक, वैक्रिय, तैजस्, मनोवर्गणा, भाषा, श्वासोश्वास एवं कार्मण वर्गणा को कार्मण वर्गणा के स्वरूप में ग्रहण करके छोड़े । उस काल को बादर द्रव्य पुद्गल परावर्त काल कहा जाता है । और सभी पुद्गलो को पूर्वोक्त में से किसी एक स्वरूप में ग्रहण करके छोड़े उस काल को सूक्ष्म द्रव्य पुद्गल परावर्त कहते हैं । ४. तैजस् । ५. बादरपुद्गलपरावर्तः । ६. 'जेम बकरी पोताना वाडानी बधी ज जग्याने क्रम-उत्क्रमथी स्पर्श करती होय छे' तद्वत् ।

1. अवस० – ज. । 2. ०रत्ताणं – क. । 3. अ – ०ण आया० । 4. हवे – क., हयइ – ज. । 5. अवसप्पु० – ज. । 6. ०सआणु० – क. । 7. ०गहणाओ बा० – क. । 8. ब – अयवा०, इयवा० – ज. ।

तो पोग्गलपरियट्टा, अणाइकालम्मि [1]संसरंतस्स ।
एगेगस्स जियस्स य इमे, भवे वोलियाणंता ॥२३०५॥ ॥ जुम्मं ॥

(णायकुलणंदणणेहालुणंदिवद्धणणेहणिरीहस्स णिज्जरणिवेसिअणियंसणणि-रामिसस्स णतणिद्धणाणाणरसिंहणरिंदणिरवेक्खस्स णिदंसिअणिव्वाणणिअट्टमग्गस्स वीरस्सांतिमदेसणा)

ता भो [2]भव्वा !, नाउं, सरूवमेवं अणाइनिहणस्स ।
कालस्स धम्मकज्जे, उज्जमियव्वं पयत्तेण ॥२३०६॥

पणपन्नं अज्झयणा, परूविया तत्थ सुहविवागत्था ।
तावइय च्चिय **[3]वीरे**ण, साहगा दुहविवागस्स ॥२३०७॥

छत्तीस[1]समपुट्ठाइं, [2]वागरणाइं च तत्थ कहियाइं ।
[4]छट्ठयभत्तस्संते, दिवसं रयणिं च सव्वं पि ॥२३०८॥

दिन्नो हिओवएसो, सदेवमणुयासुराए परिसाए ।
भवजलहिदीवभूएण, भगवयाणुग्गहनिमित्तं ॥२३०९॥ ॥ जुम्मं ॥

वागरियं च जिणेणं, उववन्नो इह [3]अणुद्धरी [4]कुंथू ।
रयणीए अज्ज सुहुमो, चलमाणो दीसए न ठिओ ॥२३१०॥

ता इण्हिं समणाणं, दुरणुचरो संजमो उ होहि त्ति ।
भरहेरवएसु जओ सो, तीरइ रक्खिउं न खलु ॥२३११॥

अस्संजमभीएहिं, [5]तं सोउं भगवया समक्खायं ।
बहुसाहुसाहुणीहिं य, पच्चक्खायाइं भत्ताइं ॥२३१२॥

---

१. अपृष्टानि ।२. व्याकरणानि = उपदेश, उत्तर । ३. उद्धर्तुमशक्यः = रक्षितुमशक्यः । ४. सूक्ष्मजन्तुविशेषः । ५. भगवता समाक्ख्यातं तद्वचनं श्रुत्वा इति अन्वयः ।

1. संसरत्तस्स - ज. । 2. भद्दा - ज. । 3. अ - रूवेण । 4. अ - तो छट्ठभत्तअंते दि०, छट्ठभत्तस्संते - ज. ।

तम्मि य समए **वीर**स्स, जम्मरिक्खम्मि[१] दुट्ठपरिणामो ।
दो वाससहस्सठिई, संकंतो **भस्मओ**[२] कुगहो ॥२३१३॥

निव्वाणगमणसमयं, नाऊण जिणस्स भणइ तो **सक्को** ।
भयवं ! उदग्गदिट्ठी, **भास**ग्गहसंतिया इण्हि ॥२३१४॥

वट्टइ ता परिवालह, मुहुत्तमेत्तं भविस्सकालम्मि ।
जेण न जायइ तित्थस्स, अवणई[१][३] सपरपक्खाओ[४] ॥२३१५॥ ॥ जुम्मं ॥

भणिओ य सो जिणेणं, समत्थवत्थूण[२] **सक्क** ! परिणामं[३] ।
अणुभावं कालस्स य, जाणंतो मुज्झसे कीस ? ॥२३१६॥

तथा हि - (**महइमहावीरवद्धमाणस्स निव्वाणं**)

तुन्निज्जइ[५] जरवत्थं, सीडिज्जइ[६] तह गिहं पि परिसडियं ।
भग्गं पि संघडिज्जइ[७] सगडं, तुट्टा वरत्ता[८] य ॥२३१७॥

सो पुण णत्थि उवाओ, संधिज्जइ आणुपाणुमेत्तं[९] पि ।
जेणाऊ जीवाणं झीणं[१०][४], जं पुव्वभवबद्धं ॥२३१८॥ ॥ जुम्मं ॥

मंता तंता मणिमूलियाओ, संती[११] सुराण सन्नेज्झं[१२] ।
ज्झाणरसायणमाई, रक्खंति न आउए झीणे ॥२३१९॥

सुरगिरिं[5]**दंडं** पुहविं छत्तं पिव, धारिउं जे समत्था ।
अरहंता अतुलबला, ते वि न मच्चुं निवारिंति ॥२३२०॥

ता **सुरवइ** ! मा तम्मसु, जेणेत्थमवस्सभाविणो भावा ।
तुमए मए वि कहमवि, तीरंति न अन्नहा काउं ॥२३२१॥

---

१. ०नक्षत्रे । २. भष्मकः = ग्रह विशेष । ३. विनाश, दुर्दशा । ४. स्वपरपक्षाभ्याम् । ५. तुन्ननं क्रियते = सांधना, जोड़ना । ६. सृज्यते = नव निर्माण करना । ७. संघट्यते = जोड़ना । ८. रज्जु । ९. आनप्राण० = श्वासोच्छवास परिमित समय । १०. क्षीणम् । ११. शान्तिकर्म = होम वि. । १२. सान्निध्यम् ।

1. अवणइं - ज. । 2. ०वत्थूणि - क. । 3. ०णामो - क. । 4. ज्झीणं - क. । 5. ०दंडपुह० - ज. ।

एवं अणुसासेउं **सक्कं**, चउभेयसमणसंघं च ।
[१]संपलियंकनिसन्नो, जोगनिरोहं च काऊणं ॥२३२२॥

सेलेसिं पडिवन्नो, ज्झायंतो परमसुक्कज्झाणं च ।
खविऊण निरवसेसं, भवोवगा[1]हीणि कम्माणि ॥२३२३॥

चइऊण इमं [२]बुं[2]दिं, संपावेऊण [३]सव्वणिज्जाणं ।
उजुसेढिं पडिवन्नो, एगेणं चेव समएणं ॥२३२४॥ ॥ तिहिं विसेसयं ॥

कत्तियअमावसाए, [४]णागे करणे पहायसमयम्मि ।
णक्खत्ते [३][५]साइम्मि य, दोच्चे संवच्छरे चंदे ॥२३२५॥

सासयमणंतसोक्खं, सव्वाबाहपरिवज्जियं अयलं ।
तेलोक्कमत्थयत्थं, सिद्धिं पत्तो **महावीरो** ॥२३२६॥ ॥ जुम्मं ॥

(समग्गसंसारसत्ताणं सोगसंतावसंपावणं)

[६]णव [4]मालइय नव लेच्छइय, गणरा[5]याणो य [6]तं रयणिं ।
अट्ठारस पोसहिया ट्ठिया, जिणं पज्जु[7]वासेंता ॥२३२७॥

तो उव्विग्गा समणा, समणीओ सावगा साविगाओ ।
देवा देवीओ वि य, सव्वं पि जयं समुव्विग्गं ॥२३२८॥

सक्को वि हु सोगेणं, अब्भाहय[8]माणसो सुतिव्वेणं ।
[७]ओरुन्नविवन्नमुहो, ज्झूरइ पगलंतनयणंसू ॥२३२९॥

[८]तमगसियरविं व दिणं, निसाए गयणं व्व अत्थ[9]मियचंदं ।
विज्झायपईवं पिव, भवणं तमसम्मि बहलम्मि ॥२३३०॥

---

१. पद्मासन । २. शरीर । ३. सर्वनिर्याणम् = 'सर्व परिशाट' । ४. ज्योतिष प्रसिद्ध एक स्थिर करण । ५. स्वाति । ६. नव मल्लि नव लच्छि नृपति । ७. अवरुदित० = रुदन से फिक्का मुखवाला । ८. तमः-ग्रस्तरविम् इव ।

1. ०वोयगा० । 2. बोंदी - क. । 3. अ - साय० । 4. मालाइ नव लेच्छइ - क. । 5. ०राइणो - क. । 6. तीए रयणीए - क. । 7. ब - ०वासंता, वासेंति - क. । 8. ०माणुसो - ज. । 9. ०मिए - ज. ।

[1]उद्धियकमलं व सरं, उव्वियणिज्जं इमं जयं जायं ।
उम्मूलियकप्पतरुं, इयरद्दुमकाणणं व फुडं ॥२३३१॥ ॥ जुम्मं ॥

पसरिस्संति य इण्हि, कुतित्थिया पमुइया **भरहवासे** ।
[2]वग्गंति वणे करिणो, निप्पसरा [3]ववसिए [1]सीहे ॥२३३२॥

पभणंति [4]मिहो मणुया, भावुज्जोओ इहज्ज [5]समईओ ।
संपइ दव्वुज्जोओ, रयणपईवाइ[2]ओ चेव ॥२३३३॥

(अग्गिसक्काराइअंतिमकिच्चं अमराण)

बत्तीसं पि य इंदा, समागया तक्खणं ससोगमणा ।
खीरोयजलेण तणुं, [3]ण्हावेंति जिणस्स [6]सुरहेण ॥२३३४॥

गोसीसचंदणेणं घणुसारेणं, च ते विलिंपंति ।
[4]परिहिंति देवदूसे, सिवियं पवरं विउव्वंति ॥२३३५॥

तत्थारोवंति तयं, दिव्वंसुयमाइमणहरुल्लोयं ।
[8]उम्मालिंति समंता, सुरपायवपुप्फमालाहिं ॥२३३६॥

कारिंति य [5]कालागरुहरियंदणदारुनियररइयचियं ।
पवरम्मि भूमिभागे, सीयं [6]च [9]वहंति सुरपहुणो ॥२३३७॥

अप्फालियतूररवं, मणहरनच्चंतसुरवहुसमूहं ।
निवडंतकुसुमवरिसं, विकिन्नमणिमोत्तियसमूहं ॥२३३८॥

[10][7]गिज्जंतसारगेयं, संचलिया सुरनरा चियाभिमुहं ।
पत्ता खणेण तत्थ य, काऊण महूसवं परमं ॥२३३९॥ ॥ जुम्मं ॥

---

१. सभी कमल निकाल देने के बाद शोभा रहित तालाब वत् । २. वल्गन्ति = खूँखारना, अधिकार जताना । ३. व्यवसिते = त्यक्ते । ४. मिथः । ५. समतीतः, गतः । ६. सौरभेण । ७. शिबिकाम् । ८. सुशोभनां कुर्वन्ति इति । ९. स्थापयन्ति इति अर्थः । १०. गायत्० ।

1. पव० - क. । 2. ब - ०वायतो चे०, ०वो इओ - क. । 3. ण्हावंति - क. । 4. परिहंति - ज.क. । 5. ०लागुरु० - ज.क. । 6. अ - वहवंति । 7. गेज्ज० - ज.क. ।

आरोवियं चियाए, कलेवरं **वद्धमाण**सामिस्स ।
अग्गिकुमारेहिं तहिं, खित्तो अग्गी नियमुहेहिं ॥२३४०॥

वायं विउव्विऊणं, वाउकुमारेहिं [१]फूमिओ जलणो ।
[२]कुंभग्गसो य [1]खित्तं, घयं महुं तह य तियसेहिं ॥२३४१॥

[३]सोणियमंसे [2]दड्ढे, मेहकुमारेहिं गंधउदगेणं ।
[3]विज्झाविया सा चिया, गिण्हंति सुरा य अट्ठीणि ॥२३४२॥

दाहिण[4]मुवरिम[४]हणुयं, **सक्को** गिण्हेइ हेट्ठिमं **चमरो** ।
ईसाणो उवरिल्लं, वामं हेट्ठिल्लयं तु **बली** ॥२३४३॥

दंतट्ठीणि उ [५]सेसा सुरा, सुरिंदासुरा य सव्वे वि ।
मणुया य चियाभूइं, सिवसंतिकरं च गेण्हंति ॥२३४४॥

[६]गंति[5]यतुरगाइगया, तत्थ जणा आगया सुणिय वत्तं ।
[७]अहमहमिगाए [6]बीए दिणम्मि वाहाइ य पव[८]त्ता ॥२३४५॥

इय मोक्खगमणमहिमं, काऊण सुरासुरा जिणवरस्स ।
नंदीसरम्मि महिमं, काऊण गया नियं ठाणं ॥२३४६॥

तीसं अगारवासी, बारसवासाइं साइरेगाइं ।
छउमत्थपरीयाओ, देसूणा केवली तीसं ॥२३४७॥

बावत्तरि सव्वाऊ, [९]कणगाभो [१०]सत्तरयणिउस्सेहो ।
[११]चवणाइ पंचहत्थुत्तरो य, **वीरो** जिणो होत्था ॥२३४८॥

---

१. फूत्कृतः = फूंका हुआ । २. कुम्भाग्रशः = घड़े भर भर के । ३. विध्यापित = बुझाना । ४. हनुकाम् = दाढी, 'दाढ' । ५. चिताभूतिम् = चिता की भस्म । ६. गन्त्री० = गाड़ी, शकट । ७. अहमहमिका = में पहला । ८. दूसरे दिन अग्निसंस्कार भूमि पर की रज लेने के लिए लोग प्रवृत्त हुए । ९. कनकाभः = कनक जैसी कान्ति वाले । १०. सप्तरत्नि-उत्सेधः = सात हाथ की ऊँचाइ । ११. च्यवनादि ५ कल्याणक । विशेष बात के लिए देखो कल्प. सुबो. क्षण-१ ।

1. ब - खेत्तं । 2. ब - डड्ढे । 3. ब - ०य सा चीया गि०, ०या चिया सा । 4. ०उव० - क. । 5. एंति य तु० - क. । 6. तीए - क. ।

(गणहरगोयमस्स केवलनाणोववत्ती)

[1]इओ अणागयमेव य, **पावा**ए समोसढेण **वीरे**णं ।
मम मोहमोहियमई, एसो न करेइ [2]घाइखयं ॥२३४९॥

ता अवणेमि य मोहं, विप्पियउप्पायणेण एयस्स ।
इय चिंतिऊण, **गोयम**सामी संपेसिओ [3]गामे ॥२३५०॥

तुह दंसणेण **गोयम** !, संबुज्झइ दियवरो [4]य **देवसम्मो** ।
इय भणिऊणं सो वि हु, तह त्ति पडिवज्जिऊण गओ ॥२३५१॥

पडिबोहिऊण य तयं, नियत्तमाणो जणाउ सोऊणं ।
निव्वाणगयं **वीरं,** महंतमुव्वेयमावन्नो ॥२३५२॥

चिंतिउं च पवत्तो –

पेच्छ जिणेण भगवया, अपरिचियस्स वि अभत्तिमंतस्स ।
काराविओ महंतो, अणुग्गहो **देवसम्म**स्स ॥२३५३॥

मम पुण नेहपरस्स वि, चिरसंसट्ठस्स [1]नियविणेयस्स ।
कहियं न मोक्खगमणं, [5]नियय धरिओ [6]य न समीवे·॥२३५४॥

एगागिणं अणाहं, अस्सरणं उज्झिउं [7]मं अहन्नं ।
एगो च्चिय परमपयं गओ, जिणो हा ! न जुत्तमिणं ॥२३५५॥

जइ दज्झसि दज्झसु, [2]कढसि कढसु, अह फुडसि फुडसु सयराहं ।
तह वि [3]परिसेसिओ हियय [8]य !, तं सि [9]तेलोक्कनाहेणं ॥२३५६॥

अन्नं च –

अणुरत्ते अणुरागो जुत्तो, इहरा विडंबणा णेहो ।
[10]सुन्ने [4]उलम्मि दीवयदाणं, भण किं गुणं कुणइ ? ॥२३५७॥

---

१. निजविनेयस्य = खुद का शिष्य। २. क्वथ् = उकलना। ३. त्यक्तः। ४. कुले = गृहे देवकुले वा।

1. इओ य णागयमेव व्व पावाए नयरीए – ज. । 2. घाय० – ज. । 3. गामं – क. । 4. अ – वि हु सुसम्मो, अमरसम्मो – क. । 5. निअहं – ज. । 6. नियसमीपे – क. । 7. अ – महमहन्नं । 8. ०यं – ज. । 9. तेलोग० – क. । 10. अन्ने – क. ।

किं च -

[1]अनियला गोत्ती, अजलो पंको उ [2]पंजरमदारुं ।
कीलियरहिया य [3]हडी, अरज्जुयं बंधणं नेहो ॥२३५८॥

नेहो रागो तम्मि य संते, दोसो अवस्स संभवइ ।
ते पुण दोन्नि वि हेऊ, भवस्स बहुदुक्खपउरस्स ॥२३५९॥

भयवं पि निम्ममत्तो, सव्वपयत्थेसु वीयरा[1]गत्तो ।
कह [2]कुणेइ सो ममोवरि, पडिबंधं कीस हं मूढो ॥२३६०॥

ता भगवयाणुचिन्नं, निम्ममभावं अहं [3]अणुचरामि ।
एमाइसुहज्झवसाण, संगओ तक्खणं चेव ॥२३६१॥

संपत्तखवगसेढी, घाईकम्मक्खयं च काऊण ।
गोयमसामी [4]मग्गें, उप्पाडइ केवलं णाणं ॥२३६२॥ ॥ जुम्मं ॥

(सिरिसहियसोहम्मसामिवण्णणं)

दसगणहारी एत्थं, नियनियसमए **सुहम्म**सामिस्स ।
नियनियगणं समप्पिय, संपत्ता सिवपयं [4]सो वि ॥२३६३॥

वीरजिणस्स भगवओ, परमं तित्थुन्नइं करेमाणो ।
रायगिहे संपत्तो, वरसमणगुणो हु भणियं च ॥२३६४॥ ॥ जुम्मं ॥

वज्जरिसभसंघयणे समचउरंससंठाणसंठिए जाइसंपन्ने कुलसंपन्ने बलरूव-विणयसंपन्ने नाणसंपन्ने दंसणसंपन्ने चरित्तसंपन्ने [5]ओयंसी तेयंसी [6]वच्चंसी जसंसी जियकोहे जियमाणे जियमाए जियलोभे [5]जियइंदिए जियपरीसहे जीवियासमरण-भयविप्पमुक्के तवप्पहाणे गुणप्पहाणे चरणकरणप्पहाणे अज्जवमद्दवखंतिमुत्ति-गुत्तिप्पहाणे विज्जामंतप्पहाणे उराले घोरे घोरव्वए घोरतवस्सी घोरबंभ[6]चेरवासी

---

१. अनिगड़ा गुप्तिः = बिना सांकल की जैल । २. बिना लकड़ी का पिंजरा । ३. काष्ठ की बेड़ी । ४. (दे.) पश्चात्, मार्गे । ५. ओजस्विन् = बलवान् । ६. वर्चस्विन् = तेजस्वी ।

1. ०रागत्ता - ज. । 2. कुणउ - क. । 3. पुण चरामि - क. । 4. अ - ते । 5. अ - जिइंदिए । 6. अ - ०चेरे उ० ।

[१]उच्छूढसरीरे [२]संखित्तविउलतेयलेसे चउद्दसपुव्वी[1] चउनाणोवगए समणस्स भगवओ **महावीर**स्स अंतेवासी **सुहम्मे** नाम गणहरे **रायगिहं** णगरं समोसढे[2] त्ति ।

दिक्खित्तु **जंबु**नामं, कमेण संठाविऊण सूरिपए ।
निट्ठवियसयलकम्मो, सासयसोक्खं गओ मोक्खं ॥२३६५॥

परिनिव्वुया गणहरा, जीवंते [३]नायए नव [४]जणाओ ।
इंदब्भूइसुहम्मे, रायगिहे निव्वुए [५]**वीरे** ॥२३६६॥

वियरियपवित्तिणिपया, **वीर**जिणिंदेण [६]**चंदण**ज्जा वि ।
एक्कारसंगकुसला, पज्जंते सिद्धिमणुपत्ता ॥२३६७॥

(चरियसमत्तिकरणं)

चोद्दस समणसहस्सा, **गोयम**माई उ आसि **वीर**स्स ।
चंदणपामोक्खाओ, छत्तीसं साहुणिसहस्सा ॥२३६८॥

संखसयगाइयाणं, [७]अगुणसठिसहस्ससमहियं लक्खं ।
सुस्सावयाण, जिणसासणम्मि एगंतर[3]त्ताणं ॥२३६९॥

अट्ठारसयसहस्सा, तिन्नि य लक्खा य सीलवंतीणं ।
सुलसारेवइपमुहाण, संपया साविगाणं तु ॥२३७०॥

सत्तसया वेउव्वियलद्धीणं, केवलीण तह चेव ।
पंच य तेरस य सया, मणपज्जवओहिनाणीणं ॥२३७१॥

चत्तारि अट्ठ य सया, वाईणमणुत्तरो[4]ववाईणं ।
तिन्नि सया पुण, चोद्दसपुव्वीणं **वीर**परिवारो ॥२३७२॥

---

१. उत्क्षिप्तशरीरः = त्यक्त-शरीरः । शरीर से आत्मा अलग है वैसी अनुभूति होती है, इसलिए शरीर होने के बावजुद नहीं है, वैसा कहा जाता है । २. संक्षिप्त-विपुलतेजोलेश्यः = कम और ज्यादा तेजोलेश्या के धारक । कार्यमन्तरेणामोचनात्संक्षिप्ता=अन्तर्व्यवस्थापिता=सत्तायां कृता विपुला तेजोलेश्या येन स तथा । ३. नायके = वीरजिनेश्वरे । ४. गणधरो के समुदाय में से । ५. परिनिव्वुया इति शेषः । ६. चन्दना-आर्या । ७. १,५९,००० ।

1. अ - पुव्वे । 2. ब - ०सढो - क. । 3. ०भत्ताणं - ज. । 4. ब - ०ववाइयाणं च ।

जयइ सुयाणं पभवो, तित्थयराणं अपच्छिमो जयइ ।
जयइ गुरू लोगाणं, जयइ महप्पा **महावीरो** ॥२३७३॥

भद्दं सव्वजगुज्जोयगस्स, भद्दं जिणस्स **वीर**स्स ।
भद्दं सुरासुरनमंसियस्स, भद्दं धुयरयस्स[१] ॥२३७४॥

भद्दं धीवेलापरिगयस्स, सज्झायजोगमगरस्स ।
अक्खोभस्स भगवओ, संघसमुद्दस्स रुंदस्स[२] ॥२३७५॥

इय एवं संखेवा, **वीर**जिणिंदस्स साहियं चरियं ।
संपइ जेण निबद्धं, एत्तो एयं पवक्खामि ॥२३७६॥

(चरमजिणचारुचरित्तचक्खगस्स चिअत्तपरंपरा)

सिरि**जंबु**नामसिरि**पहव**सूरि**से**[1]**ज्जंभवा**दिसूरीणं ।
परिवाडीते जाओ, **चंदकुले वड्डगच्छ**म्मि ॥२३७७॥

सिरि**उज्जोयण**सूरी, उत्तमगुणरयणभूसियसरीरो ।
वेहारुय[३]मुणिसंताणगयणवरपुन्निमाइंदो ॥२३७८॥

सोमत्तणेण सोमं, खमं[४] खमाए य जो अभिक्खिवइ[2] ।
थिरयाए **मेरु**गिरिं, गंभीरत्तेण मयर[५]निहिं ॥२३७९॥

जम्मि य गच्छे आसी, सिरि**पज्जुन्ना**भिहाणसूरि त्ति ।
सिरि**माणदेव**सूरी, सुपसिद्धो **देव**सूरी य ॥२३८०॥

उज्जोयणसूरिस्स य सीसो, अह **अंबदेव**[3]उवज्झाओ ।
खममद्दवज्जवाईगुणकलिओ सोममुत्ती य ॥२३८१॥

तस्स विणेएण इमं, **वीर**जिणिंदस्स साहियं चरियं ।
पावमलस्स खयट्ठाए, सूरिणा **णेमिचंदे**ण ॥२३८२॥

---

१. धूतरजसः = कर्ममल को दूर करने वाला । २. विशाल । ३. वैहारिक० = विहार में उद्यत = संयमी । ४. क्ष्माम् = पृथ्वी । ५. समुद्र ।

1. अ - ०ज्जंसमाइ० । 2. अ - अहिक्खिवइ । 3. उज्झाओ - ज. ।

जं एत्थ अणागमियं, लक्खणछंदेहिं दूसियं जं च ।
रइयमणाभोगेणं, मिच्छामि [१]हं दुक्कडं तस्स ॥२३८३॥

जो पढइ इमं चरियं, वक्खाणइ [1]सुणेइ वायए वा वि ।
वीरस्स उ भत्तीए, सो पावइ परमकल्लाणं ॥२३८४॥

अणहिलवाडपुरम्मी, **सिरिकन्न**नराहिवम्मि विजयंते ।
दोहट्टिकारियाए, वसहीए संठिएणं च ॥२३८५॥

[२]वाससयाणं [2]एक्कारसण्हं, **विक्कम**निवस्स विगयाणं ।
अगुयालीसे संवच्छरम्मि, एयं निबद्धं ति ॥२३८६॥ ॥ जुम्मं ॥

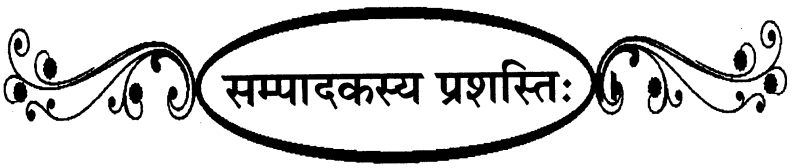
॥ ग्रन्थाग्रं श्लोकतो ज्ञेयम् ॥३०००॥
॥ समत्तमिणं महावीरचरियं ॥

• • •

---

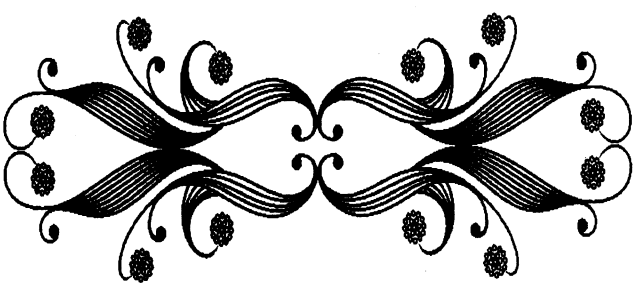
१. अहम् । २. ११४१ ।

1. सुणइ - क. । 2. एगारसण्ह - क. ।



स्वजीवनान्तिमत्रयस्त्रिंशद्वर्षयावदखण्डवर्षीतपशृङ्खलाधारिणां
पञ्चाधिकशतवर्षसुदीर्घनिरामयायुर्धारकाणां द्वयशितिसंवत्सरसच्चारित्रपर्यायाणां
स्वहस्तेन सहस्राधिकमुमुक्षूणां संयमप्रदातृणां तपागच्छश्रेष्ठानां
आचार्यदेवेशश्रीम**द्विजयसिद्धिसूरी**श्वराणां दिव्याशिर्वादेन,
तत्समुदायवर्तिनिःस्पृहशिरोमणिवैराग्यामृतसिक्तान्तःकरणवर्धमानतपोनिधि-
मज्जीवनाधाराचार्यमहोदयश्रीम**द्विजयभद्रंकरसूरी**श्वरमहाराजकृपयैव
परमकृपालुमुनिप्रवरश्री**राजरत्नविजय**शिष्यन्यायरत्नेन स्वाध्यायार्थं
कृतः एषः प्रयासः स्वाध्यायार्थिनामुपयोगी भवतु ।
मन्दातिमन्दक्षयोपशमेन प्रमादादिना वा यत्स्खलनं कृतम्,
तत्सुधिया सुधिया प्रमार्जनीयमिति प्रार्थना ॥

● ● ●





हे श्रमण भगवान महावीर!
आपके आश्चर्यपूर्ण चरित्र को
पढ़कर हमारे भीतर भी

वीरत्व

का अंश प्रगट हो,
ऐसी भावपूर्ण प्रार्थना है।

परिशिष्ट-१

सारभूतानि सुभाषितानि

श्रीमहावीर चरित्र में ग्रन्थकार द्वारा निर्दिष्ट विशिष्ट सुभाषितो का यहाँ संग्रह किया गया है।

		श्लोक नं.	पेज नं.
१.	चिंतामणिसंजोगो होइ अधन्नस्स न कयाइ।	२४	३
२.	उत्तमसंगो उत्तमकल्लाणहेउ त्ति।	४३	६
३.	सव्वायरेण जत्तो कायव्वो धम्मकज्जेसु।	५८	८
४.	अन्नं न किं पि सरणं धम्मं मोत्तूण संसारे।	५९	८
५.	एक्को नवरि न विहडइ विहिणा आराहिओ धम्मो।	६०	८
६.	एक्को जाइ परभवं एक्को च्चिय वेयए दुक्खं।	६१	८
७.	मायण्हियाए न जलं तह संसारे सुहं नत्थि।	६२	८
८.	आवायमेत्तसुहया विसया परिणामविरसा उ।	६३	८
९.	तह मूढो विसयसुहं पेच्छइ नो नरयदुक्खाइं।	६४	९
१०.	गेण्हइ वण्णड्ढाइं अइमूढो कायखंडाइं।	६५	९
११.	न करंति धम्मतत्तिं विसए सेवंति मूढप्पा।	६६	९
१२.	जाव न जरा न मच्चू अप्पहियं ताव चिंतेह।	६८	९
१३.	अहो ! अणज्जाओ महिलाओ।	१७३	२१
१४.	धी ! धी ! कम्मस्स परिणामो।	२१५	२६
१५.	मउओऽवि गओ छिज्जइ बालो च्चिय हम्मए सत्तू।	२७८	३४
१६.	वसणावडियं पि नरं रक्खइ पुव्वज्जिओ धम्मो।	२८४	३५
१७.	भवियव्वयानिओगो न तीरए अण्णहा काउं।	२८५	३५
१८.	कुणइ य बहुपडियारे तह वि न भवियव्वया मुयइ।	२८६	३५
१९.	दुहरूवो दुक्खफलो दुहाणुबंधो य एस संसारो।	३०५	३७
२०.	मत्तकरिकण्णचवला विज्जुलयाचंचला मणुयलच्छी।	३०६	३७
२१.	जलबुब्बुओवमाणं कुसग्गजलबिंदुचंचलं जीयं।	३०७	३७
२२.	गंधव्वपुरसरिच्छं जोव्वणमथिरं मणुस्साणं।	३०८	३७

		श्लोक नं.	पेज नं.
२३.	जह सुमिणे निहिजोगो तह अथिरो इट्ठसंजोगो ।	३०९	३८
२४.	को लद्धसुहं परिच्चयइ ? ।	३२५	४०
२५.	विविहाओ अवत्थाओ पावइ जीवो सकम्मेणं ।	३७४	४५
२६.	जत्थागीई गुणा तत्थ ।	४२३	५२
२७.	हेयमुवाएयं वा न जाणए विमलबुद्धिपरिहीणो ।	४२६	५२
२८.	निसुयं पि छिड्डुकुडसंनिभस्स न हवइ विसिट्ठगुणहेऊ ।	४२८	५२
२९.	निसुयमवधारियं वा सद्धारहियस्स कं गुणं कुणइ ? ।	४२९	५२
३०.	सव्वेसिं धम्माणं जिणधम्मो चेव सुपहाणो ।	४३३	५३
३१.	भवपरिभमणुव्विग्गा कुणंति धम्मं जिणाभिहियं ।	५१३	६३
३२.	न जिणवरेण वि लंघिज्जइ कम्मपरिणामो ।	६०५	७३
३३.	दुप्पडियाराणि दढं अम्मापियरो हवंति लोगम्मि ।	६७४	८२
३४.	हा ! किं संतिविहाणे वेयालो उट्ठिओ एसो ? ।	७२६	८८
३५.	चिंतामणी पयच्छइ चिंतियवत्थूणि तणुओऽवि ।	७२९	८८
३६.	अप्पोऽवि महामंतो उच्चाडइ दुट्ठवेयालं ।	७३०	८९
३७.	जे किर ते सिसुणो वि हु अतुलबला चेव तित्थयरा ।	७३१	८९
३८.	होइ हु चुक्कखलियं सकम्मस्स ।	७३३	८९
३९.	तह बंधुसमाजोगो अथिरो च्चिय एत्थ संसारे ।	८१०	९८
४०.	उत्तमपुरिसा दट्ठुं दुहियं करुणायरा होंति ।	८१४	९८
४१.	सव्वं मे अकरणिज्जं पावं ति चरित्तमारुढो ।	८५१	१०३
४२.	करिसंघट्टे सीहो अहिलसइ किमन्नसाहेज्जं ? ।	८८२	१०६
४३.	धम्मत्थिणा य कस्सइ अपत्तियं सव्वहा न कायव्वं ।	९०१	१०८
४४.	कोवो जं दारुणसहावो ।	९८४	११८
४५.	धणमित्तणासमरणं वेरं न गणंति कोहंधा ।	९८५	११८
४६.	तं चिय जंतुं पढमं कोवो निद्दहइ जत्थ उववन्नो ।	९८६	११८
४७.	कोहो दुग्गइहेऊ तवसंजमनेहखयकारी ।	९८७	११८
४८.	नत्थि तवस्स अहव इह किंचि वि असज्झं ।	९९३	११९

		श्लोक नं.	पेज नं.
४९.	गुरुवाओविलिहि चलइ सिहरु किं कुलगिरिसारह ?	११३०	१३५
५०.	खोहिज्जइ केसरिकिसोरु किं कहिं वि कुरंगिहिं ? ।	११३५	१३७
५१.	विहडइ किं कत्थइ सुवन्नु उत्तिन्नु सुतावह ? ।	११३७	१३८
५२.	अच्छी पसारिय च्चिय कज्जलयं वाउणा नीयं ।	११६४	१४२
५३.	सद्धारहियमविहिणा दाणं पि न होइ सुहफलं जम्हा ।	११८८	१४५
५४.	एक्कम्मि न मायंति य पडियारे दोन्नि खग्गाइं ।	१२०३	१४७
५५.	एरावणं निहंतुं किं सक्कइ कोइ इयरकरी ? ।	१२०६	१४७
५६.	नियसामत्थणुरूवो होइ विरोहोऽवि बुद्धिमंताणं ।	१२०७	१४७
५७.	दप्पंधाणं अहवा गुणदोसवियारणा नत्थि ।	१२११	१४८
५८.	रविविरहे ससिणोऽवि हु फुरइ पयावो नहयलम्मि ।	१२२४	१४९
५९.	पंखा पिपीलियाणं मच्चूसमए च्चिय हवंति ।	१२२९	१५०
६०.	जलइ च्चिय जलसित्तं घयं सुतत्तं हुयवहेणं ।	१२३३	१५०
६१.	फलइ पुन्नु जसु सो जि देव ! चिंतामणि पावइ ।	१२४६	१५२
६२.	न नज्जए हा ! विहिविलासो ।	१२७७	१५६
६३.	सुद्धस्स वरं मरणं मा जीयं सीलखलियस्स ।	१२७८	१५६
६४.	सव्वोऽवि जणो पायं अहिणववत्थुम्मि कुणइ अणुरायं ।	१२९१	१५८
६५.	तरुणो चेव छिज्जए वाही ।	१२९७	१५९
६६.	हा हा ! देव्वस्स परिणामो ।	१३१२	१६१
६७.	ता नत्थि सा अवत्था कम्मवसा जा न संपडइ ।	१३१३	१६१
६८.	तित्थयरस्स वि एवं कडाण कम्माण नत्थि मोक्खो त्ति ।	१३४०	१६४
६९.	खंती गुणाण मूलं विराहए कोहणो अहिंसाई ।	१४३८	१७९
७०.	सज्झाओ सज्झाणं अहलं चिय खंतिरहियस्स ।	१४३९	१७९
७१.	तह साहसरहिएणं पव्वज्जा दुक्करा काउं ।	१४४३	१८०
७२.	निव्वाणं खलु कज्जं नाणाइतिगं तु कारणं तस्स ।	१४८३	१८५
७३.	तह नाणाइगुणजुओ अदंसणो साहइ न मोक्खं ।	१५०७	१८७
७४.	बुद्धिमया पुरिसेणं जत्तो धम्मम्मि कायव्वो ।	१६४९	२०४

		श्लोक नं.	पेज नं.
७५.	नाणविहीणो मणुओ पसु व्व अंधो व्व बहिरो वा ।	१६५४	२०५
७६.	जीवियकज्जे मणुया नत्थि तयं किं पि जं न कुव्वंति ।	१६५९	२०५
७७.	धम्मं मोत्तूणन्नं न य सरणं किं पि संसारे ।	१६८७	२०८
७८.	मणुयत्तेऽवि हु दुलहो धम्मगुरू अकयपुन्नस्स ।	१६९२	२०९
७९.	नवि अत्थि णवि य होही सज्झायसमं तवोकम्मं ।	१७५०	२१६
८०.	सज्झाए वट्टंतो खणे खणे जाइ वेरग्गं ।	१७५१	२१६
८१.	धम्मो च्चिय एत्थ सुहमूलं ।	१७६५	२१९
८२.	किं तु गुरु च्चिय जाणइ जुत्ताजुत्तं ति ।	१८३९	२२७
८३.	दंतेहिं विणा जम्हा न सिंटणं होइ कइया वि ।	१९७५	२४३
८४.	दसाविभागो कस्सित्थ न जायए विसमो ? ।	१९७६	२४३
८५.	अहो ! हु सोवक्कमं जीयं ।	१९८८	२४४
८६.	जे पुव्वण्हे दिट्ठा अवरण्हे ते न दीसंति ।	१९९०	२४४
८७.	एत्थ अहो ! अकयसुहा परस्स सेवाकरा होंति ।	२०४२	२५०
८८.	संसारिया उ रिद्धी परमा विबुहाण नो रईं कुणइ ।	२०४५	२५०
८९.	न फुरइ धम्मम्मि मई तुच्छसिरिए मयंधाणं ।	२०४६	२५०
९०.	नूणं नत्थि असज्झं सुचरियधम्मस्स जीवलोगम्मि ।	२०५१	२५१
९१.	असुइसमुत्था परिणामदारुणा थेवकालिया भोगा ।	२०८७	२५५
९२.	असिधारगमणअयचणयचावणा दुक्करं खु समणत्तं ।	२०९०	२५५
९३.	पुरिसेणं बुद्धिमया परभवचिंता अवस्स कायव्वा ।	२०९६	२५६
९४.	जीवस्स नत्थि तित्ती चिरं पि भुत्तेहिं विसयसोक्खेहिं ।	२०९८	२५६
९५.	जे धम्मिया मणुस्सा सुजीवियं जीवियं तेसिं ।	२२३६	२७२
९६.	अरहंता अतुलबला ते वि न मच्चुं निवारिंति ।	२३२०	२८१
९७.	वग्गंति वणे करिणो निप्पसरा ववसिए सींहे ।	२३३२	२८३
९८.	सुन्ने उलम्मि दीवयदाणं भण किं गुणं कुणइ ? ।	२३५७	२८५
९९.	नेहो रागो तम्मि य संते दोसो अवस्स संभवइ ।	२३५९	२८६

● ● ●

परिशिष्ट-२

श्रीमहावीर चरित्र में ग्रन्थकार द्वारा कुछ विशिष्ट विषयो पर रचित श्लोको का विषय निर्देशन एवं श्लोक नंबर यहाँ प्रस्तुत है ।

१. (महिलानामनर्थकरत्वम्) श्लो. १७४-१७५
२. (विषसमानाः विषयाः) श्लो. २३२-२३३
३. (नितिशास्त्रम्) श्लो. २७८
४. (धर्मस्य फलम्) श्लो. २८४
५. (भवितव्यता) श्लो. २८६
६. (विषयानामसारत्वम्) श्लो. ३३६-३३७
७. (कर्मणः प्रभावः) श्लो. ३७४
८. (सद्धर्मः) श्लो. ४३१-४३३
९. (धर्ममाहात्म्यम्) श्लो. ५२२-५२३
१०. (अतुलबली अर्हन्) श्लो. ७२९-७३१
११. (जीवनरहस्यम्) श्लो. ९०३
१२. (क्रोधविरसत्वम्) श्लो. ९८५-९८७
१३. (दान-महिमा) श्लो. १०४४
१४. (दानस्य निष्फलत्वम्) श्लो. ११८८
१५. (स्वकृतं भोक्तव्यमेव) श्लो. १३४१
१६. (शुभे रन्तव्यम्) श्लो. १३५४
१७. (सम्यक्त्वमहानता) श्लो. १५०७-१५०९
१८. (शीलं सर्वस्वम्) श्लो. १६७६-१६७९
१९. (ज्ञानमाहात्म्यम्) श्लो. १६८४
२०. (जिनेश्वरवन्दना) श्लो. १७१४ से १७१६
२१. (शुभभावप्रकर्षम्) श्लो. १९८१-१९८२
२२. (अनित्यं जीवनम्) श्लो. १९८९-१९९०
२३. (संसाराऽसारता) श्लो. २०४२-२०४६
२४. (आयुषः अनित्यता) श्लो. २३१७-२३१९
२५. (स्नेहस्य बन्धकत्वम्) श्लो. २३५८-२३५९

●●●

परिशिष्ट-३

श्री महावीरचरित्र में निर्दिष्ट विशेष बातों का दिग्दर्शन ॥

१. पंचपरमेष्ठि-श्रीसंघ एवं श्रुतदेवी को नमस्कार। ..... श्लो. १-१०

२. आगामी तीर्थंकर-चक्रवर्ती-वासुदेव एवं प्रतिवासुदेव के नाम। ९२-१००

३. साङ्ख्य मत। १३१-१३६

४. वासुदेव के बल एवं ऋद्धि का वर्णन। २८८-२९४

५. चक्रवर्ती के १४ रत्न ९ निधि की बात। ३४७-३५६

६. आर्य-अनार्य देश के नाम। ४१०-४१८

७. आचार्य भगवंत के ३६ गुण। ४६३-४६६

८. वीश स्थानक के नाम। ५३३-५४०

९. नन्दन ऋषि की अद्भूत अन्तिम आराधना
दुष्कृत गर्हा-क्षमापना-भावना-चतुःशरण आदि की बाते। ५४१-५७६

१०. १४ स्वप्न एवं फल। ६५६-६६५

११. ५६ दिक्कुमारी का भक्ति कार्य। ६८०-६९१

१२. अडजाति कलश की बात। ७१३-७१४

१३. दीक्षा की शिबिका का वर्णन। ८३४-८३७

१४. परमात्मा की विशिष्ट साधना। ८८९-८९४

१५. परमात्मा की तपोसाधना। १३५८-१३६५

१६. समवसरण की रचना का वर्णन। १३९२-१४०९

१७. ८ प्रतिहार्य का वर्णन। १४१०-१४१७

१८. १२ पर्षदा का वर्णन। १४२०-१४२४

१९. नवतत्त्व। १४८८-१४९९

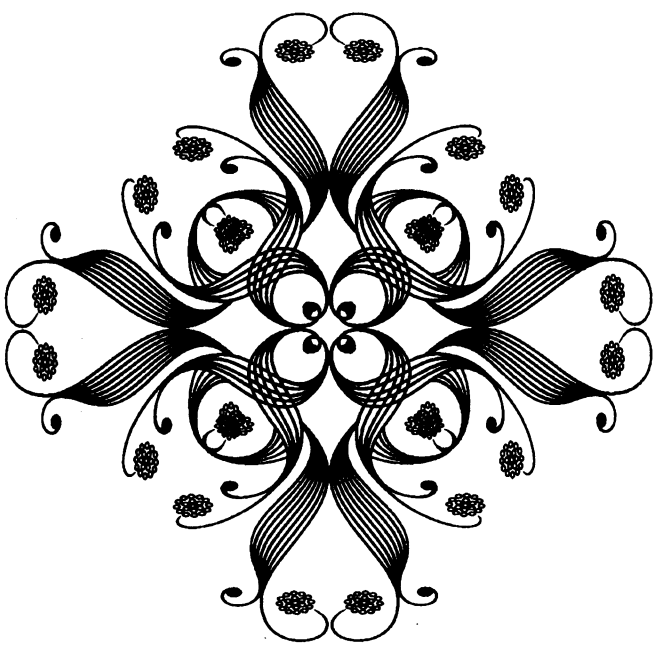
२०. सम्यक्त्व का स्वरूप। १५००-१५१०

२१. ११ अंग एवं १४ पूर्व के नाम। १५९५-१६००

२२. परमात्मा के ३४ अतिशय। १६०४-१६१४

२३. बलि का विधान । १६९६-१७००
२४. कष-च्छेद-ताप की बात । १७६६-१७६९
२५. अष्टापद का वर्णन । १७९२-१७९८
२६. अष्टापद का वर्णन । १८२४-१८२९
२७. गोशालक की भवपरंपरा । १९४१-१९६१
२८. प्रथम ४ आरा एवं कल्पवृक्ष की बाते । २१५३-२१६८
२९. कल्की राजा की बात । २१६९-२२०८
३०. जिनधर्म की उन्नति । २२१०-२२१८
३१. कलिकाल का प्रभाव । २२१९-२२३५
३२. ५-६ आरे का वर्णन । २२३६-२२७३
३३. ७ कुलकर की बात । २२७४-२२७८
३४. आगामी तीर्थंकर के नाम । २२८०-२२९५
३५. सागरोपम के प्रमाण की बात । २२९८-२३०५

● ● ●



परिशिष्ट-४

श्री महावीरचरित्र में निर्दिष्ट धर्मदेशनाए ॥

श्लोक नं.

१. नयसार के प्रति आचार्य भगवंत कथित धर्मदेशना । ३०-४१

२. संसार की असारता के विषय में आदिनाथ प्रभु की देशना । ५७-७०

३. आठ कर्म के विषय में विजयसिंह आचार्य श्री की देशना । १८६-२०३

४. संसार की अनित्यता के उपर धर्मघोषसूरिजी की देशना । ३०५-३१२

५. मधुबिंदु में लुब्ध जन की कथा एवं उपनय । ३१३-३३५

६. दशदृष्टान्त से मनुष्यभव की दुर्लभता के उपर पोट्टिलसूरिजी की देशना । ३६१-३७२

७. चार गति में भ्रमण के कारण । ३७५-४०९

८. जाति, कुल इत्यादि गुण धर्म में सहायी है । ४२१-४३०

९. धर्म का माहात्म्य एवं स्वरूप । ४३१-४३६

१०. दश यतिधर्म एवं दशधा सामाचारी । ४३७-४३९

११. श्रावक धर्म की प्रज्ञापना एवं चैत्यवन्दन की बात । ४४०-४४५

१२. अष्टप्रकारी पूजा एवं श्रावक कर्तव्य की बातें । ४४६-४४९

१३. पोट्टिलाचार्य की धर्मकथा में चारों गति के दुःख का वर्णन । ४७०-५१२

१४. वर्धमानकुमार का नन्दिवर्धन के प्रति उपदेश । ८१०-८१२

१५. चण्डकौशिक के प्रति परमात्मा का उपदेश । ९८४-९८८

१६. संसार की विचित्रता के उपर पार्श्वप्रभु के केवली की देशना । ११६६-११८३

१७. प्रभुवीर द्वारा श्रमणधर्म की प्ररूपणा । १४३१-१४४४

१८. प्रभुवीर द्वारा श्रावक धर्म प्ररूपणा । १४४५-१४८२

१९. दानादि ४ धर्म उपर परमात्मा की देशना । १६४९-१६९४

२०. गणधर भगवंत द्वारा चैत्यवन्दन का निरूपण । १७०६-१७२०

२१. गणधर भगवंत द्वारा आवश्यक का निरूपण ।..... १७२१-१७४९
२२. दुर्लभ संयोग के उपर श्रीवीर का उपदेश ।..... १७५५-१७६१
२३. सात क्षेत्र के उपर गौतमस्वामि का धर्मोपदेश ।..... १८१६-१८२३
२४. परमात्मा का गौतमस्वामि को उपदेश ।..... १८४८-१८५६
२५. परमात्मा की धर्मदेशना ।..... १९१२-१९२१
२६. आचार्य धर्मघोष सूरिजी का उपदेश ।..... २०७३-२०७६
२७. अपापापुरी में परमात्मा की देशना ।..... २१४९-२३१२

● ● ●

परिशिष्ट-५

श्री महावीरचरित्र में निर्दिष्ट परमात्म-स्तवनाए ॥

श्लोक नं.

१. इन्द्र द्वारा परमात्मा की स्तवना ।..... ७४७-७५५
२. इन्द्र द्वारा परमात्मा का गुणानुवाद..... ११००-११०१
३. इन्द्र द्वारा परमात्मा की स्तुति ।..... ११३०-१२४१
४. चमरेन्द्र की प्रभुप्रार्थना..... १२१४-१२१५
५. चमरेन्द्र द्वारा प्रभु स्तवना ।..... १२४५-१२४७
६. इन्द्र की स्तवना ।..... १३८२-१३८५
७. अष्टापद उपर श्रीगौतमस्वामि की परमात्मा स्तुति ।..... १८०१-१८०९
८. श्रेणिक राजा द्वारा प्रभु स्तुति ।..... २०६५-२०६८

● ● ●

परिशिष्ट-६

श्री महावीर चरित्र में ग्रन्थकार ने जो श्लोक आगमादि ग्रन्थो से उद्धृत किये हैं । उनमें से क्लिष्ट श्लोको की टीका वाचको की सुविधा हेतु यहाँ दर्शाई गई है ।

श्लो. ७६ अह अण्णया कयाई, गिम्हे उण्हेण परिगयसरीरो ।
अण्हाणएण चइओ, इमं कुलिंगं विचिंतेइ ॥३५०॥ (आव०नि०)

व्याख्या–'अथ' इत्यानन्तर्ये 'कदाचिद्' एकस्मिन्काले ग्रीष्मे उष्णेन परिगतशरीरः 'अस्नानेनेति' अस्नानपरीषहेण त्याजितः संयमात् 'एतत्कुलिङ्गं' वक्ष्यमाणं विचिन्तयतीति गाथार्थः ॥३५०॥

श्लो. ७८ मेरुगिरीसमभारे न हुमि समत्थो मुहुत्तमवि वोढुं ।
सामण्णए गुणे गुणरहिओ संसारमणुकंखी ॥३५१॥ (आव०नि०)

व्याख्या–मेरुगिरिणा समो भारो येषां ते तथाविधास्तान् नैव समर्थो मुहूर्त्तमपि वोढुं, कान् ?, श्रमणानामेते श्रामणाः, के ते ? गुणाः विशिष्टक्षान्त्यादयस्तान्, कुतो ?, यतो धृत्यादिगुणरहितोऽहं संसारानुकाङ्क्षीति गाथार्थः ॥ ततश्च किं मम युज्यते ?, गृहस्थत्वं तावदनुचितं, श्रमणगुणानुपालनमप्यशक्यं ॥३५१॥

श्लो. ७९ समणा तिदंडविरया, भगवंतो निहुअसंकुइअअंगा ।
अजिइंदिअदंडस्स उ, होउ तिदंडं महं चिंधं ॥३५३॥ (आव०नि०)

व्याख्या–श्रमणाः मनोवाक्कायलक्षणत्रिदण्डविरताः, ऐश्वर्यादिभगयोगाद्भगवन्तः, निभृतानि-अन्तःकरणाशुभव्यापारचिन्तनपरित्यागात् संकुचितानि-अशुभकायव्यापारपरित्यागात् अङ्गानि येषां ते तथोच्यन्ते, अहं तु नैवंविधो यतोऽतः-'अजितेन्द्रियेत्यादि' न जितानि इन्द्रियाणि-चक्षुरादीनी दण्डाश्च-मनोवाक्कायलक्षणा येन स तथोच्यते, तस्य अजितेन्द्रियदण्डस्य तु भवतु त्रिदण्डं मम चिह्नं, अविस्मरणार्थमिति गाथार्थः ॥३५३॥

श्लो. ८० लोइंदिअमुंडा संजया उ, अहयं खुरेण ससिहो अ ।
थूलगपाणिवहाओ, वेरमणं मे सया होउ ॥३५४॥ (आव०नि०)

व्याख्या–मुण्डो हि द्विविधो भवति-द्रव्यतो भावतश्च, तत्रैते श्रमणा द्रव्यभावमुण्डाः, कथम् ?, लोचेन इन्द्रियैश्च मुण्डाः संयतास्तु, अहं पुनर्नेन्द्रियमुण्डो यतः अतः अलं द्रव्यमुण्डतया, तस्मादहं क्षुरेण मुण्डः सशिखश्च भवामि, तथा सर्वप्राणिवधविरताः श्रमणा वर्तन्ते अहं तु नैवंविधो यतः अतः स्थूलप्राणातिपाताद्विरमणं मे सदा भवत्विति गाथार्थः ॥३५४॥

श्लो. ८१ ववगयमोहा समणा, मोहच्छण्णस्स छत्तयं होउ ।
अणुवाहणा य समणा, मज्झं तु उवाहणा होंतु ॥३५६॥ (आव०नि०)

व्याख्या—व्यपगतो मोहो येषां ते व्यपगतमोहाः श्रमणाः, अहं तु नेत्थं यतः अतो मोहाच्छादितस्य छत्रकं भवतु । अनुपानत्काश्च श्रमणाः मम चोपानहौ भवत इति गाथाक्षरार्थः ॥३५६॥

श्लो. ८२ सुक्कंबरा य समणा, निरंबरा मज्झ धाउरत्ताइं ।
हंतुं इमे वत्थाइं, अरिहो मि कसायकलुसमई ॥३५७॥ (आव०नि०)

व्याख्या—शुक्लान्यम्बराणि येषां ते शुक्लाम्बराः श्रमणाः, तथा निर्गतमम्बरं येषां ते निरम्बरा जिनकल्पिकादयः 'मज्झन्ति' मम च, एते श्रमणा इत्यनेन तत्कालोत्पन्नतापसश्रमणव्युदासः, धातुरक्तानि भवन्तु मम वस्त्राणि किमिति ?, 'अर्होऽस्मि' योग्योऽस्मि तेषामेव, कषायैः कलुषा मतिर्यस्य सोऽहं कषायकलुषमतिरिति गाथार्थः ॥३५७॥

श्लो. ८३ निक्किंचणा य समणा, अकिंचणा मज्झ किंचणं होउ ।
सीलसुगंधा समणा, अहयं सीलेण दुग्गंधो ॥३५५॥ (आव०नि०)

व्याख्या—निर्गतं किञ्चनं-हिरण्यादि येभ्यस्ते निष्किञ्चनाश्च श्रमणाः तथा अविद्यमानं किञ्चनम्-अल्पमपि येषां तेऽकिञ्चना-जिनकल्पिकादयः, अहं तु नैवंविधो यतः अतो मार्गाविस्मृत्यर्थं मम किञ्चनं भवतु पवित्रिकादि । तथा शीलेन शोभनो गन्धो येषां ते तथाविधाः, अहं तु शीलेन दुर्गन्धः, अतो गन्धचन्दनग्रहणं मे युक्तमिति गाथार्थः ॥३५५॥

श्लो. ८५ एवं सो रुइअमई, निअगमइविगप्पिअं इमं लिगं ।
तद्धितहेउसुजुत्तं, पारिव्वज्जं पवत्तेइ ॥३५९॥ (आव०नि०)

व्याख्या—स्थूलमृषावादादिनिवृत्तः, एवमसौ रुचिता मतिर्यस्य असौ रुचितमतिः, अतो निजमत्या विकल्पितं निजमतिविकल्पितं, इदं लिङ्गं, किंविशिष्टम् ?-तस्य हितास्तद्धिताः तद्धिताश्च ते हेतवश्चेति समासः, तैः सुष्ठु युक्तं-श्लिष्टमित्यर्थः, परिव्राजामिदं पारिव्रज्यं, प्रवर्त्तयति, शास्त्रकार-वचनात् वर्त्तमाननिर्देशोऽप्यविरुद्ध एव, पाठान्तरं वा 'पारिव्वज्जं ततो कासी' त्ति पारिव्राजं ततः कृतवानिति गाथार्थः ॥३५९॥

भगवता च सह विजहार, तं च साधुमध्ये विजातीयं दृष्ट्वा कौतुकाल्लोकः पृष्टवान्, तथा चाह—

श्लो. ८६ अह तं पागडरूवं, दट्ठुं पुच्छेइ बहुजणो धम्मं ।
कहइ जईणं तो सो, विआलणे तस्स परिकहणा ॥३६०॥ (आव०नि०)

व्याख्या—अथ तं प्रकटरूपं-विजातीयत्वात् दृष्ट्वा पृच्छति बहुर्जनो धर्मं, कथयति यतीनां

सम्बन्धिभूतं क्षान्त्यादिलक्षणं, ततोऽसाविति लोका भणन्ति-यद्ययं श्रेष्ठो भवता किं नाङ्गीकृत इति विचारणे तस्य परि-समन्तात् कथना परिकथना 'श्रमणास्त्रिदण्डविरता इत्यादिलक्षणा', पृच्छतीति त्रिकालगोचरसूत्रप्रदर्शनार्थत्वादेवं निर्देशः, पाठान्तरं वा 'अहं तं पागडरूवं दट्ठुं पुच्छिसु बहुजणो धम्मं। कहतींसु जतीणं सो वियालणे तस्स परिकहणा ॥१॥' प्रवर्त्तत इति गाथार्थः ॥३६०॥

श्लो. ८८ धम्मकहाअक्खित्ते, उवट्ठिए देइ भगवओसीसे ।
गामनगराइआइं, विहरइ सो सामिणा सद्धिं ॥३६१॥ (आव०नि०)

व्याख्या—धर्मकथाक्षिप्तान् उपस्थितान् ददाति भगवतः शिष्यान्, ग्रामनगरादीन् विहरति स स्वामिना सार्धं, भावार्थः सुगमः, इत्थं निर्देशप्रयोजनं पूर्ववत्, ग्रन्थकारवचनत्वाद्वाऽदोष इति गाथार्थः ॥३६१॥

श्लो. १०६ तं वयणं सोऊणं, राया अंचियतणूरुहसरीरो ।
अभिवंदिऊण पिअरं, मरीइमभिवंदओ जाइ ॥४२५॥ (आव०नि०)

व्याख्या—'तद्वचनं' तीर्थकरवदनविनिर्गतं श्रुत्वा राजा अञ्चितानि तनूरुहाणि-रोमाणि शरीरे यस्य स तथाविधः अभिवन्द्य 'पितरं' तीर्थकरं मरीचिं अभिवन्दिष्यत इत्यभिवन्दको याति। पाठान्तरं वा 'मरीइमभिवंदिउं जाइ त्ति' मरीचिं याति किमर्थम् ?-अभिवन्दितुं-अभिवन्दनायेत्यर्थः, यातीति वर्त्तमानकालनिर्देशः त्रिकालगोचरसूत्रप्रदर्शनार्थ इति गाथार्थः ॥४२५॥

श्लो. १०७ सो विणएण उवगओ, काऊण पयाहिणं च तिक्खुत्तो ।
वंदइ अभित्थुणंतो, इमाहि महुराहि वग्गूहिं ॥४२६॥ (आव०नि०)

व्याख्या—'सः' भरतः विनयेन-करणभूतेन मरीचिसकाशमुपागतः सन् कृत्वा प्रदक्षिणं च 'तिक्खुत्तो'त्ति त्रिकृत्वः तिस्रो वारा इत्यर्थः, वन्दते अभिष्टुवन् एताभिः 'मधुराभिः' वल्गुभिः वाग्भिरिति गाथार्थः ॥४२६॥

श्लो. १०८ लाहा हु ते सुलद्धा, जंसि तुमं धम्मचक्कवट्टीणं ।
होहिसि दसचउदसमो, अपच्छिमो वीरनामुत्ति ॥४२७॥ (आव०नि०)

व्याख्या—'लाभाः' अभ्युदयप्राप्तिविशेषाः, हुकारो निपातः, स चैवकारार्थः, तस्य च व्यवहितः सम्बन्धः, 'ते' तव सुलब्धा एव, यस्मात् त्वं धर्मचक्रवर्तिनां भविष्यसि 'दशचतुर्दशमः' चतुर्विंशतितम इत्यर्थः, अपश्चिमो वीरनामेति गाथार्थः ॥४२७॥

श्लो. ११२ तव्वयणं सोऊणं, तिवइं आप्फोडिऊण तिक्खुत्तो ।
अब्भहिअजायहरिसो, तत्थ मरीई इमं भणइ ॥४३०॥ (आव०नि०)

व्याख्या—तस्य-भरतस्य वचनं तद्वचनं श्रुत्वा तत्र मरीचिः इदं भणतीति योगः, कथमित्यत आह-त्रिपदीं दत्त्वा, रङ्गमध्यगतमल्लवत्, तथा आस्फोट्य त्रिकृत्वः-तिस्रो वारा इत्यर्थः, किंविशिष्टः

सन् इत्यत आह-अभ्यधिको जातो हर्षो यस्येति समासः, तत्र स्थाने मरीचिः 'इदं' वक्ष्यमाणलक्षणं भणति, वर्तमाननिर्देशप्रयोजनं प्राग्वदिति गाथार्थः ॥४३०॥

श्लो. २९० सोलसरायसहस्सा, सव्वबलेणं तु संकलनिबद्धं ।
अंछंति वासुदेवं, अगडतडम्मि ठियं संतं ॥७१॥ (आव०नि०)

श्लो. २९१ घित्तूण संकलं सो, वामगहत्थेण अंछमाणाणं ।
भुंजिज्ज व लिंपिज्ज व, महुमहणं ते न चायंति ॥७२॥ (आव०नि०)

इह वीर्यान्तरायकर्मक्षयोपशमविशेषाद्बलातिशयो वासुदेवस्य संप्रदर्श्यते-षोडश राजसहस्राणि 'सर्वबलेन' हस्त्यश्वरथपदातिसङ्कुलेन सह शृङ्खलानिबद्धं 'अंछंति' देशीवचनात् आकर्षन्ति वासुदेवं 'अगडतटे' कूपतटे स्थितं सन्तं, ततश्च गृहीत्वा शृङ्खलामसौ वामहस्तेन 'अंछमाणाणं' ति आकर्षतां भुञ्जीत विलिम्पेत वा अवज्ञया हृष्टः सन्, मधुमथनं ते न शक्नुवन्ति आक्रष्टुमिति वाक्यशेषः ।

चक्रवर्त्तिनस्त्विदं बलं-द्वौ षोडशकौ, द्वात्रिंशदित्येतावति वाच्ये द्वौ षोडशकावित्यभिधानं चक्रवर्त्तिनो वासुदेवाद् द्विगुणर्द्धिख्यापनार्थं, राजसहस्राणीति गम्यते, सर्वबलेन सह शृङ्खलानिबद्धं आकर्षन्ति चक्रवर्त्तिनं अगडतटे स्थितं सन्तं गृहीत्वा शृङ्खलामसौ वामहस्तेन आकर्षतां भुञ्जीत विलिम्पेत वा, चक्रधरं ते न शक्नुवन्ति आक्रष्टुमिति वाक्यशेषः ।

टीकार्थ : अहीं वीर्यान्तरायकर्मना क्षयोपशमविशेषथी (प्राप्त थयेल) वासुदेवनो बळातिशय बतावाय छे - हस्ति, अश्व, रथ, सैनिकादिना समूहथी युक्त एवा सोळ हजार राजाओ सांकळथी बांधेला (वासुदेवना डाबा हाथे सांकळ बांधेली होवाथी) अने कूवाना कांठे ऊभा रहेला वासुदेवने खेंचे छे. बीजी बाजु वासुदेव पोताना डाबा हाथे बांधेली सांकळ साथे (सैनिकोथी युक्त राजाओ वडे) खेंचावा छतां अवज्ञाथी खुश थतो अर्थात् ए तरफ उपेक्षा करतो हसता हसता भोजन करे अथवा विलेपन करे तो पण वासुदेवने राजाओ खेंचवा समर्थ बनता नथी. (मधुमथन = वासुदेव) ॥७१-७२॥

श्लो. ३४७ सेणावइ १ गाहावइ, २ पुरोहिय ३, तुरय ४ गय ५ वड्ढई ६ इत्थी ७ ।
चक्कं ८ छत्तं ९ चम्मं, १० मणि ११ कागिणि १२ खग्ग १३ दंडो १४ य
॥१४॥ (प्रव.सा.द्वार-२१२)

सेनापतिः १ गृहपतिः २ पुरोहितः ३ तुरगः ४ गजः ५ वर्धकिः ६ स्त्री ७ चक्रं ८ छत्रं ९ चर्म १० मणिः ११ काकिनी १२ खड्गो १३ दण्ड १४ श्चेत्येतानि चतुर्दशापि रत्नानि निगद्यन्ते, 'रत्नं निगद्यते तज्जातौ जातौ यदुत्कृष्ट'मिति वचनात् सेनापत्यादिजातिषु वीर्यत उत्कृष्टत्वेन रत्नानीत्युच्यन्ते, तत्र सेनापतिः-दलनायको गङ्गासिन्धुपरपारविजये बलिष्टः १ गृहपतिः-चक्रवर्तिगृहसमुचितेति-कर्तव्यतापरः शाल्यादिसर्वधान्यानां समस्तस्वादुसहकारादिफलानां सकलशाकविशेषाणां निष्पादकश्च

२ पुरोहितः-शान्तिकर्मादिकृत् ३ तुरङ्गमगजौ प्रकृष्टवेगमहापराक्रमादिगुणसमन्वितौ ४-५ वर्धकिः-गृहनिवेशादिसूत्रणाकारी, यस्तमिस्रगुहायां खण्डप्रपातगुहायां चोन्मग्नजलानिमग्नजलयोर्नद्यो-श्चक्रवर्त्तिसैन्योत्तरणाय काष्ठमयं सेतुबन्धं करोति ६ स्त्रीरत्नमत्युद्भुतकामसुखनिधानं ७ चक्रं-समस्तायुधातिशायिदुर्दमरिपुजयकरं ८ छत्रं-चक्रवर्तिहस्तसंस्पर्शप्रभावसञ्जातद्वादशयोजनायामविस्तारं सत् वैताढ्यनगोत्तरविभागवर्तिम्लेच्छानुरोधिमेघकुमारवृष्टाम्बुभरनिरसनसमर्थं नवनवतिसहस्रकाञ्चन-शलाकापरिमण्डितं निर्व्रणसुप्रशस्तकाञ्चनमयोद्दण्डदण्डं बस्तिप्रदेशे पञ्जरविराजितं राजलक्ष्मीचिह्न-मर्जुनाभिधानपाण्डुरस्वर्णप्रत्यवस्तृतपृष्ठदेशं शारदसम्पूर्णपूर्णिमामृगाङ्कमण्डलमनोहरं तपनातपवात-वृष्टिप्रभृतिदोषक्षयकारकं ९ चर्मरत्नं-छत्रस्याधस्ताच्चक्रवर्तिहस्तस्पर्शप्रभावसञ्जातद्वादशयोजना-यामविस्तारं प्रातरुप्तापराह्णसम्पन्नोपभोग्यशाल्यादिसम्पत्तिकरं १० मणिरत्नं-वैडूर्यमयं त्र्यस्रं षडंशं यथाक्रममूर्द्ध्वाधःस्थितयोश्छत्रचर्मरत्नयोरपान्तराले छत्रतुम्बे न्यस्तं सद् द्वादशयोजनविस्तारिणः समस्तस्यापि चक्रवर्तिकटकस्य निरुपमप्रकाशकारि तमिस्रगुहायां खण्डप्रपातगुहायां च प्रविशत-श्चक्रवर्तिनो हस्तिरत्नदक्षिणशिरसि निबद्धं च द्वादश योजनानि यावत्पूर्वापरपुरतो रूपासु तिसृषु दिक्षु निबिडतममपि तमःस्तोममपहरति, यस्य च हस्ते शिरसि वा बद्ध्यते तस्य दिव्यतिर्यग्मनुष्यकृत-समस्तोपद्रवसमस्तरोगापहारं करोति, एतच्च मूर्ध्न्यन्यत्र वाऽङ्गे व्यवस्थाप्य सङ्ग्रामे प्रविष्टः सन् शस्त्रैरवध्यो भवति सर्वभयविमुक्तश्चोपजायते, अन्यच्च तस्मिन् मणिरत्ने सदा मणिबन्धादौ व्यवस्थितेऽवस्थितयौवनोऽवस्थितकेशनखश्चोपजायते पुमान् ११॥

काकिणीरत्नमष्टसौवर्णिकं समचतुरस्रसंस्थानसंस्थितं विषापहारसमर्थं यत्र चन्द्रप्रभा सूर्यप्रभा वह्निदीप्तिर्वा न तमःस्तोममपहर्तुमलं भवति तत्र तमिस्रगुहायामतिनिबिडतिमिरतिरस्करणदक्षं, यस्य दिव्यप्रभावकलिततया द्वादश योजनानि यावत्तमिस्रविसरविनाशिका गभस्तयो विवर्धन्ते, यच्च सर्वकालं चक्रवर्ती निजस्कन्धावारे रात्रौ स्थापयति, तद्धि दिवसालोकभूतं प्रकाशं रजन्यामादधाति, यस्य च प्रभावेण चक्रवर्ती द्वितीयमर्धभरतमभिजेतुं सकलसैन्यसमेतस्तमिस्रगुहायां प्रविशति, तथा च तत्र प्रविष्टः सन् स पूर्वभित्तितटे पश्चिमभित्तितटे च प्रत्येकं योजनान्तरितानि पञ्चधनुःशतायाम-विष्कम्भान्युभयपार्श्वयोर्योजनोद्योतकराणि चक्रनेमिसंस्थानानि चन्द्रमण्डलप्रतिनिभानि वृत्तहिरण्य-रेखारूपाणि गोमूत्रिकान्यायेनैकस्यां भित्तौ पञ्चविंशतिरपरस्यां तु चतुर्विंशतिरित्येकोनपञ्चाशतं मण्डलान्यालिखन् व्रजति, तानि च मण्डलानि यावच्चक्रवर्ती चक्रवर्तिपदं परिपालयति तावदवतिष्ठन्ते, गुहाऽपि तथैवोद्घाटिता तिष्ठति, उपरते तु चक्रिणि तत्सर्वमुपरमते १२ खड्गरत्नं-सङ्ग्राम-भूमावप्रतिहतशक्तिः १३ दण्डरत्नं-रत्नमयपञ्चलताकं वज्रसारमयं सर्वशत्रुसैन्यविनाशकारकं, चक्रवर्तिनः स्कन्धावारे विषमोन्नतविभागेषु समत्वकारि शान्तिकरं चक्रवर्तिनो हितेप्सितमनोरथपूरकं दिव्यमप्रतिहतं प्रयत्नविशेषतश्च व्यापार्यमाणं योजनसहस्रमप्यधः प्रविशति १४ ।

एतानि चतुर्दश रत्नानि प्रत्येकं यक्षसहस्राधिष्ठितानि भवन्ति, तथैतानि सेनापत्यादीनि सप्त

पञ्चेन्द्रियाणि, चक्रादीनि सप्त एकेन्द्रियाणि पृथिवीपरिणामरूपाणि, प्रत्येकं जम्बूद्वीपे जघन्यपदेऽष्टाविंशतिरेककालं प्राप्यन्ते, जघन्यतोऽपि चक्रवर्तिचतुष्टयसद्भावात्, उत्कृष्टतस्तु दशोत्तरद्विशतसङ्ख्यानि, चक्रवर्तिनो ह्येककालं त्रिंशद्भवन्ति, यथा अष्टाविंशतिर्विदेहे एकैको भरतैरवतयोः, सप्तानां च त्रिंशता गुणने द्वे शते दशोत्तरे भवति इति ॥१४॥

श्लो. ३४८ चक्कं छत्तं दंडं, तिन्नि वि एयाइं वाममित्ताइं ।
चम्मं दुहत्थदीहं, बत्तीसं अंगुलाइ असी ॥१६॥ (प्रव.सा.)

श्लो. ३४९ चउरंगुलो मणी पुण, तस्सद्धं चेव होइ विच्छिन्नो ।
चउरंगुलप्पमाणा, सुवन्नवरकागिणी नेया ॥१७॥ (प्रव.सा.)

अथ सप्तानामप्येकेन्द्रियरत्नानां प्रमाणमाह–

'**चक्क**'मित्यादि गाथाद्वयं, चक्रं छत्रं दण्डमित्येतानि त्रीण्यपि रत्नानि व्यामप्रमाणानि, व्यामो नाम प्रसारितोभयबाहोः पुंसस्तिर्यग्हस्तद्वयाङ्गुलयोरन्तरालं, चर्मरत्नं द्विहस्तदैर्घ्यं, द्वात्रिंशदङ्गुलदीर्घोऽसिः-खड्गरत्नं, तथा दैर्घ्यमधिकृत्य मणिः पुनश्चतुरङ्गुलप्रमाणः, तस्य-दैर्घ्यस्यार्धं द्वे अङ्गुले इत्यर्थः विस्तीर्णो-विस्तृतः, तथा चतुरङ्गुलप्रमाणा सुवर्णवरकाकिनी-जात्यसुवर्णमयी काकिनीनाम रत्नं ज्ञेया, एतानि सप्ताप्येकेन्द्रियरत्नानि सर्वचक्रवर्तिनामात्माङ्गुलेन ज्ञेयानि, शेषाणि तु सप्त पञ्चेन्द्रियरत्नानि तत्तत्कालीनपुरुषोचितमानानीति २१२ ॥१६-१७॥

श्लो. ३५० नेसप्पे १ पंडुयए, २ पिंगलए ३ सव्वरयण ४ महपउमे ५ ।
काले य ६ महाकाले, ७ माणवग ८ महानिही संखे ९ ॥१८॥

नैसर्पः पाण्डुकः पिङ्गलकः सर्वरत्नः महापद्मः कालः महाकालः माणवकः महानिधिः शङ्खश्च, एते नव निधयः, एतेषु च निधिषु कल्पपुस्तकानि शाश्वतानि वर्तन्ते, तेषु च विश्वस्थितिराख्यायते ॥१८॥

तत्र यस्मिन्निधौ यदाख्यायते तदाह–

नेसप्पम्मि निवेसा गामागरनगरपट्टणाणं च ।
दोणमुहमडंबाणं खंधाराणं गिहाणं च ॥१९॥

'**नेसप्पंमी**'त्यादिगाथा एकादश, नैसर्पे-नैसर्पाभिधे निधौ ग्रामाकरनगरपत्तनानां द्रोणमुखमडम्बानां स्कन्धावाराणां गृहाणां चशब्दादापणानां च निवेशाः-स्थापनान्याख्यायन्ते, तत्र ग्रामोवृत्त्यावृतः, आकरो-यत्र सन्निवेशे लवणाद्युत्पद्यते, नगरं-राजधानी, पत्तनं-जलस्थलनिर्गमप्रवेशं, द्रोणमुखं-जलनिर्गमप्रवेशं, अर्धतृतीयगव्यूतान्तर्ग्रामान्तररहितं मडम्बं, स्कन्धावारः-कटकनिवेशः, गृहं-भवनं, आपणो-हट्ट इति ॥१९॥

गणियस्स य गीयाणं माणुम्माणस्स जं पमाणं च ।
धन्नस्स य बीयाणं उप्पत्ती पंडुए भणिया ॥२०॥

गणितस्य-दीनारादिपूगफलादिलक्षणस्य तथा गीतानां-स्वरकरणपाटकरणधूपकागारुकटिकिकाप्रभृतीनां प्रबन्धानां, तथा मानं-सेतिकादि तद्विषयं यत्तदपि मानमेव धान्यादि मेयमिति भावः, तथा उन्मानं-तुलाकर्षादि तद्विषयं यत्तदप्युन्मानं, खण्डगुडादि धरिममित्यर्थः, ततः समाहारद्वन्द्वः ततस्तस्य यत्प्रमाणं, तथा धान्यबीजानां च-शाल्यादीनां देशकालौचित्येनोत्पत्तिः-निष्पत्तिः पाण्डुकनिधौ भणिता-व्यावर्णिता ॥२०॥

सव्वा आहरणविही पुरिसाणं जा य जा य महिलाणं ।
आसाण य हत्थीण य पिंगलगनिहिम्मि सा भणिया ॥२१॥

सर्वोऽप्याभरणविधिर्यः पुरुषाणां यश्च महिलानां तथा अश्वानां हस्तिनां च स यथौचित्येन पिङ्गलनामके महानिधौ भणितः ॥२१॥

रयणाइं सव्वरयणे चउदस पवराइं चक्कवट्टीणं ।
उप्पज्जंति एगिंदियाइं पंचिंदियाइं च ॥२२॥

इह चक्रवर्तिनश्चतुर्दश रत्नानि सर्वोत्तमानि भवन्ति, तद्यथा-चक्रप्रमुखाणि सप्त एकेन्द्रियाणि सेनापतिप्रमुखाणि सप्त पञ्चेन्द्रियाणि, तानि चतुर्दशापि सर्वरत्नाख्ये महानिधौ उत्पद्यन्ते, तदुत्पत्तिस्तत्र व्यावर्णितेत्यर्थः, अन्ये त्वेवमाहुः-उत्पद्यन्ते एतत्प्रभावात् स्फीतिमन्ति च भवन्तीत्यर्थः ॥२२॥

वत्थाण य उप्पत्ती निप्फत्ती चेव सव्वभत्तीणं ।
रंगाण य धाऊण य सव्वा एसा महापउमे ॥२३॥

सर्वेषामपि वस्त्राणां या उत्पत्तिः तथा सर्वेषामपि वस्त्रादिगतानां भक्तिविशेषाणां सर्वेषामपि च रङ्गाणां-मजिष्ठाकृमिरागकुसुम्भादीनां धातूनां च-लोहताम्रादीनां '**धोव्वाण य**'त्ति पाठे तु सर्वेषां वस्त्रादिप्रक्षालनविधीनां या निष्पत्तिः सर्वा चैषा महापद्मे निधावभिधीयते ॥२३॥

काले कालन्नाणं भव्व पुराणं च तिसु वि वंसेसु ।
सिप्पसयं कम्माणि य तिन्नि पयाए हियकराइं ॥२४॥

काले-कालनामनि निधौ कालज्ञानं-समस्तज्योतिःशास्त्रानुगतं ज्ञानमिति भावः, तथा जगति त्रयो वंशाः, वंशः प्रवाह आवलिकेत्यनर्थान्तरं, तद्यथा—तीर्थकरवंशश्चक्रवर्तिवंशो बलदेववासुदेववंशश्च, तेषु त्रिष्वपि वंशेषु यद्भव्यं-भावि यच्च पुराणं-अतीतं, उपलक्षणमेतत् वर्तमानं च, '**तिसु वि वासेसु**' त्ति पाठे तु अनागतवस्तुविषयमतीतवस्तुविषयं च कालज्ञानं क्रमेणानागतातीतवर्षत्रयगोचरमिति, क्वचिद् '**भव्वपुराणं च तिसु वि कालेसु**'त्ति पाठः, तत्र च त्रिष्वपि कालेषु-

वर्तमानातीतानागतेषु भव्यं-शुभं पुराणं च-अशुभं कालज्ञानमिति, तथा यत् शिल्पशतं-घटलोहचित्रवस्त्रनापितशिल्पानां पञ्चानामपि प्रत्येकं विंशतिभेदत्वात् यानि च कृषिवाणिज्यादीनि जघन्यमध्यमोत्कृष्टभेदभिन्नानि त्रीणि कर्माणि प्रजाया हितकराणि तदेतत्सर्वमभिधीयते ॥२४॥

लोहस्स य उप्पत्ती होइ महाकाल आगराणं च ।
रूप्पस्स सुवण्णस्स य मणिमोत्तियसिलपवालाणं ॥२५॥

महाकाले निधौ लोहस्य नानाभेदभिन्नस्योत्पत्तिराख्यायते, रूप्यसुवर्णमणिमुक्ताशिला-प्रवालानां सम्बन्धिनामाकराणां च, तत्र रूप्यसुवर्णे प्रतीते, मणयः-चन्द्रकान्तादयः, मुक्ता-मौक्तिकानि, शिलाः-स्फाटिकादिका, प्रवालानि-विद्रुमाणीति ॥२५॥

जोहाण य उप्पत्ती आवरणाणं च पहरणाणं च ।
सव्वा य जुद्धनीई माणवगे दंडनीई य ॥२६॥

माणवके निधौ योधानां-शूरपुरुषाणामावरणानां-खेटकादीनां प्रहरणानां-खड्गादीनां च यत्र यथा वा उत्पत्तिर्भवति तथाऽभिधीयते, तथा सर्वाऽपि युद्धनीतिः-व्यूहरचनादिलक्षणा, सर्वाऽपि च दण्डनीतिः-सामादिचतुर्विधाऽऽख्यायते ॥२६॥

नट्टविही नाडयविही कव्वस्स चउव्विहस्स निप्फत्ती ।
संखे महानिहिम्मि उ तुडियंगाणं च सव्वेसिं ॥२७॥

शङ्खाभिधाने पुनर्महानिधौ सर्वोऽपि नर्तनविधिः-नृत्यकरणप्रकारः सर्वोऽपि च नाटकविधिः-अभिनेयप्रबन्धप्रपञ्चनप्रकारः, तथा धर्मार्थकाममोक्षलक्षणपुरुषार्थप्रतिबद्धस्य यद्वा संस्कृतप्राकृताप-भ्रंशसङ्कीर्णभाषानिबद्धस्य गद्यपद्यगेयचौर्णपदबद्धस्य वा चतुर्विधस्यापि काव्यस्य तथा सर्वेषां त्रुटिताङ्गनामातोद्यापरपर्यायाणामुत्पत्तिराख्यायते । अन्ये त्वेते पूर्वोक्ताः पदार्थाः सर्वेऽपि नवसु निधिषु साक्षादेव समुत्पद्यन्ते इति व्याख्यानयन्ति ॥२७॥

अथ नवानामपि निधीनां साधारणं स्वरूपमाह-

चक्कट्ठपइट्ठाणा अट्ठुस्सेहा य नव य विक्खंभे ।
बारस दीहा मंजूससंठिया जण्हवीए मुहे ॥२८॥

'**चक्कट्ठपई**'त्यादि, प्रत्येकमष्टसु चक्रेषु प्रतिष्ठानां-अवस्थानं येषां ते अष्टचक्रप्रतिष्ठानाः, प्राकृतत्वादष्टशब्दस्य परनिपातः, अष्टौ योजनानि उत्सेधः-उच्चैस्त्वं येषां ते तथा, नव च योजनानि विष्कम्भेण नवयोजनविस्तारा इत्यर्थः, द्वादशयोजनदीर्घाः, मञ्जूषासंस्थानसंस्थिताः सदैव जाह्नव्या-गङ्गाया मुखेऽवस्थिताः चक्रवर्त्तिन उत्पत्तिकाले च भरतविजयानन्तरं चक्रवर्तिना सह पातालेन चक्रवर्तिपुरमनुगताः ॥२८॥

वेरुलियमणिकवाडा कणयमया विविहरयणपडिपुन्ना ।
ससिसूरचक्कलक्खण अणुसमवयणोववत्तीया ॥२९॥

वैडूर्यमणिमयानि कपाटानि येषां ते तथा, भयट्प्रत्ययस्य वृत्त्या उक्तार्थता, कनकमयाः-सौवर्णाः विविधरत्नपरिपूर्णाः, शशिसूरचक्राकाराणि लक्षणानि-चिह्नानि येषां ते तथा, प्राकृतत्वात् प्रथमाबहुवचनस्य लोपः, '**अणुसमवयणोववत्तीय**'त्ति अनुरूपा समा-अविषमा वचन-स्योपपत्तिः-द्वारघटना येषां ते तथा, '**अणुवम**'त्ति पाठे तु न विद्यते उपमावचनस्योपपत्तिः-घटना येषां स्वरूपव्यावर्णने ते अनुपमवचनोपपत्तिकाः-उपमया प्रतिपादयितुमशक्याः, उपमाया एवाभावादिति भावः, क्वचित् '**अणुसमयचयणोववत्तीय**'त्ति पाठः, तत्र अनुसमयं-प्रतिसमयं पुद्गलानां च्यवनमुपपत्तिश्च येषां ते तथा, यावन्तस्तेभ्यः पुद्गला गलन्ति तावन्त एवानुसमयं लगन्तीत्यर्थः, स्थानाङ्गे तु '**अणुसमजुगबाहुवयणा य**'त्ति पठ्यते, तत्र चायमर्थः-अनुसमा-अनुरूपा अविषमा जुग त्ति-यूपस्तदाकारा वृत्तत्वाद्दीर्घत्वाच्च बाहवो-द्वारशाखा वदनेषु-मुखेषु येषां ते तथा ॥२९॥

पलिओवमट्ठिईया निहिसरिनामा य तत्थ खलु देवा ।
जेसिं ते आवासा अक्केज्जा आहिवच्चा य ॥३०॥

तेषु च निधिषु पल्योपमस्थितिका निधिसदृशनामानस्ते देवा भवन्ति येषां देवानां त एव निधय आवासा-आश्रयाः आधिपत्याय-आधिपत्यनिमित्तमक्रेयाः, न तेषामाधिपत्यं क्रयेण लभ्यमिति भावः ॥३०॥

एए ते नव निहिणो पभूयधणरयणसंचयसमिद्धा ।
जे वसमुवगच्छंति सव्वेसिं चक्कवट्टीणं ॥३१॥ (प्रव.सा.द्वा.२१३)

एते ते नव निधयः प्रभूतधनरत्नसञ्चयसमृद्धाः ये सर्वेषामपि भरतक्षेत्राधिपचक्रवर्तिनां वशमुपयान्तीति ॥३१॥

श्लो. ४६३ 'देसकुलजाइरूवे संघयणी धिइजुओ अणासंसी ।
अविकत्थणो अमायी थिरपरिवाडी गहियवक्को ॥१॥

इति गाथाचतुष्टयभणिताः सूरिगुणाः षट्त्रिंशद्दर्श्यन्ते-तत्र युतशब्दः प्रत्येकमभिसम्बध्यते, देशयुतः कुलयुत इत्यादि, तत्र यो मध्यदेशे जातो यो वाऽर्धषड्विंशतिषु जनपदेषु स देशयुतः, स ह्यार्यदेशभणितं जानाति, ततः सुखेन तस्य समीपे शिष्याः सर्वेऽप्यधीयन्ते इति तदुपादानं १ कुलं-पैतृकं, तथा च लोकव्यवहारः-ईक्ष्वाकुकुलजोऽयमित्यादि तेन युतः प्रतिपन्नार्थनिर्वाहको भवति २ जातिः-मातृकी, तया युतो विनयादिगुणवान् भवति ३ रूपयुतो लोकानां गुणविषयबहुमानभाग् जायते, '**यत्राकृतिस्तत्र गुणा वसन्ती**'ति प्रवादात्, कुरूपस्य अनादेयत्वादिप्रसङ्गाच्च ४ संहननेन-

विशिष्टशारीरसामर्थ्यरूपेण युतो व्याख्यायां न श्राम्यति ५ धृतिः-विशिष्टमानसावष्टम्भलक्षणा, तया युतो नातिगहनेष्वप्यर्थेषु भ्रममुपयाति ६ अनाशंसी-श्रोतृभ्यो वस्त्राद्यनाकाङ्क्षी ७ अविकत्थनो-नातिबहुभाषी, यद्वा स्वल्पेऽपि केनचिदपराद्धे पुनः पुनस्तदुत्कीर्तनं विकत्थनं तद्रहितः ८ अमायी-शाठ्यरहितः ९ स्थिरा-अतिशयेन निरन्तराभ्यासतः स्थैर्यमापन्ना अनुप्रयोगपरिपाट्यो यस्य स स्थिरपरिपाटिः, तस्य हि सूत्रमर्थो वा न मनागपि गलति १० गृहीतवाक्यः-उपादेयवचनः, तस्य हि स्वल्पमपि वचनं महार्थमिव प्रतिभाति ११ ॥१॥

जियपरिसो जियनिद्दो मज्झत्थो देसकालभावन्नू ।
आसन्नलद्धपइभो नाणाविहदेसभासन्नू ॥२॥

जितपर्षत् न महत्यामपि पर्षदि क्षोभमुपयाति १२ जितनिद्रः-अल्पनिद्रः, स हि रात्रौ सूत्रमर्थं वा परिभावयन् न निद्रया बाध्यते १३ मध्यस्थः-सर्वेषु शिष्येषु समचित्तः १४ देशं कालं च भावं च जानातीति देशकालभावज्ञः, स हि देशं कालं भावं च लोकानां ज्ञात्वा सुखेन विहरति, शिष्याणां वाऽभिप्रायान् ज्ञात्वा तान् सुखेनानुवर्तयति १५-१६-१७ आसन्ना-तत्क्षणादेव लब्धा कर्मक्षयोपश-मेनाविर्भूता प्रतिभा-परतीर्थिकादीनामुत्तरप्रदानशक्तिर्यस्य स आसन्नलब्धप्रतिभः १८ नानाविधानां देशानां भाषां जानातीति नानाविधदेशभाषाज्ञः, स हि नानादेशीयान् शिष्यान् सुखेन शास्त्राणि ग्राहयति, तत्तद्देशजांश्च जनान् तत्तद्भाषया धर्ममार्गेऽवतारयति १९ ॥२॥

पंचविहे आयारे जुत्तो सुत्तत्थतदुभयविहिन्नू ।
आहरणहेउउवनयनयनिउणोगाहणाकुसलो ॥३॥

पञ्चविध आचारो-ज्ञानाचारादिरूपस्तस्मिन् युक्तः-उद्युक्तः स्वयमाचारेष्वनवस्थितस्यान्या-नाचारेषु प्रवर्तयितुमशक्यत्वात् २४ सूत्रार्थग्रहणेन चतुर्भङ्गी सूचिता, एकस्य सूत्रं नार्थः, द्वितीयस्यार्थो न सूत्रं, तृतीयस्य सूत्रमप्यर्थोऽपि, चतुर्थस्य न सूत्रं नाप्यर्थः, तत्र तृतीयभङ्गग्रहणार्थं तदुभयग्रहणं, ततः सूत्रार्थतदुभयविधीन् जानातीति सूत्रार्थतदुभयविधिज्ञः २५ आहरणं-दृष्टान्तः, हेतुर्द्विविधः-कारको ज्ञापकश्च, तत्र कारको यथा घटस्य कर्ता कुम्भकारः, ज्ञापको यथा तमसि घटादीनामभिव्यञ्जकः प्रदीपः, उपनयः-उपसंहारो दृष्टान्तदृष्टस्यार्थस्य प्रकृते योजनमिति भावः 'कारण'त्ति पाठे तु कारणं निमित्तं नया-नैगमादयः एतेषु निपुणः आहरणहेतूपनयनयनिपुणः, स हि श्रोतारमपेक्ष्य तत्प्रति-पत्त्यनुरोधतः क्वचिद् दृष्टान्तोपन्यासं २६ क्वचिद्धेतूपन्यासं करोति २७ उपसंहारनिपुणतया सम्यगधि-कृतमर्थमुपसंहरति २८ नयनिपुणतया स सम्यगधिकृतनयवक्तव्यताऽवसरे सम्यक् सप्रपञ्चवैविक्त्येन नयानभिधत्ते २९ ग्राहणाकुशलः-प्रतिपादनशक्तियुक्तः ३० ॥३॥

ससमयपरसमयविऊ गंभीरो दित्तिमं सिवो सोमो ।
गुणसयकलिओ एसो पवयणसारं परिकहेउं ॥४॥ (प्रव.सा.द्वा.६४)

स्वसमयं ३१ परसमयं ३२ च वेत्तीति स्वसमयपरसमयवित्, स हि परेणाक्षिप्तः सुखेन स्वपक्षं परपक्षं च निर्वाहयति, गम्भीरः-अतुच्छस्वभावः ३३ दीप्तिमान्-परवादिनामनुद्धर्षणीयः ३४ शिवः-अकोपनो यदिवा यत्र तत्र वा विहरन् कल्याणकरः ३५ सोमः-शान्तदृष्टिः ३६ इति षट्त्रिंशद्-गुणोपेतो गुरुर्विज्ञेयः, उपलक्षणत्वाच्चामीषां गुणानामपरैरपि गुणैरौदार्यस्थैर्यादिभिः शशधरकर-निकरकमनीयैरलङ्कृतः प्रवचनोपदेशको गुरुर्भवति, तथा चाह–''गुणसयकलिओ जुत्तो पवयणसारं परिकहेउं''ति, यद्वा गुणा-मूलगुणा उत्तरगुणाश्च तेषां शतानि तैः कलितो गुणशतकलितः युक्तः-समीचीनः प्रवचनस्य-द्वादशाङ्गस्य सारं-अर्थं कथयितुं, यदुक्तं–

''गुणसुट्ठियस्स वयणं घयपरिसित्तो व्व पावओ भाइ ।
गुणहीनस्स न सोहइ नेहविहूणो जह पईवो ॥१॥'' ॥४॥ (प्रव.सा.द्वा.६५)

[गुणसुस्थितस्य वचनं घृतपरिषिक्त इव पावको भाति ।
गुणहीनस्य न शोभते स्नेहविहीनो यथा प्रदीपः ॥१॥]

श्लो. ४९० सत्तसु खेत्तसहावा, अन्नोऽन्नुद्दीरिया य जा छट्ठी ।
तिसु आइमासु वियणा, परमाहम्मियसुरकया य ॥७४॥ (प्रव.सा.द्वा.१७४)

क्षेत्रस्वभावा-क्षेत्रस्वभावसमुद्भूता दुःखवेदना तावदविशेषेण सप्तस्वपि नरकपृथिवीषु भवति, **'अन्नोऽन्नुद्दीरिया य जा छट्ठी'**त्ति यावच्छब्दोऽयमव्ययत्वेनानेकार्थत्वादिह मर्यादावाची, ततोऽन्योऽन्योदीरिता-नारकैरेव परस्परमुपजनिता वेदना षष्ठीं पृथिवीं यावत्-षष्ठ्या अर्वाक्पञ्चमीमभि-व्याप्य भवतीति, इदमुक्तं भवति-अन्योऽन्योदीरिता वेदना द्विधा-प्रहरणकृता शरीरकृता च, तत्र प्रहरणकृता आद्यास्वेव पञ्चसु पृथिवीषु भवति, शरीरकृता तु सामान्येन सप्तस्वपि पृथिवीषु, न चैतदनार्षं, तथा चोक्तं **जीवाभिगमोपांगे–**

''इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया जाव एगत्तं पि पहू विउव्वित्तए पुहुत्तं पि पहू विउव्वित्तए ?, एगत्तं विउव्वमाणा एगं महं मुग्गररूवं वा मुसुंढीरूवं वा एवं करवत्तअसिसत्ति-हलगयामुसलचक्कनारायकुंततोमरसूललगुडजाव भिंडिमालरूवं वा, पुहुत्तं विउव्वेमाणा मुग्गररूवाणि वा जाव भिंडिमालरूवाणि वा, ताइं संखेज्जाइं नो असंखेज्जाइं, संबद्धाइं नो असंबद्धाइं, सरिसाइं नो असरिसाइं विउव्वंति, विउव्वित्ता अन्नमन्नस्स कायं अभिभवमाणा वेयणं उदीरयंति, एवं जाव धूमप्पभाए पुढवीए, छट्ठसत्तमासु णं पुढवीसु नेरइया लोहियकुंथुरूवाइं वइरामयतुंडाइं गोमयकीडसमाणाइं विउव्वित्ता अन्नमन्नस्स कायं समतुरंगेमाणा समतुरंगेमाणा खाएमाणा खाएमाणा सयपोराकिमिया इव चालेमाणा चालेमाणा अंतो अंतो अणुप्पविसमाणा वेयणमुदीरयंति''त्ति ॥

[अस्यां भदन्त ! रत्नप्रभायां पृथिव्यां नैरयिका यावद् एकत्वमपि प्रभुर्विकुर्वितुं पृथक्त्वमपि

प्रभर्विकुर्वितुं ?, एकत्वं विकुर्वन्त एकं महत् मुद्गररूपं वा मुषण्ढीरूपं वा एवं करपत्रासिशक्ति-हलगदामुशलचक्रनाराचकुन्ततोमरशूललकुटयावत् भिण्डिमालरूपं वा, पृथक्त्वं विकुर्वन्तो मुद्गररूपाणि वा यावद् भिण्डिमालरूपाणि वा, तानि सङ्ख्येयानि नासङ्ख्येयानि, सम्बद्धानि नासम्बद्धानि, सदृशानि नासदृशानि विकुर्वन्ति, विकुर्व्य अन्योऽन्यस्य कायमभिभवन्तो वेदनामुदीरयन्ते, एवं यावद् धूमप्रभायां पृथ्व्यां, षष्ठीसप्तम्योः पृथ्व्योर्नैरयिका लौहिककुन्थुरूपाणि वज्रमयतुण्डानि गोमृतककीटसमानानि विकुर्व्य अन्योऽन्यस्य कायं समतुरङ्गायमाणाः समतुरङ्गाय-माणाः खादन्तः खादन्तः शतपर्वकृमय इव चालयन्तः चालयन्तः अन्तरन्तरनुप्रविशन्तो वेदना-मुदीरयन्ते] ।

अत्र पृथक्त्वशब्दो बहुत्ववाची, ततः पृथक्त्वं-प्रभूतानि मुद्गरादीनि भिण्डिमालपर्यन्तानि प्रहरणानि विकुर्वन्तः परिमितानि स्वशरीरसंलग्नानि समानरूपाणि च विकुर्वन्ति, असङ्ख्यातानां शरीरपृथग्भूतानां विसदृशानां च प्रहराणां विकुर्वणे तथाभवस्वाभाव्येन सामर्थ्याभावात्, 'समतुरङ्गेमाणा समतुरङ्गेमाणा' इति समतुरङ्गा इवाचरन्तः समतुरङ्गायमाणाः, अश्वा इवान्यो-ऽन्यमारोहन्त इत्यर्थः, शतपर्वकृमय इव-इक्षुकृमय इव 'चालेमाणा चालेमाणा' शरीरमध्येन सञ्चरन्त सञ्चरन्त इति ॥

तथा तिसृष्वाद्यासु पृथिवीषु परमाधार्मिकसुरकृताऽपि वेदना भवति, तत्र क्षेत्रस्वभावजा रत्नप्रभाशर्कराप्रभावालुकाप्रभासूष्णा, एतन्नारकाणां हि शीतयोनिकत्वेन केवलं हिमप्रतिमशीत-प्रदेशात्मकत्वात् योनिस्थानादन्यत्र च सर्वस्यापि भूम्यादेः खदिराङ्गारेभ्योऽप्यत्यन्तप्रतप्तत्वाद्गाढतर उष्णवेदनानुभवः, एवमन्यास्वपि वाच्यं, पङ्कप्रभायां बहुषूपरितनेषु नरकावासेषूष्णा अधस्तनेषु स्तोकेषु च शीता, धूमप्रभायां बहुषु शीता स्तोकेषूष्णा, षष्ठ्यां सप्तम्यां च पृथिव्यां केवला शीतवेदनैव । इयं च वेदना सर्वाऽप्यधोऽधोऽनन्तगुणतया तीव्रा तीव्रतरा तीव्रतमा चावसेया ।

उष्णवेदनायाः शीतवेदनायाश्च स्वरूपं पुनरित्थं प्रदर्शयन्ति प्रवचनवेदिनः-यथा निदाघचरम-समयमध्याह्ने नभोमध्यमधिरूढे प्रौढे चण्डरोचिषि, सर्वथाऽपि जलदपटलविकले गगनतले, मनागप्यस्फुरति मरुति, प्रभूतपित्तकोपाभिभूतस्य, कृतातपवारणनिवारणस्य, सर्वतः प्रज्वलज्ज्वलन-ज्वालाकरालितकलेवरस्य कस्यचित्पुंसः किल वाक्पथातीतसंवेदना यादृगुष्णवेदना प्रादुर्भवति ततोऽप्युष्णवेदनेषु नरकेषु नारकाणामनन्तगुणा । अपि च-यदि नारका उष्णवेदनेभ्यो नरकेभ्य उत्पाट्य धमनीमुखोद्धमायमानखादिराङ्गारराशिशय्याशायिनः क्रियन्ते तदा सुधारससेकातिरेकनिर्वाप्यमाणा इवात्यन्तसुखास्वादमेदुरमनसो निद्रामपि लभेरन् ।

तथा पौषे माघे वा निशीथे सर्वथाऽप्यभ्रविभ्रमविरहितेऽपि वियति सर्वतोऽपि वपुःप्रकम्प-कृति प्रवाति वाते तुषारशिखरिशिखरकृतस्थितेस्तुहिनकणगणसम्पर्किणो निरग्नेर्निराश्रयस्य निरावरणस्य पुंसो या शीतवेदना ततो भवति शीतवेदनेषु नारकाणामनन्तगुणा । किञ्च-यदि ते नारकाः

शीतवेदनेभ्यो नरकेभ्य उत्पाट्य यथोक्तपुरुषस्थाने स्थाप्यन्ते तदा ते प्राप्तात्यन्तनिर्वातस्थाना इव निरूपमसुखसम्पत्तेर्निद्रामप्यासादयेयुरिति ।

तथा क्षुत्पिपासाकण्डूपारवश्यज्वरदाहभयशोकादिकाऽन्याऽपि नारकाणां वेदना श्रुते श्रूयते । तथाहि – ते नारकाः सर्वदैवाक्षयक्षुदग्निदह्यमानशरीराः सकलजगद्गतसुस्निग्धघृतादिपुद्गलाहारेणापि न तृप्यन्ति । पिपासाऽपि तेषां शश्वत्कण्ठोष्ठतालुजिह्वादिशोषकृन्निखिलपयोधिपयःपानेऽपि नोपशाम्यति । कण्डूः पुनः कण्डूयमाना क्षुरिकादिभिरप्यनुच्छेद्या । पारवश्य-ज्वर-दाह-भय-शोकादयोऽप्यत्रत्येभ्योऽनन्तगुणाः । यदपि च नारकाणामवधिज्ञानं विभङ्गज्ञानं वा तदपि तेषां दुःखकारणम् । ते हि दूरत एव तिर्यगूर्ध्वमधश्च निरन्तरं दुःखहेतुमापतन्तमालोकयन्ति, आलोक्य च भयेन कम्पमानकायाः सोद्वेगमवतिष्ठन्ति । इयं सर्वाऽपि क्षेत्रस्वभावजा दुःखवेदना ।

अथ परस्परोदीरिता प्रतिपाद्यते-इह द्विविधा नारकाः-सम्यग्दृष्टयो मिथ्यादृष्टयश्च । तत्र ये मिथ्यादृष्टयस्ते मिथ्याज्ञानावलिप्तचेतसः परमार्थमजानानाः परस्परमुदीरयन्ति दुःखानि । ये तु सम्यग्दृष्टयस्ते तु नूनमस्माभिः कृतं जन्मान्तरेऽपि तत्किमपि पापं प्राणिहिंसादिरूपं येन निमग्ना वयं परमदुःखाम्भोधाविति परिभाबयन्तः सहन्ते सम्यक्परोदीरितानि दुःखानि, न पुनरन्येषामुत्पादयन्ति, दृष्टनिजकर्मविपाकत्वात् । अत एव च ते मिथ्यादृष्टिभ्योऽधिकतरदुःखाः प्रवचने प्रतिपाद्यन्ते, भूयिष्ठतया मानसिकदुःखसम्भवात् ।

येऽपि च मिथ्यादृष्टयः परस्परमुदीरयन्ति दुःखानि तेऽप्येवं-यथेह जगत्यपूर्वाद् ग्रामान्तरादागच्छतः शुनो दृष्ट्वा तद्ग्रामवास्तव्याः श्वानो निर्दयं क्रुद्ध्यन्ति परस्परं प्रहरन्ति च, तथा नारका अपि विभङ्गज्ञानबलेन दूरत एवान्योऽन्यमालोक्य क्रोधान्धा वैक्रियं भयानकं रूपमाधाय तेष्वेव स्वस्वनरकावासेषु क्षेत्रानुभावजनितानि पृथिवीपरिणामरूपाणि शूल-शिला-मुद्गर-कुन्त-तोमर-खड्ग-यष्टि-परशुप्रभृतीनि प्रहरणानि वैक्रियाणि वाऽऽदाय तैः कर-चरण-दशनैश्च परस्परमभिघ्नन्ति, ततः परस्पराभिघाततो विकृताङ्गा निःस्वनन्तो गाढवेदनाः सूनान्तःप्रविष्टमहिषादय इव रुधिरकर्दमे विचेष्टन्ते । एवमादिकाः परस्परोदीरिता दुःखवेदनाः ।

परमाधार्मिककृतास्तु तप्तत्रपुपान-तप्तायोमयस्त्रीसमालिङ्गन-कूटशाल्मल्यग्रारोपण-अयोघनाघात-वास्यादितक्षणक्षतक्षारोष्णतैलक्षेपण-कुन्तादिप्रोतन-भ्राष्ट्रभर्जन-यन्त्रपीलन-करपत्रपाटन-वैक्रियानेककंकोलूकसिंहादिकदर्थन-तप्तवालुकावतारण-असिपत्रवनप्रवेशन-वैतरणीतरङ्गिणीप्लावन-परस्परायोधनादिजनिता अपरिमिताः समयसमुद्रादवगन्तव्याः । किञ्च-कुम्भीषु पच्यमानास्तीव्रतापात्ते नारका उत्कर्षतः पञ्च योजनशतान्यूर्ध्वमुच्छलन्ति । तथा चोक्तं **जीवाभिगमे–**

नेरइयाणुप्पाओ उक्कोसं पंच जोयणसयाइं ।
दुक्खेणऽभिद्दुयाणं वेयणसयसंपगाढाणं ॥१॥

[नैरयिकाणामुत्पात उत्कृष्टतः पञ्च योजनशतानि ।
दुःखेनाभिहतानां वेदनाशतसंप्रगाढानाम् ॥१॥]

श्लो. ५३३ **अरिहंत सिद्ध पवयण, गुरु थेर बहुस्सुए तवस्सीसुं ।**
वच्छल्लया एएसिं, अभिक्खनाणोवओगे य ॥१७९॥

व्याख्या - तत्र अशोकाद्यष्टमहाप्रातिहार्यादिरूपां पूजामर्हन्तीति अर्हन्तः-शास्तार इति भावार्थः १। सिद्धास्तु अशेषनिष्ठितकर्मांशाः परमसुखिनः कृतकृत्या इति भावार्थः २। प्रवचनं-श्रुतज्ञानं तदुपयोगानन्यत्वाद्वा सङ्घ इति ३। गृणन्ति शास्त्रार्थमिति गुरवः-धर्मोपदेशादिदातार इत्यर्थः ४। स्थविराः-जातिश्रुतपर्यायभेदभिन्नाः, तत्र जातिस्थविरः षष्टिवर्षः, श्रुतस्थिवरः समवायधरः, पर्यायस्थविरो विंशतिवर्षपर्यायः ५। बहु श्रुतं येषां ते बहुश्रुताः, आपेक्षिकं बहुश्रुतत्वं, एवमर्थेऽपि संयोज्यं, किन्तु सूत्रधरेभ्योऽर्थधराः प्रधानाः तेभ्योऽप्युभयधरा इति ६। विचित्रं अनशनादिलक्षणं तपो विद्यते येषां ते तपस्विनः सामान्यसाधवो वा ७। अरहन्तश्च सिद्धाश्च प्रवचनं च गुरवश्च स्थविराश्च बहुश्रुताश्च तपस्विनश्च अर्हत्सिद्धप्रवचनगुरुस्थविरबहुश्रुततपस्विनः । वत्सलभावो वत्सलता, सा चानुरागयथावस्थितगुणोत्कीर्तना यथानुरूपोपचारलक्षणा तया, एतेषामर्हदादीनामिति, प्राक् षष्ठ्यर्थे सप्तमी 'बहुस्सुए तवस्सीणं' वा पाठान्तरं, तीर्थकरनामगोत्रं कर्म बध्यत इति, अभीक्ष्णं-अनवरतं ज्ञानोपयोगे च सति बध्यते ८। ॥१७९॥

दंसण विणए आवस्सए य, सीलव्वए निरइआरो ।
खणलव तवच्चियाए, वेयावच्चे समाही य ॥१८०॥

दर्शनं-सम्यक्त्वं, विनयो-ज्ञानादिविनयः, स च दशवैकालिकादवसेयः, दर्शनं च विनयश्च दर्शनविनयौ तयोर्निरतिचारः तीर्थकरनामगोत्रं कर्म बध्नाति ९-१०। आवश्यकम्-अवश्यकर्त्तव्यं संयमव्यापारनिष्पन्नं तस्मिंश्च निरतिचारः सन्निति ११। शीलानि च व्रतानि च शीलव्रतानि शीलानि-उत्तरगुणाः व्रतानि-मूलगुणाः तेषु च अनतिचार इति १२-१३। क्षणलवग्रहणं कालोपलक्षणं, क्षणलवादिषु संवेगभावनाध्यानासेवनतश्च बध्यते १४। तथा तपस्त्यागयोर्बध्यते, यो हि यथाशक्त्या तपः आसेवते त्यागं च यतिजने विधिना करोति १५-१६। व्यावृतभावो वैयावृत्त्यं, तच्च दशधा, तस्मिन्सति बध्यते १७। समाधिः-गुर्वादीनां कार्यकरणेन स्वस्थतापादनं समाधौ च सति बध्यते १८। ॥१८०॥

अप्पुव्वनाणगहणे, सुयभत्ती पवयणे पभावणया ।
एएहिं कारणेहिं, तित्थयरत्तं लहइ जीवो ॥१८१॥ (आव०नि०)

तथा अपूर्वज्ञानग्रहणे सति श्रुतभक्तिः श्रुतबहुमानः, स च विवक्षितकर्मबन्धकारणमिति १९। तथा प्रवचनप्रभावनता च, सा च यथाशक्त्या मार्गदेशनेति २०। एवमेभिः कारणैः अनन्तरोक्तैः

तीर्थकरत्वं लभते जीव इति गाथात्रयार्थः ॥१८१॥

श्लो. ७५८ **उवरिं जिणस्स जिणजणणिए य, जो मंगुलं मणो कुणइ ।**
फुट्टिस्सइ मुद्धाणं, तस्सज्जगमंजरि व्व फुडं ॥७५८॥

'**अज्जयमञ्जरीविव**'त्ति अज्जको नाम वनस्पतिविशेषो यथा तस्य मञ्जरी अनेकधा स्फुटिता निर्गच्छति तथा तस्यापि शिरः स्फुटिष्यतीति भावः । हारि० टीप्पणम् ।

श्लो.९०४ **नो मत्सरः क्वापि विवेकिभिर्जिनप्रासादपूजादिकधर्मकर्मणि ।**
कार्यो ह्यनर्थाय भवेदयं यथा, श्रीकुन्तलायाः समजायत स्फुटम् ॥१॥

अवनिपुरमित्यस्ति, पुरं स्वर्ग्गिपुरोपमम् ।
जितशत्रुरभूत्तत्र, भूपतिर्भूरिविक्रमः ॥१॥

कुन्तलाऽभूत्प्रिया तस्य, राज्ञः पट्टप्रतिष्ठिता ।
अपरा अपि संजाता-स्तस्य पत्न्यः परः शताः ॥२॥

ताः कारयन्ति चैत्यानि, स्वस्वद्रव्यैरनेकशः ।
विस्तार्यन्ते पुनस्तासां, कीर्तयो याचकव्रजैः ॥३॥

ततः सा कुन्तलादेवी, मत्सरग्रस्तमानसा ।
प्रासादं कारयामास, सविशेषं पुरान्तरे ॥४॥

तत्रैव प्रत्यहं पूजा-ध्वजस्नात्रादिकोत्सवान् ।
करोति कारयत्येषा, स्वयं परिजनैरपि ॥५॥

प्रासादेषु सपत्नीनां, दृष्ट्वा पूजादिकोत्सवान् ।
सन्तापं तनुतेऽत्यन्तं, धिक् स्पर्द्धा विधुरात्मनाम् ॥६॥

स्वभावसरला वीत-मत्सरा अपराः पुनः ।
प्रेक्ष्य पुण्यादरं तस्याः, प्रशंसामेव तन्वते ॥७॥

एवं समत्सरं धर्म्मं, कुन्तला कृतपूर्विणी ।
मृत्वार्त्तरौद्रध्यानाभ्यां, सा शुनी समपद्यत ॥८॥

सा पुनर्निजचैत्यस्य, द्वारे तिष्ठत्यनारतम् ।
विवेकविकला रौद्र-परिणामातिनिर्दयया ॥९॥

अन्येद्युः केवली कश्चित्, पुरे तत्र समागतः ।
सान्तःपुरोऽपि भूपस्तं, वन्दितुं भक्तितो ययौ ॥१०॥

केवली देशनां चक्रे, कर्णपीयूषसारणिम् ।
अन्तःपुर्योऽथ पृच्छन्ति, तं मुनिं विनयानताः ॥११॥

यदीयादरतोऽस्माक-मप्येष सुकृतादरः ।
भगवन् ! सा गता कुत्र, सपत्नी कुन्तलाभिधा ॥१२॥

सोऽप्यब्रवीदियं हन्त, कृत्वा धर्म्मं समत्सरम् ।
उत्पन्ना कुर्कुरीत्वेन, मोहाच्चैत्येऽवतिष्ठते ॥१३॥

एवं निशम्य ताः सर्वा-स्तत्रागत्य जिनालये ।
सोपहासं सकारुण्यं, तां पश्यन्ति मुहुर्मुहुः ॥१४॥

पुरः प्रत्यहमेतस्याः, पूपिकादि क्षिपन्ति ताः ।
आलापयन्ति सस्नेहं, पुनस्तां कुर्कुरीमिति ॥१५॥

अपि धर्म्मपरायास्ते, भद्रे ! मत्सरदोषतः ।
ईदृक्कुयोनिरापन्ना, बलीयस्त्वं हि कर्म्मणाम् ॥१६॥

ततो विमुच्य मात्सर्यं, रम्यं धर्मं समाचर ।
यतस्ते सुगतिप्राप्ति-र्बोधिश्च सुलभो भवेत् ॥१७॥

भूयो भूय इति श्रुत्वा, तासां वाक्यानि सा शुनी ।
ईहापोहं वितन्वाना, जातिस्मरणवत्यभूत् ॥१८॥

ततः संवेगमापन्ना, पापमालोच्य पूर्वजम् ।
समक्षं सर्वसिद्धाना-माहारं त्यक्तवत्यसौ ॥१९॥

क्रमान्मृत्वाऽभवद्देवी, सौधर्म्मे द्युतिभासुरा ।
ततोऽपि सुगतिं यास्य-त्यसौ धर्म्मप्रभावतः ॥२०॥

श्रुत्वेति वृत्तान्तममुं स्वभावात्, भोः प्राणभाजः प्रथमानभावाः ।
मात्सर्यमुत्सार्य विवेकवन्तः, कुर्वन्तु पुण्यानि समाधिमन्तः ॥२१॥

श्लो. १४१० कंकिल्लि १ कुसुमवुट्ठी २ देवज्झुणि ३ चामरा ४ ऽऽसणाइं ५ च ।
भावलय ६ भेरि ७ छत्तं ८ जयंति जिणपाडिहेराइं ॥४४०॥ (प्रव०सा०द्वा०३९)

व्याख्या—तत्र प्रतिहारा इव प्रतिहाराः-सुरपतिनियुक्ता देवास्तेषां कर्माणि-कृत्यानि प्रातिहार्याणि, 'वर्णदृढादिभ्यः ष्यञ्ञे' ति कर्मणि ष्यञ् तान्यष्टौ, तद्यथा-उल्लसद्बहलपाटलपल्लवजालसर्वकालविकसदसमानकुसुमसमूहविनिःसरदविरलपरमपरिमलोद्गारभरसमाकृष्यमाणभ्रमद्भ्रमरनिकुरम्बरणरणारावशिशिरीकृतप्रणमद्भव्यजननिकरश्रवणविवरोऽतिमनोरमाकारशालिविशालशालः कङ्केल्लितरुः-अशोकतरुर्जिनस्योपरि देवैर्विधीयते १,

तथा जलजस्थलजविकुर्वणाविरचितानां पञ्चवर्णानां विकस्वराणामधःकृतवृन्तानामुपरिमुखाणां कुसुमानां पुरुषजानुद्वयसंवृष्टिः क्रियते २,

तथा सरसतरसुधारससहोदरः सरभसविविधदेशापहृतमुक्तापरव्यापारप्रसारितवदनैः कुरङ्ग-कुलैराकुलाकुलैरुत्कर्णैराकर्ण्यमानः सकलजनानन्दप्रमोददायी दिव्यो ध्वनिर्वितन्यते ३,

तथा कमनीयकदलीकाण्डप्रकाण्डतन्तुमण्डलीरुचिरमरीचिचिकुरनिकुरम्बडम्बरिताति-जात्यविचित्रपवित्रनिःसपत्नरत्नविसरविनिःसरत्किरणनिकुरम्बजालेन दिशि दिशि संसूत्र्यमाणेन्द्र-चापकान्तकाञ्चनमयोद्दण्डदण्डरमणीया चारुचामरश्रीर्विस्तार्यते ४,

तथा अतिभास्वरसटापाटलबन्धुरस्कन्धबन्धविकटप्रकटदंष्ट्राकरालसजीवायमानसिंहरूपा-लङ्कृतमनेकप्रकाण्डरत्नखण्डविनिर्यद्वर्यकिरणावलिविलुप्यमानविलसत्तमस्काण्डडम्बरं सिंहासनं चारुतरं विरच्यते ५,

तथा शरत्कालविलसदखण्डमयूखमण्डलप्रचण्डचण्डमरीचिमण्डलमिव दुरालोकं तीर्थकर-कायतः प्रकृतिभास्वरात्ततदीयनिरुपमरूपाच्छादकमतुच्छं प्रभापटलं सम्पिण्ड्य जिनशिरसः पश्चाद्भागे मण्डलायमानं भामण्डलमातन्यते ६,

तथा तारतरविस्फारभाङ्कारभरितभुवनोदरविवरा भेरयो-महाढक्काः क्रियन्ते ७,

तथा भूर्भुवःस्वस्त्रयैकंसाम्राज्यसंसूचकं शरदिन्दुकुन्दकुमुदावदातं प्रलम्बमानमुक्ताफल-पटलावचूलमालामनोरमं छत्त्रत्रयमतिपवित्रमासूत्र्यते ८ इत्यष्टौ प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणां जयन्तीति।

तत्र कङ्केल्लिः श्रीमहावीरस्य द्वात्रिंशद्धनुरुच्छ्रितः, शेषाणां तु ऋषभस्वाम्यादीनां पार्श्वनाथ-पर्यन्तानां त्रयोविंशतेरपि तीर्थकृतां निजनिजशरीरमानाद् द्वादशगुणः, यदुक्तम्—

''उसभस्स तिन्नि गाउय बत्तीस धणूणि वद्धमाणस्स ।
सेसजिणाणमसोओ सरीरओ बारसगुणो उ ॥१॥''

[ऋषभस्य त्रीणि गव्यूतानि द्वात्रिंशद्धनूंषि वर्धमानस्य ।
जिनानां शेषाणामशोकः शरीराद् द्वादशगुणः ॥१॥] इति ।

ननु महावीरस्यापि क्वापि निजशरीराद् द्वादशगुणोऽशोकपादपः प्रतिपाद्यते, यदुक्त**मावश्यकचूर्णौ श्रीमहावीर**समवसरणप्रस्तावे—

''असोगवरपायवं जिणउच्चत्ताओ बारसगुणं सक्को विउव्वई'' त्ति अशोकवरपादपं जिनोच्चत्वाद् द्वादशगुणं शक्रो विकुर्वति तत्कथमिदमुपपद्यते ? इति, अत्रोच्यते - केवलमस्यैवाशोकतरोस्तत्र मानमुक्तं, इह तु सालवृक्षसहितस्य, ततोऽत्रापि केवलो द्वादशगुण एव, स तु सप्तहस्तमानश्रीमहावीरशरीराद् द्वादशगुणीकृतः सन्नेकविंशतिर्धनूंषि भवति, सालवृक्षोऽप्येकादशधनुःप्रमाणः, ततो मिलितानि द्वात्रिंशद्धनूंषि युज्यन्ते इति सम्प्रदायः, **समवायाङ्गेऽ**प्युक्तं—

''बत्तीसं धणुयाइं चेइयरुक्खो उ वद्धमाणस्स ।
निच्चोउगो असोगो उच्छन्नो सालरुक्खेणं ॥१॥''

तट्टीका च '**निच्चोउगो**'त्ति नित्यं-सर्वदा ऋतुरेव-पुष्पादिकालो यस्य स नित्यर्तुकः, '**असोगो**'त्ति अशोकाभिधानो यः समवसरणभूमिमध्ये भवति, '**उच्छन्नो सालरुक्खेणं**'ति अवच्छन्नः सालवृक्षेणेति'' अत एव वचनादशोकस्योपरि सालवृक्षोऽपि कथञ्चिदस्तीत्यवसीयत इति, तथा आयोजनभूमिकुसुमवर्षविषये कृपार्द्रीकृतचेतसः केचन प्रेरयन्ति-ननु विकचकान्तकुसुमप्रचयनिचितायां समवसरणभुवि जीवदयारसिकान्तःकरणानां श्रमणानां कथमवस्थानगमनादिकं कर्तुं युज्यते ?, जीवविघातहेतुत्वादिति, तत्र केचिदुत्तरयन्ति-तानि कुसुमानि सचित्तान्येव न भवन्ति, विकुर्वणयैव देवैस्तेषां विहितत्वादिति, एतच्चायुक्तं, यतो न तत्र विकुर्वितान्येव पुष्पाणि भवन्ति, जलजस्थलजानामपि कुसुमानां सम्भवात्, न चैतदनार्षं—

''**बिंटट्ठाइं सुरभिं जलथलयं दिव्वकुसुमनीहारिं ।**
पयरिंति समंतेणं दसद्धवण्णं कुसुमवुट्ठिं ॥१॥''

[वृन्तस्थायिनीं सुरभिं जलस्थलजानां दिव्यकुसुमगन्धनिर्हारिणीं ।
दशार्धवर्णां कुसुमवृष्टिं समन्ततो विकिरन्ति ॥१॥]

इति सिद्धान्तवचनाद्, एवं श्रुत्वाऽपरे सहृदयंमन्या उत्तरयन्ति-यत्र व्रतिनस्तिष्ठन्ति न तत्र देशे देवाः पुष्पाणि किरन्तीति, एतदप्युत्तराभासं, न खलु तपोधनैः काष्ठीभूतावस्थामालम्ब्य तत्रैव देशेऽवश्यं स्थातव्यं, प्रयोजने गमनागमनादेरपि तत्र सम्भवादिति, तस्मान्निखिलगीतार्थसम्मतमिदमुत्तरमत्र दीयते-यथैकयोजनमात्रायां समवसरणधरणावपरिमितसुरासुरादिलोकसम्मर्देऽपि न परस्परमाबाधा काचित् तथा तेषामाजानुप्रमाणक्षिप्तानाममन्दमकरन्दसम्पत्सम्पादितानन्दमन्दारमचकुन्दकुन्दकुमुदकमलदलमुकुलमालतीविकचविचकिलप्रमुखकुसुमसमूहानामप्युपरि सञ्चरिष्णौ स्थाष्णौ च मुनिनिकरे विविधजननिचये च न काचिदाबाधा प्रत्युत सुधारससिच्यमानानामिव बहुतरसमुल्लासस्तेषामापनिपद्यते, अचिन्तनीयनिरुपमतीर्थकरप्रभावोज्जृम्भमाणप्रसादादेवेति ।

तथा दिव्यध्वनिविषये पूर्वपक्षचञ्चवः केचिदाचक्षते-ननु सकलजनाह्लाददायी जात्यशर्करा-द्राक्षादिरसमिश्रितपरिक्वथितस्निग्धदुग्धरससहोदरस्तीर्थकरस्यैव ध्वनिरसौ कथं प्रतिहारकृतत्वमस्य युज्यते ?, युक्तमिदमुदितमुदारमतिभिः, तीर्थकृतां वाणी हि परममधुरिममनोरमपदार्थसार्थातिशायिशब्दशालिनी स्वभावत एव, परं यदा मालवकैशिक्यादिग्रामरागैर्भव्यजनोपकाराय देशनां भगवान् विधत्ते तदा देवैरुभयपार्श्ववर्तिभिरतिमनोहरवेणुवीणादिकलक्वणितकरणेन स एव तीर्थकरशब्दः कलतरः क्रियते, यथा मधुरगानप्रवृत्ततरुणतरगायनीजनगीतरवोऽनवमवैणिकवैणविकादिवीणावेण्वादिरवैरित्येतावताऽंशेन प्रतिहारदेवकृतत्वमस्य न विरुद्ध्यते इति सर्व समञ्जसम् ॥

श्लो. १४२५ एंतं महिड्ढियं पणिवयंति, ठियमवि वयंति पणमंता ।
णवि जंतणा ण विकहा, ण परोप्परमच्छरो न भयं ॥५६२॥ (आव०नि०)

व्याख्या–येऽल्पर्द्धयः पूर्वं स्थिताः ते आगच्छन्तं महर्द्धिकं प्रणिपतन्ति, स्थितमपि महर्द्धिकं पश्चादागताः प्रणमन्तो व्रजन्ति, तथा नापि यन्त्रणा-पीडा न विकथा न परस्परमत्सरो न भयं तेषां विरोधिसत्त्वानामपि भवति, भगवतोऽनुभावात्, इति गाथार्थः ॥५६२॥

श्लो. १४२६ बिइयंमि होंति तिरिया, तइए पागारमंतरे जाणा ।
पागारजढे तिरियाऽवि, होंति पत्तेय मिस्सा वा ॥५६३॥ (आव०नि०)

व्याख्या–द्वितीये प्राकारान्तरे भवन्ति तिर्यञ्चः, तथा तृतीये प्राकारान्तरे यानानि, 'प्राकारजढे' प्राकाररहिते बहिरित्यर्थः, तिर्यञ्चोऽपि भवन्ति, अपिशब्दात् मनुष्या देवा अपि, ते च प्रत्येकं मिश्रा वेति, ते पुनः प्रविशन्तो भवन्ति निर्गच्छन्तश्चैके इति गाथार्थः ॥५६३॥ द्वारम् १।

श्लो. १४५७ गणिमं जाईफलफोफलाइ, धरिमं तु कुंकुमगुडाई ।
मेयं चोप्पडलोणाइ, रयणवत्थाइ परिच्छेज्जं ॥१॥ २७८॥ (प्रव.सा.द्वा.६)

श्लो. १४६४ भाडी[१] फोडी[२] साडी[३] वणअंगारस्सरूवकम्माइं[४][५] ।
वाणिज्जाणि अ विसलक्खदंतरसकेसविसयाणि[६][७][८][९][१०] ॥२६५॥ (प्रव.सा.द्वा.६)

'**भाडी**'त्यादि गाथाद्वयम्, तत्र भाटककर्म यत् स्वकीयगन्त्र्यादिना परकीयभाण्डं भाटकेन वहति अन्येषां वा बलीवर्दशकटादीन् भाटकेनैवार्पयति, यदाहुः–

''**नियएणुवगरणेणं, परकीयं भाडएण जो वहइ ।**
तं भाडकम्ममहवा, वसहाइसमप्पणेऽन्नेसिं ॥१॥'' १॥ इति

[निजकेनोपकरणेन परकीयं भाटकेन यो वहति ।
तत् भाटककर्म अथवा वृषभादिसमर्पणेऽन्येषाम् ॥१॥]

'**फोडि**'त्ति स्फोटनकर्म-वापीकूपतडागादिखननं यद्वा हलकुद्दालादिना भूमिदारणं पाषाणादिघट्टनं वा, यवादिधान्यानां सक्त्वादिकरणेन विक्रयो वा, यदुक्तं–

''**जवचणयगोहुममुग्गमासकरडिप्पभिइधन्नाणं ।**
सत्तुयदालिकणिक्कातंडुलकरणाइं फोडणयं ॥१॥
अहवा फोडीकम्मं, सीरेणं भूमिफोडणं जं तु ।
उण्डत्तणयं च तहा, तहा य सिलकुट्टयत्तं च ॥२॥'' २॥ इति

[यवचणकगोधूममुद्गमाषकरटिप्रभृतिधान्यानाम् ।
सक्तुकदालिकणिक्कातन्दुलकरणानि स्फोटनकर्म ॥१॥

अथवा स्फोटनकर्म, हलेन भूमिस्फोटनं यत्तु ।
सूडनं च तथा तथा च शैलकुट्टकत्वं च ॥२॥]

'**साडी**'ति शकटकर्म, शकटानां तदङ्गानां च चक्रोर्ध्यादीनां स्वयं परेण वा वृत्तिनिमित्तं निष्पादनं विक्रयो वाहनं वा, यदाहुः—

''**शकटानां तदङ्गानां, घटनं खेटनं तथा ।**
विक्रयश्चेति शकटजीविका परिकीर्त्तिता ॥१॥'' ३॥

'**वण**'त्ति वनकर्म यत् छिन्नानामच्छिन्नानां च तरुखण्डानां पत्राणां पुष्पाणां फलानां च विक्रयणं वृत्तिकृते तद्वनकर्म, यच्चात्र स्फोटकर्मत्वेनोक्तं मुद्गादिकणानां घरट्टादिना द्वैधीकरणं दाल्यादिरूपं, गोधूमादीनां च घरट्टशिलापुत्रकादिना चूर्णीकरणं पिष्टकादिरूपं तदपि वनकर्मेति केचिन्मन्यन्ते, यदाहुः—

''**छिन्नाच्छिन्नवनपत्रप्रसूनफलविक्रयात् ।**
कणानां दलनोत्पेषात्, वृत्तिश्च वनजीविका ॥१॥'' ४॥

'**अंगार**'त्ति अङ्गारकर्म-यदङ्गारकरणपूर्वकं तद्विक्रयः, एतच्चोपलक्षणं अन्यदपि यदग्नि-समारम्भपूर्वकमिष्टकाभाण्डादिपाकभ्राष्ट्रादिकरणेन जीवनं तदप्यङ्गारकर्म, यदाहुः—

''**अङ्गारविक्कयं इट्टयाणं कुंभारलोहगाराणं ।**
सुन्नारभाडभुंजाइयाण कम्मं तमिंगालं ॥१॥'' ५॥

[अङ्गारविक्रय इष्टकानां कुम्भकारलोहकाराणाम् ।
सुवर्णकारभ्राष्ट्रभुञ्जकादीनां कर्म तदङ्गारकर्म ॥१॥]

अतीचारता चैतेषां कृततत्प्रत्याख्यानस्य अनाभोगादिना अत्रैव प्रवृत्तेः, एवमन्यत्रापीति, एतत्स्वरूपाणि कर्माणि पञ्च, तथा वाणिज्यानि-क्रयविक्रयस्वरूपाणि, चः समुच्चये, विषलाक्षा-दन्तरसकेशविषयाणि, तत्र विषवाणिज्यं विषं-शृङ्गिकादि तच्चोपलक्षणमन्येषां जीवघातहेतूनामुप-विषाणामस्त्रादीनां च तेषां विक्रयः, यदाहुः—

''**विसवाणिज्जं भन्नइ विसलोहप्पाणहणणविक्किणणं ।**
धणुहसरखग्गछुरिआपरसुयकुद्दालियाईणं ॥१॥'' ६॥

[विषवाणिज्यं भण्यते विषलोहप्राणघातकविक्रयणम् ।
धनुःशरखड्गाक्षुरिकापरशुकुद्दालिकादीनाम् ॥१॥]

तथा लाक्षावाणिज्यं बहुजीवजालकस्थानलाक्षादिविक्रयः, यदवाचि—

''लक्खाधायइगुलियामणसिलहरिआलवज्जलेवाणं ।
विक्किणणं लक्खवणिज्जं तुयरीसकूडमाईणं ॥१॥'' ७॥

[लाक्षाधातकीगुलिकामन:शिलहरितालवज्रलेपानाम् ।
विक्रयणं लाक्षावाणिज्यं तूरीकूटादीनाम् ॥१॥]

तथा दन्तवाणिज्यं यत्र प्रथमत एव पुलिन्द्रादीनां हस्तिदन्तशङ्खपूतिशचर्मकेशादीनामानयननिमित्तं मूल्यं ददाति आकरे वा गत्वा स्वयं क्रीणाति ततस्ते वनादौ गत्वा हस्त्यादीन् तदर्थं घ्नन्ति तद्विक्रयपूर्वं यदाजीवनं तद्दन्तवाणिज्यं, यदवोचन्—

''नहदंतचमरखल्लाभेरिकवड्डा य सिप्पिसंखा य ।
कत्थूरियपूइसमाइयं च इह दंतवाणिज्जं ॥१॥'' ८॥

[नखदन्तचामरखल्लाभेरीकपर्दका: शुक्तिशङ्खाश्च ।
कस्तूरिकापूतिशादिकं चेह दन्तवाणिज्यम् ॥१॥]

अनाकरे तु दन्तादेर्ग्रहणे विक्रयणे च न दोष: ।

तथा रसवाणिज्यं मद्यादिविक्रय:, यदभ्यधायि—

''महुमज्जमंसमक्खण चउण्ह विगईण जमिह विक्किणणं ।
रसवाणिज्जं तह दुद्धतिल्लघयदहिअपभिईणं ॥१॥'' ९॥

[मधुमद्यमांसम्रक्षणानां चतसृणां विकृतीनां यदिह विक्रयणम् ।
रसवाणिज्यं तथा दुग्धतैलघृतदधिप्रभृतीनाम् ॥१॥]

तथा केशवाणिज्यं यत्र दासीदासहस्त्यश्वगवोष्ट्रमहिषवालेयादिजीवान् गृहीत्वा तत्रान्यत्र वा विक्रीणीते जीविकानिमित्तं तत् केशवाणिज्यं, यदाहु:—

''मणुयाणं तिरियाणं विक्किणणं इत्थ अन्नदेसे वा ।
केसवणिज्जं भन्नइ गोगद्दहअस्समाईणं ॥१॥'' १०॥

[मनुजानां तिरश्चां विक्रयणमत्रान्यदेशे वा । केशवाणिज्यं भण्यते गोगर्दभाश्वादीनाम् ॥१॥]

सजीवानां विक्रये केशवाणिज्यं, अजीवानां तु जीवाङ्गानां विक्रये दन्तवाणिज्यमिति विवेक: ॥२६५॥

श्लो. १४६४ कम्मओ णं समणोवा० इमाइं पन्नरस्स कम्मादाणाइं जा०, तंजहा- इंगालकम्मे वणकम्मे साडीकम्मे भाडीकम्मे फोडीकम्मे, दंतवाणिज्जे लक्खवाणिज्जे रसवाणिज्जे विसवाणिज्जे केसवाणिज्जे, जंतपीलणकम्मे निल्लंछणकम्मे दवग्गिदावणया

सरदहतलायपरिसोसणया असईपोसणया य त्ति ७॥ (सूत्रं) (आव०नि०)

अस्य व्याख्या—कर्मतो यद् व्रतमुक्तं णमिति वाक्यालङ्कारे तदाश्रित्य श्रमणोपासकेनामूनि-प्रस्तुतानि पञ्चदशेतिसङ्ख्या कर्मादानानीत्यल्पसावद्यजीवनोपायाभावेऽपि तेषामुत्कटज्ञाना-वरणीयादिकर्महेतुत्वादादानानि कर्मादानानि ज्ञातव्यानि न समाचरितव्यानि । तद्यथेत्यादि पूर्ववत्, अङ्गारकर्म-अङ्गारकरणविक्रयक्रिया, एवं वनशकटभाटकस्फोटना दन्तलाक्षारसविषकेशवाणिज्यं च यन्त्रपीडननिर्ल्लाञ्छनदवदापनसरोद्रहादिपरिशोषणासतीपोषणेष्वपि द्रष्टव्यमित्यक्षरार्थः । भावार्थ-स्त्वयं—'इंगालकम्मं'ति, इंगाले दहितुं विक्किणति, तत्थ छण्हं कायाणं वधो तं न कप्पति, वणकम्मं-जो वणं किणति, पच्छा रुक्खे छिंदित्तुं मुल्लेण जीवति, एवं पणिगादि पडिसिद्धा हवंति, साडीकम्मं-सागडीयत्तणेण जीवति, तत्थ बंधवधाई दोसा, भाडीकम्मं-सएण भंडोवक्खरेण भाडएण वहइ परायगं, ण कप्पति, अण्णेसिं वा सगडं बलद्दे य देति, एवमादी कातुं ण कप्पति, फोडिकम्मं-उड्डत्तणं हलेण वा भूमीफोडणं, दंतवाणिज्जं-पुव्विं चेव पुलिंदाणं मुल्लं देति दंते देज्जाह त्ति, पच्छा पुलिंदा हत्थी घातेंति, अचिरा स वाणियाओ एहिइ त्ति कातुं, एवं धीवरगाणं संखमुल्लं देंति, एवमादी ण कप्पति, पुव्वाणीतं किणति, लक्खणवाणिज्जेऽवि एते चेव दोसा-तत्थ किमिया होंति, रसवाणिज्ज-कल्लवालत्तणं तत्थ सुरादिपाणे बहुदोसा मारणअक्कोसवधादी तम्हा ण कप्पति, विसवाणिज्जं-विसविक्कयो से ण कप्पति, तेण बहूण जीवाण विराधणा, केसवाणिज्जं-दासीओ गहाय अण्णत्थ विक्किणति जत्थ अग्घंति, एत्थ वि अणेगे दोसा परवसित्तादयो, जंतपीलणकम्मं-तेल्लियं जंतं उच्छुजंतं चक्कादि तं पि ण कप्पति, णिल्लंछणकम्मं-वद्धेउं गोणादि ण कप्पति, दवग्गिदावणताकम्मं-वणदवं देति छेत्तरक्खणणिमित्तं जधा उत्तरावहे पच्छा दड्ढे तरुणगं तणं उट्ठेति, तत्थ सत्ताणं सत्तसहस्साण वधो, सरदहतलागपरिसोसणताकम्मं-सरदहतलागादीणि सोसेति पच्छा वाविज्जंति, एवं ण कप्पति, असदीपोसणताकम्मं-असतीओ पोसेति जधा गोल्लविसए जोणीपोसगा दासीओ पोसंति तासिं भार्डि गेण्हेंति, प्रदर्शनं चैतद् बहुसावद्यानां कर्मणां एवंजातीयानां, न पुनः परिगणनमिति भावार्थः ।

उक्तं सातिचारं द्वितीयं गुणव्रतं, साम्प्रतं तृतीयमाह—

श्लो. १४६५ दवदाण[११] जंतवाहण[१२] निल्लंछण[१३] असइपोस[१४]सहियाणि ।
सजलासय[१५]सोसाणि अ कम्माइँ हवंति पन्नरस ॥२६६॥ (प्रव.सा.द्वा.६)

तथा दवदानं यन्त्रवाहनं निर्लाञ्छनं असतीपोषः, एतैः सहितानि, सह जलाशयशोषेण वर्तन्ते सजलाशयशोषाणि, चः समुच्चये, कर्माणि भवन्ति पञ्चदश, तत्र 'दवदानं' दवस्य-दवाग्नेस्तृणादि-दहननिमित्तं दानं-वितरणं दवदानं, तच्च द्विधा भवति-व्यसनात्-फलनिरपेक्षप्रवृत्तिरूपात्, यथा वनेचरा एवमेव तृणादावग्निं ज्वालयन्ति पुण्यबुद्ध्या वा-यथा मदीयमरणसमये इयन्तो मम श्रेयोऽर्थं धर्मदीपोत्सवाः करणीया इति, अथवा जीर्णतृणदाहे सति नवतृणाङ्कुरोद्भेदाद्गावश्चरन्तीति, क्षेत्रे वा

शस्यसम्पत्तिनिमित्तमग्निं ज्वालयन्तीति, यदुक्तम्–

''वणदवदाणमरण्णे दव्वग्गिदाणं तु जीववहजणयं ।'' ११॥

[अरण्ये वनदवदानं दवाग्निदानं जीववधजनकम् ।]

'**यन्त्रवाहन**'मिति तिलेक्षुसर्षपैरण्डफलादिपीलननिमित्तं तत्तद्यन्त्राणां-घाणकादीनां अरघट्टादिजलयन्त्राणां च वाहनं-व्यापारणं शिलोदूखलमुशलादीनां विक्रयणं वा यन्त्रवाहनं, यन्त्रपीलनकर्मेत्यर्थः, उक्तञ्च–

''सिलउक्खलमुसलघरट्टकंकयाईण जमिह विक्किणणं ।
उच्छुत्तिलपीलणं वा तं बिंती जंतपीलणयं ॥१॥''

[शिलोदूखलमुशलघरट्टकंकटादीनां यदिह विक्रयणम् ।
इक्षुतिलपीडनं वा तत् ब्रुवते यन्त्रपीडनकर्म ॥१॥]

एतच्च पीलनीयतिलादिक्षोदात्तद्गतजीववधाच्च सदोषं, यतो लौकिका अपि भाषन्ते–

''दशसूनासमश्चक्री, दशचक्रिसमो ध्वजः ।
दशध्वजसमा वेश्या, दशवेश्यासमो नृपः ॥१॥'' १२ ॥ इति ।

'**निर्लाञ्छन**'मिति नितरां लाञ्छनं-अङ्गावयवच्छेदस्तेन कर्म-जीविका निर्लाञ्छनकर्म, तत्र गोमहिषोष्ट्रादीनां नासावेधो, गवाश्वादीनामङ्कनं, तेषामेव वर्धितकीकरणं, करभाणां पृष्ठगालनं, गवां च कर्णकम्बलच्छेदनादिकमिति, यदाहुः–

''नासावेधोऽङ्कनं मुष्कच्छेदनं पृष्ठगालनम् ।
कर्णकम्बलविच्छेदो, निर्लाञ्छनमुदीरितम् ॥१॥'' १३॥ इति ।

'**असतीपोष**' इति असत्यो-दुःशीलास्तासां दासीसारिकादीनां पोषणं पोषोऽसतीपोषः, तत्र लिङ्गमतन्त्रं तेन शुकश्वादीनामपि पुंसां पोषणमसतीपोषः, यदवाचि–

''मज्जारमोरमक्कडकुक्कुडसालहीअकुक्कुराईणं ।
दुट्ठित्थिनपुंसाईण पोसणं असइपोसणयं ॥१॥'' १४॥ इति ।

[मार्जारमयूरमर्कटकुर्कुटशुककुर्कुरादीनाम् । दुष्टस्त्रीनपुंसकादीनां पोषणमसतीपोषणम् ॥१॥]

एषां च पोषणं पापहेतुरेवेति ।

तथा '**जलाशयशोषो**' जलाशयानां-सरःप्रभृतीनां शोषणमिति, तदुक्तं–

''सरदहतलायसोसो बहुजलयरजीवखयगारी'' १५॥

[सरोद्रहतटाकशोषो बहुजलचरजीवक्षयकारी ।]

एतानि च पञ्चदशापि कर्मादानानि प्रतिषिद्धषड्विधजीववधादिमहासावद्यहेतुत्वाद्वर्जनीयानि, उपलक्षणं चैतद्बहुसावद्यानां कर्मणामेवज्ञातीयानां न पुनः परिगणनमिदमिति ॥२६६॥

श्लो. १४७४ अणत्थदंडे चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा-अवज्झाणायरिए पमायायरिए हिंसप्पयाणे पावकम्मोवएसे, अणत्थदंडवेरमणस्स समणोवा० इमे पञ्च० तं जहा-कंदप्पे कुक्कुइए मोहरिए संजुत्ताहिगरणे उवभोगपरिभोगाइरेगे ८॥ (सूत्रम्) (आव०नि०)

अस्य व्याख्या—अनर्थदण्डशब्दार्थः-अर्थः-प्रयोजनं, गृहस्थस्य क्षेत्रवास्तुधनशरीरपरिजनादिविषयं तदर्थ आरम्भो-भूतोपमर्दोऽर्थदण्डः, दण्डो निग्रहो यातना विनाश इति पर्यायाः, अर्थेन-प्रयोजनेन दण्डोऽर्थदण्डः, स चैष भूतविषयः उपमर्द्दनलक्षणो दण्डः, क्षेत्रादिप्रयोजनमपेक्षमाणोऽर्थदण्ड उच्यते, तद्विपरीतोऽनर्थदण्डः-प्रयोजननिरपेक्षः, अनर्थः अप्रयोजनमनुपयोगो निष्कारणतेति पर्यायाः, विनैव कारणेन भूतानि दण्डयति सः, तथा कुठारेण प्रहृष्टस्तरुस्कन्धशाखादिषु प्रहरति कृकलासपिपीलिकादीन् व्यापादयति कृतसङ्कल्पः, न च तद्व्यापादने किञ्चिदतिशयोपकारि प्रयोजनं येन विना गार्हस्थ्यं प्रतिपालयितुं न शक्यते, सोऽयमनर्थदण्डः चतुर्विधः प्रज्ञप्तः, तद्यथा—'अपध्यानाचरित' इति अपध्यानेनाचरितः अपध्यानाचरितः समासः, अप्रशस्तं ध्यानं अपध्यानं, इह देवदत्तश्रावककोङ्कणकसाधुप्रभृतयो ज्ञापकं, 'प्रमादाचरितः' प्रमादेनाचरित इति विग्रहः, प्रमादस्तु मद्यादिः पञ्चधा, तथा चोक्तम्—''**मज्जं विसयकसाया विकथा णिद्दा य पंचमी भणिया**'' अनर्थदण्डत्वं चास्योक्तशब्दार्थद्वारेण स्वबुद्ध्या भावनीयं, 'हिंसाप्रदानं' इह हिंसाहेतुत्वादायुधानलविषादयो हिंसोच्यते, कारणे कार्योपचारात्, तेषां प्रदानमन्यस्मै क्रोधाभिभूतायानभिभूताय वा न कल्पते, प्रदाने त्वनर्थदण्ड इति, 'पापकर्मोपदेशः' पातयति नरकादाविति पापं तत्प्रधानं कर्म पापकर्म तस्योपदेश इति समासः, यथा—कृष्यादि कुरुत, तथा चोक्तं—

''**छित्ताणि कसध गोणे दमेध, इच्चादि सावगजणस्स ।**
णो कप्पति उवदिसिउं, जाणियजिणवयणसारस्स ॥१॥''

इदमतिचाररहितमनुपालनीयमित्यतोऽस्यैवातिचाराभिधित्सयाऽऽह-'अणट्ठदंडे'त्यादि, अनर्थदण्डविरमणस्य श्रमणोपासकेनामी पञ्चातिचारा ज्ञातव्याः न समाचरितव्याः, तद्यथा-कन्दर्पः-कामः तद्धेतुर्विशिष्टो वाक्प्रयोगः कन्दर्प उच्यते, रागोद्रेकात् प्रहासमिश्रो मोहोद्दीपको नर्मेति भावः । इह सामाचारी-सावगस्स अट्टट्टहासो न वट्टति, जति णाम हसियव्वं तो ईसिं चेव विहसितव्वं ति । कौकुच्यं-कुत्सितसङ्कोचनादिक्रियायुक्तः कुचः कुकुचः तद्भावः कौकुच्यं-अनेकप्रकारा मुखनयनोष्ठकरचरणभ्रूविकारपूर्विका परिहासादिजनिका भाण्डादीनामिव विडम्बनक्रियेत्यर्थः । एत्थ सामायारी-तारिसगाणि भासितुं ण कप्पति जारिसेहिं लोगस्स हासो उप्पज्जति, एवं गतीए ठाणेण वा ठातितुं ति । मौखर्यं-धार्ष्ट्यप्रायमसत्यासम्बद्धप्रलापित्वमुच्यते, मुहेण वा अरिमाणेति, जधा कुमारामच्चेणं सो चारभडओ विसज्जितो, रण्णा णिवेदितं, ताए जीविकाए वित्ति दिण्णा, अण्णता

रुट्ठेण मारितो कुमारामच्चो । संयुक्ताधिकरणं-अधिक्रियते नरकादिष्वनेनेत्यधिकरणं-वास्युदूखल-शिलापुत्रकगोधूमयन्त्रकादि संयुक्तं-अर्थक्रियाकरणयोग्यं संयुक्तं च तदधिकरणं चेति समासः । एत्थ समाचारी-सावगेण संजुत्ताणि चेव सगडादीनि न धरेतव्वाणि, एवं वासीपरसुमादिसु विभासा । 'उपभोगपरिभोगातिरेक' इति उपभोगपरिभोगशब्दार्थो निरूपित एव तदतिरेकः । एत्थ वि सामायारी-उवभोगातिरित्तं यदि तेल्लामलए बहुए गेण्हति ततो बहुगा ण्हायगा वच्चंति तस्स लोलियाए, अण्हे वि अण्हायगा ण्हायंति, एत्थ पूतरगाआउक्कायवधो, एवं पुप्फतंबोलमादिविभासा, एवं ण वट्टति, का विधी सावगस्स उवभोगे ण्हाणे ?, घरे ण्हायव्वं णत्थि ताधे तेल्लामलएहिं सीसं घंसित्ता सव्वे साडेतूणं ताहे तडागाईतडे निविट्ठो अंजलिहि ण्हाति, एवं जेसु य पुप्फेसु पुप्फकुंथुताणि ताणि परिहरति ।

श्लो. १५०३ निस्संकिय[१] निक्कंखिय[२], निव्वितिगिच्छा[३] अमूढदिट्ठी[४] य ।
उववूह[५] थिरीकरणे[६], वच्छल्ल[७] पभावणे[८] अट्ठ ॥२६८॥ (प्रव.सा.द्वा.६)

'**निस्संकिये**'त्यादि, शङ्कितं शङ्का-सन्देहस्तस्याभावो निःशङ्कितं, दर्शनस्य-सम्यक्त्व-स्याचारः १।

इत्येवमन्यत्रापि, तथा काङ्क्षितं काङ्क्षा-अन्यान्यदर्शनग्रहः, तदभावो निष्काङ्क्षितम् २।

तथा विचिकित्सा-मतिविभ्रमः, युक्त्यागमोपपन्नेऽप्यर्थे फलं प्रतिसम्मोहः, तदभावो निर्विचिकित्सं यद्वा विद्वज्जुगुप्सा-मलमलिना एते इत्यादि साधुजुगुप्सा, तदभावो निर्विद्वज्जुगुप्सं, तत एतेषां द्वन्द्वः, पुँल्लिङ्गनिर्देशश्च प्राकृतत्वात् ३।

तथा अमूढा-तपोविद्यातिशयादिकुतीर्थिकर्द्धिदर्शनेऽप्यमोहा-स्वभावादविचलिता सा च सा दृष्टिश्च-सम्यग्दर्शनं अमूढदृष्टिः, अथवा निर्गताः शङ्कितादिभ्यो ये ते निःशङ्कितनिष्काङ्क्षित-निर्विचिकित्सा जीवाः, अमूढा दृष्टिरस्येत्येवममूढदृष्टिश्च जीव एव, तत एते धर्मधर्मिणोरभेदोपचारा-द्दर्शनाचारभेदा भवन्तीति ४।

तथा उपबृंहणं उपबृंहा-समानधार्मिकाणां क्षपणावैयावृत्त्यादिसद्गुणप्रशंसनेन तत्तद्गुण-वृद्धिकरणम् ५।

तथा स्थिरीकरणं तु धर्माद्विषीदतां तत्रैव चाटुवचनचातुर्यादवस्थापनं, उपबृंहा च स्थिरीकरणं च उपबृंहास्थिरीकरणे ६।

तथा वात्सल्यं च प्रभावना च वात्सल्यप्रभावने, तत्र वात्सल्यं-समानदेवगुरुधर्माणां भोजननिवसनदानोपकारादिभिः सम्माननम् ७।

प्रभावना-धर्मकथाप्रतिवादिनिर्जयदुष्करतपश्चरणकरणादिभिर्जिनप्रवचनप्रकाशनं, यद्यपि च प्रवचनं शाश्वतत्वात् तीर्थकरभाषितत्वाद् वा सुरासुरनमस्कृतत्वाद्वा स्वयमेव दीप्यते तथापि दर्शन-

शुद्धिमात्मनोऽभीप्सुर्यो येन गुणेनाधिकः स तेन तत्प्रवचनं प्रभावयति, यथा भगवदार्य**वज्रस्वामि**-प्रभृतिक इति ८। एते अष्टौ दर्शनाचाराः ॥२६८॥ (प्रव.सा.द्वा.६)

श्लो. १५६४ कारणरूवं कज्जं, णेगंतो सिंगओऽवि होइ सरो ।
जायइ तह गोलोमा, विलोमओ एत्थ दुव्व त्ति ॥६१६॥ (आव०नि०)

व्याख्या—न च नियमतः कारणानुरूपं कार्यमुत्पद्यते, वैसादृश्यस्यापि दर्शनात्, तद्यथा-श्रृङ्गाच्छरो जायते, तस्मादेव सर्षपानुलिप्तात् तृणानीति, तथा गोलोमाविलोमेभ्यो दूर्वेति, एवमनियमः, अथवा कारणानुरूपकार्यपक्षेऽपि भवान्तरवैचित्र्यमस्य युक्तमेव, यतो भवाङ्कुरबीजं सौम्य ! सात्मकं कर्म, तच्च तिर्यग्नरनारकामराद्यायुष्कभेदभिन्नत्वात् चित्रमेव, अतः कारणवैचित्र्यादेव कार्य्यवैचित्र्य-मिति, वस्तुस्थित्या तु सौम्य ! न किञ्चिदिह लोके परलोके वा सर्वथा समानमसमानं वाऽस्ति, तथा चेह युवा निजैरप्यतीतानागतैर्बालवृद्धादिपर्यायैः सर्वथा न समानः, अवस्थाभेदग्रहणात्, नापि सर्वथाऽसमानः, सत्ताद्यनुगमदर्शनाद्, एवं परलोकेऽपि मनुजो देवत्वमापन्नो न सर्वथा समानोऽसमानो वा, इत्थं चैतदङ्गीकर्त्तव्यं, अन्यथा दानदयादीनां वैयर्थ्यप्रसङ्गात् ।

वळी, कारणने अनुरूप ज कार्य थाय एवो कोई नियम नथी कारण के वैसादृश्य पण देखाय छे. ते आ प्रमाणे के शृंग (वनस्पतिविशेष)मांथी शरनामनी वनस्पति थाय छे. (आ पंक्तिनो बे रीत अर्थ संभवित छे - (१) व्याकरणनी दृष्टिए—शिंगडामांथी बाण उत्पन्न थाय छे. (२) पू. अरुणविजयजी कृत गणधरवादना अनुवादमां शृंग ए शिंगनामनी वनस्पतिविशेष छे अने तेमांथी शर एटले शरगट नामनी (अत्यारे पण उत्तरप्रदेशमां थती) वनस्पति उत्पन्न थाय छे, एवो अर्थ करेल छे. आ बेमांथी बीजा नंबरनो अर्थ बंधबेसतो लागे छे अने कारण के आगळ 'तस्मादेव सर्षपानुलिप्तात्' पंक्तिमां शृंग शब्दनुं 'सर्षपानुलिप्तात्' विशेषण आवेल छे. तेनाथी जणाय छे के अहीं शृंगशब्दथी वनस्पतिविशेष ज अभिप्रेत होवुं जोईए.)

वळी जो ते शृंगने ज सरसवनो लेप करवामां आवे तो, तेमांथी अमुक प्रकारनुं घास उत्पन्न थाय छे. तथा गाय अने बकरीना वाळमांथी दूर्वा नामनुं घास उत्पन्न थाय छे. माटे कारणानुरूप कार्य होय एवो कोई नियम नथी. अथवा मानी लईए के कारणानुरूप कार्य थाय छे तो पण आ जीवनो भवान्तर वैचित्र्य युक्त ज छे कारण के हे सौम्य ! भवांकुरनुं बीज आत्माने बंधायेलुं कर्म छे. अने ते कर्म तिर्यंच-नर-नारक-देवादि आयुष्यना भेदथी जुदुं जुदुं होवाथी चित्र छे. आम कर्मनुं वैचित्र्य होवाथी कार्यनुं पण वैचित्र्य छे. (तेथी आ भवमां जेवा प्रकारनुं कर्म बंधाशे, तेने अनुरूप परभवमां गति थशे माटे कारणानुरूप कार्य माने तो पण दोष नथी.)

श्लो. १६०४ रयरोयसेयरहिओ देहो १ धवलाइं मंसरुहिराइं २ ।
आहारानीहारा अद्दिस्सा ३ सुरहिणो सासा ४ ॥४४१॥

जम्माउ इमे चउरो एक्कारसकम्मखयभवा इण्हिं ।
खेत्ते जोयणमेत्ते तिजयजणो माइ बहुओऽवि ५ ॥४४२॥

नियभासाए नरतिरिसुराण धम्मावबोहया वाणी ६ ।
पुव्वभवा रोगा उवसमंति ७ न य हुंति वेराइं ८ ॥४४३॥

दुब्भिक्ख ९ डमर १० दुम्मारि ११ ईई १२ अइवुट्ठि १३ अणभिवुट्ठीओ १४ ।
हुंति न जियबहुतरणी पसरइ भामंडलुज्जोओ १५ ॥४४४॥

सुरइयाणिगुवीसा मणिमयसीहासणं सपयवीढं १६ ।
छत्तत्तय १७ इंदद्धय १८ सियचामर १९ धम्मचक्काइं २० ॥४४५॥

सह जगगुरुणा गयणट्ठियाइं पंचवि इमाइं वियरंति ।
पाउब्भवइ असोओ २१ चिट्ठइ जत्थप्पहू तत्थ ॥४४६॥

चउमुहमुत्तिचउक्कं २२ मणिकंचणतारइयसालतिगं २३ ।
नवकणयपंकयाइं २४ अहोमुहा कंटया हुंति २५ ॥४४७॥

निच्चमवट्ठियमित्ता पहुणो चिट्ठंति केसरोमनहा २६ ।
इंदियअत्था पंचवि मणोरमा २७ हुंति छप्पि रिऊ २८ ॥४४८॥

गंधोदयस्स वुट्ठी २९ वुट्ठी कुसुमाण पंचवन्नाणं ३० ।
दिंति पयाहिण सउणा ३१ पहुणो पवणोऽवि अणुकूलो ३२ ॥४४९॥

पणमंति दुमा ३३ वज्जंति दुंदुहीओ गहरीघोसाओ ३४ ।
चउतीसाइसयाणं सव्वजिणिंदाण हुंति इमा ॥४५०॥ (प्रव.सा.द्वा.४०)

व्याख्या–'**रये**'त्यादिगाथादशकं, रजो-मलः रोगो-व्याधिः खेदः-श्रमजं शरीरजलं तैर्विरहितः-त्यक्तः, उपलक्षणत्वाल्लोकोत्तररूपगंधरसबंधुरश्च तीर्थकृतां देहः-शरीरं, तथा गोक्षीरधारावद्धवलं-पाण्डुरं अविश्रं च मांसरुधिरं, तथा आहारः-अभ्यवहरणं नीहारो-मूत्रपुरीषोत्सर्गस्तौ क्रियमाणौ न दृश्येते इत्यदृश्यौ मांसचक्षुषा, न पुनरवध्यादिलोचनेन पुंसा, तथा विकचोत्पलवत्सुरभयः श्वासा-उच्छ्वासनिःश्वासा इत्येते चत्वारोऽप्यतिशया जिनानां जन्मतोऽपि जाताः। इदानीमेकादशातिशयाः 'कर्मक्षयभवाः' कर्मणां-ज्ञानावरणादीनां चतुर्णां घातिकर्मणां क्षयाज्जाताः कथ्यन्त इति शेषः, तत्र 'योजनमात्रे' योजनप्रमाणेऽपि 'क्षेत्रे' समवसरणभुवि 'त्रिजगज्जनः' सुरनरतिर्यग्जनः 'प्रभूतोऽपि' कोटीकोटीप्रमाणोऽपि 'माति' परस्परासम्बाधया सुखेनावतिष्ठते, तथा वाणी अर्धमागधीभाषा भगवताऽभिधीयमाना नरतिर्यक्सुराणां प्रत्येकं 'निजनिजभाषया' स्वस्वभाषया कृत्वा धर्मावबोधका धर्मावबोधदा वा भवति, अयमर्थः-

योजनव्यापिनी एकस्वरूपाऽपि भगवतो भारती वारिदविमुक्तवारिवत्तत्तदाश्रयानुरूपतया परिणमति, यत् उक्तम्–

देवा दैवीं नरा नारीं, शबराश्चापि शाबरीम् ।
तिर्यञ्चोऽपि हि तैरश्चीं, मेनिरे भगवद्गिरम् ॥१॥''

न ह्येवंविधभुवनाद्भुतमतिशयमन्तरेण युगपदनेकसत्त्वोपकारः शक्यते कर्तुमिति, तथा पूर्वोत्पन्ना रोगाः-ज्वरारोचकादय उपशाम्यन्ति अपूर्वाश्च नोत्पद्यन्ते, तथा न च - नैव भवन्ति पूर्वभवनिबद्धानि जातिप्रत्ययानि च वैराणि-परस्परविरोधाः, तथा दुर्भिक्षं-दुष्कालः तथा डमरः-स्वचक्रपरचक्रकृतो विप्लवः तथा दुष्टदेवतादिकृतं सर्वगतं मरणं दुर्मारिः तथा ईतयः-प्रचुरशलभशुकमूषकाद्या धान्यादिविनाशिकाः तथाऽतिवृष्टिः-अतिजलपातः तथाऽनावृष्टिः-सर्वथा जलपाताभावः, एते च रोगादयो यत्र यत्र भगवान् विहरति तत्र तत्र चतसृषु दिक्षु प्रत्येकं पञ्च-विंशतियोजनमध्ये न जायन्ते, तदुक्तं **समवायाङ्गे** -

''जओ जओऽवि य णं अरिहंता भगवंतो विहरंति तओ तओऽवि य णं जोअण-पणवीसाए णं ईई ण भवइ, मारी न हवइ, परचक्कं न भवइ, सचक्कं न भवइ, अइवुट्ठी न भवइ, अणावुट्ठी न भवइ, दुब्भिक्खं न भवइ, पुव्वुप्पण्णावि य णं उप्पाइया वाही खिप्पामेव उवसमंति'' ।

[यत्र यत्रापि च अर्हन्तो भगवन्तो विहरन्ति तत्र तत्रापि पञ्चविंशतौ योजनेषु ईतयो न भवन्ति मार्यो न भवन्ति स्वचक्रं न भवति परचक्रं न भवति अतिवृष्टिर्न भवति अनावृष्टिर्न भवति दुर्भिक्षं न भवति पूर्वोत्पन्ना अपि च व्याधयः क्षिप्रमेवोपशाम्यन्ति] त्ति, **स्थानांगटीका**यामपि दशस्थानके लिखितं–

''महावीरस्य भगवतः स्वप्रभावप्रशमितयोजनशतमध्यगतवैरिमारिविड्वरदुर्भिक्षाद्युप-द्रवस्यापि'' इति, तथा जिनशिरसः पश्चाद्भागेऽतिभास्वरतया जितबहुतरणिः-तिरस्कृतद्वादशार्कतेजाः प्रसरति भामण्डलस्य-प्रभापटलस्योद्योतः ।

अथ सुररचितानां-देवकृतानामतिशयानामेकोनविंशतिः कथ्यते, तत्र आकाशवदत्यन्तं स्वच्छो योऽसौ स्फटिकमणिस्तन्मयं सिंहासनं सपादपीठं-पादपीठयुक्तं १ तथा छत्रत्रयमतिपवित्रं २ तथा जिनस्य पुरतोऽनेकलघुपताकिकासहस्रसुन्दरः समुत्तुङ्गो निस्सपत्नरत्नमयः शेषध्वजापेक्षयाऽति-महत्त्वादिन्द्रश्चासौ ध्वजश्च इन्द्रत्वसूचको वा ध्वज इन्द्रध्वजः ३ तथोभयोः पार्श्वयोर्यक्षहस्तगते सिते चामरे ४ तथा पुरतः पद्मप्रतिष्ठितं स्फुरत्किरणचक्रं धर्मप्रकाशकं चक्रं धर्मचक्रं ५ एतानि च सिंहासनादीनि पञ्चापि यत्र यत्र जगद्गुरुर्विचरति तत्र तत्र गगनगतानि गच्छन्ति, तथा यत्र यत्र प्रभुस्तिष्ठति तत्र तत्र विचित्रपत्रपुष्पपल्लवस्पृहणीयच्छत्रध्वजघण्टापताकादिपरिवृतः प्रादुर्भवत्यशोकवृक्ष ६ तथा चतुर्मुखं चतुर्दिशं मूर्तिचतुष्कं, तत्र पूर्वाभिमुखं भगवान् स्वयमुपविशति शेषासु च तिसृषु दिक्षु प्रतिरूपकाणि तीर्थकराकृतिमन्ति तीर्थकरप्रभावादेव च तीर्थकररूपानुरूपाणि सिंहासनादि-

युक्तानि देवकृतानि भवन्ति शेषदेवादीनामपि अस्माकं स्वयं कथयतीति प्रतिपत्त्यर्थं ७ तथा समवसरणे मणिकाञ्चनताररचितं शालत्रिकं, तत्र तीर्थङ्करप्रत्यासन्नप्रथमप्राकारो नानाप्रकारनि:-सपत्नरत्नमयो वैमानिकसुरैर्विरच्यते । द्वितीयो मध्यवर्ती कमनीयकनकमयो ज्योतिष्किविबुधै-र्विधीयते । तृतीयस्तु बहिर्भूतस्तारतरकान्तिराजितरजतमयो भवनपतिदेवैर्विरचितन्यते ८॥

तथा 'नवकनकपङ्कजानि' नवसङ्ख्यानि काञ्चन-कमलानि नवनीतस्पर्शानि क्रियन्ते, तत्र च द्वयोर्भगवान् स्वकीयक्रमकमलयुगलं विन्यस्य विचरति अन्यानि च सप्त पद्मानि पृष्ठतस्तिष्ठन्ति तेषां च यद्यत्पश्चिमं तत्तत्पादन्यासं कुर्वतो भगवत: पुरतो भवति ९ तथा यत्र यत्र भगवान् विहरति तत्र तत्राधोमुखा: कण्टका: सम्पद्यन्ते १० तथा नित्यं-सर्वदा अवस्थितमात्रा-अवृद्धिस्वभावा: प्रभो:-भगवतस्तिष्ठन्ति-आसते केशरोमनखा, केशा:-शिर:कूर्चसम्भवा: रोमाणि-शेषशरीरसम्भवानि नखा:-पाणिपादजा: ११ तथा इन्द्रियार्था-विषया: पञ्चापि-स्पर्शरसरूपगन्धशब्दस्वरूपा अमनोज्ञानामभावेन मनोज्ञानां च प्रादुर्भावेन मनोरमा-मन:प्रीणका भवन्ति १२ तथा षडपि ऋतवो-वसन्ताद्या: शरीराप्यायकसुखस्पर्शादिसम्पादकत्वेन सर्वदाविकाशिकुसुमादिसमृद्ध्या च मनोरमा अनुकूला: सम्पद्यन्ते १३ तथा यत्र भगवांस्तिष्ठति तत्र पांशुप्रसरप्रशमनार्थं गन्धोदकवृष्टिर्घनघन-सारादिमिश्रमनोहारिवारिवृष्टि: १४ तथा वृष्टि: कुसुमानांमन्दारपारिजातकचम्पकादीनां पञ्चवर्णानां-श्वेतरक्तपीतनीलकालानां १५ तथा शकुना:-पक्षिणो ददति प्रदक्षिणां, यत्र भगवान् सञ्चरति तत्र चाषशिखण्डिप्रभृतय: पक्षिण: प्रदक्षिणगतयो भवन्तीत्यर्थ: १६ तथा पवन:-संवर्तकवातो योजनं यावत्क्षेत्रशुद्धिविधायकत्वेन सुरभिशीतलमन्दत्वेन च अनुकूल:-सुखदो भवति, यदुक्तं **समवायाङ्गे**—

''सीयलेणं सुहफासेणं सुरहिणा मारुएणं जोयणपरिमंडलं सव्वओ समंता संप-मज्जिज्जइ''त्ति, [शीतलेन सुखस्पर्शेन सुरभिणा मारुतेन योजनपरिमण्डलं सर्वत: समन्तात् संप्रमार्ज्यते] १७ तथा यत्र भगवान् व्रजति तत्र द्रुमा:-पादपा: प्रणमन्तिनम्रा भवन्ति १८ तथा यत्र भगवान् सलीलं सञ्चरति तत्र वाद्यन्ते दुन्दुभयो-महत्यो ढक्का: सजलजलधरवद्गम्भीर-भुवनव्यापिघोषा: १९ इति सर्वजिनेन्द्रातिशयानां चतुस्त्रिंशत् चतुर्णामेकादशानामेकोनविंशतेश्च मीलनेन भवन्तीति । इह च **यत्समवायाङ्गेन** सह किञ्चिदन्यथात्वमपि दृश्यते तन्मतान्तरमवगन्तव्यं, मतान्तरबीजानि तु सर्वज्ञविज्ञेयानीति ॥४३५-४५०॥

श्लो. १६८० अणसणमूणोयरिया[१][२], वित्तीसंखेवणं[३] रसच्चाओ[४] ।
कायकिलेसो संलीणया[५] य, बज्झो तवो होइ ॥२७०॥ (प्रव.सा.द्वा.६)

'**अणसणे**'त्यादि गाथाद्वयं, तत्र अश्यत इति अशनं न अशनं अनशनमाहारत्याग इत्यर्थ: तत्पुनर्द्विधा-इत्वरं यावत्कथिकं च, तत्रेत्वरं-परिमितकालं, तत्पुन: श्रीमहावीरतीर्थे नमस्कारसहितादि षण्मासान्तं श्रीनाभेयतीर्थे संवत्सरपर्यन्तं, मध्यमतीर्थकरतीर्थे त्वष्ट मासान् यावत्, यावत्कथिकं पुनराजन्मभावि, तत्पुनश्चेष्टाभेदोपाधिविशेषतस्त्रिधा, यथा पादपोपगमनं इङ्गितमरणं भक्तपरिज्ञा चेति,

एतेषां त्रयाणामपि स्वरूपं सप्तपञ्चाशदधिकशततमद्वारादवसेयमिति १।

'**ऊणोअरिय**'त्ति ऊनमुदरं ऊनोदरं तस्य करणं भावे वुञि ऊणोदरिका, व्युत्पत्तिरेवेयं, अस्य प्रवृत्तिस्तूनतामात्रे, सा द्विधा-द्रव्यतो भावतश्च, द्रव्यत उपकरणभक्तपानविषया, तत्र उपकरण-विषयोनोदरिका जिनकल्पिकादीनां तदभ्यासपरायणानां वाऽवबोद्धव्या, न पुनरन्येषां, तेषामुपध्य-भावे समग्रसंयमपालनाऽभावात्, अथवाऽन्येषामप्यतिरिक्तोपकरणाग्रहणतो भवत्येवोनोदरता, यत उक्तम्-

''**जं वट्टइ उवगारे उवगरणं तं च होइ उवगरणं ।**
अइरित्तं अहिगरणं अजओ अजयं परिहरंतो ॥१॥''

[उपकरणं यद्वर्त्तते उपकारे तदेव भवत्युपकरणम् ।
अतिरिक्तमधिकरणं अयतोऽयतं भुञ्जन् ॥१॥] इति,

'**परिहरंतो**'त्ति आसेवमानः 'परिहारो परिभोगो' इति वचनात्, ततोऽयतश्च यत्परिभुञ्जानो भवतीत्यर्थः, भक्तपानोनोदरिका पुनरात्मीयाहारमानपरित्यागतो विज्ञेया, आहारमानं च-

''**बत्तीसं किर कवला आहारो कुच्छिपूरओ भणिओ ।**
पुरिसस्स महिलिआए अट्ठावीसं भवे कवला ॥१॥
कवलस्स य परिमाणं कुक्कुडिअंडगपमाणमित्तं तु ।
जं वा अविगियवयणो वयणम्मि छुभिज्ज वीसंतो ॥२॥'' इत्यादि

[द्वात्रिंशत् किल कवला आहारः कुक्षिपूरको भणितः ।
पुरुषस्य महेलाया अष्टाविंशतिः कवला भवेयुः ॥१॥
कवलस्य च प्रमाणं कुर्क्कुट्यण्डकप्रमाणमात्रमेव ।
यद्वा अविकृतवदनो वदने क्षिपेद्विश्वस्तः ॥२॥]

सा च अल्पाहारादिभेदतः पञ्चविधा भवति, यदाहुः-

''**अप्पाहार १ अवड्ढा २ दुभाग ३ पत्ता ४ तहेव किंचूणा ५ ।**
अट्ठ दुवालस सोलस चउवीस तहेक्कतीसा य ॥१॥''

अयमत्र भावार्थः-अल्पाहारोनोदरिका नाम एककवलादारभ्य यावदष्टौ कवला इति, अत्र चैककवलमाना जघन्या अष्टकवलमाना पुनरुत्कृष्टा द्व्यादिकवलमानभेदा मध्यमा, एवं नवभ्यः कवलेभ्य आरभ्य यावद् द्वादश कवलास्तावदपार्धोनोदरिका, अत्रापि नवकवला जघन्या द्वादश-कवलोत्कृष्टा शेषा तु मध्यमा, एवं त्रयोदशभ्य आरभ्य यावत् षोडश कवलाः तावद्द्विभागोनोदरिका,

जघन्यादिभेदत्रयभावना पूर्ववत्, एवं सप्तदशभ्य आरभ्य यावत् चतुर्विंशतिः कवलास्तावत् प्राप्तोनोदरिका, जघन्यादित्रयभावना अत्रापि पूर्ववत्, एवं पञ्चविंशतेरारभ्य यावदेकत्रिंशत्कवलास्तावत् किञ्चिदूनोदरिका, जघन्यादिभेदत्रयं पूर्ववद्भावनीयं, एवमनेनानुसारेण पानेऽपि भणनीया, तथा स्त्रीणामप्येवं पुरुषानुसारेण द्रष्टव्या, भावत ऊनोदरिका क्रोधादिपरित्यागः, यत उक्तम्—

''कोहाईणमणुदिणं चाओ जिणवयणभावणाओ य ।
भावेणोणोदरिआ पन्नत्ता वीयरागेहिं ॥१॥''

[क्रोधादीनामनुदिनं त्यागो जिनवचनभावनाश्च ।
भावेनोनोदरिका प्रज्ञप्ता वीतरागैः ॥१॥] २।

'वित्तीसंखेवणं'ति वर्तते अनयेति वृत्तिः-भैक्ष्यं तस्याः सङ्क्षेपणं-सङ्कोचः तच्च गोचराभिग्रहरूपं, ते च गोचरविषया अभिग्रहा अनेकरूपाः, तद्यथा—द्रव्यतः क्षेत्रतः कालतो भावतश्च, तत्र द्रव्यतो मया अद्य भिक्षायां गतेन लेपकार्याद्येव कुन्ताग्रादिसंस्थितमण्डकादि वा ग्राह्यमित्यादयः, क्षेत्रत एकद्वित्र्यादिगृहस्वग्रामपरग्रामपेटार्धपेटादिलब्धं दायकेन देहलीजङ्घयोरन्तर्विधाय वा दत्तं गृहीष्यामीत्यादयः, कालतः पूर्वाह्णादौ सकलभिक्षाचरनिवर्तनावसरे वा पर्यटितव्यमित्यादयः, भावतो हसनगानरोदनादिक्रियाप्रवृत्तो बद्धो वा यदि प्रतिलाभयिष्यति ततोऽहमादास्ये न त्वन्यथेत्येवमादयः, उक्तं च—

''लेवडमलेवडं वा अमुगं दव्वं च अज्ज घेच्छामि ।
अमुगेण व दव्वेणं अह दव्वाभिग्गहो नाम ॥१॥

'अमुगेणं'ति चट्टुक्ककरोटिकादिना ।

अट्ठ उ गोयरभूमी एलुयविक्खंभमित्तगहणं च ।
सग्गामपरग्गामो एवइअ घरा उ खेत्तंमि ॥२॥

उज्जुग गंतुं पच्चागई य गोमुत्तिआ पयंगविही ।
पेडा य अद्धपेडा अब्भिंतरबाहिसंबुक्का ॥३॥

काले अभिग्गहो पुण आई मज्झे तहेव अवसाणे ।
अप्पत्ते सइकाले आई बिति मज्झि तइयंते ॥४॥''

[लेपकृदलेपकृद्वाऽमुकं द्रव्यं चाद्य ग्रहीष्यामि ।
अमुकेन वा द्रव्येणैष द्रव्याभिग्रहो नाम ॥१॥

अष्टैव गोचरभूमयः देहलीविष्कम्भमात्रग्रहणं च ।
स्वग्रामे परग्रामे इयन्ति गृहाणि तु क्षेत्रे ॥२॥

ऋजु गत्वा प्रत्यागतिश्च गोमूत्रिका पतङ्गवीथिः ।
पेटा च अर्धपेटा अभ्यन्तरशंबूका बाह्यशम्बूका ॥३॥

कालेऽभिग्रहः पुनरादौ मध्ये तथैवावसाने ।
अप्राप्ते सति काले आद्यः द्वितीयो मध्ये तृतीयोऽन्त्ये ॥४॥]

प्रतीतभिक्षावेलाया आदौ मध्येऽवासने च कालविषयोऽभिग्रहः, तथा चाह–

''अप्राप्ते सति भिक्षाकाले अटत आदिः-प्रथमः, मध्ये-भिक्षाकाल एवाटतो द्वितीयः, अन्ते-भिक्षाकालावसानेऽटतस्तृतीयोऽभिग्रहः ।''

''दिन्तगपडिच्छगाणं हवेज्ज सुहुमंपि मा हु अचियत्तं ।
इइ अप्पत्ते अइए पवत्तणं मा उ मज्झंमि ॥१॥

उक्खित्तमाइचरगा भावजुया खलु अभिग्गहा हुंति ।
गायंतो व रुयन्तो जं देइ निसन्नमाइ वा ॥२॥''

[ददत्प्रतीच्छकयोः सूक्ष्माऽप्यप्रीतिर्मा भूदिति अप्राप्तेऽतीते ।
वा प्रवर्त्तनं-पुरःपश्चात्कर्मादि मा भूदिति मध्ये ॥१॥

उत्क्षिप्तादिचरकाः भावयुक्ताः खल्वभिग्रहा भवन्ति ।
गायन् वा रुदन् वा यद्ददाति निषण्णादि वा ॥२॥]

'**उक्खित्तमाइचरग**'त्ति उत्क्षिप्तादिचराः, उत्क्षिप्ते भाजनात् पिण्डे चरति-गच्छति यः स उत्क्षिप्तचरः, एवं निक्षिप्ते भाजनादाविति भावनीयम् ।

''ओसक्कण अहिसक्कण परंमुहालंकिएतरो वावि ।
भावंतरेण य जुओ अह भावाभिग्गहो नाम ॥१॥''

[अवष्वष्कणमभिष्वष्कणं पराङ्मुखोऽलंकृत इतरो वापि ।
भावान्तरेण वा युक्त एष भावाभिग्रहो नाम ॥१॥] ३।

'**रसच्चाओ**'त्ति रसानां–मतुब्लोपाद्विशिष्टरसवतां विकारहेतूनां दुग्धादीनां त्यागो-वर्जनं रसत्यागः ४।

'**कायकिलेसो**'त्ति कायस्य-शरीरस्य क्लेशः-शास्त्राविरोधेन बाधनं कायक्लेशः, स च वीरासनाद्यासनकरणेन अप्रतिकर्मशरीरत्वकेशोल्लुञ्चनादिना च विचित्रः, यदवाचि–

''वीरासणउक्कुडुगासणाइं लोयाइओ य विन्नेओ ।
कायकिलेसो संसारवासनिव्वेयहेउत्ति ॥१॥

वीरासणाइसु गुणा कायनिरोहो दया य जीवेसु ।
परलोगमई य तहा बहुमाणो चेव अन्नेसिं ॥२॥

निस्संगया अ पच्छापुरकम्मविवज्जणं च लोयगुणा ।
दुक्खसहत्तं नरगाइभावणाए य निव्वेओ ॥३॥''

[वीरासनोत्कटुकासनादि लोचादिकश्च विज्ञेयः ।
कायक्लेशः संसारवासनिर्वेदहेतुरिति ॥१॥

वीरासनादिषु गुणाः कायनिरोधो दया च जीवेषु ।
परलोकमतिश्च तथा बहुमानश्चैवान्येषाम् ॥२॥

निःसंगता च पश्चात्पुरःकर्मविवर्जनं च लोचगुणाः ।
दुःखसहत्वं नारकभावनया च निर्वेदः ॥३॥] ५।

'**संलीणया य**'त्ति संलीनता-गुप्तता, सा चेन्द्रियकषाययोगविषया विविक्तशयनासनता चेति चतुर्धा, यदुक्तम्—

''इंदियकसायजोए पडुच्च संलीणया मुणेयव्वा ।
तह य विवित्ता चरिया पन्नत्ता वीयराएहिं ॥१॥''

[इंद्रियकषाययोगान् प्रतीत्य संलीनता ज्ञातव्या ।
तथा विविक्ता चर्या प्रज्ञप्ता वीतरागैः ॥१॥]

तत्र श्रवणेन्द्रियेण शब्देषु मधुरादिभेदेषु रागद्वेषाकरणं श्रवणेन्द्रियसंलीनता, यदाहुः—

''सद्देसु य भद्दयपावएसु सोयविसयमुवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया न होयव्वं ॥१॥''

[शब्देषु भद्रकपापकेषु श्रोत्रविषयमुपगतेषु ।
श्रमणेन सदा तुष्टेन रुष्टेन वा न भवितव्यम् ॥१॥]

एवं चक्षुरादीन्द्रियेष्वपि भावनीयम्, यथा—

''रूवेसु य भद्दयपावएसु चक्खुविसयमुवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया न होयव्वं ॥१॥''

[रूपेषु च भद्रकपापकेषु चक्षुर्विषय०]

इत्याद्यभिलापेनेति, कषायसंलीनता च कषायाणामनुदीर्णानामुदयनिरोधेन उदीर्णानां च निष्फलीकरणेन विज्ञेया, यदभ्यधायि—

''उदयस्सेव निसेहो उदयप्पत्ताण वाऽफलीकरणं ।
जं इत्थ कसायाणं कसायसंलीणया एसा ॥१॥''

[उदयस्यैव निरोधः प्राप्तोदयानां वाऽफलीकरणम् ।
यदत्र कषायाणां कषायसंलीनतैषा ॥१॥]

योगसंलीनता पुनर्मनोवाक्कायलक्षणयोगानामकुशलानां निरोधः कुशलानामुदीरणं च, यदवोचन्—

''अपसत्थाण निरोहो जोगाणमुदीरणं च कुसलाणं ।
कज्जंमि य विहिगमणं जोगे संलीणया भणिया ॥१॥''

[अप्रशस्तानां योगानां निरोधः कुशलानां चोदीरणम् ।
कार्ये च विधिगमनं योगे संलीनता भणिता ॥१॥]

विविक्तशयनासनतारूपा पुनः संलीनता आरामादिषु स्त्रीपशुपण्डकादिरहितेषु यदवस्थानं, यदाहुर्महर्षयः—

''आरामुज्जाणाइसु थीपसुपंडगविवज्जिए ठाणं ।
फलगाईण य गहणं तह भणियं एसणिज्जाणं ॥१॥'' ६।

[आरामोद्यानादिषु स्त्रीपशुपण्डकविवर्जिते स्थानम् ।
तथा एषणीयानां फलकादीनां ग्रहणं भणितम् ॥१॥]

चः समुच्चये, **'बज्झो तवो होइ'**त्ति एतदनशनादिकं बाह्यं तपो भवति, बाह्यत्वं चास्य बाह्यद्रव्याद्यपेक्षत्वात्, प्रायो बहिः शरीरस्य तापकत्वात् लौकिकैरपि तपस्तया ज्ञायमानत्वात् कुतीर्थिकैरपि स्वाभिप्रायेणासेव्यमानत्वाच्चेति ॥२७०॥

श्लो. १६८१ [१]पायच्छित्तं [२]विणओ, [३]वेयावच्चं तहेव [४]सज्झाओ ।
[५]झाणं उस्सग्गोऽवि य, अब्भिंतरओ तवो होइ ॥२७१॥ (प्रव.सा.द्वा.६)

'पायच्छित्त' मित्यादि, इह चित्तं-जीवो भण्यते, ततः प्रायो-बाहुल्येन चित्तं-जीवं विशोधयति-मूलोत्तरगुणविषयातीचारजनितकर्ममलमलिनं निर्मलं करोतीति प्रायश्चित्तं, तत् पुनरालोचनादिकं दशधा, यदाहुः—

''आलोयण पडिक्कमणे मीस विवेगे तहा विउस्सग्गे ।
तव छेय मूल अणवट्ठया य पारंचिए चेव ॥१॥'' ७। इति,

[आलोचना प्रतिक्रमणं मिश्रं विवेकस्तथोत्सर्गः ।
तपश्छेदो मूलमनवस्थाप्यं पाराञ्चिकं चैव ॥१॥]

एतत्स्वरूपं चाष्टानवतिद्वारे न्यक्षेण वक्ष्यते, '**विणए**'त्ति विनीयते-क्षिप्यते अष्टप्रकारं कर्मानेनेति विनयः, स च ज्ञानदर्शनादिभेदात् सप्तधा, यदाहुः—

''नाणे दंसणचरणे मणवयकाओवयारिओ विणओ ।
नाणे पंचपयारो मइनाणाईण सद्दहणं ॥१॥

भत्ती तह बहुमाणो तद्दिट्ठत्थाण सम्मभावणया ।
विहिगहणब्भासोऽवि य एसो विणओ जिणाभिहिओ ॥२॥''

[ज्ञाने दर्शने चारित्रे मनसि वाचि काये औपचारिको विनयः ।
ज्ञाने पञ्चप्रकारो मतिज्ञानादीनां श्रद्धानम् ॥१॥

भक्तिस्तथा बहुमानः तद्दृष्टार्थानां सम्यक्त्वभावना ।
विधिग्रहणमभ्यासोऽपि चैष विनयो जिनाभिहितः ॥२]

शुश्रूषणादिकश्च दर्शनविनयः, यदाहुः—

''सुस्सूसणा अणासायणा य विणओ उ दंसणे दुविहो ।
दंसणगुणाहिएसुं किज्जइ सुस्सूसणाविणओ ॥१॥

सक्कारब्भुट्ठाणं संमाणासणअभिग्गहो तह य ।
आसणअणुप्पयाणं किइकम्मं अंजलिगहो य ॥२॥

इंतस्सऽणुगच्छणया ठिअस्स तह पज्जुवासणा भणिया ।
गच्छंताणुव्वयणं एसो सुस्सूसणाविणओ ॥३॥''

[शुश्रूषणा अनाशातना च विनयस्तु दर्शने द्विविधः ।
दर्शनगुणाधिकेषु क्रियते शुश्रूषणाविनयः ॥१॥

सत्कारोऽभ्युत्थानं सन्मानमासनाभिग्रहश्च तथा ।
आसनानुप्रदानं कृतिकर्माञ्जलिग्रहश्च ॥२॥

आयातोऽनुगमनं स्थितस्य तथा पर्युपासनं भणितम् ।
व्रजतोऽनुव्रजनमेष शुश्रूषणाविनयः ॥३॥]

सत्कारः-स्तवनवन्दनादि, अभ्युत्थानं-विनयार्हस्य दर्शनादेवासनत्यजनं, सन्मानो-वस्त्रपात्रादिभिः पूजनं, आसनाभिग्रहः-पुनस्तिष्ठत एव गुरोरदरेणासनानयनपूर्वकमत्रोपविशतेति भणनं, आसनानुप्रदानं-स्थानात्स्थानान्तरे आसनस्य सञ्चारणं, कृतिकर्म-वन्दनकं, अञ्जलिग्रहः-अञ्जलिकरणं, शेषं प्रकटं, अनाशातनाविनयः पुनः पञ्चदशविधः, तस्य चेदं स्वरूपम्—

''तित्थयर धम्म आयरिअ वायगे थेर कुल गणे संघे ।
संभोइअ किरियाए मइनाणाईण य तहेव ॥१॥''

[तीर्थकरे धर्मे आचार्ये वाचके स्थविरे कुले गणे संघे ।
साम्भोगिके क्रियावति मतिज्ञानादीनां च तथैव ॥१॥]

साम्भोगिकाः- एकसामाचारिकाः क्रिया-आस्तिकता ।

''कायव्वा पुण भत्ती बहुमाणो तह य वन्नवाओ य ।
अरहंतमाइयाणं केवलनाणावसाणाणं ॥१॥''

[कर्त्तव्या पुनर्भक्तिर्बहुमानस्तथा वर्णवादश्च । अर्हदादीनां केवलज्ञानावसानानाम् ॥१॥]

भक्तिः-बाह्या प्रतिपत्तिः, बहुमानः-आन्तरः प्रीतिविशेषः, वर्णवादो-गुणग्रहणं, चारित्र-विनयः पुनः-

''सामाइयाइचरणस्स सद्दहाणं तहेव कायेणं ।
संफासणं परूवणमह पुरओ सव्वसत्ताणं ॥१॥ तथा -
मणवयकाइयविणओ आयरियाईण सव्वकालम्मि ।
अकुसलमणाइरोहो कुसलाणमुदीरणं तह य ॥२॥''

[सामायिकादिचारित्राणां श्रद्धानं तथैव कायेन ।
संस्पर्शनं अथ च सर्वसत्त्वानां पुरतः प्ररूपणम् ॥१॥
मनोवाक्कायविनय आचार्यादीनां सर्वकाले ।
अकुसलमनआदिरोधः कुशलानां तथोदीरणं च ॥२॥]

तथा उपचारेण-सुखकारिक्रियाविशेषेण निर्वृत्त औपचारिकः स चासौ विनयश्च औपचारिक-विनयः, स च सप्तधा-

''अब्भासऽच्छणं छंदाणुवत्तणं कयपडिकिई तह य ।
कारिअनिमित्तकरणं दुक्खत्तगवेसणं तह य ॥१॥
तह देसकालजाणण सव्वत्थेसु तह य अणुमई भणिया ।
उवयारिओ उ विणओ एसो भणिओ समासेणं ॥२॥''

[अभ्यासस्थानं छन्दोऽनुवर्त्तनं कृतप्रतिकृतिस्तथा च ।
कारितनिमित्तकरणं दुःखार्त्तगवेषणं च तथा ॥१॥

तथा देशकालज्ञानं तथा सर्वार्थेष्वनुमतिर्भणिता ।
औपचारिकस्तु विनय एष भणितः समासेन ॥२॥]

तत्र '**अब्भासऽच्छणं**'ति सूत्राद्यर्थिना नित्यमेवाचार्यस्याभ्यासे-प्रत्यासन्ने स्थातव्यं, तथा छन्दः-अभिप्रायो गुरूणामनुवर्तनीयः, तथा कृतप्रतिकृतिः-कृते भक्तादिना उपचारे प्रसन्ना गुरवः प्रतिकृतिं-प्रत्युपकारं सूत्रार्थादिदानतो मे करिष्यन्ति, न नामेकैव निर्जरिति भक्तादिदाने गुरोर्यतितव्यं, तथा कार्यनिमित्तकारणं, कार्यं-श्रुतप्रापणादिकं निमित्तं-हेतुं कृत्वा श्रुतं प्रापितोऽहमनेनेति हेतोरित्यर्थः विशेषेण तस्य विनये वर्तितव्यं, तदनुष्ठानं च कर्तव्यं, यद्वा कारितेन-सम्यक्सूत्रार्थमध्यापितेन पुनस्तन्निमित्तं करणं-विनयस्य विधानं कारितनिमित्तकारणं, गुरुणा सम्यक् सूत्रादिकं पाठितेन विनेयेन विशेषतो विनये वर्तितव्यं तदुक्तार्थानुष्ठानं च कर्तव्यमिति भावः, तथा दुःखार्त्तस्य-दुःखपीडितस्य गवेषणं-औषधादिना प्रतिजागरणं दुःखार्तगवेषणं, पीडितस्योपकारकरणमित्यर्थः, तथा देशकालज्ञानमवसरज्ञातेत्यर्थः, तथा सर्वार्थेषु गुरुविषयेष्वनुमतिः-आनुकूल्यं, अथवा द्विपञ्चाशद्भेदो विनयः, स च पञ्चषष्टिद्वारे वक्ष्यते ८।

'**वेयावच्च**'मिति व्यांपिपर्ति स्मेति व्यापृतः तस्य भावो वैयावृत्त्यं, धर्मसाधनार्थमन्नादि-दानमित्यर्थः, यदाहुः—

''**वेयावच्चं वावडभावो इह धम्मसाहणनिमित्तं ।**
अन्नाइयाण विहिणा संपायणमेस भावत्थो ॥१॥'' ९।

[वैयावृत्त्यं व्यावृतभाव इह धर्मसाधननिमित्तम् ।
अन्नादीनां विधिना संपादनमेष भावार्थः ॥१॥]

'**तहेव सज्झाओ**'त्ति सुष्ठु आ-मर्यादया कालवेलापरिहारेण पौरुष्यपेक्षया वा अध्यायः-अध्ययनं स्वाध्यायः, स च पञ्चधा-वाचनापृच्छनापरावर्तनानुप्रेक्षाधर्मकथाभेदात्, तत्र वाचना-शिष्याध्यापनं, गृहीतवाचनेनापि संशयोत्पत्तौ पुनः पृष्टव्यमिति पूर्वाधीतस्य सूत्रादेः शङ्कितादौ प्रश्नः पृच्छना, पृच्छनाविशोधितस्य सूत्रस्य मा भूद्विस्मरणमिति परावर्तना, सूत्रस्य घोषादिविशुद्धं गणनमित्यर्थः, सूत्रवदर्थेऽपि सम्भवति विस्मरणमतोऽनुप्रेक्षणं, ग्रन्थार्थस्य मनसाऽभ्यासोऽनुप्रेक्षा चिन्तनिकेत्यर्थः, एवमभ्यस्तश्रुतेन धर्मकथा कर्तव्येति, धर्मस्य-श्रुतरूपस्य कथा-व्याख्या धर्मकथेति १०॥

'**झाण**'मिति ध्यायते-चिन्त्यते वस्त्वनेनेति ध्यातिर्वा ध्यानं-अन्तर्मुहूर्तमात्रकाल-मेकाग्रचित्ताध्यवसानं, यदाहुः—

''**अंतोमुहुत्तमेत्तं चित्तावत्थाणमेगवत्थुंमि ।**
छउमत्थाणं झाणं जोगनिरोहो जिणाणं तु ॥१॥'' १०।

[अन्तर्मुहूर्तमात्रं चित्तस्यैकवस्तुनि अवस्थानम् ।
छद्मस्थानां ध्यानं जिनानां तु योगनिरोधः ॥१॥]

तच्चतुर्धा-आर्तरौद्रधर्म्यशुक्लभेदात्, तत्र ऋतं-दुःखं तस्य निमित्तं तत्र वा भवं ऋते वा-पीडिते प्राणिनि भवमार्तं, तच्चामनोज्ञानां शब्दरूपरसस्पर्शगन्धलक्षणानां विषयाणां तदाश्रयभूत-वायसादिवस्तूनां वा समुपनतानां विप्रयोगप्रणिधानं भाविनां वाऽसम्प्रयोगचिन्तनम् १ एवं शूलशिरो-रोगादिवेदनाया अपि विप्रयोगासंप्रयोगप्रार्थनम् २ इष्टशब्दादिविषयाणां सातवेदनायाश्चाविप्रयोग-सम्प्रयोगप्रार्थनम् ३ देवेन्द्रचक्रवर्तित्वादिप्रार्थनं च ४ शोकाक्रन्दनस्वदेहताडनविलपनादिलक्षणलक्ष्यं तिर्यग्गतिगमनकारणं विज्ञेयम् १, तथा रोदयत्यपरानिति रुद्रः-प्राणिवधादिपरिणत-आत्मैव तस्येदं कर्म रौद्रं, तदपि सत्त्वेषु वधवेधबन्धनदहनाङ्कनमारणादिप्रणिधानम् १ पैशून्यासभ्यासद्भूतघातादि-वचनचिन्तनम् २ तीव्रकोपलोभाकुलं भूतोपघातपरायणं परलोकापायनिरपेक्षं परद्रव्यहरणप्रणिधानम् ३ सर्वाभिशङ्कनपरम्परोपघातपरायणशब्दादि विषयसाधकद्रव्यसंरक्षणप्रणिधानं च ४ उत्सन्नवधादि-लिङ्गम्यं नरकगतिगमनकारणमवसेयम् २।

तथा धर्मः-क्षमादिदशलक्षणः तस्मादनपेतं धर्म्यं, तच्च सर्वज्ञाऽऽज्ञानुचिन्तनम् १ रागद्वेष-कषायेन्द्रियवशजन्तूनामपायविचिन्तनम् २ ज्ञानावरणादिशुभाशुभकर्मविपाकसंस्मरणम् ३ क्षिति-वलयद्वीपसमुद्रप्रभृतिवस्तुसंस्थानादिधर्मालोचनात्मकम् ४ जिनप्रणीतभावश्रद्धानादिचिह्नगम्यं देव-गत्यादिफलसाधकं ज्ञातव्यम् ३।

तथा शोधयत्यष्टप्रकारं कर्ममलं शुचं वा-शोकं क्लमयति-अपनयतीति निरुक्तविधिना शुक्लं, एतदपि पूर्वगतश्रुतानुसारिनानानयमतैकद्रव्योत्पत्तिस्थितिभङ्गादिपर्यायानुस्मरणादिस्वरूपम् ४ अवधासम्मोहादिलिङ्गम्यं मोक्षादिफलप्रसाधकं विज्ञेयम् ४।

अत्र च धर्मशुक्ले एव तपसी निर्जरार्थत्वात्, नार्तरौद्रे बन्धहेतुत्वादिति ११।

'**उस्सग्गोऽविय**'त्ति उत्सर्जनीयस्य परित्याग उत्सर्गः, स द्विविधः-बाह्योऽभ्यन्तरश्च, तत्र बाह्यो द्वादशादिभेदस्योपधेरतिरिक्तस्यानेषणीयस्य संसक्तस्यान्नपानादेर्वा त्यागः, आभ्यन्तरः कषायाणां मृत्युकाले शरीरस्य च त्यागः, ननु उत्सर्गः प्रायश्चित्तमध्य एवोक्तस्तत् किं पुनरत्र भणनेन ?, सत्यं, सोऽतीचारविशुद्ध्यर्थमुक्तः अयं तु सामान्येन निर्जरार्थमुक्त इत्यपौनरुक्त्यम् १२।

'**अब्भिंतरओ तवो होइ**'त्ति इदं प्रायश्चित्तादि व्युत्सर्गान्तमनुष्ठानं लौकिकैरनभिलक्ष्यत्वात् तन्त्रान्तरीयैश्च भावतोऽनासेव्यमानत्वात् मोक्षावाप्तावन्तरङ्गत्वादभ्यन्तरस्य कर्मणस्तापकत्वाद-भ्यन्तरैरेवान्तर्मुखैर्भगवद्भिर्ज्ञायमानत्वाच्चाभ्यन्तरं तपो भवतीति ॥२७१॥

श्लो. १६९७ राया व रायमच्चो, तस्सऽसई पउरजणवओ वाऽवि ।
दुब्बलिखंडियबलिछडिय, तंदुलाणाढगं कलमा ॥५८४॥ (आव०नि०)

व्याख्या–'राजा वा' चक्रवर्तिमण्डलिकादिः 'राजामात्यो वा' अमात्यो-मन्त्री, तस्य राज्ञोऽमात्यस्य वा असति-अभावे नगरनिवासिविशिष्टलोकसमुदायः पौरं तत्करोति, ग्रामादिषु जनपदो वा, अत्र जनपदशब्देन तन्निवासी लोकः परिगृह्यते, स किंविशिष्टः किंपरिणामो वा क्रियत इति ? आह–'दुब्बलीत्यादि, तत्र दुर्बलिकया खण्डितानां 'बली'ति बलवत्या छटितानां तन्दुलानाम् आढकं-चतुःप्रस्थपरिमाणं, 'कलमे'ति प्राकृतशैल्या कलमानां - तन्दुलानाम् इति गाथार्थः ॥५८४॥

किंविशिष्टानामिति ? आह–

श्लो. १६९८ भाइयपुणाणियाणं, अखंडफुडियाण फलगसरियाणं ।
कीरइ बली सुरा वि य, तत्थेव छुहंति गंधाई ॥५८५॥ (आव०नि०)

व्याख्या–विभक्तपुनरानीतानां भाजनम् - ईश्वरादिगृहेषु वीननार्थमर्प्पणं तेभ्यः प्रत्यानयनं-पुनरानयनमिति, विभक्ताश्च ते पुनरानीताश्चेति समासः, तेषां, किंविशिष्टानाम् ?-अखण्डाः-सम्पूर्णावयवाः अस्फुटिताः-राजीरहिताः, अखण्डाश्च तेऽस्फुटिताश्च इति समासः, तेषां, 'फलग-सरिताणं' ति फलकवीनितानाम् एवंभूतानामाढकं क्रियते बलिः, सुरा अपि च तत्रैव बलौ प्रक्षिपन्ति गन्धादीनिति गाथार्थः ॥५८५॥ द्वारं ॥

माल्यानयनद्वारं, इदानीं तमित्थं निष्पन्नं बलिं राजादयस्त्रिदशसहिताः गृहीत्वा तूर्यनिनादेन दिग्मण्डलमापूरयन्तः खल्वागच्छन्ति, पूर्वद्वारेण च प्रवेशयन्ति, अत्रान्तरे भगवानप्युपसंहरतीति, आह–

श्लो. १६९९ बलिपविसणसमकालं, पुव्वद्दारेण ठाति परिकहणा ।
तिगुणं पुरओ पाडण, तस्सद्धं अवडियं देवा ॥५८६॥ (आव०नि०)

व्याख्या–पूर्वद्वारेणेति व्यवहित उपन्यासः, बलेः प्रवेशनं पूर्वद्वारेण, बलिप्रवेशनसमकालं 'तिष्ठति' उपरमते धर्मकथेति, 'तिगुणं पुरओ पाडण' प्रविश्य राजादिर्बलिव्यग्रदेहो भगवन्तं त्रिः प्रदक्षिणीकृत्य तं बलिं तत्पादान्तिके पुरतः पातयति, तस्य चार्द्धमपतितं देवाः गृह्णन्ति, इति गाथार्थः ॥५८६॥

श्लो. १७०० अद्धद्धं अहिवइणो, अवसेसं हवइ पागयजणस्स ।
सव्वामयप्पसमणी, कुप्पइ णऽण्णो य छम्मासं ॥५८७॥ (आव०नि०)

व्याख्या–शेषार्द्धस्य अर्द्धं-अर्द्धार्द्धं तदधिपतेर्भवति राज्ञ इत्यर्थः, अवशेषं यद्बलेरास्ते तद्भवति कस्य ?, प्रकृतिषु भवः प्राकृतो-जनस्तस्य, स चेत्थंसामर्थ्यो भवति-ततः सिक्थेनापि शिरसि प्रक्षिप्तेन रोगः खलूपशमं याति, अपूर्वश्च षण्मासान् यावन्न भवतीति, आह च - सर्वामय-

प्रशमनः, कुप्यति नान्यश्च षण्मासं यावत् । प्राकृतशैल्या स्त्रीलिङ्गनिर्देश इति गाथार्थः, अपरे त्वनन्तरोक्तद्वाद्वयमप्येकद्वारीकृत्य व्याचक्षते, तथापि अविरोध इति ॥५८७॥

इत्थं बलौ प्रक्षिप्ते भगवान् प्रथमात् प्राकारान्तरात् उत्तरद्वारेण निर्गत्य उत्तरपूर्वायां दिशि देवच्छन्दके यथासुखं समाधिना व्यवतिष्ठत इति । भगवत्युत्थिते द्वितीयपौरुष्यामाद्यगणधरो-ऽन्यतमो वा धर्ममाचष्टे ।

आह-स गणधरः क्व निषण्णः कथयतीति ?, उच्यते—

श्लो. १७०२ राओवणीयसीहासणे, निविट्ठो य पायपीढम्मि ।
जेट्ठो अन्नयरो वा, गणहारी कहइ बीआए ॥५८९॥ (आव०नि०)

व्याख्या—राज्ञा उपनीतं राजोपनीतं, राजोपनीतं च तत् सिंहासनं चेति समासः, तस्मिन् राजोपनीतसिंहासने उपविष्टो वा भगवत्पादपीठे, स च ज्येष्ठः अन्यतरो वा गणं-साध्वादिसमुदायलक्षणं धारयितुं शीलमस्येति गणधारी कथयति द्वितीयायां पौरुष्यामिति गाथार्थः ॥५८९॥

आह-स कथयन् कथं कथयतीति ?, उच्यते—

श्लो. १७०३ संखाईएऽवि भवे साहइ, जं वा परो उ पुच्छिज्जा ।
ण य णं अणाइसेसी, वियाणई एस छउमत्थो ॥५९०॥ (आव०नि०)

व्याख्या—सङ्ख्यातीतानपि भवान्, असङ्ख्येयानित्यर्थः, किं ?-'साहइ'त्ति देशीवचनतः कथयति, एतदुक्तं भवति असङ्ख्येयभवेषु यदभवद्भविष्यति वा, यद्वा वस्तुजातं परस्तु पृच्छेत् तत्सर्वं कथयतीति, अनेनाशेषाभिलाप्यपदार्थप्रतिपादनशक्तिमाह, किं बहुना ?-'न च' नैव, णमिति वाक्यालङ्कारे, 'अणाइसेसि'त्ति अनतिशयी अवध्याद्यतिशयरहित इत्यर्थः, विजानाति यथा एष गणधरछद्मस्थ इति, अशेषप्रश्नोत्तरप्रदानसमर्थत्वात्तस्येति गाथार्थः ॥५९०॥

आह-भगवानेव किमिति नाचष्टे ?, तत्कथने के गुणा इति ?, उच्यते—

श्लो. १७०४ खेयविणोओ सीसगुणदीवणा पच्चओ उभओऽवि ।
सीसायरियकमोऽवि य, गणहरकहणे गुणा होंति ॥५८८॥ (आव०नि०)

व्याख्या—खेदविनोदो भगवतो भवति, परिश्रमविश्राम इत्यर्थः, तथा 'शिष्यगुणदीपना' शिष्यगुणप्रख्यापना च कृता भवति, तथा प्रत्यय उभयतोऽपि श्रोतृणामुपजायते-यथा भगवता-ऽभ्यधायि तथा गणधरेणापि, गणधरे वा तदनन्तरं तदुक्तानुवादिनि प्रत्ययो भवति श्रोतृणाम्-नान्यथावाद्ययमिति, तथा शिष्याचार्यक्रमोऽपि च दर्शितो भवति, आचार्यात् उपश्रुत्य योग्यशिष्येण तदर्थान्वाख्यानं कर्त्तव्यमिति, एते गणधरकथने गुणा भवन्ति इति गाथार्थः ॥५८८॥

श्लो. १७१७ नवकारेण जहन्ना, दंडकथुइजुयलमज्झिमा नेया ।
उक्कोसा विहिपुव्वगसक्कत्थयपंचनिम्माया ॥९२॥ (प्रव.सा.द्वा.१)

नन्वेतस्याश्चैत्यवन्दनायाः किमेक एव प्रकारः ? किं वा जघन्यादिकृतं प्रकारान्तरमप्यस्ति ?, बाढमस्तीत्याह–'**नवकारेणे**'त्यादि, जघन्यमध्यमोत्कृष्टभेदेन त्रिविधं तावच्चैत्यवन्दनं, तत्रैकेन '**नमो अरिहंताणं**' इत्यादिना यदि वा–'पायान्नेमिजिनः स यस्य रुचिभिः श्यामीकृताङ्गस्थितावग्रे रूपदिदृक्षया स्थितवति प्रीते सुराणां प्रभौ । काये भागवते च नेत्रनिकरैर्वृत्रद्विषो लाञ्छिते, सम्भ्रान्तास्त्रिदशाङ्गनाः कथमपि ज्ञात्वा स्तवं चक्रिरे ॥१॥'

इत्यादिरूपेण स्तवेन जघन्या चैत्यवन्दना, अन्ये पुनः प्रणाममात्ररूपां जघन्यां चैत्यवन्दनां वदन्ति, प्रणामस्तु पञ्चधा भवति, यथा–

एकाङ्गः शिरसो नामे, द्व्यङ्गश्च करयोर्द्वयोः । त्रयाणां नमने त्र्यङ्गः, करयोः शिरसस्तथा ॥१॥

चतुर्णां करयोर्जान्वोर्नमने चतुरङ्गकः । शिरसः करयोर्जान्वोः, पञ्चाङ्गः पञ्चमो मतः ॥२॥ इति,

मध्यमा तु स्थापनाऽर्हत्स्तवदण्डकैकस्तुतिरूपेण युगलेन भवति, अन्ये त्वेवं व्याख्यान-यन्ति–दण्डकानां-शक्रस्तवादीनां पञ्चकं तथा स्तुतियुगलमिति-समयभाषया स्तुतिचतुष्टयं ताभ्यां या वन्दना सा मध्यमा, साम्प्रतरुढ्या एकवारवन्दनेत्यर्थः, उत्कृष्टा तु विधिपूर्वकशक्रस्तवोप-लक्षितपञ्चदण्डकनिर्मिता '**जय वीयराय**' इत्यादिप्रणिधानपर्यन्ता चैत्यवन्दना भवतीति, अन्ये पुनः शक्रस्तवपञ्चकभणनेनोत्कृष्टचैत्यवन्दना भवतीति व्याचक्षते, एवं च शक्रस्तवपञ्चकं भवति-उत्कृष्टचैत्यवन्दनया वन्दितुकामः साधुः श्रावको वा चैत्यगृहादौ गत्वा यथोचितं प्रतिलेखित-प्रमार्जितस्थण्डिलस्त्रैलोक्यगुरौ विनिवेशितनयनमानसः संवेगवैराग्यभरोज्जृम्भमाणरोमाञ्चकञ्चुकित-गात्रः प्राप्तप्रकर्षहर्षवशविसर्पद्बाष्पपूरपूर्णनयननलिनः सुदुर्लभं भगवच्चरणारविन्दवन्दनमिति बहुमन्यमानः सुसंवृत्ताङ्गोपाङ्गो योगमुद्रया जिनसन्मुखं शक्रस्तवमस्खलितादिगुणोपेतं पठति, तदनु ऐर्यापथिकीप्रतिक्रमणं करोति, ततः पञ्चविंशत्युच्छ्वासमानं कायोत्सर्गं कृत्वा पारयित्वा '**लोगस्सुज्जोयगरे**' इत्यादि परिपूर्णं भणित्वा जानुनी च भूमौ निवेश्य योजितकरकुशेशयस्तथा-विधसुकविकृतजिननमस्कारभणनपूर्वं शक्रस्तवादिभिः पञ्चभिर्दण्डकैर्जिनमभिवन्दते, चतुर्थस्तुति-पर्यन्ते पुनः शक्रस्तवमभिधाय द्वितीयवेलं तेनैव क्रमेण वन्दते, तदनु चतुर्थशक्रस्तवभणनानन्तरं स्तोत्रं पवित्रं भणित्वा '**जय वीयराय**' इत्यादिकं च प्रणिधानं कृत्वा पुनः शक्रस्तवमभिधत्ते इति, एषा चोत्कृष्टा चैत्यवन्दना ऐर्यापथिकीप्रतिक्रमणपूर्विकैव भवति, जघन्यमध्यमे तु चैत्यवन्दने ऐर्यापथिकीप्रतिक्रमणमन्तरेणापि भवति इति ॥९२॥

श्लो. १७३० मिच्छत्तपडिक्कमणं, तहेव अस्संजमे पडिक्कमणं ।
कसायाण पडिक्कमणं, जोगाण य अप्पसत्थाणं ॥१२५१॥ (आव०नि०)

व्याख्या—मिथ्यात्वमोहनीयकर्मपुद्गलसाचिव्यविशेषादात्मपरिणामो मिथ्यात्वं तस्य प्रतिक्रमणं तत्प्रतिक्रान्तव्यं वर्तते, यदाभोगानाभोगसहसात्कारैर्मिथ्यात्वं गतस्तत्प्रतिक्रान्तव्यमित्यर्थः, तथैव 'असंयमे' असंयमविषये प्रतिक्रमणम्, असंयमः-प्राणातिपातादिलक्षणः प्रतिक्रान्तव्यो वर्तते, 'कषायाणां' प्राग्निरूपितशब्दार्थानां क्रोधादीनां प्रतिक्रमणं, कषायाः प्रतिक्रान्तव्याः, 'योगानां च' मनोवाक्कायलक्षणानाम् 'अप्रशस्तानाम्' अशोभनानां प्रतिक्रमणं, ते च प्रतिक्रान्तव्या इति गाथार्थः ॥१२५१॥

श्लो. १७३१ काउस्सग्गे जह सुट्ठियस्स, भज्जंति अंगमंगाइं ।
इय भिंदंति सुविहिया, अट्ठविहं कम्मसंघायं ॥१५५४॥ (आव०नि०)

व्याख्या—कायोत्सर्गे यथा सुस्थितस्य सतः भज्यन्ते अङ्गोपाङ्गानि 'इय' एवं चित्तनिरोधेन 'भिन्दन्ति' विदारयन्ति मुनिवराः-साधवः अष्टविधं-अष्टप्रकारं कर्मसङ्घातं-ज्ञानावरणीयादि-लक्षणमिति गाथार्थः ॥१५५४॥

श्लो. १७३२ जह करगओ णिकिंतइ, दारुं इंतो पुणोऽवि वच्चंतो ।
इअ कत्तंति सुविहिया, काउसग्गेण कम्माइं ॥२३९॥ (आव०नि०भा.)

व्याख्या—यथा 'करगतो'ति करपत्रं निकृन्तति-छिनत्ति विदारयति दारु-काष्ठं, किं कुर्वन् ?-आगच्छन् पुनश्च व्रजन्नित्यर्थः, 'इय' एवं कृन्तन्ति सुविहिताः-साधवः कायोत्सर्गेण हेतुभूतेन कर्माणि-ज्ञानावरणीयादीनि, तथाऽन्यत्राप्युक्तम्—

''संवरेण भवे गुत्तो, गुत्तीए संजमुत्तरो ।
संजमेण तवो होइ, तवाओ होइ निज्जरा ॥१॥

निज्जराएऽसुभं कम्मं, खिज्जई कमसो सया ।
आवस्सगजुत्तस्स, काउस्सग्गे विसेसओ ॥२॥''

इत्यादि, अयं गाथार्थः ॥२३९॥ आह-यदि कायोत्सर्गे सुस्थितस्य भज्यन्ते अङ्गोपाङ्गानि ततश्च दृष्टापकारत्वादेवालमनेनेति ?, अत्रोच्यते, सौम्य ! मैवम्—

श्लो. १७३३ अन्नं इमं सरीरं, अन्नो जीवु त्ति एव कयबुद्धी ।
दुक्खपरिकिलेसकरं, छिंद ममत्तं सरीराओ ॥१५५५॥ (आव०नि०)

व्याख्या—अन्यदिदं शरीरं निजकर्मोपात्तमालयमात्रमशाश्वतम्, अन्यो जीवोऽस्याधिष्ठाता शाश्वतः स्वकृतकर्मफलोपभोक्ता य इदं त्यजत्येव, एवं कृतबुद्धिः सन् दुःखपरिक्लेशकरं छिन्द्धि ममत्वं शरीरात्, किं च-यद्यनेनाप्यसारेण कश्चिदर्थः सम्पाद्यते पारलौकिकस्ततः सुतरां यत्नः कार्य इति गाथार्थः ॥१५५५॥

श्लो. १७३५ नवकारपोरिसीए, पुरिमड्ढेक्कासणेगठाणे य ।
आयंबिलऽभत्तट्ठे, चरिमे य अभिग्गहे विगई ॥२०२॥ (प्रव.सा.द्वा.४)

'**नवकारे**'त्यादि, अत्र भीमो भीमसेनन्यायेन नमस्कारशब्दात्परतः सहितशब्दो द्रष्टव्यः, ततो नमस्कारश्च, कोऽर्थः ?-नमस्कारसहितं च पौरुषी च नमस्कारपौरुष्यौ तस्मिन्, नमस्कारविषये पौरुषीविषये चेत्यर्थः, पूर्वार्धं च एकासनं च एकस्थानं चेति समाहारे सप्तम्येकवचने पूर्वार्धविषये एकासनविषये एकस्थानकविषये चरिमे-चरमविषये च, तथा आचाम्लं च अभक्तार्थश्च आचाम्लाभक्तार्थौ तत्र आचाम्लविषये उपवासविषये, तथा भवचरमे दिवसचरमे वेति, तथा अभिग्रहे-अभिग्रहविषये तथा '**विगई**'त्ति विकृतिविषये, सप्तम्येकवचनं लुप्तमत्र द्रष्टव्यमिति, दशभेदमिदमद्धाप्रत्याख्यानम् ॥२०२॥

श्लो. १७३६ दो चेव नमोक्कारे, आगारा छच्च पोरसीए उ ।
सत्तेव य पुरिमड्ढे, एक्कासणगम्मि अट्ठेव ॥२०३॥ (प्रव.सा.)

नन्वेकासनादिप्रत्याख्यानं कथमद्धाप्रत्याख्यानम् ?, न ह्यत्र कालनियमः श्रूयते, सत्यं, अद्धाप्रत्याख्यानपूर्वाणि प्रायेणैकासनादीनि क्रियन्ते इत्यद्धाप्रत्याख्यानत्वेन भण्यन्ते इति, प्रत्याख्यानं चापवादरूपाकारसहितं कर्तव्यं, अन्यथा तु भङ्ग एव स्यात्, ततस्ते यावन्तो नमस्कारसहितादिषु भवन्ति तावन्तः उपदर्शयन्नाह-'**दो चेवे**'त्यादि गाथात्रयं, द्वावेव नमस्कारे-नमस्कारसहिते '**आकारौ**' विधीयमानप्रत्याख्यानापवादरूपौ, षट् च पौरुष्यां, तुः पुनरर्थः, सप्तैव च पूर्वार्धे एकाशनेऽष्टैव ॥२०३॥

श्लो. १७३७ सत्तेगट्ठाणस्स उ, अट्ठेव य अंबिलम्मि आगारा ।
पंचेव अब्भत्तट्ठे, छप्पाणे चरिमे चत्तारि ॥२०४॥ (प्रव.सा.)

सप्त एकस्थानस्य प्रत्याख्यानस्य, तुः समुच्चयार्थः, अष्टैव चाऽऽचाम्ले आकाराः, पञ्चैव चाभक्तार्थे-उपवासे, षट् पानकप्रत्याख्याने, चरमे प्रत्याख्याने-दिवसचरमभवचरमरूपभेदद्वयस्वरूपे चत्वार आकाराः ॥२०४॥

श्लो. १७३८ पंच चउरो अभिग्गहि, निव्विइए अट्ठ नव य आगारा ।
अप्पाउरणे पंच उ, हवंति सेसेसु चत्तारि ॥२०५॥ (प्रव.सा.)

पञ्च वा चत्वारो वा अभिग्रहे-अभिग्रहप्रत्याख्याने, निर्विकृतिकेऽष्टौ नव वा आकाराः, '**पंच चउरो अभिग्गहे**'त्ति यदुक्तं तत्स्वयमेव विवृणोति-'**अप्पाउरणे**'त्यादि, अप्रावरणे-अप्रावरणाभिग्रहे प्रत्याख्याने पञ्चैव, तुशब्दस्यावधारणार्थत्वाद्भवन्ति शेषेष्वभिग्रहेषु-देशावकाशिकादिषु दण्डक-प्रमार्जनादिषु च चत्वार आकारा इति गाथात्रयाक्षरार्थः ॥२०५॥

श्लो. १७३९ नवणीओगाहिमगे, अद्दवदहिपिसियघयगुडे चेव ।
नव आगारा एसिं, सेसदव्वाणं च अट्ठेव ॥२०६॥ (प्रव.सा.द्वा.४)

भावार्थस्तु निवेद्यते-नमस्कारसहिते प्रत्याख्याने भङ्गपरिहारार्थमनाभोगसहसाकारलक्षणौ द्वावाकारौ ज्ञेयौ, ननु कालस्यानुच्यमानत्वात् सङ्केतप्रत्याख्यानमेवेदं प्रतिभाति तत्कथमद्धाप्रत्याख्यानमभिधीयते ?, सत्यं, सहितशब्देन मुहूर्तस्य विशेषितत्वाददोषः, अथ मुहूर्तशब्दोऽप्यत्र न श्रूयते तत्कथं तस्य विशेष्यत्वं ?, न खलु गगनारविन्देऽसत्यमन्दामोदसुन्दरमिदमित्यादीनि विशेषणानि तस्य सहृदयैर्विधीयन्ते, अत्र ब्रूमः—अद्धाप्रत्याख्यानमध्ये तावदस्य पाठात् पौरुषीप्रत्याख्यानस्य च वक्ष्यमाणत्वान्निश्चितं तदर्वाग् मुहूर्त एवावशिष्यते ततस्तस्य विशेष्यत्वं नानुपपन्नं, अथ मुहूर्तद्वयादिकमपि कस्मान्न लभ्यते ? यदेकमेव मुहूर्तं विशेष्यत इति, उच्यते, अल्पाकारत्वादस्य, पौरुष्यां हि षडाकाराः अस्मिंश्च प्रत्याख्याने आकारद्वयवति स्वल्प एव कालोऽवशिष्यते, स च नमस्कारसहितः पूर्णेऽपि काले नमस्कारपाठमन्तरेण प्रत्याख्यानस्यापूर्यमाणत्वात्, सत्यपि च नमस्कारपाठे मुहूर्ताभ्यन्तरे प्रत्याख्यानभङ्गात्, ततः सिद्धमेतत् मुहूर्तमानकालनमस्कारसहितं प्रत्याख्यानमिति, अथ प्रथम एव मुहूर्ते इति कुतो लभ्यते ?, उच्यते, सूत्रे **'सूरे उग्गए'** इति वचनप्रामाण्यात्, पौरुषीप्रत्याख्यानवत्, सूत्रं चेदम्—

''सूरिए उग्गए नमोक्कारसहियं पच्चक्खाइ चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं वोसिरइ'' ।

अस्य च सूत्रस्याग्रेतनपौरुष्यादिसूत्राणां च विस्तारवती व्याख्या स्वस्थानादेव ज्ञातव्या, परमाकाराणां स्वरूपपरिज्ञानाय किञ्चिद्व्याख्यायते-सूर्ये उद्गते सूर्योद्गमादारभ्येत्यर्थः, 'नमस्कारेण' पञ्चपरमेष्ठिस्तवेन सहितं प्रत्याख्याति 'सर्वे धातवः करोत्यर्थेन व्याप्ता' इति **भाष्यकार**वचनान्नमस्कारसहितं प्रत्याख्यानं करोति, इदं गुरोर्वचनं शिष्यस्तु प्रत्याख्यामीत्येतदाह, एवं व्युत्सृजतीत्यत्रापि वाच्यम्, कथं प्रत्याख्याति ?, तत्राह—

चतुर्विधमपि न पुनरेकविधादिकं, आहारं-अभ्यवहार्यं व्युत्सृजतीत्युत्तरेण संटङ्कः, इदं च चतुर्विधाहारस्यैव भवतीति वृद्धसम्प्रदायः, रात्रिभोजनप्रत्याख्यानव्रततीरणकल्पत्वादस्य, **'अशन'**मित्यादिनाऽऽहारचतुर्विधकीर्तनं, अत्र नियमभङ्गभयादाकारावाह—**'अन्नत्थऽणाभोगेणं सहसागारेणं'**ति अत्र पञ्चम्यर्थे तृतीया, अन्यत्रानाभोगात् सहसाकाराच्च, एतौ वर्जयित्वेत्यर्थः, तत्राऽनाभोगः-अत्यन्तविस्मृतिः, सहसाकारः-अतिप्रवृत्तियोगानिवर्त्तनं, **'व्युत्सृजति'** परिहरति ।

तथा पौरुष्यां षडाकाराः, तत्र चैवं सूत्रम्—

''पोरिसिं पच्चक्खाइ उग्गए सूरे चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थऽणाभोगेण सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं सव्वमाहि-

वत्तियागारेणं वोसिरइ'' ।

पुरुषः प्रमाणमस्याः सा पौरुषी छाया तत्प्रमितकालोऽपि पौरुषी प्रहर इत्यर्थः, तां प्रत्याख्याति, अत्र च 'कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे' इति (पा० २-३-५) द्वितीया, ततः पौरुषीं यावत्प्रत्याख्यानं करोतीत्यर्थः, एवमन्यत्रापि, कथं ? चतुर्विधमप्याहारमशनादिकं व्युत्सृजतीति, अन्यत्रानाभोगाद्याकारेभ्यः, तत्रानाभोगसहसाकारौ पूर्ववद्, अन्यत्र प्रच्छन्नकालात् दिग्मोहात् साधुवचनात् सर्वसमाधिप्रत्ययाकाराच्च, प्रच्छन्नता च कालस्य घनतरघनाघनपटलेन विस्फुरद्रजसा गुरुतरगिरिणा वाऽन्तरितत्वाद् दिवाकरो न दृश्यते, तत्र पौरुषीं पूर्णां ज्ञात्वा भुञ्जानस्यापूर्णायामपि पौरुष्यां न भङ्गः, ज्ञात्वा तु अर्धभुक्तेनापि तथैव स्थातव्यं यावत्पौरुषी पूर्णा भवति, पूर्णायां ततः परं भोक्तव्यं, अपूर्णा पौरुषीति ज्ञाते तु भुञ्जानस्य भङ्ग एवेति, दिग्मोहस्तु यदा पूर्वामपि पश्चिमेति जानाति तदाऽपूर्णायामपि पौरुष्यां भुञ्जानस्य न भङ्गः, कथमपि मोहापगमे तु पूर्ववदर्धभुक्तेनापि स्थातव्यं अन्यथा तु भङ्ग एवेति, तथा साधुवचनम्-उद्घाटा पौरुषी इत्यादिकं विभ्रमकारणं, तत् श्रुत्वा भुञ्जानस्य न भङ्गः, भुञ्जानेन तु ज्ञाते अन्येन वा केनापि निवेदिते पूर्ववत्तथैव स्थातव्यं, तथा कृतपौरुषीप्रत्याख्यानस्य सहसा सञ्जाततीव्रशूलादिदुःखतया समुत्पन्नयोरार्तरौद्रध्यानयोः सर्वथा निरासः सर्वसमाधिः, स एव प्रत्ययः-कारणं, स एवाकारः-प्रत्याख्यानापवादः सर्वसमाधि-प्रत्ययाकारः, पौरुष्यामपूर्णायामप्यकस्मात् शूलादिव्यथायां समुत्पन्नायां तदुपशमनायौषधपथ्यादिकं भुञ्जानस्य न प्रत्याख्यानभङ्ग इति भावः, वैद्यादिर्वा कृतपौरुषीप्रत्याख्यानोऽन्यस्याऽऽतुरस्य समाधि-निमित्तं यदाऽपूर्णायामपि पौरुष्यां भुङ्क्ते तदा न भङ्गः, अर्धभुक्ते त्वातुरस्य समाधौ मरणे वोत्पन्ने सति तथैव भोजनत्यागः, सार्धपौरुषीप्रत्याख्यानं पौरुषीवद्वाच्यं, तस्य तदन्तर्गतत्वादिति, पूर्वार्ध-प्रत्याख्याने त्वेवं सप्ताऽऽकाराः—

''सूरे उग्गए पुरिमड्ढं पच्चक्खाइ चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थऽणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ'' ।

अस्यार्थः—'पूर्वस्य पुरिम' इति (सि० हे० प्रा० ८-२-१३५) प्राकृतवचनेन पुरिममिति, एवमन्यत्रापि, ततः पूर्वं च तत् अर्धं च पूर्वार्धं-दिनस्याऽऽद्यप्रहरद्वयं प्रत्याख्याति-पूर्वार्धप्रत्याख्यानं करोति, तत्र षडाऽऽकाराः पूर्ववत्, **'महत्तरागारे'**ति महत्तरं-प्रत्याख्यानपालनवशाल्लभ्यनिर्जरापेक्षया बृहत्तरनिर्जरालाभहेतुभूतं पुरुषान्तरेण साधयितुमशक्यं ग्लानचैत्यसङ्घादिप्रयोजनं तदेवाकारः-प्रत्याख्यानापवादो महत्तराकारः तस्मादन्यत्रेति योगः, यच्चात्रैव महत्तराऽऽकारस्याभिधानं न नमस्कारसहितादौ तत्र कालस्याल्पत्वं अन्यत्र तु महत्त्वं कारणमिति वृद्धाः व्याचक्षते, अपार्ध-प्रत्याख्यानमपि प्रहरत्रयलक्षणं पूर्वार्धप्रत्याख्यानवद्भणनीयम् ॥

अथैकाशनप्रत्याख्याने यथा अष्टाऽऽकारास्तथा कथ्यन्ते, तत्रेदं सूत्रम्–

''एकासणं पच्चक्खाइ तिविहं पि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नत्थऽणाभागेणं सहसागारेणं सागारियागारेणं आउंटणपसारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ।''

एकं सकृत् अशनं-भोजनं एकं वा आसनं-पुताचलनतो यत्र प्रत्याख्याने तदेकाशनमेकासनं वा, प्राकृते द्वयोरपि एकासणमिति रूपं, तत् प्रत्याख्याति एकासनप्रत्याख्यानं करोतीतियावत्, अत्र द्वावाद्यौ अन्त्यावाकारौ च पूर्ववत्, **'सागारियागारेणं'**ति सह आगारेण-गृहेण वर्तत इति सागारः, स एव सागारिको-गृहस्थः, स एवाऽऽकारः-प्रत्याख्यानापवादः सागारिकाकारस्तस्मादन्यत्र, गृहस्थ-समक्षं हि साधूनां भोक्तुं न कल्पते, प्रवचनाद्युपघातसम्भवात्, यत उक्तम्–

''छक्कायदयावंतोऽवि, संजओ दुल्लहं कुणइ बोहिं ।
आहारे नीहारे, दुगुंछिए पिंडगहणे य ॥१॥''
[षट्कायदयावानपि, संयतो दुर्लभां करोति बोधिम् ।
आहारे नीहारे, जुगुप्सिते पिण्डग्रहणे च ॥१॥]

ततश्च भुञ्जानस्य यदि सागारिकः कश्चिदायाति स च यदि चलस्तदा क्षणं प्रतीक्षते स्थिरस्तदा स्वाध्यायादिव्याघातो मा भूदिति ततः स्थानादन्यत्रोपविश्य भुञ्जानस्यापि नैकासनभङ्गः, गृहस्थस्यापि येन दृष्टं भोजनं न जीर्यति तत् प्रमुखः सागारिको ज्ञातव्यः, **'आउंटणपसारणेणं'**ति आकुञ्चनं-जङ्घादेः सङ्कोचनं प्रसारणं च-तस्यैव जङ्घादेराकुञ्चितस्य ऋजूकरणं, आकुञ्चने प्रसारणे वाऽसहिष्णुतया क्रियमाणे किञ्चिदासनं चलति ततोऽन्यत्र प्रत्याख्यानं **'गुरुअब्भुट्ठाणेणं'**ति गुरुरभ्युत्थानार्हस्याचार्यस्य प्राघूर्णकस्य वाऽभ्युत्थानं तमाश्रित्यासनत्यजनं गुर्वभ्युत्थानं ततोऽन्यत्र, गुरुणामभ्युत्थानार्हत्वादवश्यं भुञ्जानेनाप्युत्थानं कर्तव्यमिति न तत्र प्रत्याख्यानभङ्गः **'पारिठावणियागारेणं'** ति परिस्थापनं-सर्वथा त्यजनं प्रयोजनमस्य पारिष्ठापनिकं, तदेवाकारस्तस्मादन्यत्र, तत्र हि त्यज्यमाने बहुदोषसम्भवाश्रीयमाणे चागमिकन्यायेन गुणसम्भवाद्गुर्वाज्ञया पुनर्भुञ्जानस्यापि न भङ्गः, **'वोसिरइ'** व्युत्सृजत्यनेकाशनमशनाद्याहारं च परिहरति ।

तथा एकस्थाने सप्ताऽऽकारा भवन्ति, तस्येदं सूत्रं–**'एक्कासणं एगट्ठाणं पच्चक्खाइ'** इत्याद्येकाशनवदाकुञ्चनप्रसारणाऽऽकारवर्जं, एकं-अद्वितीयं स्थानं-अङ्गविन्यासरूपं यत्र तदेकस्थान-प्रत्याख्यानं, तद् यथा भोजनकालेऽङ्गोपाङ्गं स्थापितं तस्मिंस्तथास्थित एव भोक्तव्यं, मुखस्य हस्तस्य चाशक्यपरिहारत्वाच्चलनमप्रतिषिद्धमिति । अथाऽऽचाम्ले अष्टावाकारास्तत्र सूत्रं–**''आयंबिलं पच्चक्खाइ अन्नत्थऽणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहिसंसट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ''** । अस्यार्थः-

आचामः-अवश्रामणं अम्लं-चतुर्थो रसः ताभ्यां निर्वृत्तमित्यण्, एतच्च त्रिविधं उपाधिभेदात्, तद्यथा—ओदनं कूल्माषान् सक्थूंश्च अधिकृत्य भवति, तत्प्रत्याख्याति, आचाम्लं प्रत्याख्यानं करोतीत्यर्थः, आद्यावन्त्याश्चाकारास्त्रयः पूर्ववत्, '**लेवालेवेणं**'ति लेपो-भोजनभाजनस्य विकृत्या तीमनादिना वाऽऽचाम्लप्रत्याख्यातुरकल्पनीयेन लिप्तता-खरण्टनं विकृत्यादिना लिप्तपूर्वस्य भोजनभाजनस्यैव हस्तादिना संलेखनतोऽलेपोऽलिप्तता, ततश्च लेपश्च अलेपश्च लेपालेपं तस्मादन्यत्र, भाजने विकृत्याद्यवयवसद्भावेऽपि न भङ्ग इत्यर्थः, '**उक्खित्तविवेगेणं**'ति शुष्कौदनादिभक्ते पतितपूर्वस्याऽऽचाम्लप्रत्याख्यानवतामयोग्यस्याद्रवविकृत्यादिद्रव्यस्य उत्क्षिप्तस्य-उद्धृतस्य विवेको-निःशेषतया त्यागः उत्क्षिप्तविवेकस्तस्मादन्यत्र, भोक्तव्यद्रव्यस्याभोक्तव्यद्रव्यस्पर्शेनापि न भङ्ग इत्यर्थः, यत्तूत्क्षेप्तुं शक्यते तस्य भोजने भङ्ग एव, '**गिहत्थसंसट्ठेणं**'ति गृहस्थस्य-भक्तदायकस्य संबन्धि करोटिकादिभाजनं विकृत्यादि-द्रव्येणोपलिप्तं गृहस्थसंसृष्टं तस्मादन्यत्र, विकृत्यादिसंसृष्टभाजनेन हि दीयमानं भक्तमकल्पनीय-द्रव्यमिश्रं भवति तद् भुञ्जानस्यापि न भङ्ग इत्यर्थः, यद्यकल्प्यद्रव्यरसो बहु न ज्ञायत इति, '**वोसिरइ**' अनाचाम्लं व्युत्सृजति।

तथा अभक्तार्थे पञ्चाकाराः, तत्रेदं सूत्रं—''**सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थऽणाभोगेणं सहसागारेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ**'' अस्यार्थः—

'**सूरे उग्गए**' सूर्योद्गमादारभ्य, अनेन भोजनानन्तरं प्रत्याख्यानस्य निषेध इति ब्रूते, भक्तेन-भोजनेनार्थः-प्रयोजनं भक्तार्थः, न भक्तार्थोऽभक्तार्थः अथवा न विद्यते भक्तार्थो यस्मिन् प्रत्याख्यानविशेषे सोऽभक्तार्थः, उपवास इत्यर्थः, आकाराः पूर्ववत्, नवरं पारिष्ठापनिकाकारे विशेषः-यदि त्रिविधाहारस्य प्रत्याख्याति तदा पारिष्ठापनिकं कल्पते, यदि तु चतुर्विधाहारस्य प्रत्याख्याति पानकं च नास्ति तदा न कल्पते, पानके तूद्धरिते कल्पत, एव, '**वोसिरइ**' भक्तार्थमशनादिवस्तु व्युत्सृजति।

तथा पानकप्रत्याख्याने षडाकाराः, तत्र पौरुषीपूर्वार्धएकासनएकस्थानाचामाम्लाभक्तार्थ-प्रत्याख्यानेषु उत्सर्गतश्चतुर्विधाहारस्य प्रत्याख्यानं उक्तं, यदि तु त्रिविधाहारस्य प्रत्याख्यानं करोति तदा पानमाश्रित्य षडाकाराः, तथा च सूत्रम्—

''**पाणस्स लेवाडेण वा अलेवाडेण वा अच्छेण वा बहलेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरइ**''।

इहाप्यन्यत्रेत्यनुवृत्तेस्तृतीयायाः पञ्चम्यर्थत्वेन व्याख्यातत्वात् '**लेवाडेण वे**'ति लेपकृताद्वा-पिच्छलत्वेन भाजनादीनामुपलेपकारकात् खर्जूरद्राक्षादिपानकादन्यत्र तन्मुक्त्वेत्यर्थः, त्रिविधाहारं व्युत्सृजतीति सम्बन्धः, वाशब्दोऽत्रालेपकृतपानकापेक्षयाऽवर्जनीयत्वाविशेषद्योतनार्थः, अलेप-कारिणेव वारिणा लेपकारिणाऽप्युपवासादेर्न भङ्ग इति हृदयं, एवमलेपकृताद्वा पिच्छलात्-सोवीरादेः

अच्छात्-निर्मलाद्वा प्रासुकाद्वा वर्णान्तरिताद्वा अपिच्छलात् उष्णोदकादेर्बहलाद्-गडुलात्ति-लतण्डुलयवधावनादेः ससिक्थाद्वा-भक्तपुलाकोपेतादवश्रावणादेः असिक्थाद्वा-सिक्थवर्जितात्पानकाऽऽहारादिति ।

तथा चरमो-दिवसस्य भवस्य च पाश्चात्यो भागः तत्र क्रियमाणं प्रत्याख्यानमपि दिवसचरिमं भवचरिमं चेति कथ्यते, तत्रेदं सूत्रम्—

''दिवसचरिमं पच्चक्खाइ चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थऽणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ'' ।

एवं भवचरिममपि, आकाराः पूर्वमेव व्याख्याताः, ननु दिवस चरिमं प्रत्याख्यानं निष्प्रयोजनं, एकासनादिप्रत्याख्यानेनैव गतार्थत्वादिति, नैतदेवं, एकासनादिकं ह्यष्टाकारं एतच्च चतुराकारं अत आकाराणां सङ्क्षेपकरणात् सफलमेवेति, अत एव एकासनादिकं दैवसिकमेव भवति, रात्रिभोजनस्य व्रतिभिस्त्रिविधं त्रिविधेन यावज्जीवं प्रत्याख्यातत्वादिति, गृहस्थापेक्षया पुनरिदं आ आदित्योद्गमाद् ज्ञेयम्, दिवसस्याहोरात्रपर्यायतयाऽपि दर्शनात् यथा पञ्चभिर्दिनैर्वयमत्रागताः-पञ्चभिरहोरात्रैरित्यर्थः, तत्र यैर्यावज्जीवमपि रात्रिभोजननियमश्चक्रे तेषामपीदं सार्थकमेवानुवादकत्वे स्मारकत्वात्, भवचरिमं तु द्व्याकारमपि भवति, यदा जानाति महत्तरसर्वसमाधिप्रत्ययरूपाभ्यामाकाराभ्यां न मम प्रयोजनं तदाऽनाभोगसहसाकारौ भवतः, अनाभोगतः सहसाकारतो वाऽङ्गुल्यादेर्मुखे प्रक्षेपसम्भवात्, अत एवेदमनाकारमपि भण्यते, एतस्याकारद्वयस्यापि परिहार्यत्वादिति ।

तथा पञ्च चत्वारो वाऽभिग्रहप्रत्याख्याने, तत्र दण्डकप्रमार्जनादिरूपेऽभिग्रहे चत्वार आकारा भवन्ति, यथा—

''अन्नत्थऽणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ'' ।

एतद्व्याख्या पूर्ववत्, यदा त्वप्रावरणाभिग्रहं गृहाति तदा **'चोलपट्टागारेणं'**ति पञ्चम आकारो भवति, चोलपट्टकाकारदन्यत्र, सागारिकदर्शने चोलपट्टके गृह्यमाणेऽपि न भङ्ग इत्यर्थः ।

तथा निर्विकृतिके अष्टौ नव वा आकारा भवन्ति, यथा—

''निव्विगइयं पच्चक्खाइ अन्नत्थऽणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थ-संसट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्व-समाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ'' ।

तत्र मनसो विकृतिहेतुत्वाद्विगतिहेतुत्वाद्वा विकृतयो विगतयो वा, निर्गता विकृतयो विगतयो वा यत्र तन्निर्विकृतिकं निर्विगतिकं वा प्रत्याख्याति, आकाराः पूर्ववद्व्याख्येयाः, नवरं **'पडुच्च-**

मक्खिएणं'ति प्रतीत्य-सर्वथा रूक्षं मण्डकादिकमपेक्ष्य म्रक्षितं-स्नेहितमीषत्सौकुमार्योत्पादनात् म्रक्षणकृतविशिष्टस्वादुतायाश्चाभावात् म्रक्षितमिव यद्वर्तते तत्प्रतीत्य म्रक्षितं म्रक्षिताभासमित्यर्थः, इह चायं विधिः-यद्यङ्गुल्या घृतादि गृहीत्वा मण्डकादि म्रक्षितं तदा कल्पते निर्विकृतिकस्य, धारया तु न कल्पत इति, व्युत्सृजति-विकृतीः परिहरति, इह च यासु विकृतिषु उत्क्षिप्तविवेकः सम्भवति तासु नवाकाराः, अन्यासु द्रवरूपासु अष्टौ, ननु निर्विकृतिक एवाकारा अभिहिताः विकृतिपरिहारप्रत्याख्याने तु कुत आकारा अवगम्यन्ते ?, उच्यते, निर्विकृतिकग्रहणे कृते सति विकृतिपरिमाणप्रत्याख्यानस्यापि सङ्ग्रहो भवति, यतस्तत्रापि त एव तथैवाकारा भवन्ति, यथा एकासनकस्य पौरुष्याः पूर्वार्धस्य च सूत्रे आकारा अभिदधिरे परं द्व्यासनकस्य सार्धपौरुष्या अपरार्धस्य च प्रत्याख्यानस्य त एव भवन्तीति, प्रत्याख्यानं च सूत्रानभिहितमपि भवति, अप्रमादवृद्धेः सर्वत्र सम्भवादित्यदोषः ।

ननु निर्विकृतिके विकृतिपरिमाणे वा प्रत्याख्याने क्वाष्टौ क्व वा नव आकारा भवन्तीत्याह– '**नवणीओ**' इत्यादि, नवनीते-म्रक्षणकेऽवगाहिमके च-पक्वान्नेऽद्रवदधिपिशितघृतगुडे चैव, अद्रवग्रहणं सर्वत्र सम्बन्धनीयं, नव आकाराः '**एसिं**'ति अमीषां विकृतिविशेषाणां भवन्ति, शेषाणां तु द्रवरूपाणामष्टैवाकाराः, अयमभिप्रायः-यत्रोत्क्षिप्तविवेकोऽद्रवरूपाणां नवनीतगुडादीनां कर्तुं शक्यते तत्र नवाकाराः, द्रवरूपाणां तु विकृतिनामुद्धर्तुमशक्यानां अष्टावाकारा इति ॥२०६॥ (प्रव.सा.द्वा.४.)

श्लो. १७४० गोमहिसुट्टीपसूणं, एलग खीराणि पंच चत्तारि ।
दहिमाइयाइं जम्हा, उट्टीणं ताणि नो होंति ॥२१८॥ (प्रव.सा.)

'**गोमहिसु**' इत्यादि, गवां महिषीणामुष्ट्रीणां पशूनां-छागलिकानां एलकानां गड्डरिकाणामित्यर्थः सम्बन्धीनि क्षीराणि पञ्च विकृतयः, न शेषाणि मानुषीक्षीरादीनि, एलक इत्यत्र षष्ठीबहुवचनं लुप्तं द्रष्टव्यं, तथा चत्वारि-प्रत्येकं चतुर्भेदानि दद्ध्यादीनि-दधिनवनीतघृतानि, आह-कथं चत्वार्येव भवन्ति ? पञ्च कथं क्षीरवन्न भवन्ति ?, तत्राह–यस्मादुष्ट्रीणां दुग्धे तानि न भवन्ति, सरढस्यैव भावादिति ॥२१८॥

श्लो. १७४३ दहिअवयवो उ मंथू, विगई तक्कं न होई विगईओ ।
खीरं तु निरावयवं, नवणीओगाहिमं चेव ॥३७८॥ (पंचवस्तु)

विधिशेषमाह-'**दध्यवयवस्तु मस्तु विकृति**' वर्त्तते, '**तक्रं न भवति विकृति**'स्तु, '**क्षीरं तु निरवयवम्**'-एकमेव, '**नवनीतोद्ग्राहिमके च**' निरवयवे इति गाथार्थः ॥३७८॥

श्लो. १७४५ फासियं पालियं चेव, सोहियं तीरियं तहा ।
किट्टियमाराहियं चेव, जएज्जा एरिसम्मि उ ॥२१२॥ (प्रव.सा.द्वा.४)

'**फासिय**'मित्यादि, स्पृष्टमित्यस्य स्थाने प्राकृते फासियमिति भवति, स्पर्शो वा सञ्जातोऽस्येति इति चि स्पर्शितमिति वा, तच्च प्रत्याख्यानग्रहणकाले विधिना प्राप्तं, पालितं चैव-पुनः पुनरुपयोगप्रतिजागरणेन रक्षितं, शोभितं-गुर्वादिप्रदत्तशेषभोजनाऽऽसेवनेन राजितं, तीरितं-पूर्णेऽपि प्रत्याख्यानकालावधौ किञ्चिदधिककालावस्थानेन तीरं नीतं, कीर्तितं-भोजनवेलाया ममुकं मया प्रत्याख्यानं कृतं तत्पूर्णमधुना भोक्ष्ये इत्युच्चारणेन शब्दितं, आराधितं चैव-एभिरेव प्रकारैः सम्पूर्णं निष्ठां नीतं, यस्मादेवम्भूतमेवैतदर्हदाज्ञापालनादप्रमादाच्च महत्कर्मक्षयकारणं तस्मादीदृशे प्रत्याख्याने यतेत-एवंविध एव यत्नः कर्तव्य इति ॥२१२॥

अथ ग्रन्थकारः स्वयमेवैतानि पदानि विवृणोति—

श्लो. १७४६ उचिए काले विहिणा, पत्तं जं फासियं तयं भणियं ।
तह पालियं च असइं, सम्मं उवओगपडियरियं ॥२१३॥ (प्रव.सा.)

'**उचिए**'त्यादि गाथात्रयं, उचिते काले विधिना प्राप्तं यत् स्पृष्टं तद्भणितं, इदमुक्तं भवति-साधुः श्रावको वा प्रत्याख्यानसूत्रार्थं सम्यगवबुध्यमानः सूर्येऽनुद्गते एव स्वसाक्षितया चैत्य-स्थापनाचार्यसमक्षं वा स्वयं प्रतिपन्नविवक्षितप्रत्याख्यानः पश्चाच्चारित्रपवित्रगात्रस्य गुरोः समीपे सूत्रोक्तविधिना कृतिकर्मादिविनयं विधाय रागद्वेषादिविकथादिरहितः सर्वत्रोपयुक्तः प्राञ्जलिपुटो लघुतरशब्देन गुरुवचनमनूच्चरन् यदा प्रत्याख्यानं प्रतिपद्यते तदा स्पृष्टं भवतीति, तथा पालितं चासकृन्निरन्तरमुपयोगेन सम्यग् प्रतिजागरितम् ॥२१३॥

श्लो. १७४७ गुरुदत्तसेसभोयणसेवणयाए य सोहियं जाण ।
पुण्णेऽवि थेवकालावत्थाणा तीरियं होइ ॥२१४॥ (प्रव.सा.)

गुरुदत्तशेषभोजनाऽऽसेवनया च शोभितं जानीहि, पूर्णेऽपि प्रत्याख्यानकाले स्तोककाला-वस्थानात्तीरितं भवतीति ॥२१४॥

श्लो. १७४८ भोयणकाले अमुगं, पच्चक्खायं ति भुंज कित्तीयं ।
आराहियं पयारेहिं, सम्ममेएहिं निट्ठवियं ॥२१५॥ (प्रव.सा.द्वा.४)

भोजनकालेऽमुकं प्रत्याख्यातमिति भणित्वा भुञ्जानस्य कीर्तितं, आराधितं प्रकारैः सम्यगेतैः पूर्वोक्तैर्निष्ठां नीतमिति ॥२१५॥

श्लो. १७४९ पच्चक्खाणस्स फलं, इह परलोगे य होइ दुविहं तु ।
इह लोए धम्मिलाई, दामन्नगमाइ परलोए ॥४७॥ (प.भाष्य०)

धम्मिलकुमारनुं दृष्टांत (आ लोकना फळ संबंधी)

जंबूद्वीपना दक्षिण भरतक्षेत्रमां कुशार्त नामना नगरमां सुरेन्द्रदत्त नामना श्रेष्ठिने सुभद्रा नामनी

स्त्री हती. तेने संतति न होवाथी बन्ने जण अति चिंताग्रस्त रहे छे, परंतु धर्मना प्रसादथी पुत्र प्राप्ति थशे एम जाणी अत्यंत धर्माराधनमां काळ व्यतीत करे छे. केटलेक काळे पुत्रनो जन्म थयो तेनुं धम्मिल एवुं नाम स्थाप्युं. ते अनुक्रमे मोटो थतां अनेक कळाओमां निपुण थयो, साथे धर्मशास्त्र पण शीख्यो अने धर्मक्रियामां अत्यन्त प्रीतिवाळो थयो. माता-पिताए ए ज नगरना धनवसु शेठनी यशोमति नामनी कन्या परणावी, के जे एक ज जैन गुरु पासे भणतां धम्मिल प्रत्ये अनुरागवाळी थई हती. बन्ने जण पोताना संसार-व्यवहार सुखपूर्वक चलावे छे. परंतु थोडे काळे धम्मिलकुमार धर्मवृत्तिमां अने अध्यात्मरसमां बहु रसिक थवाथी संसारव्यवहारथी विरक्त जेवो थयो. नवपरिणीत स्त्रीने पण मायाजाळ सरखी गणवा लाग्यो. यशोमतिए पोताना पतिनी विमुखता अने पोताना दुःखनी वात सखीओने कही अने सखीओ पासेथी धम्मिलनी माताए पण ते वात जाणी शेठने कही. शेठने पण चिंता थई के पुत्र व्यवहारमार्ग जाणतो नथी अने लोकमां पण ते मूर्ख गणाय छे. त्यारबाद तेना उपाय माटे शेठनी घणी मना छतां शेठाणीए संसारकुशळ थवा माटे धम्मिलने जुगारीओने सोंप्यो तेमांथी अनुक्रमे वेश्यागामी थयो. माता वेश्याने त्यां दररोज धम्मिलना मंगाव्या प्रमाणे धन मोकले छे. अंते घणे काळे माताए पुत्रने तेडवा मोकल्यो छतां घेर न आव्यो. मातापिता पुत्रना वियोगमां ने वियोगमां ज मरण पाम्यां अने यंशोमतिने माथे सर्व घरभार आवी पड्यो. पोताना पति धन मंगावे ते प्रमाणे मोकलतां यशोमति पण सर्वथा निर्धन थवाथी पियर चाली गई.

हवे धनप्राप्ति बंध थवाथी वसंततिलका पुत्रीनो अतिप्रेम छतां वसंतसेना वेश्याए (अक्काए) धम्मिलने दुर्दशा करी घरमांथी काढी मूक्यो. तेने भमतां भमतां श्री अगडदत्त महामुनि मळ्या. तेमणे पोतानुं सविस्तर चरित्र कहीने ते द्वारा उपदेश आप्यो. तेथी प्रतिबोध पाम्या छतां धम्मिलकुमारे गुरु महाराजने कह्युं के-हे गुरु महाराज ! मने हजी संसारसुखनी इच्छा रहेली छे. ते पूर्ण थाय एवो उपाय बतावो. पछी आप कहेशो तेम करीश. गुरुए कह्युं मुनि सांसारिक सुखनो उपाय बतावे नहि, पण आमां परिणामे आश्रव ते संवररूप थनार छे माटे उपाय बतावुं छे के-तमारे छ मास पर्यन्त आयंबिलनो चउविहार तप करवो, पण द्रव्यथी मुनिवेष अंगीकार करवो, दोष रहित गोचरी करवी, मुनिपणुं जाळववुं, अने नवकारमंत्रना नवलाख जाप उपरांत षोडशाक्षरी मंत्र हुं बतावुं छुं तेनो पण जाप करवो. आ प्रमाणे छ मास सुधी करवाथी तमारी इच्छा पूर्ण थशे. (अहीं श्री अगडदत्तमुनिए धम्मिलकुमारने घणो विशेषविधि वगेरे बताव्यो छे ते धम्मिलकुमारना चरित्रथी तथा रास वगेरेथी जाणवो.)

धम्मिलकुमारे गुरु महाराजना कहेवा प्रमाणे यथार्थ रीते छ मास पर्यन्त तप, जप वगेरे करी मुनिवेष तजी दीधो त्यारबाद देवनी प्रसन्नताथी तेमज पूर्वभवमां बांधेला अशुभ कर्मना क्षयथी राज्य, स्त्री, पुत्रादिकना वैभवरूप अनेक प्रकारनां सांसारिक सुख पाम्या.

प्रान्ते धर्मरुचि नामना गुरु मळ्या. तेमणे उपदेश आप्यो अने पूर्वभव कह्यो. तेथी वैराग्य पामी राज्य पुत्रने सोंपी पोते स्त्रीओ सहित चारित्र अंगीकार कर्युं अने दीर्घकाळ पर्यन्त चारित्रनुं पालन करी अंते मासनुं अणसण करी धम्मिल मुनि अने बे साध्वी काळ करी बारमा अच्युत नामना

देवलोकमां उत्पन्न थयां. त्यांथी महाविदेहमां उत्पन्न थई चारित्र लई केवळज्ञान पामी मोक्ष पद पामशे.

ए प्रमाणे धम्मिलकुमारे पच्चक्खाणना (=तपना) प्रभावथी आ भव संबंधी सुख मेळव्युं, अने प्रान्ते मोक्षपद पाम्या. ॥ इति धम्मिलकुमार द्रष्टान्तम् ॥

दामन्नकनुं द्रष्टांत (परलोकना फळ संबंधी)

राजपुर नगरमां रहेता सुनंद नामना कुलपुत्रे पोताना मित्र जिनदास श्रावकना उपदेशथी साधु पासे मांसनुं पच्चक्खाण कर्युं. देशमां दुष्काळ पडवाथी सर्व लोको मांसाहारी थया. सुनंदनुं कुटुंब क्षुधाथी पीडाय छे छतां सुनंद मत्स्य मारवा जतो नथी. एकवार साळो आग्रह करीने सुनंदने सरोवर पर लई गयो अने जाळ आपी मच्छ पकडवा कह्युं तो पण जाळमां जे मच्छ आवे तेने छोडी मूके. एम त्रण दिवस सुधी कर्युं. अन्ते सुनंद अणसण करी मरण पामी मांस पच्चक्खाणना प्रभावे राजगृह नगरमां दामन्नक नामनो श्रेष्ठिपुत्र थयो. त्यां आठ वर्षनो थतां सर्व कुटुंब मरकीना रोगथी मरण पाम्युं त्यारे सुनंद ए ज नगरमां सागरदत्त नामना शेठने त्यां रह्यो. त्यां भिक्षार्थे आवेला साधुओमां मोटा साधुए सामुद्रिक शास्त्रना ज्ञानथी ''आ दामन्नक शेठना घरनो मालिक थशे.'' एम बीजा साधुने कह्युं, ते श्रेष्ठिए सांभळवाथी तेने चंडालो पासे मारी नाखवा मोकल्यो. परंतु चंडालोए नानी आंगळी छेदी तेने नसाडी मूक्यो, ते नासीने ए ज शेठना गोकुलवाळा गाममां गयो. त्यां गोकुलना रक्षक स्वामीए तेने पुत्रपणे राख्यो. केटलेक वर्षे त्यां आवेला सागर शेठे तेने ओळखी फरीथी मारी नखाववा कागळमां ''विष आपजो'' एम लखी ते लेख साथे पोतांने घेर मोकल्यो, परंतु थाक लागवाथी ते ज नगरनी बहार देवमंदिरमां ते सूतो छे, तेटलामां त्यां आवेली ते ज शेठनी विषा नामनी कन्याए ते दामन्नक पर मोह पामवाथी पासे रहेला पत्रमां ''विष''ने बदले ''विषा'' सुधार्युं, जेथी घेर जतां तेने शेठना कुटुंबीओए शेठनी विषा कन्या परणावी. शेठे घेर आवतां अनर्थ थयो जाणी पुनः मारी नखाववानो उपाय रच्यो. परंतु विधिना योगे तेने बदले शेठनो पुत्र ज हणायो. एटले साधुनुं वचन असत्य नहि थाय एम मानी शेठे तेने घरनो मालिक कर्यो. अनुक्रमे राजाए पण नगरशेठनी पदवी आपी. ते नगरमां गुरु पधार्या जाणी वंदना करवा गयो. त्यां धर्मदेशना सांभळी पूर्वभवनुं मांसनुं पच्चक्खाण स्मरणमां आव्युं, तेथी सम्यक्त्व पामी धर्माराधन करी देवलोकमां गयो त्यांथी महाविदेहमां उत्पन्न थई मोक्षपद पामशे. ॥ इति दामन्नक द्रष्टान्तम् ॥

पे.नं. २१६ अड्ढे, दित्ते, वित्ते, वित्थिण्ण-विपुल-भवण-सयणासण-जाण-वाहणाइण्णे, बहुधण-बहुजायरूव-रयए, आओग-पओगसंपउत्ते, विच्छड्डियपउरभत्तपाणे, बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेलगप्पभूए ।

'**अड्ढे**'त्ति समृद्धः '**दित्ते**'त्ति दृप्तो दर्पवान् '**वित्ते**'त्ति प्रसिद्धाः । '**वित्थिन्न-विउल-भवण-सयणासण-जाण-वाहणाइण्णे**'त्ति विस्तीर्णानि-विस्तारवन्ति विपुलानि-प्रभूतानि

भवन-शयना-ऽऽसनानि प्रतीतानि यस्य स तथा, यान-वाहनानि-रथाऽश्वादीनि, आकीर्णानि-गुणाकीर्णानि यस्य स तथा, ततः कर्मधारयः, अथवा विस्तीर्णविपुलभवनानि, शयना-ऽऽसनयान-वाहनाऽऽकीर्णानि यस्य स तथा। '**बहुधणबहुजायरूवरयते**' बहु-प्रभूतं धनं-गणिमादिकं बहुनी च जातरूपरजते-सुवर्ण-रौप्ये यस्य स तथा। '**आओगपओगसंपउत्ते**' ★आयोगस्य-अर्थलाभस्य प्रयोगा-उपायाः सम्प्रयुक्ताः-व्यापारिता येन, तेषु वा सम्प्रयुक्तो-व्यापृतो यः स तथा। '**विच्छड्डिय-पउरभत्तपाणे**' विच्छर्दिते-त्यक्ते बहुजनभोजनदानेनावशिष्टेच्छिष्टसम्भवात् सञ्जातविच्छर्दे वा नानाविधे प्रचुरे भक्त-पाने-भोजन-पानीये यस्य स तथा। '**बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेलप्पभूए**' बहवो दासीदासाः गो-महिष-गवेलकाश्च प्रभूता यस्य स तथा, गवेलका-उरभ्राः।

जातिसंपन्ना एवं कुल-बल-रूव-विणय-णाण-दंसण-चरित्त-लज्जा-लाघव-संपन्ना ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी जियकोह-माण-माय-लोभा जिइंदिया जियणिद्दा जितपरीसहा जीवितासमरणभयविप्पमुक्का, वयप्पहाणा, गुणप्पहाणा, करणप्पहाणा, चरणप्पहाणा, णिग्गहप्पहाणा, निच्छयप्पहाणा, अज्जवप्पहाणा, मद्दवप्पहाणा, लाघव-खंति-मुत्ति-विज्ज-मंत-वेद-बंभ-नय-नियम-सच्च-सोयप्पहाणा।

'**जाइसंपन्न**'त्ति उत्तममातृकपक्षयुक्ता इत्यवसेयम्, अन्यथा मातृकपक्षसम्पन्नत्वं पुरुषमात्रस्यापि स्यादिति नैषामुत्कर्षः कश्चिदुक्तः स्याद्, उत्कर्षाभिधानार्थं चैषां विशेषणकदम्बकं चिकीर्षितमिति, एवं '**कुलसंपन्ना**' इत्याद्यपि विशेषणनवकं, नवरं कुलं-पैतृकः पक्षः **बलं**-संहननसमुत्थः प्राणः **रूपम्**-आकृतिः **विनयज्ञाने** प्रतीते **दर्शनं**-सम्यक्त्वं **चरित्रं**-समित्यादि **लज्जा**-अपवादभीरुता संयमो वा **लाघवं**-द्रव्यतोऽल्पोपधिता भावतो गौरवत्रयत्यागः '**ओयंसि**'त्ति ओजो-मानसोऽवष्टम्भस्तद्वन्तः ओजस्विनः '**तेयंसि**'त्ति तेजः-शरीरप्रभा तद्वन्तः तेजस्विनः '**वच्चंसि**'त्ति वचो-वचनं सौभाग्याद्युपेतं येषामस्ति ते वचस्विनः, अथवा वर्चः-तेजः प्रभाव इत्यर्थः तद्वन्तो वर्चस्विनः '**जसंसि**'त्ति यशस्विनः-ख्यातिमन्तः **जितक्रोधादीनि** सप्त विशेषणानि प्रतीतानि, नवरं क्रोधादिजयः-उदयप्राप्तक्रोधादिविफलीकरणतोऽवसेयः, '**जीवियासमरणभय-विप्पमुक्का**' जीविताशया मरणभयेन च विप्रमुक्ताः, तदुभयोपेक्षका इत्यर्थः, '**वयप्पहाणे**'ति व्रतं-यतित्वं प्रधानम्-उत्तमं शाक्यादियतित्वापेक्षया निर्ग्रन्थयतित्वाद्येषां, व्रतेन वा प्रधाना ये ते तथा, निर्ग्रन्थश्रमणा इत्यर्थः, ते च न व्यवहारत एवेत्यत आह-'**गुणप्पहाण**'त्ति प्रतीतं, नवरं गुणाः-करुणादयः, गुणप्राधान्यमेवप्रपञ्चयन्नाह-'**करणप्पहाणे**'-त्यादिविशेषणसप्तकं प्रतीतार्थं च, नवरं करणं-पिण्डविशुद्ध्यादि **चरणं**-महाव्रतादि **निग्रहः**-अनाचारप्रवृत्तेर्निषेधनं **निश्चयः**-तत्त्वनिर्णयः विहितानुष्ठानेषु वा अवश्यंकरणाभ्युपगमः, **आर्जवं**-मायोदयनिग्रहः **मार्दवं**-मानोदयनिरोधः, **लाघवं**-क्रियासु दक्षत्वं **क्षान्तिः**-क्रोधोदयनिग्रहः, **मुक्तिः**-लोभोदयनिरोधो **विद्याः**-प्रज्ञप्त्यादिकाः

★ = आवाहनविसर्जनकुशलः।

मन्त्राः-हिरणेगमेष्यादिमन्त्राः **वेदाः**-आगमाः ऋग्वेदादयो वा **ब्रह्म**-ब्रह्मचर्यं कुशलानुष्ठानं वा **नया**-नीतयः **नियमा**-अभिग्रहाः **सत्यं**-सम्यग्वादः **शौचं**-द्रव्यतो निर्लेपता भावतोऽनवद्यसमाचारः, यच्चेह चरणकरणग्रहणेऽप्यार्जवादिग्रहणं तदार्जवादीनां प्राधान्यख्यापनार्थमवसेयम्।

अहिगयजीवाजीवे उवलद्धपुन्नपावे आसव-संवर-निज्जर-किरिया-ऽहिगरण-बंध-मोक्खकुसले असहेज्ज देवा-ऽसुर-णाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किन्नर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगादिएहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणतिक्कमणिज्जे इणमो निग्गंथे पावयणे निस्संकिए निक्कंखिए निव्वितिगिच्छे लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे अहिगयट्ठे विणिच्छियट्ठे अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ते अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे-ऊसितफलिहे अवंगुयदुवारे।

'**अहिगयजीवाजीवे**' इत्यत्र यावत्करणादिदं दृश्यम्-'**उवलद्ध-पुण्णपावे आसव-संवर-निज्जर-किरिया-ऽहिगरण-बंध-मोक्खकुसले**' आश्रवाः-प्राणातिपातादयः, संवराः-प्राणातिपातविरमणादयः, निर्जरा-कर्मणो देशतः क्षपणं, क्रियाः-कायिक्यादिकाः, अधिकरणानि-खड्गादिनिर्वर्तन-संयोजनानि, बन्ध-मोक्षौ-कर्मविषयौ, एतेन चास्य ज्ञानसम्पन्नतोक्ता, '**असहेज्ज**'त्ति अविद्यमानसाहाय्यः कुतीर्थिकप्रेरितः सन् सम्यक्त्वाविचलनं प्रति न परसाहाय्यमपेक्षत इति भावः, अत एवाह-'**देवाऽसुर-नाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे**' इति देवा-वैमानिकाः, असुरनागत्ति-असुरकुमारा नागकुमारा श्चेति भवनपतिविशेषाः, सुवण्णत्ति-सद्वर्णा ज्योतिष्का इत्यर्थः, क्वचिद् **गरुडे**ति नाधीयते, ततः सुवण्णेत्ति-सुवर्णकुमारा भवनपतिविशेषाः, यक्ष-राक्षस-किन्नर-किम्पुरुषाः व्यन्तरभेदाः, गरुडत्ति-गरुडचिह्नाः सुवर्णकुमाराः, गन्धर्व-महोरगाश्च व्यन्तराः, '**इणमो निग्गन्थे पावयणे**'त्ति अस्मिन्निर्ग्रन्थे प्रवचने '**निस्संकिय**'त्ति निःसन्देहः, '**निक्कंखिय**'त्ति मुक्तदर्शनान्तरपक्षपातः, '**निव्वितिगिच्छे**'त्ति निर्विचिकित्सकः फलं प्रति निःशङ्कः, '**लद्धट्ठे**'त्ति लब्धार्थोऽर्थश्रवणतः, '**गहियट्ठे**'त्ति गृहीतार्थोऽवधारणतः, '**पुच्छियट्ठे**'त्ति पृष्टार्थः संशये सति, '**अहिगयट्ठे**'त्ति अधिगतार्थोऽभिगतार्थो वा अर्थावबोधात्, '**विणिच्छियट्ठे**'त्ति विनिश्चितार्थः ऐदम्पर्योपलम्भात्, अत एव '**अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ते**' अस्थीनि च-कीकसानि मिञ्जा च-तन्मध्यवर्ती धातुविशेषः अस्थिमिञ्जास्ताः प्रेमानुरागेण-सार्वज्ञप्रवचनप्रीतिलक्षण-कुसुम्भादिरागेण रक्ता इव रक्ता यस्य स तथा, केनोल्लेखेनेत्याह-'**अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे**'त्ति अयमिति-प्राकृतत्वादिदम् '**आउसो**'त्ति आयुष्मन्निति पुत्रादेरामन्त्रणं, क्वचित् '**इणमो निग्गन्थे**' इति दृश्यते, '**सेसे**'त्ति शेषं-धन-धान्य-पुत्र-कलत्र-मित्र-राज्य-कुप्रवच-नादिकमिति। '**उसियफलिहे**'ति उच्छ्रितम्-उन्नतं स्फटिकमिव स्फटिकं चित्तं यस्य स तथा, मौनीन्द्रप्रवचनावाप्त्या परिपुष्टमना इत्यर्थः, इति वृद्धव्याख्या, अन्ये त्वाहुः-उच्छ्रितः-

अर्गला-स्थानादपनीयोर्ध्वीकृतो न तिरश्चीनः, कपाटपश्चाद्भागादपनीत इत्यर्थः, उत्सृतो वा अपगतः परिघः-अर्गला गृहद्वारे यस्यासौ उच्छ्रितपरिघ उत्सृतपरिघो वा, औदार्यातिशयादतिशयदानदायित्वेन भिक्षुकप्रवेशार्थमनर्गलितगृहद्वार इत्यर्थः, इदं च किलाम्बडस्य न सम्भवति, स्वयमेव तस्य भिक्षुकत्वाद्, अत एव **पुस्तके** लिखितं यथा '**उसियफलिहे**'त्यादिविशेषणत्रयं नोच्यते, '**अवंगुयदुवारे**'त्ति अपावृत्तद्वार-कपाटादिभिरस्थगितगृहद्वारः, सद्दर्शनलाभेन न कुतोऽपि पाषण्डिकाद्बिभेति, शोभनमार्गपरिग्रहेणोद्घाटशिरास्तिष्ठतीति भाव इति वृद्धव्याख्या, केचित्त्वाहुः-भिक्षुकप्रवेशार्थमौदार्यादस्थगितगृहद्वार इत्यर्थः, इदं चाम्बडस्य न घटते, '**चियत्तअंतेउरघरदारपवेसी**'त्ति चियत्तोति-लोकानां प्रीतिकर एव अन्तःपुरे वा गृहे वा द्वारे वा प्रवेशो यस्य स तथा, इन्प्रत्ययश्चात्र समासान्तः, अतिधार्मिकतया सर्वत्रानाशङ्कनीयोऽसाविति भावः, अन्येत्वाहुः-**चियत्तो**त्ति-नाप्रीतिकरोऽन्तःपुरगृहे द्वारेण नापद्वारेण प्रवेशः-शिष्टजनप्रवेशनं यस्य स तथा, अनीर्ष्यालुताप्रतिपादनपरं चेत्थमिदं विशेषणं, न चाम्बडस्येदं घटते, अन्तःपुरस्यैवाभावादिति, क्वचिदेवं दृश्यते-'**चियत्तघरंतेउरपवेसी**'त्ति चियत्तेत्ति-प्रीतिकारिण्येव गृहे वाऽन्तःपुरे वा प्रविशतीत्येवंशीलो यः स तथा, त्यक्तो वा गृहान्तःपुरयोरकस्मात् प्रवेशो येन स तथा, '**चउद्दसअट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु**'त्ति उद्दिष्टा-अमावास्या '**पडिपुन्नं पोसहं अणुपालेमाणे**'त्ति आहारपौषधादिभेदाच्चतूरूपमपीति, '**समणे निग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कम्बल-पायपुच्छणेणं**' अत्र च पडिग्गहत्ति-प्रतिग्रहः पतद्ग्रहो वा-पात्रं पायपुच्छणंति पादप्रोञ्छनं रजोहरणं '**ओसह-भेसज्जेणं**'ति औषधम्-एकद्रव्याश्रयं भैषज्यं-द्रव्यसमुदायरूपमथवा औषधं-त्रिफलादि भैषज्यं-पथ्यं '**पाडिहारिएणं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे**'त्ति प्रतिहारः-प्रत्यर्पणं प्रयोजनमस्येति प्रातिहारिकं तेन पीठम्-आसनं फलकम्-अवष्टम्भनार्थः काष्ठविशेषः शय्या-वसतिः शयनं वा यत्र प्रसारितपादैः सुप्यते संस्तारकोलघुतरं शयनमेव '**सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे**'त्ति शीलव्रतानि-अणुव्रतानि गुणा-गुणव्रतानि विरमणानि-रागादिविरतिप्रकाराः प्रत्याख्यानानि-नमस्कारसहितादीनि पौषधोपवासः-अष्टम्यादिपर्वदिनेषूपवसनम्, आहारादित्याग इत्यर्थः ॥१२०॥

श्लो. १८५३ दुमपत्तए पंडुअए जहा, निवडइ राइगणाणमच्चए ।
एवं मणुआण जीविअं, समयं गोअम ! मा पमायए ॥१॥

व्याख्या—द्रुमो वृक्षस्तस्य पत्रं पर्णं द्रुमपत्रं तदेव द्रुमपत्रकं, 'पंडुअए त्ति' आर्षत्वात् पाण्डुरकं कालपरिणामात्तथाविधरोगादेर्वा जातश्वेतभावं, यथा येन प्रकारेण निपतति शिथिलवृन्तबन्धनत्वाद्भ्रश्यति। 'राइगणाणं' ति रात्रिगणानां दिनगणाविनाभावित्वाद्रात्रिंदिवसमूहानां, अत्यये अतिक्रमे 'एवं' ति एवंप्रकारं मनुष्याणामुपलक्षणत्वात्सर्वजीवानां जीवितमायुः, तदपि हि रात्रिदिनगणा-

नामतिक्रमे यथास्थित्या अध्यवसायादिकृतोपक्रमेण वा भ्रश्यतीत्येवमुच्यते । यतश्चैवमतः समयमपि आस्तामावलिकादि, अपेर्गम्यमानत्वात्, हे **गौतम** ! हे इन्द्रभूते ! मा प्रमादीर्मा प्रमादं कृथाः, शेषशिष्योपलक्षणञ्चेह गौतमग्रहणं, सर्वेषामनुशासनार्थत्वादस्य ॥ उत्त० अध्य० १०.१ ॥

श्लो. १८५४ कुसग्गे जह ओसबिंदुए, थोवं चिट्ठइ लंबमाणए ।
एवं मणुआण जीविअं, सयमं गोयम मा पमायए ॥२॥

व्याख्या—कुशाग्रे यथा अवश्यायबिन्दुकः शरत्कालभाविश्लक्ष्णवर्षबिन्दुः, स्वार्थे कप्रत्ययः, स्तोकमल्पं कालमिति शेषः, तिष्ठति लम्बमानको मनाग् निपतन् बद्धास्पदो हि कालान्तरमपि क्षमेतेत्येवं विशिष्यते, एवमनुजानामीत्यादि प्राग्वदिति सूत्रार्थः ॥२॥ उत्त० अध्य० १०.२ ॥

श्लो. २१५७ मत्तंगया य १ भिंगा, २ तुडियंगा ३ दीव ४ जोइ ५ चित्तंगा ६ ।
चित्तरसा ७ मणियंगा, ८ गेहागारा ९ अणियणा य १० ॥६७॥

(प्रव.सा.द्वा.१७१)

इह मत्तं-मदस्तस्याङ्गं-कारणं मदिरास्तद्ददतीति मत्ताङ्गदाः यद्वा मत्तस्य-मदस्याङ्गं-कारणं मदिरारूपं येषु ते मत्ताङ्गास्त एव मत्ताङ्गकाः १ '**भिंग**'त्ति भृतं-भरणं पूरणं तत्राङ्गानि-कारणानि भृताङ्गानि-भाजनानि, न हि भरणक्रिया भरणीयं भाजनं विना भवतीति तत्सम्पादकत्वाद् वृक्षा अपि भृताङ्गाः, प्राकृतत्वाच्च भिंगा उच्यन्ते २ तथा त्रुटितानि-तूर्याणि तत्कारणत्वात् त्रुटिताङ्गाः ३ '**दीवजोइचित्तंग**'त्ति इहाङ्गशब्दः प्रत्येकमभिसम्बध्यते, ततो दीपः-प्रकाशकं वस्तु तत्कारणत्वाद्दीपाङ्गाः ४ ज्योतिः-अग्निस्तत्र च सुषुमसुषमायामग्नेरभावात् ज्योतिरिव यद्वस्तु सोष्मप्रकाशकमिति भावः तत्कारणत्वाज्ज्योतिरङ्गाः ४ तथा चित्रस्य-अनेकप्रकारस्य विवक्षाप्राधान्यात् माल्यस्य कारणत्वाच्चित्राङ्गाः ६ तथा चित्रा-विविधा मनोज्ञा रसा-मधुरादयो येभ्यस्ते चित्ररसाः ७ तथा मणीनां-मणिप्रधानाभरणानां कारणत्वान्मण्यङ्गाः ८ तथा गेहं-गृहं तद्वदाकारो येषां ते गृहाकाराः ९ '**अणियण**'त्ति विचित्रवस्त्रदायित्वान्न विद्यन्ते नग्नास्तन्निवासिनो जना येभ्यस्तेऽनग्नाः १० इत्येते दश कल्पद्रुमा भवन्तीति ॥६७॥

अथैतेषां मध्ये येषु यद्भवति तदाह—

मत्तंगएसु मज्जं सुहपेज्जं १ भायणा य भिंगेसु २ ।
तुडियंगेसु य संगयतुडियाइं बहुप्पगाराइं ३ ॥६८॥

मत्ताङ्गकेषु कल्पद्रुमेषु सुखपेयं परमातिशयसम्पन्नवर्णादिविशिष्टत्वेन पातुमभिलषणीयं सुपक्वेक्षुद्राक्षादिरसनिष्पन्नं मद्यं भवति, कोऽर्थः ? तेषां फलानि विशिष्टबलवीर्यकान्तिहेतुविश्रसापरिणतसरससुगन्धिविविधपरिपाकागतहृद्यमद्यपरिपूर्णानि स्फुटित्वा स्फुटित्वा मद्यं मुञ्चन्तीति १

तथा भृताङ्गेषु भाजनानि-स्थालप्रभृतीनि भवन्ति, अयमर्थः-यथा इह मणिकनकरजतादिमयविचित्र-भाजनानि स्थालप्रभृतीनि दृश्यन्ते तथैव विश्रसापरिणतैरपरिमितैः स्थालकच्चोलककलश-करकादिभिर्भाजनैः फलैरिवोपशोभमानाः प्रेक्ष्यन्ते २ तथा त्रुटिताङ्गेषु सङ्गतानि-सम्यग्-यथोक्तरीत्या सम्बद्धानि त्रुटितानि-आतोद्यानि बहुप्रकाराणि-ततविततघनशुषिरभेदभिन्नानि फलानीव भवन्ति, तत्र 'ततं-वीणादिकं ज्ञेयं, विततं-पटहादिकम्। घनं तु-कांस्यतालादि, शुषिरं-काहलादिकम् ॥१॥ इति ३ ॥६८॥

दीवसिहा ४ जोइसनामगा य एए करेंति उज्जोयं ५ ।
चित्तंगेसु य मल्लं ६ चित्तरसा भोयणट्ठाए ७ ॥६९॥

तथा दीपशिखा ज्योतिषिकनामकाश्च एते कल्पतरव उद्योतं-प्रकाशं कुर्वन्ति, इदमुक्तं भवति-यथेह स्निग्धं प्रज्ज्वलन्त्यः काञ्चनमणिमय्यो दीपिका उद्योतं कुर्वाणा दृश्यन्ते तद्वद्वि-श्रसापरिणताः (दीपशिखाकल्पवृक्षाः) प्रकृष्टोद्योतेन सर्वमुद्योतयन्तो वर्तन्ते, ज्योतिषिकास्तु सूर्यमण्डलमिव स्वतेजसा सर्वमप्यवभासयन्तः सन्तीति ४-५ तथा चित्राङ्गेषु माल्यम्-अनेकप्रकारसरससुरभिनानावर्णकुसुमदामरूपं भवति ६ तथा चित्ररसा भोजनार्थाय-युगलधार्मिकाणां भोजननिमित्तं भवन्ति, एतदुक्तं भवति-इहत्यविशिष्टदालिकलमशालिशालनकपक्वान्नप्रभृतिभ्यो-ऽतीवापरिमितस्वादुतादिगुणोपेतेन्द्रियबलपुष्टिहेतुहृद्यखाद्यभोज्यपदार्थपरिपूर्णैः फलमध्यैर्विराज-मानाश्चित्ररसाः सन्तिष्ठन्ति ७ ॥६९॥

मणियंगेसु य भूसणवराइं ८ भवणाइ भवणरुक्खेसु ९ ।
तह अणियणेसु धणियं वत्थाइं बहुप्पयाराइं १० ॥७०॥

तथा मण्यङ्गेषु वराणि-श्रेष्ठानि भूषणानि विश्रसापरिणतानि कटककुण्डलकेयूरादीन्याभरणानि भवन्ति ८ तथा भवनवृक्षेषु गेहाकारनामकेषु कल्पद्रुमेषु भवनानि-विश्रसापरिणामत एव प्रांसुप्राकारोपगूढसुखारोहसोपानपङ्क्तिविचित्रचित्रशालावितततवातायनानेकगुप्तप्रकटापवरककुट्टिमत-लाद्यलङ्कृतानि नानाविधानि निकेतनानि भवन्ति ९ तथा अनग्नेषु कल्पपादपेषु धणियं-अत्यर्थं बहुप्रकाराणि विचित्राणि वस्त्राणि विश्रसावशत एवातिसूक्ष्मसुकुमारदेवदूष्यानुकारीणि मनोहारीणि निर्मलभांसि वासांसि समुपजायन्त इति १०। ॥७०॥१७१॥

श्लो.२२८३ वीरवरस्स भगवओ वोलिय चुलसीइवरिससहसेहिं ।
पउमाईचउवीसं जह हुंति जिणा तहा थुणिमो ॥४५७॥

पढमं च पउमनाहं सेणियजीवं जिणेसरं नमिमो ।
बीयं च सूरदेवं वंदे जीवं सुपासस्स ॥४५८॥

तइयं सुपासनामं उदायिजीवं पणट्ठभववासं ।
वंदे सयंपभजिणं पुट्टिल्लजीवं चउत्थमहं ॥४५९॥

सव्वाणुभूइनामं दढाउजीवं च पंचमं वंदे ।
छट्ठं देवसुयजिणं वंदे जीवं च कित्तिस्स ॥४६०॥

सत्तमयं उदयजिणं वंदे जीवं च संखनामस्स ।
पेढालं अट्ठमयं आणंदजियं नमंसामि ॥४६१॥

पोट्टिलजिणं च नवमं सुरकयसेवं सुनंदजीवस्स ।
सयकित्तिजिणं दसमं वंदे सयगस्स जीवं ति ॥४६२॥

एगारसमं मुणिसुव्वयं च वंदामि देवईजीयं ।
बारसमं अममजिणं सच्चइजीवं जयपईवं ॥४६३॥

निकसायं तेरसमं वंदे जीवं च वासुदेवस्स ।
बलदेवजियं वंदे चउदसमं निप्पुलायजिणं ॥४६४॥

सुलसाजीवं वंदे पन्नरसमं निम्ममत्तजिणनामं ।
रोहिणिजीवं नमिमो सोलसमं चित्तगुत्तं ति ॥४६५॥

सत्तरसमं च वंदे रेवइजीवं समाहिनामाणं ।
संवरमट्ठारसमं सयालिजीवं पणिवायमि ॥४६६॥

दीवायणस्स जीवं जसोहरं वंदिमो इगुणवीसं ।
कण्हजियं गयतण्हं वीसइमं विजयमभिवंदे ॥४६७॥

वंदे इगवीसइमं नारयजीवं च मल्लनामाणं ।
देवजिणं बावीसं अंबडजीवस्स वंदेऽहं ॥४६८॥

अमरजियं तेवीसं अणंतविरियाभिहं जिणं वंदे ।
तह साइबुद्धजीवं चउवीसं भद्दजिणनामं ॥४६९॥

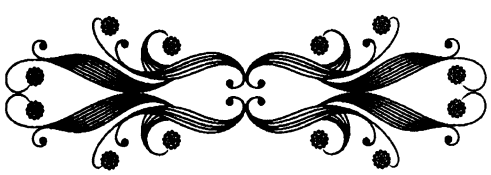
उस्सप्पिणिइ चउवीस जिणवरा कित्तिया सनामेहिं ।
सिरिचंदसूरिनामेहिं सुहयरा हुंतु सयकालं ॥४७०॥

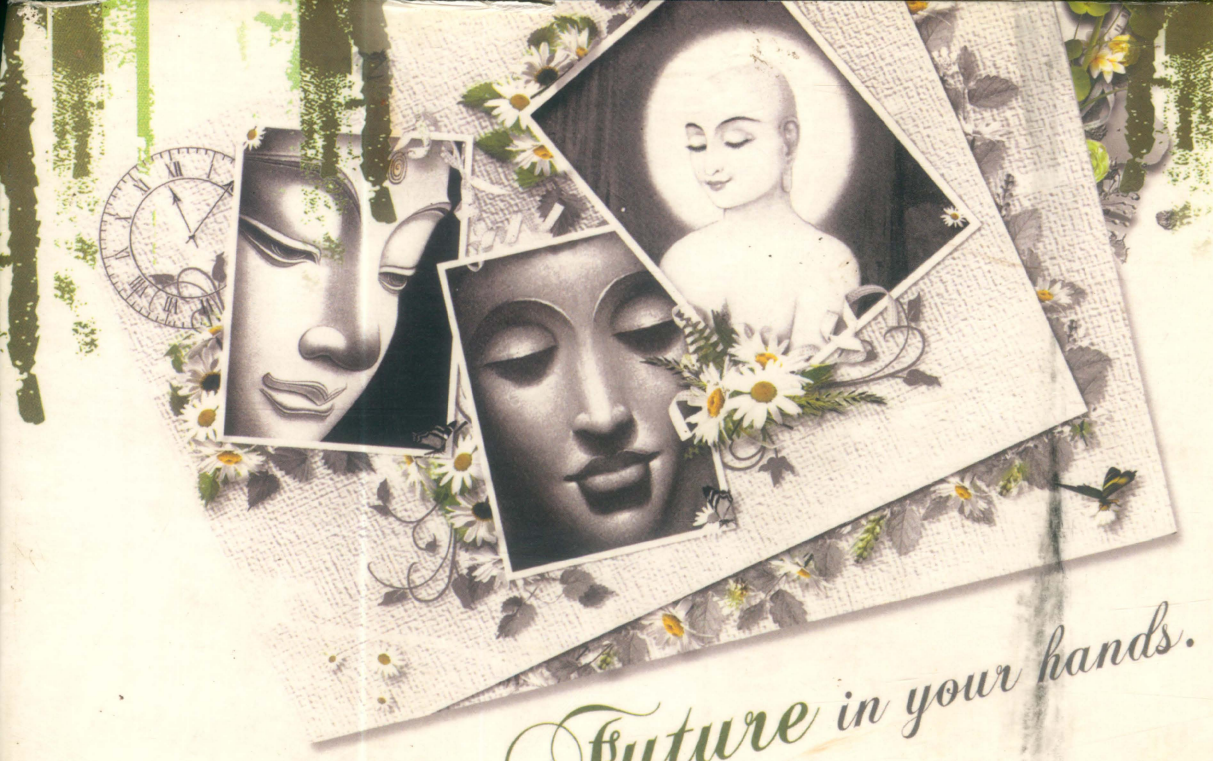
'**वीरे**'त्यादिगाथाचतुर्दशकं, अत्र षष्ठी पञ्चम्यर्थे तृतीया च सप्तम्यर्थे ततो '**वीरवरात्**' श्रीमहावीरस्वामिनो '**भगवतः**' समग्रैश्वर्यादिगुणयुक्तात् '**व्युत्क्रान्तेषु**' गतेषु चतुरशीतिवर्षसहस्रेषु '**पद्मादयः**' पद्मनाभप्रभृतयश्चतुर्विंशतिर्जिना यथा भविष्यन्ति तथा '**स्तुमो**' नामग्रहणपूर्वकं

प्रणमामः, इयमत्र भावना-एतस्यामवसर्पिण्यां चतुर्थारकस्य दुष्षमसुषमालक्षणस्य पर्यन्ते एकोननवतिपक्षेष्ववतिष्ठमानेषु श्रीवर्धमानस्वामी निर्वृत्तः, ततो महावीरनिर्वाणानन्तरं एकोननवतिपक्षाधिके प्रत्येकमेकविंशतिवर्षसहस्रप्रमिते अवसर्पिणीसम्बन्धिपर्यन्तारकद्वये गते तथोत्सर्पिण्या अप्यति-दुष्षमादुष्षमारूपे प्रत्येकमेकविंशतिवर्षसहस्रमाने एवाद्यारकद्वये गते तृतीयारकस्य च दुष्षमसुषमा-रूपस्यैकोननवतिपक्षेषु गतेषु श्रीपद्मनाभः समुत्पन्नः, ततः प्रागुक्तारकचतुष्टसम्बन्धिसर्वप्रमाणमीलने चतुरशीतिर्वर्षसहस्रा जायन्ते, ये च पक्षाणां द्वे एकोननवती समधिके अवतिष्ठेते ते अल्पत्वान्न विवक्षिते इति ।

अथ तानेव क्रमेणाह-प्रथमं **पद्मनाभं** जिनेश्वरं श्रीमन्**महावीर**परमश्रावक**श्रेणिक**महा-राजजीवं नमामः, द्वितीयं च **सूरदेवं** वन्दे जीवं **सुपार्श्व**स्य श्री**महावीर**पितृव्यस्य, तृतीयं **सुपार्श्व**-नामानं **कोणिक**पुत्र**उदायि**महाराजजीवं प्रणष्टभववासमहं वन्दे, **स्वयंप्रभ**जिनं **पोट्टिलक**जीवं चतुर्थमहं वन्दे, **सर्वानुभूति**नामानं **दृढायुषो** जीवं पञ्चमं वन्दे, तथा षष्ठं **देवश्रुत**जिनं वन्दे जीवं **कीर्तेः**, सप्तमं **उदय**जिनं वन्दे जीवं च **शङ्खनाम्नः** श्रावकस्य, **पेढाल**मष्टमकं **आनन्द**जीवं नमस्यामि, **पोट्टिल**जिनं च नवमं सुरकृतसेव**सुनन्द**जीवस्य सम्बन्धिनं, **शतकीर्ति**जिनं दशमं वन्दे **शतक**स्य जीवं, एकादशमं **मुनिसुव्रतं** वन्दे **देवक्या** जीवं, द्वादश**मम**जिनं **सत्यकि**जीवं जगत्प्रदीपं, **निष्कषायं** त्रयोदशं वन्दे जीवं च **वासुदेव**स्य, **बलदेव**स्य जीवं चतुर्दशं **निष्पुलाक**जिनं, **सुलसाया** जीवं वन्दे पञ्चदशं **निर्ममत्व**नामानं जिनं, **रोहिणी**जीवं नमामः षोडशं **चित्रगुप्त**मिति, सप्तदशं च वन्दे **रेवत्या** जीवं **समाधि**नामानं जिनं, **संवर**मष्टादशं **सतालि**जीवं प्रणिपतामि-नमामि, **द्वीपायन**स्य जीवं **यशोधर**नामानं जिनमेकोनविंशं वन्दे, **कृष्ण**जीवं गततृष्णं विंशतितमं **विजय**नामानमभिवन्दे, तथा वन्दे एकविंशतितमं **नारद**जीवं च **मल्लि**नामानं, **देव**जिनं द्वाविंशं **अम्बड**जीवस्य सम्बन्धिनं, **अमर**जीवं त्रयोविंशतितम**मनन्तवीर्य**ाभिधं जिनं वन्दे, तथा **स्वातिबुद्ध**जीवं चतुर्विंशतितमं **भद्र**जिननामानं वन्दे । उत्सर्पिण्यां-भाविन्यां चतुर्विंशतिर्जिनवराः **'कीर्तिताः'** पूर्वभवसम्बन्धिनामप्रतिपादनकपूर्वकैः स्वनामभिः **श्रीचन्द्रसूरि**नाम्नाऽऽचार्येण स्तुताः सुखकराः शुभकरा वा भवन्तु सदाकालमिति । एते च तथाविधसम्प्रदायाभावात् शास्त्रान्तरैः सह विसंवादित्वाच्च न विशेषतो विवृताः ॥४५७-४७०॥

●●●





Future in your hands.

त्वमक्षरं परमं वेदितव्यम् ।
त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् ।
त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता ।
सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे ।।

।। गीता.११.१८. ।।

Rare N Right
9820434841